सच्ची गीता खंड-2

No.	Topic	Murli/Avyakt Vani Points	Download
2	अमृतवेला	अमृतवेले ही बाप को याद करना अच्छा है। प्रभात का समय बहुत अच्छा है। उस समय माया के तूफान भी नहीं आवेंगे। रात को 12 बजे तक तो तपस्या आदि करने का कोई फायदा नहीं है; क्योंकि टाइम बड़ा (गंदा) होता है। वायुमण्डल ख़राब रहता है। तो 1 बजे तक छोड़ देना चाहिए। 1 के बाद वायुमण्डल अच्छा रहता है। (मु.9.6.71 पृ.2 म.)	Download
3	अमृतवेला	बाबा अनुभव भी बतलाते रहते हैं कि सवेरे उठने में बड़ा मज़ा आवेगा। 84 का चक्र ऐसे लगाए हैं। अपन से बैठ बातें करनी चाहिए। विचार-सागर-मंथन सवेरे में अच्छा होगा। सर्विस का शौक होगा तो बाबा आपे ही तुमको उठावेंगे। (मु.20.7.73 पृ.3 अं.)	Download
4	अमृतवेला	बोलते हैं सवेरे जाग न सकते हैं तो फिर पद भी ऊँच पा न सकेंगे। दास-दासी बनना पड़ेगा। (मु.19.10.78 पृ.2 म.)	Download
5	अमृतवेला	बाप समझाते हैं कि सवेरे उठ अभ्यास करो। बाबा आप कितने मीठे हो। आत्मा कहती है, बाबा-बाप ने पहचान दी है। मैं तुम्हारा बाप हूँ। (मु. 20.2.76 पृ.2 म.)	Download
6	अमृतवेला	एक से 5 तक अमृतवेला है। धूप निकलने से पहले।(मु.18.4.76 पृ.2 म.)	Download
7	अमृतवेला	सवेरे उठकर बाबा को याद करना है, वह टाइम बहुत अच्छा है। वायब्रेशन भी शुद्ध रहता है। जैसे आत्मा रात को थक जाती है तो कहती है मैं डिटैच हो जाता हूँ। तुम्हारा भी यहाँ होते हुए बुद्धि योग वहाँ लगा रहे। अमृतवेले उठकर याद करने से दिन में भी याद आएगी। यह कमाई है। (मु.8.3.87 पृ.3 अं.)	Download
8	अमृतवेला	अमृतवेले ये रूहानी धंधा करो। बहुत कमाई होगी। प्रातः आत्मा रिफ्रेश होती है। बार-2 अभ्यास करने से आदत पड़ जाएगी। अभी जो करेगा वह ऊँच पद पाएगा। (मु.16.4.87 पृ.3 अं.)	Download
9	अमृतवेला	सवेरे उठकर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आँसू भी आएँ; क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं।(मु.3.8.90 पृ.1 म.)	Download
10	अमृतवेला	रात को बाबा की याद में सोएँगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलाएँगे। (मु.31.3.87 पृ.2 म.)	Download
11	अमृतवेला	सवेरे उठते नहीं हैं। जिन सोया तिन खोया। तुम जानते हो बरोबर हमको हीरे जैसा जन्म मिला है। अब भी अगर नींद से सवेरे नहीं उठेंगे तो समझेंगे यह बख़्तावर नहीं हैं। सुबह को उठकर मोस्ट बिलवेड बाप को, साजन को याद नहीं करते हैं। आधा कल्प से साजन बिछुड़ा हुआ है...; क्योंकि साजन और सजनी की बात भक्तिमार्ग से चलती है। बाप को तो तुम सारा कल्प भूल जाते हो फिर भक्तिमार्ग में तुम साजन के रूप में वा बाप के रूप में याद करते हो। (मु.9.10.83 पृ.1 अं.)	Download
12	अमृतवेला	अमृतवेले का समय अच्छा है। उस समय बाहर के विचारों को लॉकप कर देना चाहिए। कोई भी ख़्याल न आए। बाप की याद रहे।(मु.2.6.85 पृ.1 अं.)	Download
13	अमृतवेला	याद की यात्रा को बच्चों को भूलना नहीं है। सुबह को जैसे कि यह प्रैक्टिस करते हैं। उसमें वाणी नहीं चलती है; क्योंकि वह है ही निर्वाणधाम जाने की युक्ति। (मु.22.4.68 पृ.1 आ.)	Download
14	अमृतवेला	सवेरे का टाइम बहुत ही अच्छा। जो नेमी होते हैं वह सवेरे उठते हैं। कोई बिस्तरे से उठ जल्दी हाथ-मुँह धोकर भागते हैं क्लास में। याद का खिर ही नहीं। (मु.11.2.69 पृ.1 अं.)	Download

15	अमृतवेला	सवेरे 4 बजे उठ स्नान आदि कर यहाँ आकर बैठ जावें। संगम के आगे, सीढ़ी के आगे वा शिवबाबा के चित्र के आगे बैठ जाओ। तुम्हारी बहुत उन्नति होगी। (मु.16.11.75 पृ.3 म.)	Download
16	अमृतवेला	अमृतवेले जो अमरभव का वरदान मिलता है वह अगर न लेंगे तो फिर मेहनत बहुत करनी पड़ेगी। (अ.वा.8.7.73 पृ.130 आ)	Download
17	अमृतवेला	अमृतवेले आपको उठाने वाला कौन? बाप का प्यार उठाता है। (अ.वा.26.11.94 म.)	Download
18	अमृतवेला	दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता है। प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते। प्यार ही आपके समय की घण्टी है। प्यार की घण्टी आपको उठाती है। सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य कराता है। (अ.वा.31.1.98 मध्यांत)	Download
19	अमृतवेला	अमृतवेले का (पुरुषार्थ) ठीक करेंगे तो सभी ठीक हो जावेगा। जैसे अमृत पीने से अमर बन जाते हैं तो अमृतवेले को सफ़ल करने से 'अमर भव' का वरदान मिल जाता है। (अ.वा.8.7.73 पृ.129 अं.)	Download
20	अमृतवेला	यह संगमयुग ही अमृतवेला है। .... पूरा ही संगमयुग अर्थात् अमृतवेला अर्थात् डायमण्ड मॉर्निंग। (अ.वा.9.4.86 पृ.322 अं., 323 आ.)	Download
21	अमृतवेला	अमृतवेले भी जैसे यह अभ्यास करना है- हम जैसे कि अवतरित हुए हैं। कभी ऐसे समझो कि मैं अशरीरी और परमधाम का निवासी हूँ अथवा अव्यक्त रूप में अवतरित हुई हूँ और फिर स्वयं को कभी निराकार समझो। यह तीन स्टेजिस पर जाने की ऐसी प्रैक्टिस हो जाए जैसे कि एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना होता है। तो अमृतवेले यह विशेष 'अशरीरी भव' का वरदान लेना चाहिए। (अ.वा.15.9.74 पृ.135 म.)	Download
22	अमृतवेला	अमृतवेले को मिस करना अर्थात् संगम की विशेष प्राप्ति को ख़त्म करना। जो भी ईश्वरीय मर्यादाएँ हैं, उन मर्यादाओं पूर्वक जीवन बिताने से विश्व के आगे एग्ज़ाम्पल बन जायें। (अ.वा.13.1.78 पृ.33अं.)	Download
23	अमृतवेला	अमृतवेले उठकर अपने को अटेन्शन के पट्टे पर चलाना। तो पट्टे पर गाड़ी ठीक चलेगी। (अ.वा.1.6.73 पृ.85 आ.)	Download
24	अमृतवेला	अमृतवेले पावर हाउस से फुल पावर लेने का जो नियम है उसको बार-बार चैक करो। यही बड़ी से बड़ी इन्जेक्शन है। अमृतवेले बाप से कनेक्शन जोड़ लिया तो सारा दिन माया की बेहोशी से बचे रहेंगे। इस इन्जेक्शन की ही कमी है। कनेक्शन ठीक होना चाहिए।... अमृतवेले का कनेक्शन अर्थात् सर्व पावर्स का और सर्व प्राप्तियों का अनुभव होना, यह बड़े से बड़ा इन्जेक्शन है। (अ.वा.8.7.73 पृ.127 अं.,128 आ.)	Download
25	अमृतवेला	यह वरदानों का समय है। वरदानों के समय अगर कोई सोया रहे, सुस्ती में रहे वा विस्मृत रहे, कमजोर होकर बैठे तो वरदानों से वंचित हो जायेगा। (अ.वा.7.5.84 पृ.299 म.)	Download
26	अमृतवेला	अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे। (अ.वा.2.2.69 पृ.29 अं.)	Download
27	अमृतवेला	बापदादा सदा स्नेही बच्चों को अमृतवेले मुबारक देते हैं। ''वाह, मेरे बच्चे वाह!'' यह गीत गाते हैं। गीत सुनने आता है? (अ.वा.18.3.81 पृ.66 आ.)	Download
28	अमृतवेला	अमृतवेले आँख खोलते बाप से मिलन मनाते रत्नों से खेलते हो ना। सारे दिन में धंधा कौन सा करते हो? रत्नों का धंधा करते हो ना! बुद्धि में ज्ञान रत्नों की प्वाइन्ट्स गिनते हो ना। तो रत्नों के सौदागर, रत्नों की खानों के मालिक हो। (अ.वा.3.12.83 पृ.26अं., 27आ.)	Download

29	अमृतवेला	जहाँ भी कुछ मूँझ हो तो जो निमित्त बने हुए हैं उन्हों से वेरीफाय कराओ या फिर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो अमृतवेले की टचिंग सदा यथार्थ होगी। अमृतवेले मन का भाव मिक्स करके नहीं बैठो; लेकिन प्लेन बुद्धि होकर बैठो फिर टचिंग यथार्थ होगी। (अ.वा.20.1.84 पृ.125 अं.,126 आ.)	Download
30	अमृतवेला	बार-बार रिवाइज़ करो मैं कौन हूँ! किसका हूँ? अमृतवेले शक्तिशाली स्मृति स्वरूप का अनुभव करने वाले सदा ही शक्तिशाली रहते हैं। अमृतवेला शक्तिशाली नहीं तो सारे दिन में भी बहुत विघ्न आयेंगे; इसलिए अमृतवेला सदा शक्तिशाली रहे। अमृतवेले पर स्वयं बाप बच्चों को विशेष वरदान देने आते हैं। उस समय जो वरदान लेता है उसका सारा दिन सहजयोगी की स्थिति में रहता है। तो पढ़ाई और अमृतवेले का मिलन यह दोनों ही विशेष सदा शक्तिशाली रहें। तो सदा ही सेफ रहेंगे। (अ.वा. 22.2.84 पृ.155 म)	Download
31	अमृतवेला	अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसी वेला श्रेष्ठ, अमृत श्रेष्ठ, वैसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। अगर इस श्रेष्ठ वेला को साधारण रीति से चला लेते हो तो सारा दिन संकल्प और कर्म भी साधारण ही चलते हैं। तो ऐसे समझना चाहिए यह अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउन्डेशन वेला है। अगर फाउन्डेशन कमज़ोर वा साधारण डालेंगे तो ऊपर की बनावट भी आटोमेटिकली ऐसी होगी। (अ.वा.24.6.72 पृ.319 अं.,320आ.)	Download
32	अमृतवेला	जो श्रीमत मिली हुई है इसको ब्रह्ममुहूर्त के समय स्मृति में लायेंगे तो ब्रह्म मुहूर्त वा अमृतवेले के समय स्मृति भी सहज आ जायेगी। देखो, पढ़ाई पढ़ने वाले भी पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते हैं; क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है।... जैसे श्रीमत है उसी प्रमाण समय को पहचान और समय प्रमाण कर्तव्य किया तो बहुत सहज सर्व प्राप्ति कर सकते हो। (अ.वा. 24.6.72 पृ.320 म)	Download
33	अमृतवेला	अमृतवेले के समय जो तकदीर (की) रेखा खिंचवाना चाहो, वह खींचने के लिए तैयार हैं।... उस समय यह भोले भगवान के रूप में हैं, लवफुल है तो लव के आधार से श्रेष्ठ लकीर खिंचवा लो। जो चाहे, जितने जन्मों के लिए चाहे, चाहे अष्ट रत्नों में, चाहे 108 की माला में, बापदादा की खुली आफर है। (अ.वा.17.12.79 पृ.126 अंत)	Download
34	अमृतवेला	सारे दिन में चाहे कितना भी पुरुषार्थ करें; लेकिन सारे दिन की आदि अर्थात् फाउन्डेशन का समय कमज़ोर होने के कारण मेहनत ज़्यादा करनी पड़ती, प्राप्ति कम होती है। प्राप्ति कम होने के कारण दो प्रकार की अवस्था का अनुभव करते हैं। एक तो चलते-चलते थकावट अनुभव करते हैं, दूसरा चलते-चलते दिलशिकस्त हो जाते हैं। (अ.वा.17.12.79 पृ.125 अं., 126 आ.)	Download
35	अमृतवेला	अमृतवेले जागृत स्थिति में अनुभव नहीं करते, मजबूरी से वा कभी सुस्ती, कभी चुस्ती के रूप में बैठते, तो पुजारी भी मजबूरी से या सुस्ती से पूजा करेंगे, विधिपूर्वक पूजा नहीं करेंगे। (अ.वा.17.10.87 पृ.88 म.)	Download
36	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	सभी बातों में भिन्न-2 रूप से पहले आलस्य रूप आता है। आलस्य अर्थात् सुस्ती, उदासाई (बाबा के) संबंध से दूर कर देते हैं।... ज्ञानी तू आत्मा वत्सों में लास्ट नम्बर अर्थात् सुस्ती के रूप से शुरू होती है। सुस्ती में फिर कैसे संकल्प उठेंगे? वर्तमान इसी रूप से माया की प्रवेशता होती है।(अ.वा.25.6.70 पृ.276 आ)	Download
37	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	वर्तमान समय पुरुषार्थियों के मन में यह संकल्प उठना कि अंत में विजयी बनेंगे व अंत में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे- यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है। (अ.वा.9.1.75 पृ.9 अं.)	Download

38	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अलबेले पुरुषार्थी की सबसे बड़ी विशेषता अंदर मन खाता रहेगा और बाहर से गाता रहेगा। क्या गाता रहेगा? अपनी महिमा के गीत गाता रहेगा। (अ.वा.11.4.83 पृ.126 अं)	Download
39	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	कोई-कोई फिर ऐसे भोले बच्चे होते हैं जो कि ईश्वरीय प्राप्ति और माया के अंतर को भी नहीं जानते। निद्रा को ही शांत स्वरूप और बीज रूप स्टेज समझ लेते हैं। अल्पकाल की निद्रा द्वारा रेस्ट के सुख को अतीन्द्रिय सुख समझ लेते हैं। (अ.वा.8.7.74 पृ.94 अं.)	Download
40	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	एक तरफ एक राज्य, एक धर्म की सुनहरी दुनियाँ का आह्वान कर रहे हो और साथ-साथ फिर कमजोरी अर्थात् माया का भी आह्वान कर रहे हो तो रिज़ल्ट क्या होगी? दुविधा में रह जाएँगे। इसलिए यह छोटी बात नहीं समझो। समय पड़ा है, कर लेंगे। औरों में भी तो बहुत कुछ है, मेरे में तो सिर्फ एक ही बात है। दूसरे को देखते-देखते स्वयं न रह जाओ। (अ.वा.27.11.87 पृ.152 म.)	Download
41	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	आज सोचते हैं कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे, ऐसे-2 संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है। बाकी करेंगे, सोचेंगे, इन अक्षरों में पिछाड़ी में ग-ग आता है ना, तो यह शब्द हैं बचपन की निशानी। छोटा बच्चा ग-ग करता रहता है ना। यह अलबेलेपन की निशानी है। इसलिए कब भी आलस्य का रूप अपने पास आने न देना और सदा अपने को हुल्लास में रखना; क्योंकि निमित्त बनते हो ना। (अ.वा.4.3.72 पृ.236 अं.)	Download
42	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	जो अभी भी कहते हैं- देख लेंगे तुम्हारा क्या कार्य है वा देख लेंगे आपको क्या मिला है, जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय का इंतज़ार करने वाले, एसलम के, इंतज़ाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे। (अ.वा.27.10.81 पृ.80 अं)	Download
43	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अलबेला अर्थात् करने के समय करते हुए भी उस समय जानते नहीं हो कि कर रहे हैं। पीछे पश्चाताप करते हो। इस कारण डबल, ट्रिपल समय एक बात में गँवा देते हो। एक करने का समय, दूसरा महसूस करने का समय, तीसरा पश्चाताप करने का समय, चैथा फिर उसको चैक करने के बाद चेंज करने का समय। तो एक छोटी सी बात में इतना समय व्यर्थ कर देते हो और फिर बार-बार पश्चाताप करते रहने के कारण, कर्मों का फल संस्कार रूप में पश्चाताप के संस्कार बन जाते हैं। (अ.वा.23.4.77 पृ.92 अं.)	Download
44	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	कोई भी प्रकार के संस्कार या स्वभाव को परिवर्तन करने में दिलशिकस्त होना या अलबेलापन होना भी थकना है। यह तो होता ही रहता है, यह तो होगा ही, यह है अलबेलापन। बहुत मुश्किल है, कहाँ तक चलेंगे- यह है दिल शिकस्त होना। (अ.वा.5.2.77 पृ.73 अं.)	Download
45	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	सेवा में जो निमित्त हैं उन्हों को भी तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए। अपने अलबेलेपन से किसको मेहनत नहीं करानी चाहिए। अपनी वस्तुओं को सम्भालना यह भी नॉलेज है। याद है ना ब्रह्मा बाप क्या कहते थे- रुमाल खोया तो कभी खुद को भी खो देगा। (अ.वा.11.4.86 पृ.328 आ.)	Download
46	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अगर कुछ भी अलबेलापन रहा तो जैसे कई बच्चों ने साकार मधुर मिलन का सौभाग्य गँवा दिया वैसे ही यह पुरुषार्थ के सौभाग्य का समय भी हाथ से चला जायेगा। इसलिए पहले से ही सुना रहे है- पुरुषार्थ से स्नेह रख पुरुषार्थ को आगे बढ़ाओ। (अ.वा.17.4.69 पृ.50अं.)	Download
47	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अलबेलापन का कारण हुआ कि ज्ञान की कमी और पहचान की कमी। (अ.वा.20.2.74 पृ.21 आ.)	Download

48	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है। यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जावेगा। (अ.वा.7.6.77 पृ.219 आ.)	Download
49	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	जब अपने ऊपर ज़िम्मेवारी समझेंगे तो ज़िम्मेवारी पड़ने से अलबेलापन और आलस्य ख़त्म हो जाएगा। (अ.वा.16.7.69 पृ.87 अं.)	Download
50	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	कई बच्चे अलबेलेपन में आने के कारण, चाहे बड़ों को, चाहे छोटों को, इस बात में चलाने की कोशिश करते हैं कि मेरा भाव बहुत अच्छा है; लेकिन बोल निकल गया वा मेरी एम (लक्ष्य) ऐसे नहीं थी; लेकिन हो गया या कहते हैं कि हँसी-मज़ाक में कह दिया अथवा कर लिया। यह भी चलाना है। इसलिए पूजा भी चलाने जैसी होती है। यह अलबेलापन सम्पूर्ण पूज्य स्थिति को नम्बरवार में ले आता है। (अ.वा.17.10.87 पृ.87 अं)	Download
51	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। (अ.वा.17.10.87 पृ.88 म.)	Download
52	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	'प्राप्ति भव' की वरदानी आत्मा कभी भी अलबेलेपन में आ नहीं सकती। (अ.वा.9.10.87 पृ.77 अं.)	Download
53	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	बच्चे का अलबेलापन अच्छा लगता है, बड़प्पन नहीं और बड़ों का फिर अलबेलापन अच्छा नहीं लगता है; इसलिए समय के प्रमाण अपने स्वमान को कायम रखते हुए ज़िम्मेवारी को सम्भालते जाओ। (अ.वा.8.5.73 पृ.62 म.)	Download
54	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अलबेलापन भी आधी नींद है। (अ.वा.4.5.73 पृ.54 म.)	Download
55	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	जो अलबेलेपन में रहते हैं, वह भी नींद में सोने की स्टेज है।... ऐसे को कहा जाता है आए हुए भाग्य को ठोकर लगाने वाले। (अ.वा.4.5.73 पृ.54 म.)	Download
56	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	हर कर्म करने के पहले यह लक्ष्य रखो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाय, सैम्पुल बनाना है। होता क्या है कि संगठन का फायदा भी होता है तो नुकसान भी होता है। संगठन में एक/दो को देख अलबेलापन भी आता है और संगठन में एक/दो को देख करके उमंग-उत्साह भी आता है, दोनों होता है। तो संगठन को अलबेलेपन से नहीं देखना है। अभी यह एक रीति हो गई है, यह भी करते हैं, यह भी करते हैं, हमने भी किया तो क्या हुआ। ऐसे चलता ही है। तो यह संगठन में अलबेलेपन का नुकसान होता है। (अ.वा.18.1.86 पृ.173 म.)	Download
57	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	पुरुषार्थ की एक भी कमी का दाग बहुत बड़ा देखने में आता है। फिर हमेशा ख्याल आता है कि छोटा-सा दाग मेरी वैल्यु कम कर देगा। चिंतन चिंता के रूप में होना चाहिए। वह नहीं तो अलबेलापन है। (अ.वा.18.1.75 पृ.25 अं.)	Download
58	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	भले ही आराम के साधन प्राप्त हैं; परंतु आराम पसंद नहीं बन जाना है। पुरुषार्थ में भी आराम पसंद न होना अर्थात् अलबेला न होना है। आराम के साधनों का एडवान्टेज (लाभ) सदाकाल की प्राप्ति का विघ्न रूप नहीं बनाना। यह अटेन्शन रखना है। (अ.वा.11.2.75 पृ.69 म.)	Download
59	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	अलबेलापन न आये उसकी विधि क्या है? उसकी विधि है सदा स्वचिंतन करो और शुभचिंतक बनो।... चिंतन नहीं करते, इसको एक दृढ़ संकल्प की रीति से अपने जीवन का निजी कार्य नहीं बनाते, इसलिए अलबेलापन आता है। (अ.वा.10.12.79 पृ.102 आ)	Download

60	अधरकुमारों से	सभी अपने जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सेवा करने वाले हो ना! सबसे बड़े से बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है आप सबकी जीवन का परिवर्तन।... याद रखो, स्व-परिवर्तन से औरों का परिवर्तन करना है। यह सेवा सहज भी है और श्रेष्ठ भी है। मुख का भी भाषण और जीवन का भी भाषण। इसको कहते हैं सेवाधारी।...क्या थे और क्या बन गये! यह सदा स्मृति में रखते हो? इस स्मृति में रहने से कभी भी पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। साथ-2 भविष्य में भी क्या बनने वाले हैं यह भी याद रखो तो वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ होने के कारण खुशी रहेगी और खुशी में रहने से सदा आगे बढ़ते रहेंगे।... सदा अपने इस बेहद के परिवार को देख खुश होते रहो।... जो ऐसे परिवार के बनते हैं वह भविष्य में भी एक/दो के समीप आते हैं। (अ.वा.27.11.85 पृ.65 अं., 66)	Download
61	अधरकुमारों से	आधा कल्प आप दर्शन करने जाते रहे, अभी बाप परमधाम से आते हैं आपके दर्शन के लिए। देखने को ही दर्शन कहते हैं।... वह दर्शन नहीं, यह दर्शन अर्थात् मिलना।... अधर कुमार अर्थात् सदा पवित्र प्रवृत्ति में रहने वाले। बेहद की प्रवृत्ति में सदा सेवाधारी, हद की प्रवृत्ति में न्यारे। अधर कुमारों का ग्रुप है- कमलपुष्पों का गुलदस्ता। प्रवृत्ति में रहते विघ्न-विनाशक की स्टेज पर रहते हो ना?... जितना समय विघ्नों के वश हो उतना समय लाख गुणा घाटे में जाता है। जैसे एक घंटा सफल करते हो, तो लाख गुणा जमा होता, ऐसे एक घण्टा वेस्ट जाता है तो लाख गुणा घाटा होता है। (अ.वा.30.11.79 पृ.69 आ)	Download
62	अधरकुमारों से	न्यारे होकर फिर प्रवृत्ति के कार्य में आओ तो सदा माया प्रूफ अर्थात् न्यारे रहेंगे।... मेरे पन से माया का जन्म होता है।... ज्ञान की गहराई में भी अनेक अनुभव रूपी रत्नों को प्राप्त करते जा रहे हो ना? जितना सागर के तले में जाते हैं उतना क्या मिलता है? रत्न। ऐसे ही जितना ज्ञान की गहराई में जायेंगे उतना अनुभव के रत्न मिलेंगे और ऐसे अनुभवीमूर्त हो जायेंगे जो आपके अनुभव को देख और ही अनुभवी बन जायेंगे। (अ.वा.30.11.79 पृ.69 अं., 70 आ., म.)	Download
63	अधरकुमारों से	अधरकुमारों को दो विशेष बातों को ध्यान में रखना पड़ेगा। शोकेस में चीज़ रखी जाती है, उसमें क्या विशेषता होती है? (एट्रैक्टिव) एक तो अपने को एट्रैक्टिव बनाना पड़ेगा और दूसरा एक्टिव। यह दोनों विशेषताएँ ख़ास अधर कुमारों को अपने में भरनी हैं। यह दोनों गुण आ जावेंगे तो फिर और कुछ रहेगा नहीं। (अ.वा.17.11.69 पृ.142 आ)	Download
64	अधरकुमारों से	सदा यह नशा रहता है कि हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएँ हैं; क्योंकि बाप के साथ पार्ट बजाने वाली हैं। सारे चक्र के अन्दर इस समय बाप के साथ पार्ट बजाने के निमित्त बने हो।... बाप का कितना प्यारा बना हूँ, उसका हिसाब न्यारे पन से लगा सकते हो।... जो सदा बाप के प्यारे हैं उसकी निशानी है स्वतः याद। प्यारी चीज़ स्वतः सदा याद आती है ना।... भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु को प्रिय समझने लगते हो। अगर सदा बाप को प्रिय समझो तो भूल नहीं सकते।.... अधर कुमार तो अनुभवी कुमार हैं। सब अनुभव कर चुके। अनुभवी कभी भी धोखा नहीं खाते।... एक-2 अधरकुमार अपने अनुभवों द्वारा अनेकों का कल्याण कर सकते हैं। (अ.वा.1.11.81 पृ.103, 104 आ.)	Download

65	अधरकुमारों से	सदा प्रवृत्ति में रहते अलौकिक वृत्ति में रहते हो? गृहस्थी जीवन से परे रहने वाले। सदा ट्रस्टी रूप में रहने वाले।... ट्रस्टीपन की निशानी है सदा न्यारा और बाप का प्यारा।... ट्रस्टी बनने से सब बंधन सहज ही समाप्त हो जाते हैं। बन्धनमुक्त हैं तो सदा सुखी हैं। उनके पास दुःख की लहर भी नहीं आ सकती। अगर संकल्प में भी आता है- मेरा घर, मेरा परिवार, मेरा यह काम है, तो यह स्मृति भी माया का आह्वान करती है। तो मेरे को तेरा बना दो। जहाँ तेरा है वहाँ दुःख खत्म। मेरा कहना और मूंझना, तेरा कहना और मौज में रहना।... सदा एक बाप दूसरा न कोई इसी लगन में मग्न रहो। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न नहीं रह सकता। (अ.वा.12.12.84 पृ.65 म., 66 आ.)	Download
66	अधिकारी अधीन नहीं	हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर ज़िम्मेवार हैं तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी अधीन रहने के संस्कार हुये न? जो अधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राज्यभाग नहीं ले पाता। इसलिए स्वयं के ज़िम्मेवार फिर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी लेने वाले विश्वमहाराजन बन सकते हैं। (अ.वा.30.5.73 पृ.81 म.)	Download
67	अधिकारी अधीन नहीं	ऐसे नहीं बड़े-2 कार आदि रखनी है। ऐसे कुछ होगा तो बन्धन रहेगा। बन्धन जितना हो सके कम हो। मनुष्य वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर घूमना-फिरना, मोटर आदि छोड़ देते हैं। (मु.1.2.74 पृ.1 अं.)	Download
68	अधिकारी अधीन नहीं	प्रकृति के व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती। (अ.वा.26.6.74 पृ.80 म.)	Download
69	अधिकारी अधीन नहीं	इस समय के किसी न किसी स्वभाव वा संस्कार वा किसी सम्बन्ध के अधीन रहने वाली आत्मा जन्म-2 अधिकारी बनने के बजाय प्रजा पद के अधिकारी बनते हैं, राज्य अधिकारी नहीं। (अ.वा.6.1.86 पृ.133 म.)	Download
70	अधिकारी अधीन नहीं	बन्धन है ऐसे कहने वाले रीढ़ बकरियाँ हैं। गवर्मेन्ट कब कह न सके कि तुम ईश्वरीय सर्विस न करो। (मु.19.11.74 पृ.2 अं.)	Download
71	अधिकारी अधीन नहीं	अगर किसी को सम्भालना नहीं आता है तो किसी के सम्भालने में चलना पड़े ना। तो मास्टर रचयिता के बदले रचना बनना पड़े।(अ.वा.8.7.73 पृ.127 म.)	Download
72	अधिकारी अधीन नहीं	अधिकारी कभी किसी के अधीन नहीं होते।... अपनी हर कर्मेन्द्रियों को जब चाहो, जैसे चाहो, वहाँ लगाओ और जब न लगाना हो तो कर्मेन्द्रियों को कंट्रोल कर सको। (अ.वा.4.5.73 पृ.51 म., 52 अं.)	Download
73	अधिकारी अधीन नहीं	अब प्रैक्टिकल में चेक करो कि हर कर्मेन्द्रिय कमल समान न्यारी बनी हैं? जैसे कमल सम्बन्ध और सम्पर्क में रहते हुए न्यारा है, ऐसे कर्मेन्द्रियाँ कर्म के और कर्म के फल के सम्पर्क में आते हुए न्यारी हैं? ... कोई भी कर्मेन्द्रिय का रस देखने का, सुनने का, बोलने का, अपने वशीभूत तो नहीं बनाता है? (अ.वा.23.1.76 पृ.13 आ.)	Download
74	अधिकारी अधीन नहीं	दास और अधिकारी दोनों साथ-2 नहीं हो सकते। दासपन की निशानी है- मन से, चेहरे से उदास होना। उदास होना निशानी है दास पन की।... दास सदा अपसेट होगा। राज्य अधिकारी सदा सिंहासन पर सेट होगा, दास छोटी सी बात में और सेकेंड में कनफ्यूज़ हो जायेगा और अधिकारी सदा अपने को कम्फर्ट (आराम में) अनुभव करेगा।... दास आत्मा सदा अपने को परीक्षाओं के मझधार में अनुभव करेगी। अधिकारी आत्मा माँझी बन नैया को मज़े से परीक्षाओं की लहरों से खेलते-2 पार करेगी। (अ.वा.6.4.82 पृ.346 अं., 347 आ.)	Download

75	अधिकारी अधीन नहीं	आलमाईटी अथारिटी के हर डायरैक्शन को प्रैक्टिकल में लाने की हिम्मत का अभ्यास हो गया है?.... अभ्यास में सफल कौन हो सकता है? जो हर बात में स्वतन्त्र होगा- किसी भी प्रकार की परतन्त्रता न हो। बापदादा भी स्वतन्त्र बनाने की ही शिक्षा देते रहते हैं।.... सबसे पहली स्वतन्त्रता पुरानी देह के अन्दर के सम्बन्ध से है। इस एक स्वतन्त्रता से और सब स्वतन्त्रता सहज आ जाती है। देह की परतन्त्रता अनेक परतन्त्रता में न चाहते हुए भी ऐसे बाँध लेती है जो उड़ते पक्षी आत्मा को पिंजरे का पक्षी बना देती है। तो अपने आपको देखो, स्वतन्त्र पक्षी हैं वा पिंजरे के पक्षी हैं?... परतन्त्रता सदैव नीचे की ओर ले जायेगी अर्थात् उतरती कला की तरफ ले जावेगी। (अ.वा.26.4.77 पृ.98 आ., अं., 99 आ)	Download
76	अधिकारी अधीन नहीं	कोई भी किनारा, अल्पकाल का सहारा बन बाप के सहारे वा साथ से दूर कर देंगे। (अ.वा.30.4.82 पृ.402 अं.)	Download
77	अधिकारी अधीन नहीं	जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्हों का सर्व के ऊपर अधिकार होता है। वह कोई भी बात के अधीन नहीं होते। अगर अधीन होते हैं, देह के, देह के सम्बन्धियों वा देह के कोई भी वस्तुओं से तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते। अधिकारी अधीन नहीं होते हैं। सदैव अपने को अधिकारी समझने से कोई भी माया के रूप के अधीन बनने से बच जायेंगे। (अ.वा.24.1.70 पृ.183 आ)	Download
78	अधिकारी अधीन नहीं	विष्णु की शेष शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह अधीन हो गये, वह अधिकारी हो गये, नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता। साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गये। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गये। (अ.वा.12.12.79 पृ.111 म)	Download
79	अधिकारी अधीन नहीं	कोई अपने में बाप के डायरैक्ट साथ और सहयोग लेने की हिम्मत न देख, राह पर चलने वाले साथियों को ही पण्डा बनाते...बाप के बजाय कोई आत्मा को सहारा समझ लेते हैं; इसलिए बाप से किनारा हो जाता है।... अविनाशी बाप का आधार न ले अल्पकाल के अनेक आधार बना लेते हैं। (अ.वा.3.5.77 पृ.117अं., 118 आ)	Download
80	अधिकारी अधीन नहीं	कर्म-बन्धनी आत्मा बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी।... वह याद के सब्जेक्ट में सदा कमज़ोर होगी, नालेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी; लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी।... सेवा की वृद्धि कर लेंगे; लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी।... स्पीकर बन सकती है; लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती। (अ.वा.8.4.82 पृ.357 आ.)	Download
81	अधिकारी अधीन नहीं	जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं कि उसने साँप को भी जीता, उसके सिर पर पाँव रखकर नाचा। तो यह आपका चित्र है। कितने भी ज़हरीले साँप हों; लेकिन आप उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाले हो। (अ.वा.25.11.85 पृ.58 आ)	Download
82	अधिकारी अधीन नहीं	अधीन न होना अर्थात् शेर व शेरनी की चाल चलना। (अ.वा.23.4.77 पृ.95 अं.)	Download
83	आठ आने दो रोटी	हिम्मत है, अपना शरीर निर्वाह आपे ही कर सकते हो तो फिर झंझट में क्यों (पड़ें)। पेट कोई बहुत थोड़े ही खाता है। बहुत-2 करके 30 रुपया पेट के लिए बिल्कुल काफ़ी है। एक रुपया रोज़, बल्कि होना तो आठ आना चाहिए, सिर्फ दूध, चाय की आदत छोड़ दें।... एक सब्ज़ी सस्ती में सस्ती बनाओ। दो/तीन वेले(टाइम) के लिए एक ही सब्जी बना दो। रोटी भी बना दो।... बस। रोटी खाई और कोई फुर्ना नहीं।.... इसका मतलब यह नहीं कि धंधा आदि नहीं करना है, नहीं तो फिर आठ आना कहाँ से लावेंगे? भीख नहीं माँगनी है। यह तो घर है। शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। अगर सर्विस न करते हैं, मुफ्त में खाते हैं तो वह गोया भीख पर चलना हो गया। (मु.14.2.74 पृ.2 मध्यादि)	Download

84	आठ आने दो रोटी	देखेंगे यह बहुत फँस पड़े हैं धंधे आदि में, तो राय देंगे क्यों इतना माथा मारते हो? कितना समय तुम जियेंगे? पेट तो एक/दो रोटी माँगता है। उनसे ग़रीब भी चलते तो साहूकार भी चलते हैं। साहूकार लोग अच्छी रीति खाते हैं, फिर रोगी भी बनते हैं। भील लोग देखो कितने मज़बूत रहते हैं, और खाते क्या हैं? कितना काम करते हैं। अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं। पेट के लिए बहुत में बहुत आठ आने में भोजन मिल सकता है। तो इस समय और सब आसक्तियाँ छोड़ देनी चाहिए। दो रोटी मिली, पेट भरा। बस, बाप को याद करना है। (मु.11.7.78 पृ.2 अं.)	Download
85	आठ आने दो रोटी	पेट तो एक पाव रोटी खाता है। जास्ती लोभ में नहीं रहना है। जास्ती धन होगा तो वह खत्म हो ही जावेगा। (मु.30.6.71 पृ.1 आदि)	Download
86	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	कोई भी देहधारी कब राजयोग का ज्ञान वा याद की यात्रा सिखला नहीं सकते। (मु.19.4.74 पृ.1 मध्यांत)	Download
87	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	बाप जब तक न आये तो राजयोग कहाँ से आए? (मु.3.2.74 पृ.1 अंत)	Download
88	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	जब समय होगा तब बाप खुद ही आकर नालेज देते हैं। मनुष्य दे नहीं सकते हैं। ऐसे बहुत सन्यासी बाहर में जाते हैं। कहते हैं भारत का योग सिखाने आये हैं; परन्तु वे कोई राजयोग नहीं (सिखाते); लेकिन गपोड़ा मारते हैं। (मु.15.5.73 पृ.2 अं.)	Download
89	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	राजयोग मनुष्य, मनुष्यों को सिखला न सके। (मु.16.9.77 पृ.2आ.)	Download
90	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं। कोई शरीरधारी सिखला न सके। (मु.28.6.74 पृ.3 अं.)	Download
91	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	तुम जानते हो निराकार परमपिता परमात्मा इस ब्रह्मा दलाल द्वारा हमको योग सिखलाते हैं। अथवा हम आत्माओं की सगाई करते हैं। सहज राजयोग सिखलाते हैं। यह है ईश्वरीय योग। बाकी सभी योग सिखलाने वाले मनुष्य हैं। मनुष्य जो भी योग सिखावेंगे वह राँग। दुर्गति तरफ ही ले जावेंगे। मनुष्य, मनुष्य को दुर्गति का रास्ता बताते हैं आसुरी मत पर; इसलिए उसको आसुरी योग कहा जाता है। (मु.22.4.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
92	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	बाप के सिवाय जो भी योग सिखलाते हैं वह खुद भी दुर्गति को पाते हैं। फालोवर्स को भी दुर्गति दिलाते हैं। भगवान ने जब योग सिखाया तो स्वर्ग बन गया। मनुष्यों के योग सिखलाने से तो स्वर्ग से नर्क बन गया। दूसरा कोई सिखला न सके। उल्टी चलन कोई चलते हैं तो बुद्धि का ताला ही बन्द हो जाता है। (मु.22.4.72 पृ.3 अं.)	Download

93	एडवांस पार्टी	एडवांस पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है; लेकिन कोई-2 का पार्ट अन्त तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवांस पार्टी का पार्ट है, किसका अंत:वाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-2 महत्व है। फर्स्ट सेकेण्ड की बात नहीं, वैरायटी पार्ट का महत्व है। एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह ज़ोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामीग्रामी हैं। (अ.वा.25.1.80 पृ.245 अं., 246 आ.)	Download
94	एडवांस पार्टी	बहुत बच्चे एडवांस में भी जाने वाले हैं। उनका कोई अफसोस नहीं करना है। जाकर रिसीव करेंगे। रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना। माँ-बाप तो पहले जाने चाहिए। (मु.27.2.73 पृ.4 मध्यादि)	Download
95	एडवांस पार्टी	एडवांस का ग्रुप उसमें भी जो विशेष नामी-ग्रामी आत्माएँ हैं उनका संगठन बहुत मज़बूत है। श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए धरणी तैयार करने का वण्डरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्र गति से चल रहा है। (अ.वा.18.1.80 पृ.222 अं.)	Download
96	एडवांस पार्टी	ऐसा कालेज कब देखा, जहाँ इन एडवांस बतावें कि तुम यह बनेंगे। (मु.23.6.69 पृ.3 आ.)	Download
97	एडवांस पार्टी	एडवांस में भी अच्छे-2 महारथी जाते हैं, घोड़े सवार भी जाते हैं। (मु.13.1.69 पृ.4 आ.)	Download
98	एडवांस पार्टी	एडवांस पार्टी का क्या कार्य चल रहा है? आप लोगों के लिए आज सारी फ़ील्ड तैयार कर रहे हैं। उनके परिवार में जाओ, न जाओ; लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है, उसके लिए वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन न्यू ब्लड का रिगार्ड ज़्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे उतना छोटों की बुद्धि काम करेगी, जो कि बड़ों की नहीं। बड़ी आयु की तुलना में फिर भी छोटेपन में सतोप्रधानता रहती है। कुछ न कुछ प्यूरिटी की पावर होने के कारण उनकी बुद्धि जो काम करेगी वह बड़ों की नहीं करेगी। यह चेन्ज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं वह समझते हैं कि हम तो पुराने ज़माने के हैं, यह आजकल के हैं। उनको रिगार्ड न देंगे और उन्हें बड़ा समझ नहीं चलावेंगे तो काम नहीं चलेगा। पहले बच्चों को रोब से चलाते थे। अभी ऐसे नहीं।... छोटे ही कमाल कर दिखावेंगे। एडवांस पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है; लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवांस में जाने के लिए रुके हुए हैं। उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है।(अ.वा.2.8.73 पृ.151 म, 152 आ)	Download
99	एडवांस पार्टी	एडवांस पार्टी में किसका पार्ट है, वह दूसरी बात है, बाकी यह सीन देखना तो बहुत आवश्यक है। जिसने अंत किया उसने सब कुछ किया।... तो जाने का संकल्प नहीं करो।... अकेले जायेंगे तो भी एडवांस पार्टी में सेवा करनी पड़ेगी; इसलिए जाना है यह नहीं सोचो, सबको साथ ले जाना है, यह सोचो। (अ.वा.26.11.84 पृ.32 अं.)	Download

100	एडवांस पार्टी	वह भी (एडवांस पार्टी) अपना संगठन मज़बूत बना रहे हैं। उन्हों का कार्य भी आप लोगों के साथ-2 प्रत्यक्ष होता जायेगा। अभी तो सम्बन्ध और देश के समीप हैं; इसलिए छोटे-2 ग्रुप उन्हों में भी कारणे-अकारणे आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं। .... कर्मणा वाले भी गये हैं, राज्य स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गये है। साथ-2 हिम्मत-उल्लास बढ़ाने वाले भी गये हैं। .... ग्रुप तो अच्छा बन रहा है; लेकिन दोनों ग्रुप साथ-2 प्रत्यक्ष होंगे। .... वह भी पार्टी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लैन बना रहे हो ना, तो वह भी यूथ हैं अभी। .... अन्दर तो बहुत जोश है; लेकिन बाहर से कुछ कर नहीं सकते हैं। यह भी एक स्थापना के राज़ में सहयोग का पार्ट है। मन से मिले हुए नहीं हैं, मज़बूरी से मिले हैं; लेकिन मज़बूरी का मिलन भी रहस्य है। अभी स्थापना की गुह्य रीति-रस्म स्पष्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है........ और वह भी क्वेश्चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं; लेकिन दोनों ही ड्रामानुसार बढ़ रहे हैं। (अ.वा.18.1.85पृ.133 म.,134 आ.)	Download
101	एडवांस पार्टी	एडवांस पार्टी पूछ रही थी कि अभी हम तो एडवांस का कार्य कर रहे हैं; लेकिन हमारे साथी हमारे कार्य में विशेष क्या सहयोग दे रहे हैं? वह भी माला बना रहे हैं। कौन-सी माला बना रहे हैं? कहाँ-2, किस-2 का नई दुनियाँ के आरम्भ करने का जन्म होगा, वह निश्चित हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में विशेष सहयोग सूक्ष्म शक्तिशाली मंसा का चाहिए। जो शक्तिशाली स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्माएँ हैं वह स्वयं भल पावन हैं; लेकिन वायुमण्डल व्यक्तियों का, प्रकृति का तमोगुणी है। अति तमोगुणी के बीच अल्प सतोगुणी आत्माएँ कमलपुष्प समान हैं।... एडवांस पार्टी वाले कोई स्वयं श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान करने के लिए तैयार हुए हैं और हो रहे हैं, कोई तैयार कराने में लगे हुए हैं। उन्हों की सेवा का साधन है मित्रता और समीप के सम्बन्ध। (अ.वा.18.1.86 पृ.164 म.,165 अं.,166 आं.)	Download
102	आस्ट्रेलिया	पाण्डव सेना और शक्ति सेना को देख बापदादा भी हर्षित होता है। हरेक ने मायाजीत बनने का दृढ़ संकल्प किया है ना। सारा ग्रुप चैलेन्ज करने वाला है।... हिम्मत बहुत अच्छी रखी है। अभी हिम्मत के साथ जो भी कदम उठाते हो वह योगयुक्त हो। पहले ईश्वरीय मर्यादा प्रमाण है या नहीं है वह वेरीफाय कराकर अमल में लाते जाओ, फिर एक-2 एग्ज़ाम्पुल बन जाएँगे।.... अकेला नहीं समझो। एक-2 बहुत कमाल कर सकते हैं। जैसे दुनियाँ वाले बताते हैं कि एक-एक सितारे में दुनियाँ है, ... अर्थात् अपनी-2 राजधानी है। तो एक-एक को अपनी-2 राजधानी स्थापन करनी है। कुमारियों को देख बापदादा हर्षित होते हैं। कुमारियाँ बहुत सर्विस में आगे जा सकती हैं।.... यह कुमारियों का संगठन बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। (अ.वा.13.2.78 पृ.52 अं., 53 आ.)	Download
103	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रेलिया निवासियों से बापदादा का विशेष स्नेह है, क्यों? क्योंकि सदा एक अनेकों को लाने की हिम्मत और उमंग में रहते हैं।... एक अनेकों के निमित्त बन जाता है।... आस्ट्रेलिया वाले माया को भी थोड़ा ज़्यादा प्रिय हैं।... कितने अच्छे-2 थोड़े समय के लिए ही सही; लेकिन माया के बन तो गये हैं ना। आप सब तो कच्चे नहीं हो ना? ... किसी भी बात को पूरा न समझने के कारण क्यों और क्या में आ जाते हैं तो माया के आने का दरवाज़ा खुल जाता है।.... फिर भी संख्या में, हिम्मत में, निश्चय में, अच्छा नं० है। (अ.वा.3.3.84 पृ.191 आ.)	Download
104	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रेलिया में शक्तियाँ ज्यादा हैं या पाण्डव? (दोनों समान हैं) शक्तियाँ थोड़ी रेस्ट कर रही हैं, फिर ज़्यादा उड़ेंगी ना, इसलिए रेस्ट कर रही हैं। बाकी जाना तो नं० वन है। ऐसे कई करते हैं, बीच में थोड़ी रेस्ट ले करके फिर फास्ट जाते हैं और मन्ज़िल पर पहुँच जाते हैं। (अ.वा.14.1.82 पृ.239 अं.)	Download

105	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रेलिया वालों का जो दूसरे धर्म में पार्ट बजाने का निमित्त मात्र समय था, वह समय अभी समाप्त हो गया।... इसलिए यह भी विशेषता है कि जो भी आते हैं, मेजा़रिटी वह अपने लगते हैं, दूसरे धर्म के नहीं लगते हैं। आस्ट्रेलियन अथवा विदेशी होते हुए भी चात्रक आत्माएँ लगती हैं। ...गलती से दूसरी डाली पर चले गए हैं। सेवा के लिए यह भी एक थोड़े समय का पार्ट मिला हुआ है, नहीं तो विदेश की सेवा कैसे होती?... आस्ट्रेलिया निवासी के बजाय अपने को वहाँ रहते भी, मधुबन निवासी समझ कर रहते हो ना। जन्म का घर मधुबन है। साकार घर मधुबन और निराकारी घर परमधाम। आस्ट्रेलिया आपका दफ्तर है।..... घर वालों से स्नेह होता है। दफ्तर वालों से काम चलाना होता है। तो ऐसे चलो।.... विनाश में आस्ट्रेलिया सारा एक ही टापू बन जाएगा। कुछ पानी में आ जाएगा, कुछ ऊपर रह जाएगा। आप लोग सेफ़ रहेंगे।... जब तुम सभी सेफ़ स्थान पर पहुँच जायेंगे फिर विनाश होगा। जैसे गायन है- भट्ठी में बिल्ली के पूँगरे सेफ़ रहे। तो जो बच्चे बाप की याद में रहने वाले हैं, वह विनाश में विनाश नहीं होंगे; लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोड़ेंगे।.... जो बहुत समय के स्नेही और सहयोगी रहते हैं उनको अन्त में मदद ज़रूर मिलती है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे स्थूल वस्त्र उतार रहे हैं। ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे। सारा दिन में चलते-चलते बीच-बीच में अशरीरी बनने का अभ्यास ज़रूर करो, जैसे ट्रेफिक कन्ट्रोल का रिकार्ड बजता है, वैसे वहाँ कार्य में रहते भी बीच-बीच में अपना प्रोग्राम आपे ही सेट करो तो लिंक जुटा रहेगा।.... आप लोगों में यह भी एक विशेषता है कि जब चाहो नौकरी छोड़ सकते हो, जब चाहो कर सकते हो। निर्बंधन हो। सिर्फ मन और संस्कारों का बंधन न हो। वैसे देह और देह के धर्मों से फ्री हो, आधे बंधनों से पहले ही फ्री हो, बाकी थोड़े बन्धनों को याद और सेवा से ख़त्म कर दो। (अ.वा.4.1.80 पृ.178 म.,179आ., 180म.)	Download
106	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रेलिया वालों ने धैर्यता का गुण बहुत अच्छा दिखाया है।... यह सारा ही शुभचिंतक ग्रुप है ना। परचिन्तन को तलाक देने वाले सदा शुभचिंतक।... तो आस्ट्रेलिया में सदा पावरफुल वायब्रेशन, पावरफुल सर्विस और सदा फरिश्तों की सभा दिखाई देगी। शक्तियों और पाण्डवों का संगठन भी अच्छा है।... आस्ट्रेलिया निवासियों ने कितने सेवाकेन्द्र खोले हैं?... अपनी सेवा समझ कार्य करो, ऐसा नहीं यह जर्मनी की है, यह आस्ट्रेलिया की है। नहीं। बाबा की सेवा वा विश्व की सेवा हमारी है। इसको कहा जाता है बेहद की वृत्ति।.... अभी आस्ट्रेलिया से कोई ऐसा वी.आई.पी. नहीं लाए हो, ऐसा वी.आई.पी. लाओ, जो भारत की सरकार को उनका स्वागत करना पड़े। ... अभी छोटी-2 तूतारियों तक पहुँचे हो। बिगुल बजाना पड़ेगा, फिर आप सबको बापदादा बहुत अच्छी गिफ्ट देंगे। जब ऐसा आवाज़ निकलेगा तब जय-जयकार की शहनाइयाँ बजेंगी, नहीं तो भारत के कुम्भकरण ऐसे सहज जागने वाले नहीं हैं।.... आस्ट्रेलिया निवासी जितने ही शुरू में स्वतन्त्र संस्कार के रहे उतना ही अभी मर्यादा में भी अच्छे रह रहे हैं। अभी बाप के मीठे बन्धन में आ गये हैं। (अ.वा.19.3.81 पृ.71 आ., 72 आ.)	Download

107	आस्ट्रेलिया	हर कदम में पद्मों की कमाई जमा हो रही है? ..... सदा एक/दो से सन्तुष्ट रहते हो? सब सदा एक मत और एक रस हैं, यह भी एक बहुत अच्छा एग्ज़ाम्पल है। एक ने कहा, दूसरे ने माना, यह है सच्चे-2 स्नेह का रेसपांड। ऐसे एग्ज़ाम्पल को देख और भी सम्पर्क में आने के लिए हिम्मत रखते हैं। संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। एक बाप, एक मत, यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते हैं।.... सदा अपने को निर्बन्धन आत्मा महसूस करते हो?.... नालेजफुल बन्धन में कैसे रह सकते हैं?.... जब ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गये तो बन्धन कैसे हो सकता? ब्रह्मा बाप निर्बन्धन है तो बच्चे बन्धन में कैसे रह सकते?... बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं; लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं।.... तो जिस समय बाप माला सिमरण करते, उस समय आप सो तो नहीं जाते हो? शक्तियाँ तो सोने वालों को जगाने वाली हैं, खुद कैसे सोयेंगी? रिज़ल्ट अच्छी है।... आस्ट्रेलिया वालों को अच्छा सर्टीफिकेट मिल रहा है। (अ.वा.19.3.81 पृ.74 म., 75, 76)	Download
108	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रेलिया वालों के ऊपर तो बापदादा को सदा ही नाज़ है, क्यों? क्योंकि आस्ट्रेलिया निवासियों ने बाप को पहचान अपना बनाने में नं. वन रिकार्ड दिखाया है। संख्या में देखो, वृद्धि में देखो, क्वालिटी में देखो, सबमें आगे हैं और अच्छी तरह से सम्भाल रहे हैं; इसलिए आस्ट्रेलिया कम नहीं है। लण्डन में फिर भी भारतवासी आत्माएँ ज़्यादा हैं; लेकिन आस्ट्रेलिया में सब पर्दे के अन्दर छिपे हुये बाप को पहचानने में नं. वन हैं। (अ.वा.14.1.82 पृ.240 आ)	Download
109	आस्ट्रेलिया	सभी महावीर हो ना। महावीर ग्रुप अर्थात सदा के लिए माया को विदाई देने वाले।.... आस्ट्रेलिया को सदा बापदादा बहादुरों का स्थान कहते हैं।.... जब बाप साथ है तो बाप के साथ होते माया आ नहीं सकती।... सभी अनुभवी आत्माएँ दिखाई दे रही हैं। सेवाधारी भी हैं। जैसे सेवा की विशेषता लण्डन का विशेष पार्ट है, वैसे आस्ट्रेलिया का भी विशेष पार्ट है। (अ.वा.25.12.83 पृ.74 अं., 75 आ.)	Download
110	आस्ट्रेलिया	बापदादा को आस्ट्रेलिया निवासी अति प्रिय हैं, क्यों?..... आस्ट्रेलिया की विशेषता है जो स्वयं में हिम्मत रख चारों ओर सेवाधारी बन सेवास्थान खोलने की विधि अच्छी है।..... आस्ट्रेलिया को इतनी पालना का चान्स नहीं मिलता है; लेकिन फिर भी अपने पाँव पर खड़े होकर सेवा में वृद्धि और सफलता अच्छी कर रहे हैं। सभी याद और सेवा के शौक में अच्छे रहते हैं।... मेज़ारिटी निर्विघ्न हैं। कुछ अच्छे-2 बच्चे चले भी गये हैं; लेकिन फिर भी बाप को अभी भी याद करते रहते हैं; इसलिए उन्हों के प्रति भी सदा शुभ भावना रख उन्हों को भी फिर से बाप के समीप ज़रूर लाना है।.... बापदादा को डबल विदेशी बच्चों पर नाज़ है। आपको भी बाप पर नाज़ है ना! आपको भी यह नशा है ना कि सारे विश्व में से हमने बाप को पहचाना।... अभी बापदादा ने सभी का फोटो निकाल लिया है, फिर फोटो दिखाएँगे कि देखो, आप आये थे।..... आस्ट्रेलिया की विशेषता है जो अधिकतर पाण्डव सेना ज़िम्मेवार है, नहीं तो मेजारिटी शक्तियाँ होती हैं। यहाँ पाण्डवों ने कमाल की है। पाण्डव अर्थात् पाण्डवपति के सदा साथ रहने वाले। (अ.वा.16.1.84 पृ.113 म., 114 आ.)	Download
111	अंग से अंग न लगे	तुमको बैठना भी ऐसे चाहिए जो अंग अंग से न लगे।....तुम उन्हों (के नेत्रों) का संग भी न करो। मेहतरों से मनुष्य किनारा करते हैं न। बाप ने समझाया है यह सब मनुष्य मेहतर ही मेहतर हैं। (मु.17.3.74 पृ.2 मध्यादि)	Download
112	अंग से अंग न लगे	यहाँ पर अलग-2 होकर बैठना है। अंग-अंग से ना मिलना चाहिए; क्योंकि हर एक की अवस्था में, योग में रात-दिन का फर्क है। (मु.12.10.74 पृ.1 आ.)	Download

113	अफ्रीका	सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। .... तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लैन बनायेगा वही प्रैक्टिकल होगा। .... पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियाँ तो आपके तरफ बहुत आती हैं; लेकिन जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। .... आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं - कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं- वह तो भिखारी हैं, उनका भी पेट भर जाता है, तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते? इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ़ छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घंटे का पेपर होता है। अगर बापदादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल, एक भरोसा है, तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। .... तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता; लेकिन है कुछ नहीं। .... मेहनत करके आए हो, परिस्थिति पार करके आए हो, इसलिए बापदादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है, जैसे स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहाँ, कोई कहाँ, जाकर पड़ते हैं, तो यह भी द्वापर में सब बिछुड़ गये- कोई विदेश में, कोई देश में, अभी आप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिक्र रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना - भट्ठी के बीच पूँगरे बच गये। क्या भी हो; लेकिन आप सेफ हो, सिर्फ़ माया प्रूफ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। .... एक-2 रत्न वैल्युएबल है; क्योंकि अगर वैल्युएबल रत्न नहीं होते तो कोटों में कोई आप ही कैसे आते? जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है, उसने मुझे अपना लिया। एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है, आप तो बच्चे बन गये तो कितना नशा, कितनी ख़ुशी होनी चाहिए। .... जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं।............... बाप को जान लिया, पा लिया, इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना, बच्चे उठो, देश कोई भी हो; लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो। (अ.वा.13.2.78 पृ.47 आ., 48 आ., 49 आ.)	Download
114	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	**तुमको यह मैसेज तो (सारी) दुनियाँ को देना है। अख़बार वाले भी आपे ही सर्विस करेंगे। अभी आनाकानी करते हैं, समय पर आपे ही डालेंगे, जिससे सभी को पैगाम मिल जावेगा। (मु.13.2.69 पृ.3 अं.)**	Download
115	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	**तुम्हारा अख़बारों द्वारा भी बहुत काम होगा। एक दिन तुम्हारे यह चित्र भी अख़बार में पड़ेंगे। दो पेज इकट्ठे में तुम्हारे चित्र अच्छे पड़ सकते हैं।... आगे चलकर फ्री भी छापेंगे।... यह सारे चित्र तुम्हारे सारे(सारी) दुनियाँ में जाने वाले हैं। (मु.16.11.73 पृ.4 आ.)**	Download
116	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	**कई बच्चे तो अख़बार ऐसे पढ़ते हैं जैसे बुद्धू लोग पढ़ते हैं। जैसे व्यवहारी मनुष्य पढ़ते हैं। मतलब नहीं निकालते कि अख़बार पढ़ा जो पढ़ा फिर उस बातों का जवाब दिया। (मु.11.10.72 पृ.3 आ.)**	Download
117	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	**दिन-प्रतिदिन प्रदर्शनी की धूम मचती जावेगी। आखरीन विलायत के अख़बार में भी पड़ेगा। शुरू-2 में जब भट्ठी बनी तो सभी विलायत तक अख़बार में नाम गया था। अब फिर यह भी अख़बार में पड़ेगा कि यह गाड फादर आये सभी को लिबरेट कर रहे हैं। (मु.25.11.71 पृ.2 म.)**	Download
118	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	**लिट्रेचर से भी कोई मुश्किल समझ सकते हैं। तुम लाकेट से भी समझा सकते हो। (मु.7.6.78 पृ.3 आ.)**	Download

119	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	सिर्फ कोई को लिटरेचर देने से समझ न सकेंगे। समझाने वाला टीचर ज़रूर चाहिए। टीचर सेकेण्ड में समझावेगा। यह तुम्हारा बाबा है, यह दादा है, यह बेहद का बाप स्वर्ग का रचयिता है। सिर्फ कोई को लिटरेचर दिया तो देखकर फेंक देंगे। कुछ भी समझेंगे नहीं। (मु.28.8.73 पृ.3 आ.)	Download
120	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	सिर्फ लिटरेचर से कोई का समझना मुश्किल है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारा ठक्का होता जावेगा। (मु.6.5.69 पृ.4 अं.)	Download
121	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	दुनियाँ वाले इन बातों से क्या जानें। उन्हों को अगर तुमने लिटरेचर दिया तो पढ़कर फेंक देते हैं और चने दिये तो खा लेवेंगे। यह बन्दर क्या जाने ज्ञान रत्नों को! (मु.6.10.72 पृ.3 म.)	Download
122	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	तुमको तो कोई पुस्तक आदि नहीं पढ़ना है। न बनाना है। यह मुरली छपाते भी हैं थोड़ा रिफ्रेश होने लिए। बाकी कोई भी किताब आदि नहीं रहेगी। (मु.9.6.75 पृ.1 अं.)	Download
123	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	सिर्फ़ कोई को लिटरेचर दिया तो देखकर फेंक देंगे। कुछ भी समझेंगे नहीं। इतना ज़रूर समझाना है बाप आया हुआ है। यह ढिंढोरा पिटवाना तुम्हारा फर्ज़ है। (मु.2.7.73 पृ.3 आ.)	Download
124	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	आखरीन तुम्हारी यह समझानी और चित्र आदि अख़बारों में भी पड़ेंगे। सीढ़ी भी अख़बार में पड़ेगी। (मु.9.10.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
125	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	यह बाप तुम बच्चों को सन्मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो, फिर भी टीचर के सिवाय तुमको कोई समझा न सके। (मु.19.1.75 पृ.2 मध्यांत)	Download
126	भोग-ध्यान-दीदार	यह भोग आदि तो न ज्ञान है, न योग है। इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। (मु.18.7.70 पृ.4 अं.)	Download
127	भोग-ध्यान-दीदार	यह भोग आदि भी कोई समय बन्द हो जावेगा। बापदादा की अवज्ञा का फल बहुत कड़ा है। गालियाँ तो आधा कल्प देते आये हो। अभी बाप सम्मुख आये हैं उनको भी पूरा न पहचाना तो बाक़ी क्या सीखेंगे? इसमें बहुत महीन बुद्धि चाहिए। बाप इस रथ द्वारा कहते हैं मुझे याद करो। मैं पतित-पावन हूँ। गायन भी है तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ। तो ज़रूर यहाँ रथ में होगा ना। ऊपर में कैसे होगा? (मु. 9.1.69 पृ.4 म.)	Download
128	भोग-ध्यान-दीदार	यह भोग आदि की भी रसम-रिवाज़ है। बाकी इनमें कुछ है नहीं। इनमें माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। यह न ज्ञान है, न योग है। (मु.13.11.70 पृ.2 अं.)	Download
129	भोग-ध्यान-दीदार	ऐसे कोई मत समझे भोग लगता है वह हम खाते हैं तो बुद्धियोग शिवबाबा (से) लग जावेगा। नहीं। यह तो शुद्ध भोजन है; परंतु वह मेहनत न की (याद करने की) तो कुछ भी न हुआ। (मु. 26.4.72 पृ.2 आ.)	Download
130	भोग-ध्यान-दीदार	जैसे पिछाड़ी की मुरली में यह भी डायरैक्शन था कि भोग के समय वैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है; क्योंकि यह घूमना-फिरना अब शोभता नहीं। अब तो निरन्तर याद की यात्रा और जो शिक्षा मिली है उसे प्रैक्टिकल लाइफ़ में धारण करने का सबूत देना है। अगर ब्रह्मा बाबा के साथ स्नेह है तो स्नेह की निशानी क्या है? स्नेह यह नहीं कि दो आँसू बहा दिये; परन्तु स्नेह उसको कहा जाता है- जिस चीज़ से उसका स्नेह था उससे आपका हो। (अ.वा.21.1.69. पृ.23 म.)	Download

131	भोग-ध्यान-दीदार	यह भी बच्चों को समझाया गया है पहले खिलाने वाले को खिलाकर खाना है। शिवबाबा के यज्ञ से खाते हैं तो पहले उनको भोग लगाना पड़े। यह सब सूक्ष्मवतन में सा० होते हैं। ड्रामा में नूँध है। तुमको भोग लगाना है शिवबाबा को। वह तो निराकार है। (मु.1.9.78 पृ.3 अ.)	Download
132	भोग-ध्यान-दीदार	ऐसे नहीं ध्यान कोई अच्छा है, नहीं। योग ध्यान को नहीं कहा जाता। याद को ध्यान नहीं कहेंगे। (मु.21.9.77 पृ.2 मध्यांत)	Download
133	भोग-ध्यान-दीदार	बाबा से तुमने ज़्यादा देखा है। मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा है। कभी भी ध्यान में न गयी है। ज्ञान में कितनी तीखी गई है। (मु.20.5.78 पृ.3 आ.)	Download
134	भोग-ध्यान-दीदार	शुरू में यह संदेशी और गुल्ज़ार बहुत सा. करती थीं। इन्होंने बड़े पार्ट बजाये हैं; क्योंकि भट्ठी में इन्हों को बहलाना था। (मु.25.1.75 पृ.3 आ.)	Download
135	भोग-ध्यान-दीदार	मूल बात है याद और ज्ञान। बाकी दीदार तो कोई काम का नहीं। बाप को पहचान लिया तो फिर पढ़ना शुरू करो। (मु.11.6.75 पृ.3 अं.)	Download
136	भोग-ध्यान-दीदार	ध्यान में जास्ती जाने से माया के भूतों की प्रवेशता हो जाती है। ऐसे बहुत हैं जो फ़ालतू ध्यान में जाते हैं, क्या-2 बोलते हैं। उन पर विश्वास नहीं करना। ज्ञान तो बाबा की मुरली में मिलता रहता है। बाप ख़बरदार करते रहते हैं। ध्यान कोई काम का नहीं है। (मु.17.6.75 पृ.2 आ.)	Download
137	भोग-ध्यान-दीदार	ध्यान में जो जाते हैं (उनकी) अवस्था कच्ची है। घड़ी-2 मम्मा आई, बाबा आया, फिर कहेंगे विश्वकिशोर आया। कब कुत्ता-बिल्ला भी आ जावेगा। (मु.30.3.68 पृ.4 अं.)	Download
138	भोग-ध्यान-दीदार	यहाँ भी साक्षात्कार तो बहुतों को होते हैं; परन्तु उससे सद्गति नहीं हो सकती। जब तक रूबरू ज्ञान-योग की शिक्षा पूरी (न) लेवे। शिक्षा बिगर सा० से कुछ नहीं होता। (मु.29.5.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
139	भोग-ध्यान-दीदार	ऐसे नहीं कि हमको साक्षात्कार हो तो माने। यह तो बुद्धि से समझने की बात है। (मु.24.10.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
140	भोग-ध्यान-दीदार	कई कहते हैं कि सा० हो। तो बाबा समझ जाते हैं कि कुछ भी समझा नहीं है। सा० करना है तो जाकर नौधा भक्ति करो। (मु.24.9.70 पृ.3 आ.)	Download
141	भोग-ध्यान-दीदार	ध्यान का जो पार्ट चलता है कि फलाने में मम्मा आई, शिवबाबा आया, यह भी एक माया है। बड़ी ख़बरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं उससे समझ जाना है। कोई-2 में भूत आ जाता है। चर्ये-खर्ये बालक में भी कहेंगे शिवबाबा आया है। वह मुरली चलाते हैं। (मु.13.11.72 पृ.2 म.)	Download
142	भोग-ध्यान-दीदार	सप्ताह पाठ का लास्ट में भोग पड़ता है, तो बापदादा भी अभी भोग डाले? आप लोग तो हर गुरूवार को भोग लगाते हो; लेकिन बापदादा तो महाभोग करेंगे ना।... पहले स्वयं को भोग में समर्पण करो। भोग भी बाप के आगे समर्पण करते हो ना। अभी स्वयं को सदा प्रत्यक्ष फल स्वरूप बनाकर समर्पण करो, तब महाभोग होगा। अपने आपको सम्पन्न बनाकर आफर करो, सिर्फ स्थूल भोग की आफर नहीं करो, सम्पन्न आत्मा बन स्वयं को आफर करो। (अ.वा.28.4.82 पृ.398 आ)	Download
143	भोग-ध्यान-दीदार	बाबा कहते हैं यह सा० भी नुकसानकारक है। सा० में जाने (से) पढ़ाई और योग दोनों बन्द हो जाते हैं। टाइम वेस्ट हो जाता है; इसलिए ध्यान आदि का शौक तो बिल्कुल नहीं रखना है। इसमें माया एकदम सत्यानाश कर देती है। यह भी बड़ी बीमारी है, जिससे फिर काँटा हो जाते हैं। (मु.26.1.75 पृ.3 आ.)	Download

144	भोग–ध्यान–दीदार	दीदीजी से- भविष्य राज्य की रायल फैमिली अभी से प्रत्यक्ष होती जायेगी ना। जो बापदादा के बोल सुने हैं कि अंत में सब स्पष्ट साक्षात्कार होगा, तो क्या वह दिव्य दृष्टि से होगा? साक्षात्कार में, कि साक्षात् रूप में होगा? सबको दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार होने का ड्रामा तो और होगा; लेकिन यह साक्षात् रूप में साक्षात्कार होगा। (अ.वा.19.12.78 पृ.135 आ)	Download
145	भोग–ध्यान–दीदार	एम आब्जेक्ट सामने है ना। ल०ना० का चित्र देख रहे हो ना। ऐसे नहीं कि हमको साक्षात्कार हो तो मानें। यह तो बुद्धि से समझने की बात है। इन आँखों से चित्र देख रहे हो ना। (मु.24.10.78 पृ.1 अं.)	Download
146	भक्त	सारी दुनियाँ के मनुष्य मात्र भक्त हैं। ज्ञान सिखलाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा शिव है।... भक्ति की चमक कितनी है, कितनी धमाधम है। तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है। और कहाँ भी सतसंग आदि में जावेंगे, आवाज़ ज़रूर होगा। गीता(गीत) गावेंगे, भक्ति करेंगे। यहाँ तो बाबा यह रिकॉड भी पसन्द नहीं करते हैं। आगे चल शायद यह भी बन्द हो जाये। (मु.24.8.76 पृ.1मध्यांत 2अं)	Download
147	भक्त	अगर अंशमात्र भी किसी स्वभाव-संस्कार के अधीन हैं, नाम-मान-शान के मँगता (माँगने वाले) हैं, 'क्या' और 'कैसे' के क्वेश्चन में चिल्लाने वाले, पुकारने वाले, भक्त समान 'अन्दर एक, बाहर दूसरा', ऐसे धोखा देने के बगुले भक्त के संस्कार हैं, तो जहाँ भक्ति का अंश है वहाँ ज्ञानी तू आत्मा हो नहीं सकती; क्योंकि भक्ति है रात और ज्ञान है दिन। (अ.वा.12.1.77 पृ.11 अं, 12 आ.)	Download
148	भक्त	यह मेले प्रदर्शनियाँ सब जगह जावेंगे। तो जो तीखे बच्चे हैं, जिनके पास प्वाइन्ट्स हैं उनकी मदद माँगते हैं। उन्हों के नाम जपते रहते हैं। एक तो शिवबाबा को जपेंगे, फिर ब्रह्मा बाबा को, फिर कुमारका को, गंगे को, मनोहर को जपेंगे। भक्तिमार्ग में हाथ से माला फ़ेरते हैं, अभी फिर मुख से नाम जपते हैं। (मु.20.11.76 पृ.2 आ.)	Download
149	भक्त	बाप के आगे शिकायत करते हो? ऐसा मेरे से क्यों होता! मेरा ही ऐसा पार्ट क्यों है! मेरे ही संस्कार ऐसे क्यों हैं! मेरे को ही ऐसे जिज्ञासू क्यों मिले हैं या मेरे को ही ऐसा देश क्यों मिला है! ऐसी शिकायत करने वाले तो नहीं? शिकायत माना भक्ति का अंश। कैसा भी हो; लेकिन परिवर्तन करना यह सेवाधारियों का विशेष कर्तव्य है। ... अगर दूसरे की कमज़ोरी को देखा तो स्वयं भी कमज़ोर हो जायेंगे। (अ.वा.21.2.85 पृ.185 आ.)	Download
150	भक्त	भक्त जो होंगे वह कभी भी स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अंत तक, भक्तपने के संस्कार रहेंगे और वे सदा माँगते ही रहेंगे- आर्शीवाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो या दृष्टि दो आदि। ऐसे माँगने के संस्कार व अधीन होने के संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रूप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चेपन का नशा, मालिकपन का नशा और मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे।... भक्त कभी भी डायरैक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही सन्तुष्ट रहते हैं। (अ.वा.14.7.74 पृ.109 अं., 110 आ.)	Download
151	भक्त	भक्त बहुत नाच-तमाशे करते हैं। खुशी भी होती है और फिर रोते भी हैं। भगवान के प्रेम में आँसू आ जाते हैं; परन्तु भगवान को जानते नहीं। जिसके प्रेम में आँसू आते हैं उनको जानना चाहिए ना। चित्रों से कुछ मिल नहीं सकता। हाँ, बहुत भक्ति करते हैं तो सा. हो जाता है। (मु.15.2.75 पृ.1 मध्यादि)	Download
152	भक्त	जब तक बाप को न जाना है तो भक्ति भी करते रहेंगे। जब निश्चय पक्का हो जावेगा तो फिर भक्ति आपे ही छूट जावेगी। (मु.31.10.78 पृ.2 आ.)	Download

153	भक्त	भक्तिमार्ग में देवियों का भी बहुत मान है। वास्तव में यह ब्रह्मा भी बड़ी माँ है। (मु.23.3.84 पृ.2 आ.)	Download
154	भक्त	तुमको भक्ति का अनुभव तो है। जानते हो अनेकानेक साधु-सन्त आदि भक्तिमार्ग के शास्त्र सुनाते हैं। यहाँ तो बिल्कुल ही उनसे अलग है। यहाँ तुम किसके सामने बैठे हो? डबल बाप और माँ। वहाँ तो ऐसे नहीं है, तुम जानते हो बेहद का बाप भी रहता है, मम्मा भी रहती है, छोटी मम्मा भी। (मु.24.3.84 पृ.1 आ.)	Download
155	ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	तुम्हारे में भी (नं. वार) कोई तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि रह जाते हैं। तुम जानते हो कितने कपूत बच्चे हैं। ब्रह्माकुमार कहलाने वाले भी कपूत हैं। उनसे तो साधु लोग अच्छे हैं। पवित्र रहते हैं। समझू हैं। यहाँ तो ऐसे-ऐसे हैं जो पतित दुनियाँ वालों से भी बदतर हैं। (मु.1.10.73 पृ.3 अं.)	Download
156	ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	कन्याएँ सर्विस पर जाती हैं तो कीचक (ब्रह्माकुमारी के) पिछाड़ी में पड़ते हैं। फिर लिखा है भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। कीचक माना एकदम डर्टी ब्रूट्स, जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी की बात है। इस समय सभी द्रौपदियाँ, कीचक, दुर्योधन हैं। आसुरी सम्प्रदाय हैं। इसकी बहुत सम्भाल करते रहना है। अगर बाप के पास आये फिर कीचक बने तो पिता(पता) नहीं धर्मराज बन क्या हाल करूँगा! (मु.7.5.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
157	ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	विकार में गिर पड़ती हैं। आगे चलकर तुम बहुतों की सुनते रहेंगे। कोई तो फिर अपने पति के साथ ही ऐसे मिल जाती हैं जो आगे से भी जास्ती। वण्डर खावेंगे! यह तो हमको ज्ञान देती थी।... बाबा ने कहा है बड़े-2, अच्छे-2 महारथियों को माया बहुत ज़ोर से फथकावेगी। फथका-2 कर जीत पहनेगी। (मु.16.12.74 पृ.3 अं.)	Download
158	ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	ऐसे नहीं जो शुरू से आए हैं वह पूरे पावन होंगे। (मु.28.12.74 पृ.3 अं.)	Download
159	ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	जो ज्ञानामृत पी फिर जाकर विख पीते हैं उनको भस्मासुर कहा जाता। अपन को भस्मासुर करने वाले बहुत हैं। यह है भस्मासुरों की दुनियाँ।(मु.26.4.72 पृ.3 अं.)	Download
160	भट्ठी	बहुत लोग समझते भी हैं, फिर भी सात रोज़ देते नहीं हैं, तो समझा जाता है यह अपने घराने का अनन्य नहीं है। अनन्य होगा तो उनको बड़ा अच्छा लगेगा। कई 8/10/15 दिन रह भी जाते हैं।... विनाश का समय नज़दीक आवेगा तो सभी को आना ही है। (मु.19.8.72 पृ.2 आ.)	Download
161	भट्ठी	बाबा गैरन्टी करते हैं तुम एक हफ्ता रेग्युलर पढ़ो तो पावन दुनिया में ज़रूर जावेंगे। बाकी मम्मा-बाबा जैसे राज्य-भाग्य चाहिए तो मेहनत करनी पड़े। (मु.12.11.72 पृ.2 म.)	Download
162	भट्ठी	आगे कहते थे सात रोज़ भट्ठी में रहना पड़े। और कोई की याद न आए, न पत्र आदि लिखना है। रहो भल कहाँ भी; परंतु सारा दिन भट्ठी में रहना है। .... कोई की याद आई, चिट्ठी लिखी, खतम। फिर और सात रोज़। धंधा आदि याद आया, फिर सात रोज़ शुरू करो। (मु.26.1.71 पृ.1 अं.)	Download
163	भट्ठी	बाप कहते हैं कम से कम सात/आठ दिन लिए आओ, रिफ्रेश होकर जाओ। गीता पाठ भी 8 रोज़ रखते हैं। 7/8 रोज़ की भट्ठी है।(मु.28.6.71 पृ.4 म.)	Download
164	भट्ठी	सात रोज़ की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आए। किसको चिट्ठी भी नहीं लिख सकते। यह भट्ठी तुम्हारी शुरू की थी। यहाँ तो सभी को रख नहीं सकते। (मु.24.11.70 पृ.3 म.)	Download
165	भट्ठी	यह है रूहानी भट्ठी। वह जो कराची में तुम्हारी भट्ठी बनी, वह और बात थी। यह योग की भट्ठी और है। यह है योगबल की भट्ठी, जिसमें किचड़ा निकल जाता है। (मु.11.9.77 पृ.2 म.)	Download

166	भट्ठी	सिर्फ प्रभावित होकर जावेंगे उससे क्या फायदा? पूरा रंग तब चढ़े जबकि 7 रोज़ एक्यूरेट सुनते रहें। (मु.12.1.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
167	भट्ठी	7 दिन की भट्ठी भी मशहूर है। 7 रोज़ पूरा बैठ समझो। बाप को और अपने जन्मों को जानो। हम कैसे पतित बने हैं, फिर पावन बनना है। (मु.4.8.72 पृ.2 अं.)	Download
168	भट्ठी	कोई को तो 7 रोज़ में बहुत अच्छा रंग चढ़ जाता है, कोई को बिल्कुल नहीं चढ़ता। (मु.30.8.78 पृ.3 अं.)	Download
169	क्लास	यहाँ रहते हुए भी क्लास में न आते तो समझा जाता है यह स्वर्ग के मालिक बन न सकेंगे। (मु.8.5.72 पृ.3 म.)	Download
170	क्लास	क्लास में ही न आवेंगे तो क्या पढ़ेंगे? न पढ़ेंगे, न पढ़ावेंगे तो पद क्या पावेंगे? बच्चा वह जो अच्छी तरह पढ़कर और पढ़ावे। सबूत दें। (मु.16.8.72 पृ.3 अं.)	Download
171	क्लास	कई हैं जिन्हों को पढ़ाई की कदर नहीं है। समझो कोई सख़्त बीमार है, मरने पर है, उसको भी क्लास में आ(ला)कर बिठाना चाहिए ना। (मु.6.10.72 पृ.1 अं.)	Download
172	क्लास	यह है बेहद के बाप का स्कूल। इसमें तो एक दिन भी बच्चों को क्लास मिस न करना चाहिए। बाप आकर पढ़ाते हैं। (मु.18.1.71 पृ.3 अं.)	Download
173	क्लास	कोई-2 ऐसे होते हैं जो समय बिल्कुल दे नहीं सकते। बुद्धि में काम बहुत रहता है। फिर याद की यात्रा होवे कैसे? (मु.24.11.70 पृ.3 अं.)	Download
174	क्लास	बाप कहते हैं जो घर में बैठ पुरुषार्थ करे कर्मातीत अवस्था को पाने का, तो हो सकता है मुक्ति मे जाये। जीवन मुक्ति में जा न सके। ज्ञान धन धारण कर और दान करेंगे तब तो धनवान बनेंगे, नहीं तो एवर वेल्दी कैसे बनेंगे? मुरली का भी आधार ज़रूर लेना पड़े। पढ़ाई तो पढ़नी पड़े ना। ऐसे बहुत आवेंगे, सिर्फ लक्ष्य लेकर जावेंगे मुक्ति में। (मु.27.11.71 पृ.5 आ.)	Download
175	क्लास	पढ़ाई में पूरा ध्यान देना चाहिए। इसमें बहाना न देना चाहिए। दूर है, यह है। पैदल करने में छः घण्टा भी लगे तो भी पहुँचना चाहिए।... यह बाप की कितनी बड़ी यूनिवर्सिटी है! जिससे तुम यह (ल०ना०) बनते हो। ऐसी ऊँच पढ़ाई के लिए कोई कहे दूर पड़ता है या फुर्सत नहीं। बाप क्या कहेंगे- यह तो नालायक बच्चा है। (मु.21.2.75 पृ.1 अं.)	Download
176	क्लास	बाप को और पढ़ाई को छोड़ना यह तो बड़े ते बड़ा आपघात है। बाप का बनकर और फिर फ़ारकती देना! इन जैसा महान पाप कोई होता नहीं, इन जैसा कमबख़्त कोई होता नहीं। ऐसे का तो मुँह भी नहीं देखना चाहिए। मु.21.3.75 पृ.3 मध्यांत)	Download
177	क्लास	अच्छी रीति पढ़ना, यह गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। ऐसे नहीं, आज पढ़ा, कब फिर कोई काम पड़ा तो पढ़ाई मिस कर दी। वो सब काम हैं पाई पैसे के। इस दुनियाँ में मनुष्य जो भी कमाई करते हैं वो कोई रहने वाली न है, सब खतम हो जाना है। (मु.3.3.77 पृ.1 मध्यांत)	Download
178	क्लास	पढ़ाई से कब भी रूठना न है। कोई से भी अनबनत हो तो भी पढ़ाई नहीं छोड़नी है। पढ़ाई से लड़ने-झगड़ने का ताल्लुक नहीं है।(मु.9.2.74 पृ.2 आ.)	Download
179	क्लास	स्कूल में जो अच्छे-2 बच्चे होते हैं वह कब शादियों पर इधर-उधर जाने की छुट्टी नहीं लेते हैं। बुद्धि में रहता है कि हम अच्छी रीति पढ़कर स्कालरशिप लेंगे; इसलिए पढ़ते रहते हैं, मिस करने का ख़याल नहीं करते। ... यहाँ एक ही टीचर पढ़ाने वाला है तो कब पढ़ाई मिस नहीं करनी चाहिए। (मु.5.4.84 पृ.2 म.)	Download

180	धर्मशाला, कोसघर	शादी के लिए जो हाल आदि बनाते हैं उनको भी समझाओ। यहाँ भी शादी के लिए धर्मशाला आदि बना रहे हैं ना। कोई अपने कुल के हैं तो झट समझ जाते हैं। कोई नहीं हैं। जो इस कुल के न होंगे वह विघ्न डालेंगे। जो इस कुल के होंगे वह मानेंगे। .... यह तो हम (संकल्पों का) खून कराने के लिए प्रबन्ध देते हैं। जो इस धर्म के न होंगे वह लड़ेंगे। कहेंगे, यह तो (मम्मा बाबा से) रसम चली आ रही है। (मु.12.4.74 पृ.2 अं.)	Download
181	ढांढस या हौसला	सारी दुनियाँ दुश्मन बनेगी; परन्तु बाप को न भूलना। (मु.22.3.78 पृ.2 मध्यांत)	Download
182	ढांढस या हौसला	सबसे बड़े ते बड़े उत्साह की बात है कि अनेक जन्म आपने बाप को ढूँढ़ा; लेकिन इस समय बाप दादा ने आप लोगों को ढूँढा। भिन्न-2 पर्दों के अन्दर छिपे हुए थे। उन पर्दों के अन्दर से भी ढूँढ लिया ना?.... तो सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को, एक बल, एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा ही अनुभव होता रहता है। ‘‘होना ही है‘‘ यह है हिम्मत। इसी हिम्मत से मदद के पात्र स्वतः ही बन जाते हैं। (अ.वा.18.2.83 पृ.71 आ.)	Download
183	ढांढस या हौसला	चाहे कितना भी कोई पीछे आए; लेकिन आगे जाकर नं. वन ले सकता है।... सिर्फ हिम्मत और लगन की बात है। (अ.वा.24.2.83 पृ.85 म.)	Download
184	ढांढस या हौसला	अपने को नया नहीं समझना, अति पुराने हैं और वही पुराने अब फिर से अपना हक लेने के लिए आए हैं। यह नशा सदैव कायम रहे।... कब भी यह नहीं सोचना कि हम लोग तो पीछे आए हैं तो प्रजा बन जायेंगे। नहीं, पीछे आने वालों को भी अधिकार है राजपद पाने का। (अ.वा.22.1.70 पृ.172 म.)	Download
185	ढांढस या हौसला	ऐसा कोई है जिसमें कोई भी विशेषता न हो! पहली विशेषता तो यही है जो यहाँ पहुँचे हो। और कुछ भी न हो फिर भी सम्मुख मिलने का यह भाग्य कम नहीं है। यह तो विशेषता है ना। (अ.वा.24.3.85 पृ.267 म.)	Download
186	ढांढस या हौसला	कोई भी ब्राह्मण बच्चा ऐसा नहीं जिसमें कोई विशेषता न हो। सबसे पहली विशेषता तो यही है जो बाप को जान लिया, बाप को पा लिया। कोटों में कोऊ और कोऊ में भी कोई ने जाना, तो बाप भी उसी नज़र से देखते हैं कि यह विशेष आत्माएँ हैं। (अ.वा.12.11.79 पृ.17 म.)	Download
187	ढांढस या हौसला	सभी अपने को इस विश्व के अन्दर सर्व आत्माओं में से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? यह समझते हो कि स्वयं बाप ने हमें अपना बनाया है? बाप ने विश्व के अन्दर से कितनी थोड़ी आत्माओं को चुना और उनमें से हम श्रेष्ठ आत्माएँ हैं। (अ.वा.9.3.81 पृ.34 आ.)	Download
188	ढांढस या हौसला	ब्रह्मा बाप बोले कि ऐसे बच्चों पर आपकी नज़र गई है जिनके लिए दुनिया वालों को यह सोचना भी असम्भव है कि ऐसी आत्माएँ भी श्रेष्ठ बन सकती हैं, जो दुनिया की नज़रों में अति साधारण आत्माएँ हैं... सच्चे ब्राह्मण फिर भी साधारण आत्माएँ ही बनते हैं। जो वर्तमान समय के वी.आई.पीज़. गाये जाते, सबकी नज़रों में हैं; लेकिन बाप की नज़रों में कौन है? (अ.वा.17.3.82 पृ.296 आ., 297 आ.)	Download
189	ढांढस या हौसला	कई आत्माएँ बहुत अच्छे उल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंज़िल के समीप तक पहुँच जाती हैं; लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं। उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में ही टाइम वेस्ट कर देते हैं। (अ.वा.3.5.77 पृ.118 अं.)	Download

190	ढांढस या हौसला	चक्र के वश होने वाले बच्चों के भी बहुत पत्र आते हैं। ऐसे बच्चों को भी बापदादा यादप्यार दे रहे हैं और फिर से यही याद दिला रहे हैं जैसे भारत में कहावत है कि रात(सुबह) का भूला हुआ अगर दिन(शाम) में घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता। ऐसे फिर से जागृति आ गई। तो बीती सो बीती। फिर से नया उमंग, नया उत्साह, नई जीवन का अनुभव कर आगे बढ़ सकते हैं। (अ.वा.20.2.84 पृ.146 मं.)	Download
191	ढांढस या हौसला	कोटों में कोई बाप के बनते हैं, वह हम हैं। यह खुशी सदा रहती है? विश्व की अनेक आत्माएँ बाप को पाने का प्रयत्न कर रही हैं और हमने पा लिया! बाप का बनना अर्थात् बाप को पाना। दुनियाँ ढूँढ़ रही है और हम उनके बन गये। (अ.वा.12.12.84 पृ.64 म.)	Download
192	ढांढस या हौसला	न उम्मींद आत्माओं को उम्मीदवार बनाना यही बाप की विशेषता है।.... इसलिए जो भी हो, जैसे भी हो; लेकिन परमात्मा को पसन्द हो; इसलिए अपना बना लिया। दुनियाँ वाले अभी इन्तज़ार ही कर रहे हैं, बाप आयेगा उस समय ऐसा होगा, वैसा होगा; लेकिन आप सबके मुख से, दिल से क्या निकलता है? ... आप सम्पन्न बन गये और वह बुद्धिमान अब तक परखने में ही समय समाप्त कर रहे हैं; इसलिए ही कहा गया है भोलानाथ बाप है। पहचानने की विशेषता ने विशेष आत्मा बना लिया। पहचान लिया, प्राप्त कर लिया, अब आगे क्या करना है? सर्व आत्माओं पर रहम आता है? हैं तो सभी आत्माएँ, एक ही बेहद का परिवार है। अपने परिवार की कोई भी आत्मा वरदान से वंचित न रह जाए। (अ.वा.30.12.85 पृ.116 आ)	Download
193	ढांढस या हौसला	सौदागरों की लिस्ट में कौन-2 नामीग्रामी हैं? दुनियाँ वाले भी नामीग्रामी लोगों की लिस्ट बनाते हैं ना। विशेष डायरेक्ट्री भी बनाते हैं। बाप की डायरेक्ट्री में किन्हों के नाम हैं? जिनमें दुनियाँ वालों की आँख नहीं जाती, उन्होंने ही बाप से सौदा किया और परमात्म नयनों के सितारे बन गये, नूरे रत्न बन गए। नाउम्मीद आत्माओं को विशेष आत्मा बना दिया।... परमात्म डायरेक्ट्री के विशेष वी.आई.पी. हम हैं; इसलिए ही गायन है भोलों का भगवान। है चतुर सुजान; लेकिन पसन्द भोले ही आते हैं। दुनियाँ की बाहरमुखी चतुराई बाप को पसन्द नहीं। (अ.वा.15.1.86 पृ.155 अं., 156 आ.)	Download
194	ढांढस या हौसला	बापदादा के साथ निमित्त कौन बने हैं? हैं विश्व के आधार; लेकिन बने कौन हैं? साधारण। जो दुनियाँ के लोगों की नज़रों में हैं वह बाप की नज़रों में नहीं हैं और जो बाप की नज़रों में हैं वह दुनियाँ वालों की नज़रों में नहीं हैं। आपको देखकर पहले तो मुस्कुराएँगे कि यह हैं; लेकिन जो दुनियाँ वाले करते वह बाप नहीं करते। उन्हों को नामीग्रामी चाहिए और बाप को, जिनका नाम-निशान खत्म कर दिया उनका ही नाम बाला करना है। असम्भव को सम्भव करना है, साधारण को महान बनाना, निर्बल को महान बलवान बनाना, दुनियाँ के हिसाब से जो अनपढ़ हैं, उन्हों को नालेजफुल बनाना, यही बाप का पार्ट है। (अ.वा.13.3.86 पृ.256 अं., 257 आ.)	Download
195	ढांढस या हौसला	एक-2 रत्न वैल्युएबल है; क्योंकि अगर वैल्युएबल रत्न नहीं होते तो कोटों में कोई आप ही कैसे आते? जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है... आप तो बच्चे बन गए तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए। (अ.वा.13.2.78 पृ.48 अं., 49 आ.)	Download
196	धर्मराज	मंसा में तूफान तो बहुत आवेगा; परन्तु कर्मेन्द्रियों से न करना है। कर्मेन्द्रियों से कर बैठे तो उन कर्मेन्द्रियों को काटा जावेगा। वह अंग काटा जावेगा। अगर दान देकर फिर किस पर क्रोध किया तो वहाँ जबान काटी जावेगी। धर्मराज बाबा घड़ी-2 इन्द्रियाँ कटवाते जावेंगे। (मु.14.4.73 पृ.2 म.)	Download

197	धर्मराज	बाबा ने समझाया है मैं धर्मराज भी हूँ। इनडायरैक्ट कुछ करते थे तो हद के अल्पकाल की सज़ा भोगते थे। अब डायरैक्ट आकर फिर भी बाबा की मेहनत बरबाद करते हो तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। धर्मराज बाबा कहते हैं मैं खाल उतार दूँगा। (मु.17.4.73 पृ.3 आ.)	Download
198	धर्मराज	चाहे खुशी से चलो, चाहे नाराज़ होकर चलो। चलना है ज़रूर। बेहद का बाप कालों का काल है। (मु.14.9.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
199	धर्मराज	बाबा ने समझाया है सज़ा कैसे मिलती है। सूक्ष्म शरीर भी नहीं, स्थूल शरीर धारण करके(कराके) सज़ा देते हैं। (मु.4.10.73 पृ.2 अं.)	Download
200	धर्मराज	बाप कहते हैं कि मैं सुख देता हूँ। दुःख अर्थात् सज़ाएँ धर्मराज देते हैं। मुझे सज़ा देने का अख्तियार नहीं है। मुझे सुनाओ। सज़ा धर्मराज देंगे।... बाकी आपस में मत लड़ो। (मु.12.11.73 पृ.2 म.)	Download
201	धर्मराज	अब श्रीमत पर चलेंगे तो मुक्ति-जीवनमुक्ति में चलेंगे। नहीं तो शांतिधाम में सबको जाना ही है।... पसन्द करो न करो, मैं आया हूँ सबको ज़रूर ले चलूँगा। ज़बरदस्ती भी हिसाब-किताब चुक्तू कराकर ले जाऊँगा।... छोड़ेंगे कोई को भी नहीं। न चलेंगे तो भी सज़ा देकर, मा कर(मारकर) भी ले चलूँगा। (मु.22.6.74 पृ.2 अं.)	Download
202	धर्मराज	बाबा बड़ा मार्शल भी है। बाबा के साथ धर्मराज भी है। अगर बाबा की श्रीमत पर न चले तो उनका राइट हैण्ड धर्मराज है। (मु.24.4.72 पृ.2 अं.)	Download
203	धर्मराज	अभी यह भी ध्यान रखना, सूक्ष्म सज़ाओं के साथ-2 स्थूल सज़ाएँ भी होती हैं। ऐसे नहीं समझना, सूक्ष्म सज़ा तो अपने अन्दर भोगकर खत्म करेंगे। नहीं। सूक्ष्म सज़ाएँ सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन-प्रतिदिन ज्यादा मिलती जाएँगी; लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं, तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सज़ाएँ भी भोगनी पड़ें। (अ.वा.3.5.72 पृ.265 आ.)	Download
204	धर्मराज	धर्मराज बाबा भी सा. करावेंगे, फिर कहेंगे अब खाओ सज़ा। तुमको इतना समझाते थे यह मत करो, फिर भी करते रहे। अब खाओ सज़ा। (मु.10.7.72 पृ.4 अं.)	Download
205	धर्मराज	ट्रेटर लिए बड़ी भारी सज़ा होती है। तो यहाँ भी ऐसे हैं। अगर कोई बाप का बनकर कोई ट्रेटर बन जाते हैं तो धर्मराज पुरी में बहुत भारी सज़ा मिलती है। चमरी(चमड़ी) उतारते हैं। (मु.6.10.72 पृ.3 अं.)	Download
206	धर्मराज	धर्मराज भी क्रियेशन है। धर्मराज का रूप भी बाबा सा० कराते हैं ना। फिर उस समय सिद्ध कर बतलाते हैं देखो, तुमने प्रतिज्ञा की थी। हम क्रोध न करेंगे, किसको दुःख न देंगे, फिर भी तुमने इनको दुःख दिया। तंग किया। अब खाओ सज़ा। बिगर सा. सज़ा दे नहीं सकते। प्रूफ तो चाहिए ना। वह भी समझते हैं बरोबर मैंने बाप को छोड़ कुकर्म किया। (मु.28.5.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
207	धर्मराज	बेहद के बाप साथ प्रतिज्ञा कर, फिर गिरते हैं तो धर्मराज द्वारा डण्डे भी बहुत लगते हैं। यह बेहद का बाप, बेहद का धर्मराज है, फिर बेहद की सज़ा मिलती है। कोई बात में आनाकानी करेंगे, कोई उल्टा काम करेंगे तो सज़ा ज़रूर खावेंगे। समझते नहीं हैं हम भगवान की अवज्ञा करते हैं। धर्मराज तो बड़ा ज़बरदस्त दण्ड देने वाला है। (मु.8.10.71 पृ.3 म.)	Download
208	धर्मराज	याद रखना, अभी न मानेंगे तो धर्मराज द्वारा हड्डी-2 तोड़ूंगा, बात मत पूछो। बहुत बच्चे हैं विकार में जाने बिगर रह नहीं सकते। डरते ही नहीं। वह कितने हन्टर खावेंगे, बात मत पूछो। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। संग दोष में ऐसा गिर पड़ते हैं जो एकदम चण्डाल बनने लायक बन जाते हैं। (मु.13.10.71 पृ.3 अं.)	Download

209	धर्मराज	थोड़े समय के बाद यह बातें अर्थात् लिफ्ट का मिलना भी बन्द हो जायेगा; इसलिए अभी जो कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हैं। फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जावेगा। जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बन्धी हो; लेकिन लॉ इज़ लॉ। अभी लव का समय है फिर लॉ का समय होगा। फिर उस समय लिफ्ट नहीं मिल सकेगी। (अ.वा.30.5.73 पृ.80 म.)	Download
210	धर्मराज	बाप को भूले तो धर्मराज के रूप में ही बाप मिलेगा। बाप का सुख कभी पा नहीं सकेंगे; इसलिए छिपाओ नहीं, चलाओ नहीं, दूसरे को दोषी नहीं बनाओ।... इस पवित्रता के फाउन्डेशन में बापदादा धर्मराज द्वारा एक का सौ गुणा, पदमगुणा दण्ड दिलाता है। इसमें रियायत कभी नहीं हो सकती। इसमें रहमदिल नहीं बन सकते; क्योंकि बाप से नाता तोड़ा तब तो किसी के ऊपर प्रभावित हुये। परमात्म प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आना अर्थात् बाप को जाना नहीं, पहचाना नहीं। ऐसे के आगे बाप, बाप के रूप में नहीं, धर्मराज के रूप में है। (अ.वा.12.4.84 पृ.239 अं., 240 आ.)	Download
211	धर्मराज	अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रूप में कोई सज़ा नहीं मिल रही है; लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो; लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ संकल्प जो हुआ, किया उसकी प्रत्यक्ष सज़ा का भी अनुभव करेंगे। (अ.वा.3.5.72 पृ.262 अं., 263 आ.)	Download
212	धर्मराज	बाप समझाते हैं साथ में धर्मराज भी इकट्ठा है, राइट हैण्ड। बच्चों की चलन नोट करते जाते हैं। ड्रामा में पार्ट है। सज़ा देने वाला वही है। (मु.1.7.74 पृ.2 मध्यांत)	Download
213	दान	यहाँ श्रेष्ठाचारी धंधा नहीं होता। दान करते हैं वह भी पाप करते हैं; क्योंकि विकारी, पतित को दान दिया तो उनका और ही दण्ड पड़ेगा। बाप कहते हैं पैसे तुम किसी पतित को दे नहीं सकते हो। (मु.8.4.72 पृ.2 म.)	Download
214	दान	जब परमात्म बाप ग़ैर हाज़िर है, तो इनडायरैक्ट अल्पकाल के लिए फल देते हैं। जब हाज़िर है तो 21 जन्म के लिए देते हैं। यह गाया हुआ है शिवबाबा का भण्डारा भरपूर। देखो, ढेर बच्चे हैं, किसको भी मालूम नहीं हैं कि कौन और क्या देते हैं? बाप जाने और बाप की गोथरी जाने, जिसमें बाप रहते हैं। है बिल्कुल साधारण। (मु.18.4.84 पृ.3 अं.)	Download
215	दान	पतित को पैसा न देना है; क्योंकि वह पैसे से पाप करेंगे।... अगर पापात्माओं को दे दिया तो उसका बोझा चढ़ पड़ेगा।... तुम ट्रस्टी हो राय पर चलो।... देने वाले पर भी उसका असर आ जावेगा। (मु.16.4.72 रात्रिक्लास अं.)	Download
216	दान	धनवान को अंहकार भी बहुत रहता है ना, मैं फलाना हूँ, यह-2 हमको (धन-सम्पत्ति) हैं, घमण्ड तोड़ने लिए बाबा कहते हैं यह जब आयेंगे कुछ देने लिए तो बाबा कहेंगे कि दरकार ही नहीं है। यह अपने पास रख दो। जब ज़रूरत होगी, फिर ले लेंगे।... देखेंगे, लायक है तो साहुकार बना देंगे, नालायक है तो कहेंगे दरकार नहीं है। वण्डर खायेंगे कि ऐसा क्यों करते हैं? अरे, चाहिए ही नहीं, फेंक जाओ। हमारे काम में नहीं आयेगा।... बाबा जो इतना ऊँचा बनाते हैं ऐसे बाप को धोखा देकर फिर आ जाते हैं तो कहेंगे कि यह ट्रेटर बना था, धोखा दिया था, इनका कुछ भी लेना ना है। भल यह ग़रीब बने। ऐसे-2 जिनको अपना अंहकार रहता था, मनहूस रहते थे, कहेंगे मनहूस की दरकार नहीं। बाबा के हाथ में है ना। लेना वा न लेना। (मु.17.12.70 पृ.3 आ.)	Download

217	दान	ऐसे थोड़े ही कि तुमको ग़रीबों को बैठ दान देना है। ग़रीबों को तो वह लोग दान देते हैं। ऐसे तो दुनियाँ मे ढेर ग़रीब हैं। सब आकर बैठ जावें तो माथा ही ख़राब कर देवें। ऐसे तो बहुत कहते हैं; परन्तु सम्भाल कर लेना होता है, ऐसा न हो यज्ञ में आकर ऊधम मचावें।... यज्ञ का पैसा किसको देना बड़ा पाप है। यह पैसे हैं ही उनके लिए जो कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं, ईश्वरीय सर्विस में हैं। (मु.23.3.76 पृ.3 मध्यांत)	Download
218	दान	कल्याणकारी बनना है। धन व्यर्थ नहीं गँवाना है। यह भी रसम है ना। जो लायक ही नहीं ऐसे पतित को कब दान न देना चाहिए, नहीं तो दान वाले पर भी (पाप) आ जाता है। (मु.30.6.75 पृ.3 अं.)	Download
219	दान	बिगर पूछे किसी को भी दान करने का हक नहीं है। बाप को सब कुछ दिया तो राय पर फ़लाने को दे सकते हो। (मु.12.5.73 पृ.4 मध्यादि)	Download
220	दान	अर्पण किया हुआ कुछ भी याद नहीं आये। बाप कहते हैं कि मैं ऐसी कोई चीज़ लेता ही नहीं हूँ, जो पिछाड़ी में रह जाये और भर कर देना पड़े।.... 10-20 वर्ष बाद भी कहते हैं हमारा यह दिया हुआ वापिस करो। अरे, तुमने कणा दाना दिया अथाह लेने लिए, फिर कहते हो हमने दिया। शर्म नहीं आती? कौड़ी देते हो, हीरे लेते हो, फिर भी तुम दी हुई कौड़ी माँगते हो। तुमने इतना खाया-पीया निकालो पेट से। सर्विस कहाँ की? यह तो डिससर्विस करते हो ना। डिससर्विस करने से इतना दिन जो खाया वह भी तुम्हारे ऊपर कर्ज़ा चढ़ गया। तुम जाकर दासियों के भी दास बनेंगे। (मु.16.12.70 पृ.3 आ.)	Download
221	दान	अपनी सच्ची कमाई का जमा करना इसी में बल है। सच्ची कमाई का धन बाप के कार्य में सफ़ल हो रहा है। अगर ऐसे ही धन आ जाए तो तन नहीं लगेगा और तन नहीं लगेगा तो मन भी नीचे-ऊपर होगा...; इसलिए संगमयुग पर कमाया और ईश्वरीय बैंक में जमा किया। यह जीवन ही नं॰ वन जीवन है। कमाया और लौकिक विनाशी बैंकों में जमा किया तो वह सफ़ल नहीं होता। (अ.वा.27.2.85 पृ.198 आ)	Download
222	दान	अगर किसको पैसा दिया और उसने जाकर शराब आदि पिया, बुरे कर्म किये तो उसका पाप तुम्हारे ऊपर आ जावेगा। पाप आत्माओं से लेन-देन करते पापात्मा बन जाते हैं। कितना फर्क है! पापात्मा, पापात्मा से लेन-देन कर पापात्मा ही बन जाती है। (मु.14.1.75 पृ.3 अं.)	Download
223	दान	यह भी कोई को अहंकार न आना चाहिए, हमने दिया। तुम कुछ भी न दो, बाबा तुमको कौड़ी के बदले हीरा देने से भी छूट जावेगा। (मु.25.10.78 पृ.3 मध्यांत)	Download
224	दृष्टि-वृत्ति	विकारी भावना रखते हैं तो ऐसी भावना रखने वाले भी महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं। ब्राह्मण जीवन में बड़े से बड़ा पाप व दाग इस विकारी भावना का गिना जाता है। (अ.वा 19.9.75 पृ.119 म)	Download
225	दृष्टि-वृत्ति	इतनी हिम्मत अपने में समझते हो कि अपनी शुभ वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति को, परिस्थिति को, प्रकृति को, बदल सकते हो? अगर अपनी वृत्ति श्रेष्ठ है तो इसके आगे प्रवृत्ति वा परिस्थिति कोई भी प्रकार का वार कर नहीं सकती। (अ.वा.6.8.72 पृ.356 म.)	Download
226	दृष्टि-वृत्ति	जब भाई-2 की दृष्टि हो जाती है, तब ही सृष्टि बदलती है।... पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज़ का है, दृष्टि बदलने का। अगर यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है।... पहले अपने को बदलने से सृष्टि आपे ही बदल जावेगी।... देहली में यह धूम मचाओ। कौन-सी? रूहानी दृष्टि से सृष्टि बदलो। जितना स्वयं इस धुन में रहेंगे तो धूम मचा सकेंगे, फिर सर्विस आप लोगों के समीप स्वयं आवेगी। जैसे चुम्बक के आगे सूई स्वयं आती है, मेहनत कम और सफलता ज़्यादा। (अ.वा.16.9.76 पृ.1 आ.)	Download

227	दृष्टि-वृत्ति	दृष्टि से सृष्टि रचने आती है? आपकी रचना कैसी है, कुख की वा नैनों की? दृष्टि से रचना रचेंगे? यह जो कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेगी। ऐसी दृष्टि जिससे सृष्टि बदल जाए। ऐसी दृष्टि में दिव्यता अनुभव करते हो? दृष्टि धोखा भी देती और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है। (अ.वा.6.8.70 पृ.305 अं.)	Download
228	दृष्टि-वृत्ति	बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कब भी विकार की कुदृष्टि न जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। (मु.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)	Download
229	देखना धोखा है	आँखें बड़ा धोखा देती हैं। देखने से ही एकदम रफूचक्कर हो जाते हैं। इन आँखों को कब्ज़े में रखना है। देखा गया- भाई-बहन में भी दृष्टि ठीक नहीं रहती, तो अब समझाया जाता है भाई-2 समझो। (मु.23.7.74 पृ.2 अं.)	Download
230	देखना धोखा है	तुम आकर भट्ठी में पड़े। कोई देख न सके। मिल न सके। कोई को देखते ही नहीं थे तो फिर दिल किससे लगावेंगे? (मु.8.7.74 पृ.2 म.)	Download
231	देखना धोखा है	आँखे ऐसी धोखेबाज़ हैं बात मत पूछो। कोई सुन्दर स्त्री देखी और लड्डू(लट्टू) हो जाते हैं। (मु.11.4.84 पृ.1 अं.)	Download
232	देखना धोखा है	आत्मा को देखने से ही कट उतरेगी। शरीर को देखने से कट चढ़ती है। कब चढ़ती है, कब उतरती है, यह चलता रहता है। (मु.29.6.74 पृ.3 आ.)	Download
233	देखना धोखा है	अख़बारें पढ़ते हैं। उनमें अच्छी-2 माइयों के चित्र देखते हैं तो वृत्ति उस तरफ जाती है। यह बड़ी अच्छी खूबसूरत है।... ऐसे-2 चित्र आदि भी क्यों देखते हो? यह सब बातें वृत्ति को नीचे ले आती हैं। (मु.23.6.74 पृ.2 मध्यांत)	Download
234	देखना धोखा है	कोई से आँख मिलाई, यह भी शैतान बने। आँखें मिलाने वालों की दिव्य चक्षु निकल जाती है। कोई से छिपकर बात करना भी ख़राब है।(मु.2.5.73 पृ.2 अं.)	Download
235	देखना धोखा है	दुनियाँ तो बहुत गन्दी है। बड़ी खबरदारी रखते हैं। ऐसे-2 गन्दे हैं जो छिपकर जा आँख लड़ाते हैं। पहले-2 जब भट्ठी में रहे तो कितनी माता-पिता को सम्भाल करनी पड़ती थी। (मु.7.5.73 पृ.3 आ.)	Download
236	देखना धोखा है	यहाँ तो सच्चे साफ़ दिल चाहिए। ऐसे नहीं घर छोड़ आकर फिर ब्राह्मण कुल में रह कोई न कोई से आँख लड़ाती रहो वा फैमिलियरिटी में रहो।... उन्हों की फिर अवस्था चढ़ती नहीं। (मु.9.2.73 पृ.2 म.)	Download
237	देखना धोखा है	ऐसे मत समझो यहाँ जो आते हैं तो उन्हों की विष से बुद्धि निकल जाती। एक/दो को देखते हैं तो अन्दर तूफान चलता गन्दे बनने लिए। (मु.19.9.73 पृ.2 आ.)	Download
238	देखना धोखा है	गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल ज़िम्मेवार आत्मा से ज़मादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बापदादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलाहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। (अ.वा.11.7.74 पृ.104 अं.)	Download
239	देखना धोखा है	अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है।... कोई तरफ़ कुदृष्टि जावे तो उसके आगे खड़ा भी न होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊँच पद पाना है तो बहुत ख़बरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले-लंगड़े बन पड़ेंगे। (मु.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)	Download

240	देखना धोखा है	भाई-बहन समझने से भी दृष्टि जाती नहीं। (मु.4.10.74 पृ.3 म.)	Download
241	देह-देही	देही अभिमानी बनने बिगर रिफ़ाइन बन न सके। देही अभिमानी बनना जीते जी पूरा मौत है। अपन को आत्मा समझना मासी का घर नहीं है। (मु.5.2.68 पृ.2 अं.)	Download
242	देह-देही	देही अभिमानी तब रहेंगे जब कमप्लीट सरेण्डर होंगे। बाबा यह सब आपका है।... यह देह जैसे कि हमारी है नहीं। इनको मैं छोड़ देता हूँ। बाबा मैं आपका हूँ। (मु.25.5.71 पृ.1 अं.)	Download
243	देह-देही	जैसे राजाएँ लोग घर-बार छोड़ते हैं तो पहले गुरु पास जाते हैं। वह फिर उनसे काठी कराना, आश्रम की सफ़ाई आदि कराते हैं, तो देह अभिमान टूट जाए। यहाँ भी ऐसे कायदे हैं। ग़रीब तो यह सब काम करते रहते हैं। बड़े घर वालों में बड़ा देह अभिमान होता है। तो उन्हों की परीक्षा ली जाती है। शुरुआत में बाबा ने भी परीक्षा ली ना। देहअभिमान तोड़ने लिए तुम सब कुछ करते थे। मोटर साफ़ करना, धोबी का काम करना। कोई भी आवे, बोलो- पहले तो यह काम करना पड़ेगा। (मु.21.9.73 पृ.2 अं.)	Download
244	देह-देही	बहुतों को अपना अहंकार बहुत रहता है। दूसरे महारथी आते हैं तो समझते हैं कहाँ यह हमारी जगह न भर लेवें। हमारा मान है। दूसरा कोई आवेगा तो हमारा मान कम हो जावेगा। यह नहीं समझते कि महारथी तो मदद करेंगे। अपना अहंकार रहता है। ऐसे भी बुद्धू हैं। बाप कहते हैं सच्चे दिल पर ही साहिब राज़ी रहेगा। (मु.25.11.73 पृ.5 आ.)	Download
245	देह-देही	इस समय तुम अपनी दासियाँ बनावेंगी तो खुद को भी दासी बनना पड़ेगा। यहाँ महारानी बनना देह अभिमान है। (मु.11.12.73 पृ.3 अं.)	Download
246	देह-देही	इतना तूफ़ान लग जाता जो आसमान से एकदम पट में गिर पड़ते। बाप समझाते हैं तो भी बिगड़ पड़ते हैं। देह अभिमान बहुत है। किसकी गद्दी बदली करो तो मुख पीला हो जावेगा। (मु.18.12.73 पृ.3 अं.)	Download
247	देह-देही	कोई तो दो/तीन मास में देही-अभिमानी बन जाते हैं। कोई तो 25 वर्ष में भी नहीं बनते। एक ही कोर्स बहुत बड़ा है। 40/50 वर्ष चलता है। (मु.20.8.78 पृ.2 म.)	Download
248	देह-देही	बहुतों को अहंकार आ जाता है कि मेरे जैसा कोई है नहीं। कई तो ऐसे बुद्धू हैं, समझते हैं कि ब्रह्मा भी क्या है? जैसे हम जिज्ञासु हैं वैसे यह भी एक जिज्ञासु है। कोई प्वाइन्ट में हम तीखे हैं, कोई प्वाइन्ट में करके ब्रह्मा तीखा जावेगा। अरे, मम्मा-बाबा तो ज़रूर सभी से तीखे होंगे ना। हम उन्हों का सामना क्यों करते हैं? (मु.14.11.72 पृ.3 अं.)	Download
249	देह-देही	बच्चे, तुम देहअभिमान में आते हो; इसलिए टकराते हो। इसमें देही अभिमानी बनना पड़े। बच्चों में देहअभिमान बहुत है। तुम देही अभिमानी बनो तो बाप की याद रहेगी और सर्विस में उन्नति करते रहेंगे। (मु.3.2.71 पृ.2 अं.)	Download
250	देह-देही	जब पूरा देही अभिमानी बनेंगे तो रिगार्ड भी रखेंगे। अवस्था भी सुधरती जावेगी। खुशी में भी रहेंगे। (मु.14.12.71 पृ.1 अं.)	Download
251	देह-देही	बेहद का बाप तो समझाते रहेंगे ना। इसमें फंक न होना चाहिए बाबा ने ऐसे क्यों कहा? हमारी इज़्ज़त गई। अरे, इज़्ज़त तो रावणराज्य में चट हो ही गई है। देहअभिमान में आने से ही अपना ही नुकसान कर देंगे।(मु.17.8.70 पृ.3 अं.)	Download
252	देह-देही	कोई कुछ छी-2 बोले तो सुना-अनसुना कर देना चाहिए। हियर नो ईविल। ....मान-अपमान, दुःख-सुख यह सहन करना है। सहन करने की युक्ति भी बता देते हैं। कुछ भी कहे तो सुना-अनसुना करना है। वह भी अवस्था चाहिए। (मु.13.1.69 पृ.4 मध्यादि)	Download
253	देह-देही	देह अभिमान वाले सर्विस कर न सकें। उनसे खताएँ होती रहेंगी। (मु.11.1.72 पृ.4 मध्यादि)	Download

254	देह-देही	देह अभिमान न हो तो ढोल भी गले में डाल दें, सभी को यह बताते जावे कि बाप आया है। (मु.11.5.69 पृ.2 अं.)	Download
255	दिल्ली	दिल्ली है दिलाराम की दिल लेने वाली। नाम भी दिल्ली है- दिल ली। तो बापदादा की दिल क्या है? विश्व पर सदा के लिए सुख और शान्ति का झण्डा लहर जाए।... देहली में सभी का हक है; क्योंकि सब राज्य अधिकारी बन रहे हो ना। तो सेवा के नये-2 कार्य में दिल लेने वाले। (अ.वा.15.4.81 पृ.158 अं., 159 आ.)	Download
256	दिल्ली	दिल्ली वाले भी कोई नई बातें करो। कॉनफ्रेन्स तो बहुत पुरानी बात हो गई है। अभी नई इन्वेन्शन निकालो। कम खर्च बाला नशीन। खर्चा भी कम हो, रिज़ल्ट अच्छी निकले। अब देखेंगे यू.पी. ऐसी इन्वेन्शन निकालता है या दिल्ली। अगर खर्चा ज़्यादा और रिज़ल्ट कम होती है तो आनेवाले स्टूडेन्ट दिलशिकस्त हो जाते हैं, अभी उनको भी उत्साह में लाने के लिए कम खर्चा और अच्छी रिज़ल्ट निकालो, जिसमें बिज़ी भी सब हो जाएँ, खर्चा भी कम हो। तन और मन बिज़ी हो जाए, धन कम लगेगा। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 अं., 155आ.)	Download
257	दिल्ली	देहली निवासी जैसे स्थापना के कार्य में आदि रत्न बन निमित्त बने, अब सम्पूर्ण समाप्ति के कार्य में भी निमित्त बनो।... देहली 80 के वर्ष में क्या कमाल कर दिखायेगी? किस विधि से सम्पूर्णता लायेगी? कुम्भकरणों को कैसे जगायेगी? 80 के लिए नई सौगात क्या तैयार की है? जो जनवरी की 18 तारीख़ को वह सौगात बापदादा के सामने लाओ देखेंगे, 18 जनवरी के दिन किस सेन्टर से क्या सौगात आती है?... स्थापना के आदि में पहले देहली आई है तो सौगात देने में भी देहली को नं. वन होना चाहिए।... प्रैक्टिकल प्लान बनाओ, कुछ भी करो; लेकिन सौगात रूप में लाना ज़रूर है, फिर देखेंगे हर ज़ोन से नं. वन सौगात किसकी है।... पहले देहली हिलेगी, तब सब गद्दियाँ हिलेंगी। कोई ऐसा लाइट हाउस बनाओ जो सबकी नज़र जाए।... देहली से जो आवाज़ निकलेगी तो छोटे-2 स्थानों में आपे ही पहुँचेगी। पहले देहली को पावरफुल बनाना है। फॉरेन से आवाज़ निकलेगा तो वह पहुँचेगा कहाँ? देहली ही आवाज़ को रिसीव करेगी। देहली का कनेक्शन बहुत है। अब देहली की शक्तियाँ थोड़ा मैदान पर आएँ तो आवाज़ सहज निकल सकता है। (अ.वा.28.12.79 पृ.159 आ., 160 आ.)	Download
258	दिल्ली	दिल्ली को कहते हैं बापदादा की दिल। जैसे दिल की धकड़न से तन्दुरुस्ती का मालूम पड़ता है वैसे दिल्ली की आवाज़ से समाप्ति का आवाज़ सुनेंगे। दिल्ली है दर्पण। तो दिल्ली वालों की कितनी ज़िम्मेवारी है। जितना बड़ा ज़िम्मेवारी का ताज उतना ही सतयुग में भी बड़ा ताज मिलेगा। (अ.वा.11.7.70 पृ.289 अं.)	Download

259	दिल्ली	देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी को प्रणाम ज़रूर करना है। देहली का विशेष पार्ट स्थापना में है और बाम्बे का विशेष पार्ट विनाश में है। कलकत्ते का पार्ट भी आवाज़ फैलाने में अच्छा सहयोगी रहेगा।... देहली को दिल कहते हैं।... बापदादा की दिल अर्थात् स्थापना की दिल। .... देहली के तरफ सभी की नज़र है। बाप की भी नज़र है, तो सर्व की भी नज़र है। .... देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेन्ट्रल गवर्मेन्ट है तो सेन्टर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरैक्शन मिलते हैं , वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेन्ट होनी चाहिए। ....देहली से हर मास विशेष प्लैन्स आउट होने चाहिए, तब समाप्ति समीप आवेगी और इसी पार्लियामेन्ट हाउस में जय - जयकार होगी। पाण्डवों ने अच्छी तरह सुना ! शक्तियों के बिना पाण्डव कुछ कर ही नहीं सकते। शक्तियाँ पाण्डवों को आगे रखें और पाण्डव शक्तियों को आगे रखें तब विष्णुपुरी स्थापन होगी। ... जैसे स्थापना में नं० वन देहली रही वैसे विशेषताओं के गुलदस्ते में भी नं . वन बनना है।...देहली की धरणी की विशेषताएँ बहुत हैं। पहले तो प्लानिंग पार्टी बनाओ , जिसमें चारों ओर के महारथी और शक्तियों का भी सहयोग लो। सेवा के प्रति समय प्रति समय देहली में संगठन होना ही चाहिए। धरणी पर महारथियों का इकट्ठा होना भी स्थापना के कार्य को वृत्ति और वातावरण से समीप लाने का कार्य करता है। जैसे मधुबन चरित्र भूमि है , मिलन भूमि है, बाप को साकार रूप में अनुभव कराने वाली भूमि है वैसे देहली की धरणी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है तब देहली से आवाज़ निकलेगा। अभी सबकी बुद्धियों में यह संकल्प तक उत्पन्न हुआ है कि जो कुछ कर रहे हैं, जो चल रहा है उससे कुछ होना नहीं है। अभी सब सहारे टूटने लगे हैं ; इसलिए ऐसे समय पर यथार्थ सहारा अभी जल्दी ढूँढ़ेगे, माँग करेंगे, ऐसी नई बात कोई सुनावे और आखरीन में चारों तरफ भटकने के बाद बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। (अ.वा.26.12.78 पृ.155 आ., 156,157)	Download
260	दिल्ली	आज देहली दरबार वाले हैं। राज्य दरबार वाले हो या दरबार में सिर्फ देखने वाले हो? दरबार में राज्य करने वाले और देखने वाले दोनों ही बैठते हैं। आप सब कौन हो? देहली की दो विशेषताएँ हैं, एक देहली दिलाराम की दिल है, दूसरी गद्दी का स्थान है। दिल है तो दिल में कौन रहेगा? दिलाराम। तो देहली निवासी अर्थात् दिल में सदा दिलाराम को रखने वाले। ऐसे अनुभवी आत्माएँ और अभी से स्वराज्य अधिकारी सो भविष्य में विश्व-राज्य अधिकारी। दिल में जब दिलाराम है तो राज्य अधिकारी अभी हैं और सदा रहेंगे। तो सदा अपनी जीवन में देखो कि यह दोनों विशेषताएँ हैं। दिल में दिलाराम और फिर अधिकारी भी। ऐसे गोल्डन चान्स, गोल्डन से भी डायमण्ड चान्स लेने वाले कितने भाग्यवान हो। (अ.वा.14.10.87 पृ.83 म.)	Download

261	दिल्ली	दिल्ली को दरबार बनाया है? ....दरबार में कौन बैठेंगे? दरबार में पहले तो महाराजा-महारानियाँ चाहिए। कितने महाराजा-महारानियाँ तैयार हुए हैं? दिल्ली वालों को राज्य का फाउन्डेशन लगाना है। .... विदेश से तो नाम निकलेगा; लेकिन नाम पहुँचेगा कहाँ? (दिल्ली में) तो दिल्ली वालों को नवीनता करनी चाहिए; क्योंकि सेवा का आदि स्थान है। सेवा का बीज रूप दिल्ली है।........... और राज्य का स्थान राजस्थान भी है तो दोनों ही हिसाब से दिल्ली वालों की विशेषता करनी चाहिए। तो क्या कहेंगे? मेला करेंगे? कानफ्रेन्स करेंगे? यह तो पुरानी बातें हो गईं। नवीनता क्या करेंगे? पहली बात तो दिल्ली वालों का एक दृढ़ संकल्प संगठित रूप से होना चाहिए कि हम सब दिल्ली का किला मज़बूत कर सफलता होनी ही है। .... एक दृढ़ संकल्प की भट्ठी हो फिर सब दिल्ली को कापी करेंगे। .... अब डबल स्टेज स्वयं की और दूसरी, स्थान की तैयार करो। .... यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम मेंआई है वह बहुत महत्व के समय काम आई है। ....दिल्ली वालों को सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त है। दिल्ली की धरणी का फाउन्डेशन अच्छा है। एग्ज़ाम्पल बनने वालों को विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली की निमित्त सेवा अन्य सेवा स्थानों के निमित्त एग्ज़ाम्पल बने। जैसे आदि में विशेषता दिखाई वैसे अभी भी दिखाओ तो उसका सहयोग मिल जायेगा। दिल्ली वाले फारेन वालों से भी अच्छे प्लैन बना सकते हैं; क्योंकि यहाँ बहुत सेवा के साधन हैं। यहाँ मेहनत की ज़रूरत नहीं, सिर्फ किला मज़बूत की बात है। ....सबकी नज़र दिल्ली पर है। जब एक/दो के समीप हों, हाथ में हाथ मिलायेंगे तब घेराव डाल सकेंगे। हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् संकल्प मिलाना। (अ.वा.27.5.77 पृ.177म., 178,179)	Download
262	दिल्ली	बाप के हो तो सबके हो। पाकिस्तान में भी यह कहते थे ना- आप तो अल्लाह के बन्दे हो, आपका किसी बात से कनेक्शन नहीं; इसलिए आप ईश्वर के हो और किसी के नहीं, क्या भी हो; लेकिन डरने वाले नहीं। कितनी भी आग लगे....; लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेफ़ रहेंगे। ऐसे नहीं, कहे मैं बाप की हूँ और याद करे दूसरे को। ऐसे को मदद नहीं मिलेगी। (अ.वा.17.4.84 पृ.251 अं.)	Download

263	दिल्ली	सभी के दिल में बाप का स्नेह समाया हुआ है। स्नेह ने यहाँ तक लाया है! दिल का स्नेह दिलाराम तक लाया है। दिल में सिवाय बाप के और कुछ रह नहीं सकता। जब बाप ही संसार है तो बाप का दिल में रहना अर्थात् बाप में संसार समाया हुआ है; इसलिए एक मत, एक बल, एक भरोसा, जहाँ एक है वहाँ ही हर कार्य में सफलता है। कोई भी परिस्थिति को पार करना सहज लगता है या मुश्किल? अगर दूसरे को देखा, दूसरे को याद किया तो दो में एक भी नहीं मिलेगा; इसलिए मुश्किल हो जायेगा।..... ब्राह्मण जीवन है, तो प्यारी है। ब्राह्मण जीवन नहीं तो प्यारी नहीं लगेगी; लेकिन परेशानी की जीवन लगेगी। तो प्यारी जीवन है या थक जाते हो? सोचते हो, संगम कब तक चलेगा? शरीर नहीं चलते, सेवा नहीं करते, इससे परेशान तो नहीं होते? ...कभी जीवन से तंग होते हो? तंग होकर यह तो नहीं सोचते कि अभी तो चलें। बाप अगर सेवा के प्रति ले जाते हैं तो और बात है; लेकिन तंग होकर नहीं जाना। एडवांस पार्टी में सेवा का पार्ट है और ड्रामानुसार गये तो परेशान होकर नहीं जायेंगे, शान से जायेंगे। सेवा अर्थ जा रहे हैं तो कभी भी बच्चों से वा अपने आपसे तंग नहीं होना। माताएँ कभी बच्चों से तंग तो नहीं होती हो? जब हैं ही तमोगुणी तत्वों से पैदा हुये तो वह क्या सतोप्रधानता दिखायेंगे! वह भी परवश हैं। आप भी बाप की आज्ञाएँ कभी-2 भूल तो जाते हो ना। तो जब आप भूल कर सकते हो तो बच्चों ने भूल की तो क्या हुआ.?.... वह कितना भी परेशान करें आप शान से क्यों उतरते हो? कमज़ोरी आपकी या बच्चों की? वह तो बहादुर हो गये जो आपको शान से उतार देते हैं और परेशान कर देते हैं। तो कभी भी, स्वप्न में भी परेशान नहीं होना।... चाहे बीमारी से, चाहे बच्चों से, चाहे अपने संस्कारों से या औरों से। औरों से भी परेशान हो जाते हैं ना। कई कहते हैं- और सब ठीक हैं, एक ही यह ऐसा है जिससे परेशान हो जाते हैं। तो परेशान करने वाले बहादुर नहीं बनें, आप बहादुर बनो। चाहे एक हो, चाहे दस हों;लेकिन मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, कमज़ोर नहीं।...वह कुर्सी के पीछे मरते हैं, आपको तो तख़्त मिला है। तो अकालतख़्त नशीन श्रेष्ठ शान में रहने वाले, बाप के दिलतख़्तनशीन आत्मा हैं। इसी शान में रहना, तो सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। अच्छा, दिल्ली फाउन्डेशन है सेवा का। फाउन्डेशन कच्चा हुआ तो सभी कच्चे हो जाते हैं; इसलिए सदा पक्के रहना। (अ.वा.15.11.89 पृ.23म., 24,25)	Download
264	दिल्ली	फाइनल पेपर में चारों ओर की हलचल होगी। एक तरफ वायुमण्डल व वातावरण की हलचल, दूसरी तरफ व्यक्तियों की हलचल, तीसरी तरफ सर्व सम्बन्धों में हलचल और चैथी तरफ आवश्यक साधनों की अप्राप्ति की हलचल। ऐसे चारों तरफ की हलचल के बीच अचल रहना यही फाइनल पेपर होना है। (अ.वा.1.9.75 पृ.85 अं.)	Download
265	दिल्ली	परिस्थिति के आधार पर स्थिति व किसी भी प्रकार का साधन हो तब सफलता हो। ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर में फ़ेल कर देगा। (अ.वा.1.9.75 पृ.86 आ.)	Download
266	दिल्ली	जितना तुम नज़दीक आवेंगे उतना आफ़तें आदि भी आती जावेंगी। (मु.19.2.69 पृ.2 मध्यांत)	Download
267	दिल्ली	जब चाहें शरीर का आधार लें और जब चाहें शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाएँ, क्या ऐसे अनुभव चलते-फिरते करते रहते हो? जैसे शरीर धारण किया वैसे ही फिर शरीर से न्यारे हो जाना, इन दोनों का क्या एक ही अनुभव करते हो? यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नं. लाने का आधार है। (अ.वा.15.7.73 पृ.131 अं.)	Download
268	दिल्ली	अब तो यह दूसरी/तीसरी चैपड़ी या दूसरी/तीसरी क्लास के पेपर्स हैं। फाइनल (अंतिम) पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुणा भयानक रूप की होगी ...; लेकिन शक्ति स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्व शक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है। (अ.वा.13.9.75 पृ.107 म.)	Download
269	दिल्ली	समय कभी भी बता के नहीं आयेगा, अचानक ही आएगा। जब समझेंगे समीप है तो नहीं आयेगा।...आने की निशानी अलबेलेपन वाले अलबेलेपन में आयेंगे, नहीं तो नं॰ कैसे बनेंगे? .... जो महारथी हैं उन्हों को टचिंग आयेगी ; लेकिन बाप नहीं बतायेगा। टचिंग ऐसे ही आएगी जैसे बाप ने सुनाया; लेकिन बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। (अ.वा.31.12.87 पृ.199 म)	Download

270	दिल्ली	फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आवेंगी तब तो पास और फ़ेल हो सकेंगे। न चाहते हुये भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हो यही तो पेपर है। और है भी एक सेकेण्ड का ही पेपर। (अ.वा.15.4.74 पृ.25 आ.)	Download
271	दिल्ली	प्रकृति का पेपर है- साधनों द्वारा आप सभी को हलचल में लाना। जैसे- पानी। अभी यह कोई बड़ा पेपर नहीं आया है; लेकिन पानी से बने हुये साधन, अग्नि द्वारा बने हुये साधन, ऐसे हर प्रकृति के तत्वों द्वारा बने हुये साधन, मनुष्य आत्माओं के जीवन का अल्पकाल के सुख का आधार हैं। तो यह सब तत्व पेपर लेंगे। अभी तो सिर्फ पानी की कमी हुई है; लेकिन पानी द्वारा बने हुये पदार्थ जब प्राप्त नहीं होंगे तो असली पेपर उस समय होगा। (अ.वा.25.10.87 पृ.102 अं.)	Download
272	दिल्ली	प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने वाले हैं; इसलिए पहले से ही पदार्थों के विशेष आधार- खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और सम्पर्क में आना इन सबकी चैकिंग करो कि कोई भी बात महीन रूप में भी विघ्न-रूप तो नहीं बनती? (अ.वा.25.10.87 पृ.103 म)	Download
273	दिल्ली	यह तो अभी कुछ नहीं हुआ, अब तो बहुत कुछ होना है। आप सोचेंगे अचानक हो गया; इसलिए थोड़ा सा हुआ; लेकिन पेपर तो अचानक आवेंगे, पेपर कोई बता कर नहीं आवेंगे।... लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। (अ.वा.19.9.72 पृ.363 आ., 364 अं.)	Download
274	दिल्ली	कभी भी फाइनल विनाश की डेट फिक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फिक्स हो जाए तो सब सीट्स भी फिक्स हो जाएँ, फिर तो पास विद् आनर्स की लम्बी लाइन हो जाए, इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जावेगी। जब सभी इस संकल्प से नि:संकल्प होंगे, वही डेट विनाश की होगी। (अ.वा.18.1.77 पृ.25 आ.)	Download
275	दिल्ली	फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुये भी, अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनके भेंट में जो आजकल की परिस्थितियाँ हैं वह कुछ नहीं हैं। (अ.वा.16.10.69 पृ.122 म)	Download
276	दिल्ली	यह फाइलन पेपर का पहले एनाउन्स कर रहे हैं। हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान निकले और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुँचा। यह फाइनल पेपर है जो समय पर निकलेगा, प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गये तो और कोई बड़ी बात नहीं। (अ.वा.20.12.69 पृ.157 म)	Download
277	दिल्ली	घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना करना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। (अ.वा.8.2.75 पृ.55 अं., 56 आ.)	Download
278	फुल सरेण्डर	जो पूरा बलि चढ़ते हैं उनको 21 जन्म का वर्सा मिलता है। पूरा बलि चढ़ने का मतलब है उसके साथ बुद्धि रहे। यह बच्चे आदि जो कुछ हैं, सभी से बुद्धि हट जाये। (मु.9.4.72 पृ.3 अं.)	Download
279	फुल सरेण्डर	एक तो अपना हर संकल्प समर्पण, दूसरा हर सेकेण्ड समर्पण अर्थात् समय समर्पण, तीसरा कर्म भी समर्पण और चैथा सम्बन्ध और सम्पत्ति जो है, वह भी समर्पण। सर्व सम्बन्ध का भी समर्पण चाहिए। (अ.वा.29.6.70 पृ.279 आ.)	Download

280	फुल सरेण्डर	जब मेरा-मेरा है तो फ़िक्र है, जब 'तेरा' कह दिया तो बाप जाने बाप का काम जाने, आप निश्चिन्त हो गये। 'तेरा' और 'मेरा' शब्द में थोड़ा सा अन्तर है। 'तेरा' कहना सब प्राप्त होना, 'मेरा' कहना सब गँवाना। द्वापर से मेरा-2 कहा तो क्या हुआ? सब गवाँ दिया ना, तन्दुरुस्ती भी चली गई, मन की शान्ति भी चली गई और धन भी चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क बन गये! बिजनेसमैन हो गये, जो विश्व के महाराजा के आगे कुछ भी नहीं है। (अ.वा.17.10.87 पृ.92 अं.)	Download
281	फुल सरेण्डर	अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन, मन, धन, समय, सम्बन्ध शीघ्र ही उस तरफ लग जाते हैं। तो मुख्य बात ही है मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प-विकल्पों को समर्पण करना, वो ही परख है सम्पूर्ण परवाने की। (अ.वा.3.10.69 पृ.116 आ)	Download
282	फुल सरेण्डर	बेहद का वर्सा लेना है तो हद का सब कुछ देना पड़े। (मु.5.6.78 पृ.1 म.)	Download
283	फुल सरेण्डर	जब सर्व समर्पण किया तो सर्व अर्थात् संकल्प, श्वाँस, बोल, कर्म,सम्बन्ध, सर्व व्यक्ति, वैभव, संस्कार, स्वभाव, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति सबको अर्पण किया। इसको ही कहा जाता है समर्पण। (अ.वा.4.10.75 पृ.150 अं.)	Download
284	फुल सरेण्डर	तुम ज्ञान में आए, सरेण्डर हुये तो तुम ट्रस्टी ठहरे। तुम क्यों फिक्र करते हो? सरेण्डर किया है और फिर सर्विस भी करता है तो रिटर्न में मिलेगा। अगर सरेण्डर हुआ है, सर्विस नहीं करते तो भी उनको खिलाना तो पड़े। तो उन पैसे से ही खाते अपना खत्म कर लेते हैं। (मु.22.11.73 पृ.3 आ.)	Download
285	फुल सरेण्डर	जब सम्पूर्ण स्वाहा नहीं तो सम्पूर्ण सफल नहीं होता। सोचते ज़्यादा हो, करते कम हो तो फल भी कम मिलेगा। पहले हिम्मत कम है, संकल्प पावरफुल नहीं है, तो कर्म में बल भी नहीं होगा और इसलिए फल भी कम ही होगा। (अ.वा.18.1.75 पृ.23 म.)	Download
286	फुल सरेण्डर	जबकि तन, मन और धन सभी बाप को समर्पण कर दिया, तो देने के बाद फिर 'मेरा विचार', 'मेरी समझ' और 'मेरा स्वभाव', यह शब्द ही कहाँ से आया? (अ.वा.15.7.73 पृ.134 आ)	Download
287	फुल सरेण्डर	सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है। मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन, मन, धन सब कुछ अर्पण। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हैं? तन से विकर्म कर ही कैसे सकते हैं और धन को भी विकल्प अथवा व्यर्थ कार्यों में लगा ही कैसे सकते हो? इससे सिद्ध है कि देकर फिर वापस ले लेते हैं। (अ.वा.18.9.69 पृ.108 म.)	Download
288	फुल सरेण्डर	सम्पूर्ण सरेण्डर या सम्पूर्ण समर्पण का छाप अगर नहीं लगा तो मालूम है कि क्या होगा? जैसे छापा न लगी चीज़ की वैल्यू कम होती जाती है, उसी रीति से आप आत्माओं की भी स्वर्ग में वैल्यू कम हो जावेगी। ... सम्पूर्ण समर्पण पाण्डवों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गये। पहाड़ों पर नहीं; लेकिन ऊँची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है उसमें गल गये।...जो सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन, मन, धन और सम्बन्ध, समय सब में अर्पण।... मन सिवाय श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे, इस स्थिति को कहा जाता है सम्पूर्ण। (अ.वा.3.10.69 पृ.115 म.)	Download
289	फुल सरेण्डर	विल करने में देरी तो नहीं की? जो भी बुराई है अन्दर वा बाहर वह सम्पूर्ण विल नहीं की है, तब तक विल पावर आ नहीं सकती। साकार ने कुछ सोचा क्या कि कैसे होगा, क्या होगा, यह कब सोचा? अगर कोई सोच-2 कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता। जैसे झाटकू और बिगर झाटकू का फर्क होता है।...जो पहले स्वीकार होता है उनको नं० वन की शक्ति मिलती है। जो पहले स्वीकार नहीं होते उनको शक्ति भी इतनी प्राप्त नहीं होती है। (अ.वा.18.1.70 पृ.167 अं.)	Download

290	फुल सरेण्डर	दर्पण तब बनेंगे जब सम्पूर्ण अर्पण होंगे। सम्पूर्ण अर्पण तो श्रेष्ठ दर्पण, जिस दर्पण में स्पष्ट सा. होता है। अगर यथायोग्य, यथाशक्ति अर्पण हैं तो दर्पण भी यथायोग्य, यथाशक्ति है। सम्पूर्ण अर्पण अर्थात् स्वयं के भान से भी अर्पण। (अ.वा.5.4.70 पृ.244 म.)	Download
291	फुल सरेण्डर	जब सम्पूर्ण निर्विकारीपन का कसम उठावें और रह कर दिखावें तब बाबा रजिस्टर्ड करते हैं। (मु.20.1.78 पृ.3 अं.)	Download
292	फालो फादर	अर्ज़ी को खत्म करने का सहज साधन है-सदा बाप की मर्ज़ी पर चलो। ‘‘मेरी मर्ज़ी यह है‘’ तो वह मनमर्ज़ी अर्ज़ी की फाइल बना देती है। जो बाप की मर्ज़ी वह मेरी मर्ज़ी।... जैसे कहा जाता है आँख बन्द करके चलते चलो। ऐसा तो नहीं, वैसा तो नहीं होगा, यह आँख नहीं खोलो। यह व्यर्थ चिन्तन की आँख बन्द कर बाप की मर्ज़ी अर्थात् बाप के कदम पीछे कदम रखते चलो।....तो ऐसे सदा फालो फादर करो। फालो सिस्टर, फालो ब्रदर, यह नया स्टैप नहीं उठाओ। इससे मंज़िल से वंचित हो जायेंगे। रिगार्ड दो; लेकिन फालो नहीं करो। (अ.वा.6.4.82 पृ.348 म.)	Download
293	फालो फादर	एक ही शब्द याद रहे फालो फादर। जो भी कर्म करते हो चेक करो कि यह बाप का कार्य है? अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं।...तो फालो फादर करने वाले अर्थात् जो बाप का संकल्प वही मेरा संकल्प, जो बाप का बोल वही मेरा।...तो फालो फादर करने वाले मेहनत से छूट जायेंगे और सदा सहज प्राप्ति की अनुभूति होती रहेगी। (अ.वा.16.4.82 पृ.376 आ.)	Download
294	फालो फादर	निराकार स्वरूप की बात अलग है। साकार में निमित्त बन करके जो कुछ करके दिखाया वह सब फालो कर सकते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। (अ.वा. 2.1.78 पृ.1 अं.)	Download
295	फालो फादर	जो मदर-फादर को फालो करेंगे वही तख्त पर भी बैठेंगे। (मु.22.8.78 पृ.2 आ.)	Download
296	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	बच्चों को खाना नहीं मिलता है तो खुद भी नहीं खाते हैं। भूख में मर जाते हैं। बच्चों का दुःख बाप कैसे सहन कर सकेंगे? पहले बच्चे, पीछे बाप। माँ तो सबसे पिछाड़ी में खाती है। कुछ न बचा तो रूखा-सूखा भी खा लेगी। हमारी भंडारी भी ऐसे करती है ना। (मु.23.1.74 पृ.3 अं.)	Download
297	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	जो जास्ती मदद करेंगे वह ऊँच पद पावेंगे। भूख तो कब कोई मर न सके। पहले तो बाप भूख मरे, फिर बच्चे मरें। अच्छे-2 बाप जो होते हैं, जब तक बच्चे न खाएं तब तक खुद खाते नहीं; क्योंकि बच्चे वारिस हैं ना। तो उन पर लव रहता है। (मु.23.2.69 पृ.4 आ.)	Download
298	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	अपने को बचाने की कोशिश करनी है। अत्याचार तो होंगे। हिम्मत चाहिए। भूख तो कब कोई मर न सके। शिवबाबा का बन और भूख मरे यह कब हो नहीं सकता। जैसे ग़रीबों की परवरिश होती है वैसे ही साहुकारों की होती है। कोई भी भूख मर न सके। सरेण्डर कर दिया, सभी कुछ शिवबाबा को दे दिया उससे वर्सा लेने लिए। (मु.3.11.68 पृ.4 म.)	Download
299	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं, कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। (अ.वा.13.2.78 पृ.47 अं.)	Download
300	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	बाबा की सर्विस में लग जाने से तुम कब भूख नहीं मरेंगे। हमारा खर्चा कुछ है थोड़े ही। तुम सिर्फ पेट (भर) खाते हो और क्या! (मु.16.10.77 पृ.3 मध्यांत)	Download
301	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है- ब्राह्मण बच्चा दाल-रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा; लेकिन दाल-रोटी ज़रूर मिलेगी। (अ.वा.24.2.85 पृ.190 अं.)	Download

302	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	बाप कभी भी बच्चों को भूखा रहने न देंगे; परन्तु सपूत बच्चे भी हों ना। ब्राह्मण कब भूख मर न सके। बाप तो बैठा है ना। (मु.13.10.78 पृ.3 अं.)	Download
303	फोटो रखना रांग	कोई भी गुरू गोसाईं आदि का फोटो भी न रखना है; इसलिए बाबा फोटो निकालने की भी मना करते हैं। फोटो में तुम इस मम्मा-बाबा को देखते रहेंगे। और ही वह समय तुम्हारा नुकसान हो जावेगा।... बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता, कहाँ साकार में फँस कर मर न जायें। (मु.16.7.72 पृ.2 म.)	Download
304	फोटो रखना रांग	फोटो के लिए कहते हैं, मैं समझता हूँ पूरा ज्ञान नहीं उठाया है तब फोटो माँगते हैं। यह चित्र आदि तो दुनियाँ वाले रखते हैं। (मु.17.7.72 पृ.3 अं.)	Download
305	फोटो रखना रांग	बहुत बच्चे फोटो निकालते हैं, तो भी मना करते हैं। फोटो देख यह बाबा याद पड़ेगा। शिवबाबा भूल जाएगा। तुमको सिवाय शिवबाबा के और कोई चित्र रखना नहीं है। (मु.15.5.71 पृ.3 अं.)	Download
306	फोटो रखना रांग	यह ज्ञान बुद्धि में है। इसमें चित्र की कोई दरकार नहीं है। बाबा धीरे-2 चित्रों को भी उड़ाते जावेंगे; क्योंकि यह चित्र सब हैं भक्तिमार्ग के। उन पर करेक्शन आदि करके फिर बच्चों को समझाने लिए यह बनाये गये हैं, नहीं तो इनकी दरकार है नहीं। (मु.23.6.75 पृ.1 आ.)	Download
307	फोटो रखना रांग	चित्र भी कोई का न रखना है। (मु.16.11.74 पृ.3 अं.)	Download
308	फोटो रखना रांग	बाबा समझते हैं इनमें अज्ञान है, जो फोटो के लिए ज़िद करते हैं। इनमें तो कोई फायदा नहीं। यह देह तो मिट्टी है। इनका फोटो क्या देखना है? भक्तिमार्ग की जो रसम है वह ज्ञानमार्ग में हो न सके। कब भी फोटो न माँगो। (मु.13.11.70 पृ.2 मध्यांत)	Download
309	फोटो रखना रांग	वास्तव में तुमको इनका(ब्रह्मा) फोटो भी न रखना चाहिए। बाबा का फोटो कोई माँगते हैं, तो बाबा समझ जाते हैं, यह शिवबाबा को याद नहीं करते हैं तब इनका चित्र माँगा है। तुम्हारा वास्तव में इनसे कोई काम नहीं है। (मु.24.1.75 पृ.1 अं.)	Download
310	फुटकर प्वाइंट्स	यहाँ भी तुमको रोना न है। गायन भी है अम्मा मरे तो हलवा खाओ। जिन रोया तिन खोया। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा।... जो रोने प्रूफ बनते हैं वही बादशाही लेते हैं। बाकी तो प्रजा में चले जावेंगे। (मु.1.10.76 पृ.2अं, 3 आ.)	Download
311	फुटकर प्वाइंट्स	वास्तव में तुम भी सब नर्सेज़ हो ना। छी-छी गंदे मनुष्यों को देवता बनाना यह नर्सपना है ना। बाप भी कहते हैं मुझे डर्टी, पतित मनुष्य बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। (मु.7.1.75 पृ.2 अं.)	Download
312	फुटकर प्वाइंट्स	संगम है तो बाबा भी ज़रूर होगा। वही इस दुनिया को बदलाने वाला है। (मु.16.10.76 पृ.3 आ.)	Download
313	फुटकर प्वाइंट्स	कृष्ण को सभी का बाप नहीं कहेंगे। वह है विश्व का मालिक। उनको भी बनाने वाला शिव है। दोनों ही प्यारे हैं; परंतु दोनों से भी ज़्यादा प्यारा कौन है? कहेंगे, शिव। (मु.13.9.73 पृ.3 अं.)	Download
314	फुटकर प्वाइंट्स	माँ-बाप जब अकेले होते हैं तो जो भी करें; लेकिन अपनी रचना के सामने होते हैं तो कितना ध्यान देते हैं। तो आप भी रचयिता हो। जो रचयिता करेंगे वही रचना करेगी। (अ.वा.16.7.69 पृ.87 अं.)	Download
315	फुटकर प्वाइंट्स	तुम तो जब से आये हो युद्ध शुरू है। पुरानों से कितनी युद्ध चलती है। नये जो आएँगे उनसे भी युद्ध चलेगी। उस लड़ाई में भी मरते रहते हैं, दूसरे शामिल होते रहते हैं। यहाँ भी मरते हैं, वृद्धि को भी पाते रहते हैं। (मु.2.1.75 पृ.1 अं.)	Download

316	फुटकर प्वाइंट्स	कल्याण अर्थ झूठ बोलना वह पाप नहीं होता है। बच्चियाँ छुपकर आती हैं, बहाना हास्पिटल का कर सेन्टर पर आ जाती हैं। वह हुआ कल्याण के लिए झूठ बोलना। (मु.10.1.75 पृ.1 अं.)	Download
317	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रह पुरुषार्थ करना है। वह भी छोड़ना है। सर्विस करनी है। (मु.15.10.78 पृ.3 अं.)	Download
318	गृहस्थ व्यवहार	यहाँ वह रसम नहीं (है) कि पियर घर, ससुर घर को छोड़ यहाँ आकर बैठे। यह हो नहीं सकता। यहाँ तो गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है। कुमारी है वा कोई भी है, उनको कहा जाता है घर में रह रोज़ ज्ञानामृत पीने आओ। (मु.5.2.73 पृ.1 म.)	Download
319	गृहस्थ व्यवहार	पुराना सम्बन्धी से भी तोड़ निभाना है युक्ति से। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमलफूल समान रहना है। (मु.30.4.73 पृ.4 अं.)	Download
320	गृहस्थ व्यवहार	घर में रहने वालों की यहाँ रहने वालों से अच्छी उन्नति होती है। तुमको कब मना नहीं की जाती है कि घर में न जाओ। (मु.7.2.68 पृ.2 अं.)	Download
321	गृहस्थ व्यवहार	दोनों तरफ तोड़ निभाओ। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। अंत तक दोनों तरफ निभाना है। (मु.3.2.78 पृ.1 म.)	Download
322	गृहस्थ व्यवहार	बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहो; परन्तु इतना कमज़ोर नहीं होना है, जो स्त्री, बच्चे आदि आज्ञा ही न मानें। (मु.14.11.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
323	गृहस्थ व्यवहार	भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, कहाँ शादी आदि पर भी जाओ। जब फुर्सत मिले तो बाप को याद करो। शरीर निर्वाह अर्थ कोई भी कर्म करते हुए तुम्हारी जिससे सगाई हुई है उनको और उनके घर को याद करना है।(मु.27.7.77 पृ.3 अं.)	Download
324	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहने का व्रत पालना है। घर में घोटाला तो ज़रूर पड़ेगा। कुछ भी हो जाए तुम पवित्रता का व्रत ज़रूर पालन करो, नहीं तो पद भ्रष्ट हो जाएगा। (मु.16.10.73 पृ.2 म.)	Download
325	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रह पुरुषार्थ करना है। वह भी छोड़ना न है। सर्विस करनी है पवित्र बनने की, फिर अपने मित्र-सम्बन्धियों आदि को भी लायक बनाओ। (मु.15.10.73 पृ.4 आ.)	Download
326	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये इसका मतलब यह नहीं कि कोई को गृहस्थ न है तो ज़रूरी जाना ही पड़े। नहीं। (मु.28.11.73 पृ.2 अं.)	Download
327	गृहस्थ व्यवहार	जो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं, सर्विस करते हैं, वह यहाँ रहने वालों से भी अच्छा पद पा सकते हैं। (मु.2.1.72 पृ.1 अं.)	Download
328	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रह दिखाओ, तब ऊँच ते ऊँच पद पावेंगे। (मु.28.4.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
329	गृहस्थ व्यवहार	बाबा सभी को तो यहाँ बिठा न देंगे, गृहस्थ व्यवहार में अपने घर में रहना है। यहाँ रिफ्रेश होने भल आओ। (मु.15.5.72 पृ.3 आ.)	Download
330	गृहस्थ व्यवहार	ऐसे नहीं कि दोनों को अलग-2 रहना है। नहीं। साथ में रहकर अपनी जाँच करनी है कि आग तो नहीं लगती। नगन नहीं होना है।(मु.8.10.72 पृ.1 अं.)	Download
331	गृहस्थ व्यवहार	बहुत कहते हैं हम यहाँ ही बैठ जावें। फिर तेरे कर्मबन्धन, बाल-बच्चे कहाँ जावेंगे? कहते हैं वह भी आप सम्भालो। ऐसे कितने के बच्चे सम्भालेंगे? लेकिन ठहरो, तुम पहले सर्विसएबुल बनो तो तेरे बच्चों का भी प्रबन्ध हो जावेगा। जैसे-जैसे आदि में हुआ था वैसे अंत में होगा। बच्चों की भी फिर हास्टल खोलेंगे। यह प्रोग्राम ध्यान पर है। (मु.18.10.72 पृ.3 मध्यादि)	Download

332	गृहस्थ व्यवहार	यहाँ सभी को तो बैठ नहीं जाना है। वह तो जिनको पतित तंग करते हैं तब यहाँ भाग आती हैं। पहले भी उन्होंने तंग किया था तब भागी थीं। कोई साहुकार घर की होती तो बाबा उन्हों को भी कहते कि बर्तन माँजना पड़ेगा, झाड़ू लगाना पड़ेगा। (मु.17.11.71 पृ.3 अं.)	Download
333	गृहस्थ व्यवहार	बाप आते ही हैं बच्चों को सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाने। बाकी और गृहस्थ व्यवहार की बातों को तो हर एक को खुद ही सुलझाना है। (मु.2.9.69 पृ.2 अं.)	Download
334	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रहने से फर्क तो रहता है ना। वह इतना नहीं समझा सकते हैं जितना तुम; परन्तु सभी तो नहीं छोड़ सकते। (मु.2.12.70 पृ.3 आ.)	Download
335	गृहस्थ व्यवहार	रहो भल अपने गृहस्थ व्यवहार में। गाया हुआ है कि शरण पड़ी मैं तेरे। यह भी होता है, जब कोई दुःखी होते हैं तो ऊँच ताकत वाले की जा(ए) शरण लेते हैं। यहाँ तो प्रैक्टिकल में है। जब बहुत दुःख देखते हैं, सहन नहीं कर सकते हैं, लाचारी होती (है) तो फिर भाग आकर बाप की शरण लेते हैं सद्गति के लिए। यह ही राइट है शरणागति। (मु.5.8.76 पृ.3 आ.)	Download
336	गृहस्थ व्यवहार	गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले यहाँ रहने वालों से अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं, बहुत अच्छी-2 बहादुरी दिखा सकते हैं। उनको ही महावीर कहा जाता है, जो गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रह दिखावें। (मु.5.4.71 पृ.2 आ.)	Download
337	गृहस्थ व्यवहार	गाते भी हैं तुम पर बलिहार जाऊँ, तो ज़रूर इनएडवांस बलिहार जावेंगे ना।... बलिहारी भी पूरी चाहिए। वह भी राज़ तो समझाया है। ऐसे नहीं कि सभी बाबा के पास ले आकर बैठ जाना है। तुमको अपना शरीर निर्वाह भी करना है। बाल-बच्चों को सम्भालना है; परन्तु श्रीमत पर चलना है। (मु.7.3.78 पृ.1 अं.)	Download
338	गंधर्व विवाह	कोई बच्चे की आपस में दिल लग गई तो आपस में प्लान बनाते, अच्छा हम गंधर्व विवाह करेंगे। मैं तुमको बचाता हूँ, बंधन से छुड़ाता हूँ। मुड्डा, तुम कैसे बचा सकता? पहले तुम माया से बचा है? बाबा से राय ली है? श्रीमत ली नहीं है और आपस में सगाई की बातें करते हो, तो मुर्दे माया घसीट ले जावेंगी। सूक्ष्म में दिल लग जाती है तो ऐसी बातें करते हो। बाबा समझ जाता है यह रसातल जा रहे हैं। सगाई तो माता-पिता करते हैं कि मुट्ठी आपस में ही सगाई कर देते गुप्त चुप से। (मु.9.10.72 पृ.3 मध्यादि)	Download
339	गंधर्व विवाह	पापात्माएँ पाप का ही धंधा करते। गंधर्व विवाह करेंगे तो बुद्धि लटकी रहेगी। यह भी क्यों करें? पिछाड़ी में तो सिवाय बाप के कुछ भी याद ना आए तब स्कालरशिप मिल सकती। विश्व के मालिक बनते हो। (मु.2.7.70 पृ.4 म.)	Download
340	गंधर्व विवाह	गंधर्व विवाह करने बाद फिर माया एकदम तवाई बना देती है। माया भी बड़ी प्रबल है ना। बाबा प्रबल है पावन बनाने में। इसलिए उनको सर्वशक्तिवान पतित-पावन कहा जाता है। (मु.19.12.73 पृ.1 अं.)	Download
341	गंधर्व विवाह	अगर कोई कहते हैं मैं शादी करता हूँ तो आसुरी राह पर चलने वाला हो गया। बाप तो तुमको ले जाते हैं बहिश्त में। फिर अगर दोजख की याद आई, गटर में जाकर पड़े तो उनको कहेंगे डर्टी ब्रूट्स। तुमको तो दैवी परिवार का बनना है। गटर में जाने की कब आस भी न रखना है। (मु. 27.1.75 पृ.1 म.)	Download
342	गंधर्व विवाह	बाप से प्रतिज्ञा कर फिर अगर शादी कर ली तो पूरी बरबादी हो जावेगी। स्वर्ग का मुँह भी नहीं देख सकेंगे। (मु. 24.5.71 पृ.4 अं.)	Download

343	गंधर्व विवाह	कई गंदे खयालात वाले बच्चे समझते हैं हमको यह फलाना बहुत अच्छा लगता है। इनसे हम गंधर्वी विवाह कर लें; परंतु यह गंधर्वी विवाह तो तब कराते हैं जबकि मित्र-सम्बंधी आदि बहुत तंग करते हैं तो उनको बचाने लिए। ऐसे थोड़े ही सब कहेंगे हम गंधर्वी विवाह करेंगे। वह कब रह न सकें। पहले दिन ही जाय गटर में गिर पड़ेंगे।...गंधर्वी विवाह करना कोई मासी का घर नहीं। एक/दो से दिल लगी तो कह देते गंधर्व विवाह करें। इसमें माइयों को बड़ा खबरदार रहना चाहिए। समझना चाहिए यह बच्चे काम के नहीं। जिससे दिल लगी है उससे हटा देना चाहिए, नहीं तो बातें कर देंगे। इस सभा में बड़ी खबरदारी रखनी होती है। आगे चल बड़े कायदेसिर सभा लगेगी। ऐसे-2 खयालात वाले को आने न देंगे। (मु.20.4.75 पृ.3 आ.)	Download
344	गंधर्व विवाह	कुमारी को तो शादी कराने की दरकार नहीं। और ही झंझट पड़ता। कन्या को बंधन डालते हैं, तो कसाइयों से बचाने लिए कोशिश करनी पड़ती है। मनुष्य एक/दो का कोस कैसे करते हैं, यह कोई को पता नहीं।(मु.3.2.78 पृ.2 अं.)	Download
345	गंधर्व विवाह	कन्या की शादी के लिए पूछते हैं। अगर ज्ञान में नहीं चल सकती तो भल करा दो। बच्ची की शादी करानी है। बाकी बच्चा पवित्र नहीं बनता, तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता तो फिर हंस-बगुले इकट्ठे कैसे रहेंगे? बोलो- पवित्र बनो तो रहो, नहीं तो निकलो बाहर। आज्ञाकारी बनना है। बाप हमेशा सही डायरैक्शन देंगे, अगर राँग दिया तो भी रेस्पान्सिबल बाप है। (मु.12.7.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
346	गंधर्व विवाह	कहते हैं, बाबा बंधन है। शादी करूँ? साथी चाहिए। शादी करनी है, जाकर करो। जाकर मरो। बाबा क्या करेंगे? तुमको वर्सा पाना है तो पवित्र रहना है। पवित्रता के लिए कोई कुछ कर न सकता। अगर कोई मारता है तो रिपोर्ट करो। शादी के लिए पूछते हैं यह भी बहाना है। चल न सके। गंधर्वी विवाह कर फिर अंदर घुटके खाते रहते। इससे तो बैचलर रहना अच्छा है।(मु.30.11.73 पृ.3 अं.)	Download
347	गंधर्व विवाह	शादी करना चाहते हो तो वर्सा नहीं मिलेगा। (मु.27.11.77 पृ.2 अं.)	Download
348	गंधर्व विवाह	बच्ची की शादी करानी है तो साक्षी होकर पार्ट बजाओ, नहीं तो झगड़ा हो पड़ेगा, मार-पीट चलेगी। बच्चियाँ निर्विकारी नहीं बनना चाहती हैं तो लाचारी हालत में उनकी शादी-बरबादी करा दो। पवित्र रहना न चाहती हैं तो जावें जहन्नुम में। रवाना कर देना चाहिए, नहीं तो वेश्या बन पड़ेगी।(मु.19.8.73 पृ.3 म)	Download
349	गंधर्व विवाह	अभी एक जोड़ी का स्वयंवर हुआ है। बाबा ने पहली बारी ही ऐसा देखा। आपस में भाकी भी नहीं पहनते। जैसे बाजू में कोई सोते हैं यों तो कहते थे अलग जाकर सो जाओ। शुरू से ही कितनी हिम्मत दिखाई है। कमाल है ना! ऐसे चलते रहें तो कितना ऊँच पद पावेंगे। (मु.17.6.70 पृ.2 मध्यांत)	Download
350	गंधर्व विवाह	बहुत करके माताएँ ही लिखती हैं- बाबा, हमको बहुत तंग करते हैं, हम इस बंधन से कैसे छूटें? पुरुष कोई एकर-बेकर(एक/दो) होगा जो कहेंगे। अंदर में दिल होती है, बाहर से आकर कहते- बाबा, हमको शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। हम क्या करें? अरे, तुम कोई जानवर थोड़े ही हो जो ज़बरदस्ती करेंगे। अंदर में दिल है तब पूछते हो क्या करें। तो बाबा भी कहेगा- अच्छा, भल शादी करो। तुम रह न सकेंगे। इसमें तो पूछने की भी बात नहीं रहती। जीवात्मा अपना मित्र है, अपना शत्रु है। जो चाहे सो करे। पूछना माना दिल है। (मु. 29.3.75 पृ.3 आ.)	Download
351	गंधर्व विवाह	विकार के लिए शादी बरबादी है।... आधा कल्प भक्तिमार्ग में विकार के लिए शादी चली। अब संगम पर हैं। अब विकार के लिए शादी करना बरबादी है। परमपिता परमात्मा शिव के साथ सगाई आबादी कर देती है। (मु.9.3.78 पृ.3 अं.)	Download

352	गंधर्व विवाह	इस समय शादी करना पूरी बरबादी है। यहाँ शिव साजन साथ सगाई करने से पूरी आबादी हो जावेगी स्वर्ग में। (मु.23.3.78 पृ.3 अं.)	Download
353	गुण-अवगुण	खुद मीठा बन फिर औरों को भी मीठा बनाता हूँ। खुद ही कडुवा होगा तो दूसरों को मीठा कैसे बनावेंगे? (मु.15.10.76 पृ.1 म.)	Download
354	गुण-अवगुण	गीत गाना नहीं है। वास्तव में सुनना भी नहीं है। (मु.15.4.71 पृ.1 आ.)	Download
355	गुण-अवगुण	हवस होती है; परंतु कर्मेन्द्रियों से चोरी आदि नहीं करना है। छिपाय कर उठाना न चाहिए। बिगर छुट्टी यज्ञ से कोई चीज़ उठाई वह भी चोरी है। बहुत हैं जो छिपकर खाते हैं, चोरी करते हैं, यह तो शुरू से ही चला आया है। (मु.10.2.68 पृ.1 अं.)	Download
356	गुण-अवगुण	कोई का सिग़रेट पीना नहीं छूटता, कोई का शराब पीना, जुआ खेलना नहीं छूटता, विकार नहीं छूटते तो समझो हम लायक नहीं हैं ऊँच पद के। धणी का बनकर फिर ऐसा कोई गंदा काम न करना चाहिए। (मु.10.2.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
357	गुण-अवगुण	आवाज़ से हँसना न है। ल.ना. को हर्षितमुख कहा जाता है। हर्षितमुख रहना और हँसना अलग बात है।...खिल-खिल करना भी एक विकार है। (मु.8.9.73 पृ.3 अं.)	Download
358	गुण-अवगुण	जो खुद ही रोते हैं तो और की क्या सर्विस कर उनको हँसावेंगे, यहाँ हँसना सीखना है अर्थात् मुस्कुराना। आवाज़ से भी हँसना न है। (मु.10.1.72 पृ.3 अं.)	Download
359	गुण-अवगुण	आपस में लड़ना-झगड़ना तो आरफ़न का काम है। (मु.29.4.72 पृ.2 म.)	Download
360	गुण-अवगुण	सारा दिन कोई की निन्दा करना, परचिंतन करना, इनको दैवी गुण नहीं कहा जाता। देवताएँ ऐसे काम नहीं करते हैं। (मु.1.1.71 पृ.2 म.)	Download
361	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	माइयों को भी सिखलाते हैं, फिर जो कुछ मिलता है आपस में हिस्सा कर लेते हैं। बहुत कापी करते हैं और बहुत कापी करेंगे। तुम देखना कितनी ब्र.कु. बन जाती हैं। फायदा कुछ भी नहीं।...कौड़ी बदले हीरा देना यह तो बाप का ही (काम) है। बाकी तो ठग लेते हैं। पैसा लेकर खा जाते हैं। और ही तमोप्रधान बन जाते। (मु.27.2.74 पृ.2 म.)	Download
362	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	बाप जब तक न आये तो राजयोग कहाँ से आए? दुनियाँ में करप्शन, एडल्ट्रेशन तो बहुत है, राजयोग भी नहीं तो हठयोग भी नहीं। यह फिर नई कुछ रिद्धि-सिद्धि सीखते हैं अनेक प्रकार की। (मु.3.2.74 पृ.1 अं.)	Download
363	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	वे लोग कंस, जरासन्धी, हिरण्यकश्यप आदि को सतयुग में ले जाते हैं और कृष्ण को फिर द्वापर में ले गये हैं। ... सभी असुरों का अलग-2 नाम देते हैं। कुम्भकरण आदि यह सभी असुरों के नाम हैं। अभी है आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् आसुरी मत पर चलने वाले। (मु.5.5.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
364	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	आगे भिक्षा लेने जाते थे, स्त्री का मुँह नहीं देखते थे। आँखे बन्द कर ले जावेंगे, फिर आँख खोलेंगे। शुरू-2 में ऐसे थे। (मु.15.5.73 पृ.1 अं.)	Download
365	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	एक दिन तुम बच्चे इन सबकी पोल पदरी करेंगे। बड़े-2 गुरू-गोसाईं, पण्डित आदि हैं। आखरीन यह सब ठण्डे हो जावेंगे। (मु.22.10.78 पृ.3 आ.)	Download
366	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	बाप अपनी बच्ची को भी गंदा कर देते हैं। बाबा के पास तो सब अपना समाचार देते हैं ना। हमने यह ख़राब काम किया। ऐसे बहुत मिसाल होते हैं। कोई गुरू से ख़राब, कोई भाई से, कोई मामे से ख़राब हो पड़ते। इनको कहा ही जाता है वेश्यालय। (मु.8.2.75 पृ.2 आ.)	Download
367	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	नामी-ग्रामी बड़े-2 साधु-संत आदि जो अपनी पूजा कराते हैं उनको हिरण्याकश्यप कहा हुआ है। जिनको ही नरसिंह रूप धारण कर फिर विनाश कराते हैं। (मु.25.10.78 पृ.1 म.)	Download
368	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। भल बड़े-2 महारथी म्यूज़ियम सम्भालने वाले हैं; परन्तु कुछ भी समझते नहीं। (मु.24.9.70 पृ.2 मध्यांत)	Download

369	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	गुरूओं ने तो सत्यनाश कर दी है। एक गुरु (ब्रह्मा) मर गया, फिर जो गद्दी पर बैठा उनको गुरू कर लेते। यह तो एक ही सतगुरु है। (मु.19.9.73 पृ.3 अं.)	Download
370	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	नीचे ते नीचे भ्रष्टाचारी हैं कलियुगी गुरु, जो भगवान को सर्वव्यापी कह, भगवान जो भारत को स्वर्ग बनाते हैं उनसे विमुख कर देते और ईश्वर को गालियाँ देने सिखलाते हैं। (मु.31.10.73 पृ.1 म.)	Download
371	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	एक गुरू मरा तो अपने शिष्य को अपना गुरू कर देते। गुरू मर गया, उसने पार न किया तो उनके शिष्य को गुरू करने से फिर क्या होगा? यह तो बाप गैरन्टी करते हैं हम कल्प-2 सभी को ले जाता हूँ। (मु.11.6.72 पृ.3 मध्यादि)	Download
372	गुजरात	सबसे ज़्यादा समीप गुजरात है ना। समीप के साथ सहयोगी भी गुजरात वाले हैं। सहयोग में गुजरात का नं. राजस्थान से आगे है।...गुजरात का जन्म कैसे हुआ, पता है? गुजरात को पहले सहयोग दिया गया। सहयोग के जल से बीज पड़ा हुआ है, तो फल भी सहयोग का ही निकलेगा ना। गुजरात को डायरैक्ट बापदादा के संकल्प के सहयोग का पानी मिला है।... गुजरात में बापदादा ने सेन्टर खोला है, गुजरात ने नहीं खोला है।...किसी भी कार्य में आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। धरणी सहयोग के फल की है। (अ.वा.12.12.83 पृ.44 अं., 45 आ.)	Download
373	गुजरात	गुजरात से बहुत सेवाधारी निकले हैं; लेकिन गुजरात की नदियाँ गुजरात में ही बह रही हैं। गुजरात कल्याणकारी नहीं, विश्व कल्याणकारी बनो। सदा एवररेडी रहो।... चाहे कहाँ 20 वर्ष भी रहो; लेकिन स्वयं सदा एवररेडी रहो, स्वयं नहीं सोचो कि कैसे होगा। इसको कहा जाता है महात्यागी। (अ.वा.26.4.82 पृ.393 आ)	Download
374	गुजरात	गुजरात के सच्चे सेवाधारी। सच्चे सेवाधारी कहो वा रूहानी सेवाधारी कहो। .... गुजरात के रूहानी सेवाधारियों की विशेषता क्या है? (एवररेडी हैं) एवररेडी स्थूल सेवा में तो हैं; क्योंकि सेवा के जो भिन्न-2 साधन हैं उसमें जहाँ बुलावा होता है वहाँ पहुँचने वाले हैं; लेकिन मंसा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो उसमें भी सदा एवररेडी हो? जो सोचो, वह करो। उसी समय। इसको कहा जाता है एवररेडी। मंसा से भी एवररेडी, संस्कार परिवर्तन में भी एवररेडी। रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। तो ऐसे एवररेडी हो या टाइम लगता है? संस्कार मिटाने में वा संस्कार मिलाने में टाइम लगता है? इसमें भी एवररेडी बनो; क्योंकि गुजरात की रास मशहूर है। वह रास तो बहुत अच्छी करते हो; लेकिन रास मिलाना, बाप से संस्कार मिलाना, यह है बाप के संस्कारों से रास मिलाने की रास। ...संस्कार मिलाना यही बड़े ते बड़ी रास है।...लक्ष्मी के साथ गणेश की भी पूजा करते हैं। गणेश बच्चा है ना। तो सिर्फ लक्ष्मी की पूजा नहीं; लेकिन आप सब गणेश अर्थात् बुद्धिवान हो। तीनों कालों के नालेजफुल, इसको कहा जाता है गणेश अर्थात् बुद्धिवान समझदार। ... तो नालेजफल भी हो और विघ्न विनाशक भी हो; इसलिए पूजा होती है।....तो सदा किसी भी परिस्थिति में विघ्न रूप न बन विघ्न विनाशक बनो। ... गुजरात विघ्न विनाशक हो गया तो फिर कोई भी विघ्न की बातचीत ही नहीं होगी ना। ...जैसे गुजरात सेवा में नं० वन है, ऐसे विघ्न विनाशक में नं० वन हो तब प्राइज़ देंगे। बहुत बढ़िया प्राइज़ देंगे। जो बाप को सौगात मिलती है ना वह आप गुजरात को देंगे। (अ.वा.27.10.81 पृ.82अं., 83आ., 84आ.)	Download
375	गुजरात	अभी तक गुजरात को दहेज में सेन्टर नहीं मिले हैं, बाम्बे को मिले हैं। गुजरात जब सबमें नम्बरवन है तो इसमें क्यों नहीं? वैसे गुजरात जो चाहे वह कर सकता है। (अ.वा.29.10.81 पृ.97 आ)	Download
376	गुजरात	गुजरात अर्थात् जहाँ रात गुज़र गई (अर्थात् बीत गई), सदा दिन है। सदा रोशनी ही रोशनी है। अन्धकार मिट गया। (अ.वा.15.4.81 पृ.158 म.)	Download

377	गुजरात	स्नेही और सहयोगी बनने की तकदीर अच्छी है। परिवार का परिवार एकमत हो जाए तो यह भी तकदीर की निशानी है। परिवार के सब साथी पुरुषार्थ की रेस में एक/दूसरे से आगे निकलने की लगन में लगे हुये हैं। हिम्मत से मदद स्वतः ही प्राप्त होती है। (वीरचंद को) यह मोहजीत परिवार है। ऐसे मोहजीत परिवार कितने बनाये हैं ? लक्ष्य श्रेष्ठ रखा हुआ है। अब ऐसे परिवारों का गुलदस्ता बनाओ। अगर दस-ग्यारह ऐसे परिवार हो जाएँ तो अहमदाबाद का नं. आगे हो जावेगा। गुजरात को परिवारों को चलाने का वरदान ड्रामानुसार मिला हुआ भी है; लेकिन मोहजीत परिवार और सब एक लगन में श्रेष्ठ पुरुषार्थ की लाइन में हो ऐसा गुलदस्ता बनाओ। (अ.वा.9.2.75 पृ.61 अं.)	Download
378	गुजरात	गुजरात तो बड़ा है ना। संख्या में तो बड़ा है ही। अब साक्षात् रूप में भी बड़े बनकर दिखाना। गुजरात की धरनी अच्छी है। जहाँ धरनी अच्छी होती है वहाँ पावरफुल बीज डाला जाता है। पावरफुल बीज है वारिस क्वालिटी का बीज।... क्वान्टिटी तो बहुत अच्छी है, क्वालिटी भी है; लेकिन और निकालो। एक-2 क्वालिटी वाले को वारिस ग्रुप का सबूत देना है। गुजरात में सहज निकल भी सकते हैं। अब विस्तार ज़्यादा हो रहा है; इसलिए वारिस छिप गये हैं। अब उनको प्रत्यक्ष करो। समझा? गुजरात को क्या करना है? दूसरे सम्पर्क में लावें, आप सम्बन्ध में लाओ तो नं० वन हो जायेंगे। इस वर्ष का प्लैन भी बता दिया। अभी विस्तार में बिज़ी हो गये हैं।...अब फिर से बीज अर्थात् वारिस क्वालिटी निकालो। जो आदि में सो अंत में करो। (अ.वा.21.1.80 पृ.230 म., 231 आ.)	Download
379	गुजरात	गुजरात की क्या विशेषता है? गुजरात की यह विशेषता है- छोटा-बड़ा खुशी में ज़रूर नाचते हैं।... रास के लगन में मगन हो जाते। सारी-2 रात भी मगन रहते।....इस अविनाशी लगन में मगन रहने के भी नं० वन अभ्यासी हो ना। विस्तार भी अच्छा है। इस बारी मुख्य स्थान (मधुबन) के समीप के साथी दोनों ज़ोन आये हैं। एक तरफ है गुजरात, दूसरी तरफ है राजस्थान। दोनों समीप हैं ना। सारे कार्य का सम्बन्ध राजस्थान और गुजरात से है। (अ.वा.24.4.84 पृ.268 मध्यांत)	Download
380	गुजरात	गुजरातियों ने बाप का बनने में तन, मन, धन से स्वयं को सेवा में लगाने में नं. अच्छा लिया है। सहज ही सहयोगी बन जाते हैं। यह भी भाग्य है। संख्या गुजरातियों की अच्छी है। बाप का बनने की लाटरी कोई कम नहीं है। हर स्थान पर कोई न कोई बाप के बिछुड़े हुये रत्न हैं ही। जहाँ भी पाँव रखते हैं तो कोई न कोई निकल ही आते। बेपरवाह, निर्भय हो करके सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो पदमगुणा मदद भी मिलती है। आफीशियल निमन्त्रण तो फिर भी यहाँ से ही आरम्भ हुआ, फिर भी सेवा का जमा तो हुआ ना। वह जमा का खाता समय पर खींचेगा ज़रूर। तो सभी नं० वन तीव्र पुरुषार्थी आफरीन लेने वाले हो ना। नं० वन सम्बन्ध निभाने वाले, नं० वन सेवा में सबूत दिखाने वाले, सबमें नं० वन होना ही है। तब तो आफरीन लेंगे ना। (अ.वा.27.2.86 पृ.238 अं., 239 आ.)	Download

381	गुजरात	गुजरात को सहजयोगी का वरदान मिला हुआ है। गुजरात की धरनी सात्विक होने के कारण बनी बनाई धरनी है। बनी बनाई धरनी में बीज पड़ने से फल सहज निकल आता है।.......सदा विजय का झण्डा हाथ में हो। अब ऐसी विशेष आत्माओं को सम्पर्क में लाओ, जिन्हों से सेवा का आवाज़ दूर तक फैले। ज्ञान के हिसाब से विशेष व्यक्ति नहीं; लेकिन दुनिया के हिसाब से जो विशेष व्यक्ति हैं उनकी सेवा करो। इससे स्वतः ही अख़बार वाले, रेडियो, टी.वी. वाले आवाज़ फैलाते हैं। ऐसी कोई विशेष आत्मा निकालो जिनके आवाज़ से अनेक आत्माओं का कल्याण हो जाए। ....अभी ऐसी स्पीड चाहिए। राज्याधिकारी तो अपना भाग्य लेते रहेंगे; लेकिन संदेश तो सभी को देते जाओ, जो उल्लाहना न रह जाए। (अ.वा.6.1.79 पृ.183 म.)	Download
382	चार्ट, पोतामेल	चार्ट रखेंगे तो बाबा (का) डर रहेगा कि बाबा को चार्ट भेजना है। (मु.3.1.73 पृ.4 आ.)	Download
383	चार्ट, पोतामेल	बाप को तो पोतामेल भी बताना पड़े ना। कितना, क्या धंधा-धोरी करते हो, क्या मिलता है, कितना बचता है। ...अभी तुम्हारे पास क्या है, वह बाप को बताना पड़े। ऐसे नहीं तेरा सो मेरा, मेरे को हाथ न लगाओ। ऐसे भी कई चालाक होते हैं। (मु.12.7.73 पृ.2 आ.)	Download
384	चार्ट, पोतामेल	अगर बाबा का बनकर फिर कोई पाप कर्म करते हैं तो उसका सौगुणा दण्ड हो जावेगा। पाप होता है तो झट बाप को बता देने से एक तो सौगुणा दण्ड से छूट जायेंगे और पाप की वृद्धि नहीं होगी। (मु.18.1.72 पृ.4 म.)	Download
385	चार्ट, पोतामेल	बाबा कहते हैं सच्चा-2 चार्ट लिखो। कई बच्चे सच नहीं लिखते हैं देहअभिमान के कारण। यह भी दण्ड मिल जावेगा ना। सच न बताने से फिर सज़ा भी हो जाती। (मु.27.4.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
386	चार्ट, पोतामेल	बाबा ने समझाया है इस जन्म में भी किये हुए पाप अगर सुनावेंगे नहीं तो वह अन्दर वृद्धि को पाती रहेंगी। बतला देने से फिर वह वृद्धि को नहीं पावेंगी। (मु.17.6.72 पृ.2 म.)	Download
387	चार्ट, पोतामेल	बाप कहते हैं कोई पाप करता हुआ देखो तो भी बताओ, तो उनको सावधानी दी जाए, नहीं तो पाप वृद्धि को पाते जावेंगे, फिर उसका दोष न सुनाने वाले पर भी आ जाता है। कोई ने चोरी की, खुद तो बतावेंगे नहीं, तो देखने वाले को बताना चाहिए। (मु.7.5.72 पृ.4 अं.)	Download
388	चार्ट, पोतामेल	कोई भी वाहियात बात करते हैं, अगर रिपोर्ट न करते हैं तो उनको न सुधारने का पाप तुम पर पड़ जाता है। (मु.15.7.72 पृ.4 अं.)	Download
389	चार्ट, पोतामेल	कोई पाप करते हो तो झट साकार को बतलाओ। ऐसे नहीं ईश्वर तो जानते हैं। साकार में तो बतलाना पड़ें। इस जन्म में जो पाप कर्म किये हैं, आत्मा जानती है। सभी कुछ याद रहता है हमने क्या-2 काम किये हैं। साकार को बतलाओ हमने क्या-2 पाप किये हैं। मुख्य बात है विकार की। (मु.16.8.72 पृ.2 अं.)	Download

390	चार्ट, पोतामेल	देह में फंसने का विष सारी कमाई को ख़त्म कर देता है। पहले की हुई कमाई के रजिस्टर पर काला दाग पड़ जाता है जिसको मिटाना बहुत मुश्किल है। जैसे योग अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है वैसे यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है। इसको साधारण बात नहीं समझना। यह पाँचवीं मंज़िल से गिरने की बात है।....वर्णन भी ऐसा साधारण रूप में करते हैं कि मेरे से 4/5 बार यह हो गया, आगे नहीं करूँगा। वर्णन करते समय भी पश्चाताप का रूप नहीं होता, जैसे साधारण समाचार सुना रहे हैं। अन्दर में लक्ष्य रहता है कि यह तो होता ही है, मंज़िल तो बहुत ऊँची है, अभी यह कैसे होगा?.........अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ। अपने आपको कड़ी सज़ा दो, ताकि आगे की सज़ाओं से भी छूट जायें। (अ.वा.24.10.75 पृ.249 म., 250 म)	Download
391	चार्ट, पोतामेल	भक्ति में कहते थे सब कर दो राम हवाले। अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते?...देने में फिराकदिल बनो। अगर पुरानी किचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जायेगी। निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त। (अ.वा.5.5.77 पृ.132 म.)	Download
392	चार्ट, पोतामेल	बाबा ने कहा है इन(साकार) से मत छिपाओ। इनको तुम सभी सुनाओ तो माफ हो जावेगा, फिर भी यह मेरा बच्चा है, इनको सच बता दो। मैं तो जानता ही हूँ। इनको कैसे पता पड़े, इसलिए सभी इनको सुनाओ।(मु.19.11.72 पृ.3 म.)	Download
393	चार्ट, पोतामेल	पोतामेल स्थायी वह रखेंगे जो ऊँच बनने वाले होंगे, नहीं तो सिर्फ़ शो करेंगे। 15/20 रोज़ बाद फिर लिखना छोड़ देंगे। (मु.15.5.69पृ.2अं.)	Download
394	चार्ट, पोतामेल	रात को सारे दिन का पोतामेल निकालो। क्या किया, हमने भोजन देवताओं मिसल खाया या गधों मिसल, चलन कायदेसिर चली या अनाड़ियों मिसल, रोज़ाना अपना पोतामेल न सम्भालेंगे तो तुम्हारी उन्नति कब न होगी। ...सच लिखें कि आज हमारा बुद्धियोग फलाने के नाम-रूप में गया। आज यह पाप कर्म हुये। ऐसे सच लिखने वाले कोटो में कोऊ हैं। (मु.17.4.75 पृ.1 म.)	Download
395	चित्र-प्रदर्शनी	यह प्रदर्शनी तो गाँव-2 में जावेगी। बाप ग़रीब निवाज़ है, उन्हों को ज़ोर से उठाना है। साहुकार तो कोटो में कोऊ निकलते हैं। प्रजा कितनी ढेर होती है। (मु.11.4.72 पृ.1 अं.)	Download
396	चित्र-प्रदर्शनी	यह चित्र एक्यूरेट रास्ता बताने वाले हैं। मेले मलाखड़े आदि जो हैं वह तो उनके आगे कुछ भी नहीं हैं। (मु.11.4.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
397	चित्र-प्रदर्शनी	प्रदर्शनी में कम से कम चार मुख्य चित्र तो ज़रूरी हैं। बाकी थोड़ी रेज़कारी रेजगारी। बस। उनमें जास्ती टाइम न देना चाहिए। अच्छे चित्रों पर जास्ती खड़ा रहना होता है। (मु.10.4.72 पृ.3 म.)	Download
398	चित्र-प्रदर्शनी	यह प्रदर्शनी तो सब तरफ ले जानी पड़े। कोई कारीगर निकले जो कपड़े पर ऐसे अच्छे बनावे, जो झट लपेट कर कहाँ भी ले जावे।(मु.2.1.74 पृ.2 अं.)	Download
399	चित्र-प्रदर्शनी	अभी यह प्रदर्शनी भी देश-देशांतर जावेगी, ताकि सारी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन होगी। (मु.4.3.77 पृ.3 आ.)	Download
400	चित्र-प्रदर्शनी	बाबा मुख्य चित्र बनवाने का प्रबन्ध कर रहे हैं। बड़ा किताब भी बनावेंगे। मैगज़िन भी मुख्य चित्रों की निकलेगी। थोड़ी बड़ी होगी।(मु.26.10.71 पृ.3 म.)	Download
401	चित्र-प्रदर्शनी	मुख्य जो अच्छे-2 चित्र हैं वह ट्रान्सलाइट में बनने चाहिए। ऐसे बड़े-2 चित्र देख मनुष्य खुश होंगे। सारी प्रदर्शनी ही ऐसी हो जावेगी। (मु.5.11.76 पृ.3 अं.)	Download

402	चित्र-प्रदर्शनी	वह शास्त्र तो छपे हुये होते हैं। कोई भी जाकर पढ़ सकते हैं। यह ज्ञान तो बाप देते हैं। फिर शास्त्र पढ़ने की बात ही नहीं। बाप से सुनकर और धारणा करनी है। (मु.3.12.76 पृ.3 म.)	Download
403	चित्र-प्रदर्शनी	बाप को रहम पड़ता है कि बच्चे अपने बाप को जान लेवें। मालूम तो पड़ता है ना। ब्र.कु.कुमारियाँ वृद्धि को पाते रहेंगे। एक दिन यह भी सब आवेंगे। फ़ेरा पहनते रहेंगे। तुम्हारी प्रदर्शनी में सब आवेंगे। दिन-प्रतिदिन नाम बाला होता जाता है। (मु.4.12.76 पृ.2 अं.)	Download
404	चित्र-प्रदर्शनी	जैसे देखो प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली, यह रमेश बच्चे का इन्वेन्शन है। तो बाबा उनका नाम कितना उठाते हैं। अब फिर प्रदर्शनी को भी अच्छा बना रहे हैं, फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु.13.6.72 पृ.2 अं.)	Download
405	चित्र-प्रदर्शनी	ल.ना. के चित्र के साथ फिर राधे-कृष्ण भी हो तो समझाने में सहज होगा। यह है करैक्ट चित्र। इसकी लिखत भी बड़ी अच्छी है। (मु.2.1.73 पृ.3 अं.)	Download
406	चित्र-प्रदर्शनी	स्वर्ग बनाने वाला बाप का यादगार गुम कर दिया है। नर्क बनाने वालों के यादगार रख दिये हैं। दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार होता जाता है। (मु.4.5.78 पृ.3 अं.)	Download
407	चित्र-प्रदर्शनी	बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बन्द करो। यह है भक्तिमार्ग।... कोई भी चित्रों का सुमिरण न करना है। यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है; क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना। (मु.2.3.78 पृ.2 म.)	Download
408	चित्र-प्रदर्शनी	ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू हुए हैं, नहीं। पहले तो चित्र बनते हैं, फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चीज़ बनावें तब उनके शास्त्र बनावे। कोई 500 वर्ष बाद बैठ शास्त्र बनाये हैं। (मु.10.8.78 पृ.3 आ.)	Download
409	चित्र-प्रदर्शनी	प्रोजेक्टर की स्लाइड्स बनाये खुश हो गये। अपनी मत पर जो आया सो किया। (मु.18.11.72 पृ.2 अं.)	Download
410	चित्र-प्रदर्शनी	जो होकर गये हैं उन्हों के चित्र भी हैं। (मु.13.5.71 पृ.4 म.)	Download
411	चित्र-प्रदर्शनी	जो पास्ट होकर गये हैं उन्हों के जड़ चित्र बने हुये हैं। कोई मरता है तो झट उनके चित्र बना देते हैं। उनकी पोजीशन, उनकी बायोग्राफी का तो पता है नहीं। आक्यूपेशन न लिखें तो वह चित्र किसी काम के न रहे। (मु.1.2.75 पृ.1 मध्यादि)	Download
412	चित्र-प्रदर्शनी	त्रिमूर्ति भी ज़रूर चाहिए। कोई तो बाबा का चित्र देख डरते हैं। कृष्ण के 84 जन्म देख डरते हैं। फाड़ भी डालते हैं। अरे, यह तो बाप ने चित्र बनाये हैं। तुम चित्रों से लिखत निकाल देते हो। तुम तो कोई डैमफुल दिखाई पड़ते हो। (मु.30.4.71 पृ.2 अं.)	Download
413	चित्र-प्रदर्शनी	एम आब्जेक्ट सामने है ना। ल.ना. का चित्र देख रहे हो ना। ऐसे नहीं कि हमको सा. हो तो माने। यह तो बुद्धि से समझने की बात है। (मु.24.10.78 पृ.1 अं.)	Download
414	चित्र-प्रदर्शनी	हो सकता है अख़बारों आदि में भी यह चित्र पड़ जाये। कोई की बुद्धि में बैठ जाये। आर्टिफिशियल भी बहुत निकलेंगे। चित्रों को कापी कर रखेंगे पैसा कमाने लिए; परन्तु नालेज तो समझा न सकें। (मु.2.1.74 पृ.3 आ.)	Download
415	चित्र-प्रदर्शनी	ढेर किताब हैं। उनमें नावेल्स भी हैं। मनुष्यों के अपने-2 विचार हैं। जिसको जो बुद्धि में आया वह लिख देंगे। वैसे ही यह शास्त्र हैं। अपना-2 शास्त्र बना देते हैं। (मु.26.8.72 पृ.1 अं.)	Download
416	चित्र-प्रदर्शनी	ज्ञानमार्ग में तो है पढ़ाई। पढ़ाई में चित्रों की दरकार नहीं। आस्ते-2 यह भी उड़ जावेंगे। यह तो बेबियों को समझाने लिए चित्र रखे हुये हैं। (मु.23.6.70 पृ.1 आ.)	Download
417	चित्र-प्रदर्शनी	शिवबाबा को याद करने में बड़ी मेहनत है। उनका यथार्थ रूप है बिन्दी; परन्तु उनका चित्र बना दिया है राँग। तो यह समझाना पड़े। गुह्य बातें, गुह्य राज़ बाबा अब ही समझाते हैं। (मु.6.8.78 पृ.4 अं.)	Download

418	जिम्मेवारी	आफिसरों के गफ़लत से अनाज के गोदाम खराब हो जाते हैं। फिर जला देते हैं। यहाँ मनुष्य भूख मरते हैं। (मु.24.4.72 पृ.1 अं.)	Download
419	जिम्मेवारी	तुम अपनी स्त्री को ही वश नहीं कर सकते हो तो विकारों को कैसे वश करेंगे? तुम्हारा फ़र्ज़ है स्त्री को अपने हाथ में रखना। (मु.24.4.72 पृ.2 आ.)	Download
420	जिम्मेवारी	कलम में जो कमज़ोरी होगी वह सारे वृक्ष में कमज़ोरी होगी। इतनी ज़िम्मेवारी हर एक अपनी समझते हो? यह तो नहीं समझते कि हम छोटे हैं वा पीछे आने वाले हैं, ज़िम्मेवारी बड़ों के ऊपर है। .... ज़िम्मेवारी में भी छोटे-बड़े सब अधिकारी हो। सब साथी हो। तो इतनी ज़िम्मेवारी के अधिकारी समझ करके चलो। स्वपरिवर्तन, विश्वपरिवर्तन दोनों के ज़िम्मेवारी के ताजधारी सो विश्व के राज्य के ताज अधिकारी होंगे। (अ.वा.12.10.81 पृ.36 म., 37 आ.)	Download
421	जिम्मेवारी	बापदादा हर एक के ज़िम्मेवारी समझने का चार्ट देख रहे हैं कि हर एक अपने को कितना ज़िम्मेवार समझते हैं? विश्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी का ताज धारण किया है वा नहीं?........... सदा पहनते हो वा कभी-2 पहनते हो? अलबेले तो नहीं बनते? ऐसा तो नहीं समझते कि ज़िम्मेवारी बड़ों की है, हम तो छोटे हैं। ....सभी हाथ उठाते हो ल०ना० बनने के लिए, तो जब वह राज्य का ताज पहनना है तो उस ताज का आधार सेवा की ज़िम्मेवारी के ताज पर है। (अ.वा.2.1.82 पृ.207 म.)	Download
422	जानी-जाननहार	शरीर बिगर बाप बात कैसे करेंगे? सुनेंगे कैसे? आत्मा को शरीर है तब सुनती-बोलती है। बाबा कहते मुझे आरगन्स ही नहीं तो सुनूँ, देखूँ, जानूँ कैसे? समझते हैं बाबा तो जानते हैं हम विकार में जाते हैं। अगर नहीं जानते हैं तो भगवान ही नहीं मानेंगे। ऐसे भी बहुत होते हैं। (मु.30.6.75 पृ.3 म.)	Download
423	जानी-जाननहार	यह ख़याल कब नहीं करना है कि बाबा तो सब कुछ जानते ही हैं। बहुत हैं जो विकार में जाते, पाप करते रहते हैं और फिर यहाँ अथवा सेन्टर्स पर आ जाते हैं। समझते हैं बाबा तो जानते हैं; परन्तु बाबा कहते हम जानते नहीं। हम यह धंधा ही नहीं करते। जानी जाननहार अक्षर भी राँग है। (मु.30.6.75 पृ.1 आ.)	Download
424	जानी-जाननहार	यह कब ख्याल न करो कि बाबा तो सब कुछ जानता है। बाबा को जानने की क्या दरकार है? जो करेंगे सो पावेंगे। बाबा साक्षी हो देखते रहते हैं। (मु.30.6.75 पृ.2 आ.)	Download
425	जानी-जाननहार	जानी जाननहार का यह मतलब नहीं कि वह हमारे अन्दर को जानते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई थॉट रीडर नहीं हूँ। (मु.11.6.75 पृ.1 अं.)	Download
426	जानी-जाननहार	भारतवासी यह भी बहुत भूल करते हैं जो कहते हैं वह अन्तर्यामी है। सभी के अन्दर को जानते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई के भी अन्दर की नहीं जानता हूँ। मेरा तो काम ही है पतितों को पावन बनाना। (मु.1.1.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
427	जानी-जाननहार	कई बच्चे बाबा को लिखते हैं बाबा आप तो जानी जाननहार हो। सब कुछ जानते होंगे। बाबा ऐसे लिखने वाले को मूर्ख समझते हैं। मैं तो नालेज देने आया हूँ। एक-2 के अन्दर की बात को रीड करने थोड़े ही आया हूँ। (मु.30.11.73 पृ.3 आ.)	Download
428	कर्मातीत अवस्था	ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा कोई परिपूर्ण हो गये। परिपूर्ण अवस्था अंत में होगी। इस समय कोई भी अपने को परिपूर्ण कह न सके। (मु.14.11.78 पृ.3 अं.)	Download
429	कर्मातीत अवस्था	अभी कोई भी कम्पलीट फूल नहीं बने हैं। वह तो कर्मातीत अवस्था हो जाती है। देहीअभिमानी वह तो अंत में ही बनना है। (मु.8.10.78 पृ.1 आ.)	Download
430	कर्मातीत अवस्था	जब तक कर्मातीत अवस्था आये- मंसा, वाचा, कर्मणा कुछ न कुछ भूलें होती ही रहती हैं। पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होगी। (मु.6.11.77 पृ.2 म.)	Download

431	कर्मातीत अवस्था	16 कला कोई भी बना न है। जब तक विनाश हो तब तक पुरुषार्थ चलता ही है। किसकी भी ताकत नहीं जो कह सके कि हम 16 कला सम्पूर्ण बने हैं। बन ही नहीं सकते। यह तो अवस्था होगी अंत में। (मु.27.9.77 पृ.3 अं.)	Download
432	कर्मातीत अवस्था	जब नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई भी शुरू होगी। (मु.22.6.75 पृ.3 अं.)	Download
433	कर्मातीत अवस्था	यह भी सम्पूर्ण नहीं हुआ है। जब तक यह भी कर्मातीत अवस्था में न आये हैं, पढ़ाते रहेंगे। तुम भी पढ़ते-पढ़ाते रहेंगे। (मु.26.6.75 पृ.3 मध्यांत)	Download
434	कर्मातीत अवस्था	बाबा की कर्मातीत अवस्था होगी तो तुम बच्चों की भी हो जावेगी।.... यह कर्मातीत अवस्था अंत में आयेगी। (मु.3.5.73 अं. रात्रिक्लास)	Download
435	कर्मातीत अवस्था	कर्मातीत अवस्था वह जो शरीर को भी कोई दुःख न हो। पुराने शरीर को तो अंत तक दुःख होता ही है। (मु.24.7.73 पृ.1 अं.)	Download
436	कर्मातीत अवस्था	यह पढ़ाई पूरी हो जाएगी फिर नं.वार पुरुषार्थ अनुसार कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। (मु.8.10.73 पृ.2 आ.)	Download
437	कर्मातीत अवस्था	ऊपर में थोड़ी आत्माएँ भी हैं। वह आती रहती हैं। जब वहाँ से भी आत्माओं का आना पूरा हो जावेगा तब तुम कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। (मु.11.7.71 पृ.3 अं.)	Download
438	कर्मातीत अवस्था	साहुकार लोग कब सरेण्डर होकर कर्मातीत अवस्था को पा न सकें। (मु.5.9.70 पृ.3 अं.)	Download
439	कर्मातीत अवस्था	बाप कहे और फट से करें, तब कर्मातीत अवस्था हो। ऐसे बाप के साथ लव भी कितना चाहिए। फौरन करके दिखावें तो बाबा भी समझें इनका लव है। (मु.15.5.69 पृ.1 अं.)	Download
440	कर्मातीत अवस्था	जब तक कर्मभोग है, यह निशानी है कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। (मु.24.2.69 पृ.3 अं.)	Download
441	कर्मातीत अवस्था	कर्मातीत बनने की स्टेज की निशानी क्या है? सदा सफलतामूर्त। समय भी सफल, संकल्प भी सफल, सम्पर्क और सम्बन्ध भी सदा सफल। इसको कहते हैं सफलतामूर्त। (अ.वा.29.1.75 पृ.30 अं., 31 आ.)	Download
442	कर्मातीत अवस्था	एक तरफ लड़ाई तैयार होगी, दूसरे तरफ कर्मातीत अवस्था होगी। पूरा कनेक्शन है। फिर पढ़ाई पूरी हो जाती। (मु.7.1.76 पृ.1 अं.)	Download
443	कर्मातीत अवस्था	ऐसे भी मत समझना कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गये हैं। नहीं। रेस चल रही है। रेस जब पूरी होगी तब फाइनल रिटर्न होंगे। फिर विनाश भी शुरू हो जावेगा। जब तक यह रिहर्सल होती रहेगी, जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए, हम किसकी बुराई नहीं कर सकते। (मु.25.7.76 पृ.1 म.)	Download
444	कर्मातीत अवस्था	बच्चे कर्मातीत अवस्था को पावेंगे तो ज्ञान खत्म हो जायेगा, लड़ाई आरम्भ हो जावेगी। मैं भी अपना पावन बनाने का कार्य पूरा करके जाऊँगा। देवी-देवता धर्म स्थापन करना यह मेरा ही पार्ट है। (मु.29.1.78 पृ.2 आ.)	Download
445	खान-पान, रहन-सहन	जो चीज़ देवताओं को स्वीकार नहीं कराते हैं वह नहीं खानी चाहिए। जैसे चाय का भोग मन्दिरों में थोड़े ही लगता है। इससे भी और तमोगुणी चीज़ें हैं, जो नहीं खानी चाहिए। (मु.6.12.71 पृ.2 आ.)	Download
446	खान-पान, रहन-सहन	एक तो बाज़ार की गुछी(गन्दी), छी-2 चीज़ न खाओ। गन्द खाते-2 तुम डेड चमार बन गये हो। (मु.22.5.70 पृ.2 आ.)	Download
447	खान-पान, रहन-सहन	तुम यहाँ आते ही हो मनुष्य से देवता बनने। देवताएँ कब अशुद्ध खान-पान, बीड़ी आदि नहीं पीते। (मु.13.1.71 पृ.2 आ.)	Download

448	खान-पान, रहन-सहन	ऐसी कोई अशुद्ध चीज़ न खाना चाहिए। पान में भी तम्बाकू न होना चाहिए। खुशबुएँ जैसी चीजें हों।...ल.ना. के मन्दिर में भी पान बहुत खुशबुएँदार चीज़ों का बना हुआ देते हैं।.... उनका कोई हर्जा नहीं है। यह कोई खराब चीज़ नहीं है। यह तो बिल्कुल साधारण बात है।... बीड़ी पीने वालों में तो बास रहती है।... मूली की भी उगराई बहुत छी-2 आती है। तो ऐसी-2 खटाई आदि तमोगुण चीज़ नहीं खानी चाहिए। (मु.16.11.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
449	खान-पान, रहन-सहन	बहुत बच्चे हैं जिनके पास इतने पैसे हैं, जो ब्याज मिलता रहे, उनसे ही रोटी टुकड़ खाते रहे और बाप को याद करते रहें, बस; परन्तु माया करने न देती। (मु.10.3.69 पृ.2 मध्यांत)	Download
450	खान-पान, रहन-सहन	पेट कोई जास्ती थोड़े ही खाता है। जो मिले उसमें राज़ी रहना चाहिए। (मु.3.1.73 पृ.4 अं.)	Download
451	खान-पान, रहन-सहन	जास्ती खातरी करना, भोजन आदि खिलाना यह भी नहीं होना चाहिए। हमारा भोजन तो है ज्ञान का। बाकी यह खिलाना करना ठीक नहीं है। जास्ती टू मच में न जाना चाहिए। जास्ती महिमा भी नहीं करना चाहिए। (मु.8.1.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
452	खान-पान, रहन-सहन	जास्ती तमन्नाएँ न रखनी चाहिए। यज्ञ से जो मिले सो खा लेना चाहिए। हवस है, कर्मेन्द्रियाँ बस में न हैं तो पद भी ऊँच पा न सकेंगे। (मु.11.4.72 पृ.3 अं.)	Download
453	खान-पान, रहन-सहन	शरीर को निरोगी तन्दुरुस्त रखो। गफ़लत न करनी है। खान-पान की सम्भाल रखेंगे तो कुछ न होगा। एकरस चलने से शरीर भी तन्दुरुस्त रहेगा। यह अमूल्य तन है। इसमें पुरुषार्थ कर यह देवी-देवता बनते हो। (मु.25.7.76 पृ.1अं., 2आ.)	Download
454	खान-पान, रहन-सहन	बच्चों को कब ईर्ष्या भी नहीं होनी चाहिए कि बाबा बड़े आदमियों की खातिरी क्यों करते हैं। बाप हर एक बच्चे की नब्ज़ देख उनके कल्याण अर्थ हर एक को उसी अनुसार चलाते हैं। (मु.7.11.75 पृ.3 अं.)	Download
455	खान-पान, रहन-सहन	बाप तुम बच्चों को समझाते हैं तमोप्रधान जिस्मानी श्रृंगार ज़रा भी न करो। दुनियाँ बहुत खराब है। गृहस्थ (व्यवहार) में रहते फैशनेबल मत बनो। फैशन कशिश करती है। इस समय खूबसूरती अच्छी नहीं है। काली कुंझी हो तो अच्छा है। कोई झम्पा नहीं मारेगा। खूबसूरत पिछाड़ी तो फिरते रहते हैं। (मु.5.6.71 पृ.1 अं., 2 आ)	Download
456	खान-पान, रहन-सहन	यह श्रृंगार सब वाहियात है। अब तुम सबकी सगाई शिवबाबा से है। जब शादी होती है तो उस दिन पुराने कपड़े पहनते हैं। अब इस शरीर को श्रृंगारना न है। ज्ञान और योग से अपने को सजावेंगे तो फिर भविष्य में प्रिंस-प्रिंसेज बनेंगे। (मु.30.11.78 पृ.2 अं.)	Download
457	खान-पान, रहन-सहन	अभी दोनों ही बाप (निराकार और साकार) तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेला था। शरीर बिगर था। ऊपर से तो तुम्हारा श्रृंगार कर न सके। (मु.5.12.70 पृ.1 अं.)	Download
458	खान-पान, रहन-सहन	तुमको तो घर-बार छोड़ना न है। न कोई सफेद कपड़े आदि का बन्धन है; परन्तु सफेद अच्छा है। तुम भट्ठी में रहे हो तो ड्रेस यह हो गई। आजकल सफेद बहुत पसन्द करते हैं। मनुष्य मरते हैं तो भी सफेद चादर डालते हैं। (मु.13.9.71 पृ.2 अं.)	Download
459	खान-पान, रहन-सहन	तुम बच्चों को तो अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। यह तो पुरानी छी-2 दुनियाँ है। इस दुनियाँ में अच्छे कपड़े पहनें, सुख ले लेवें, ख्याल भी न आना चाहिए। इसको कहा जाता है इच्छा मात्रम् अविद्या। (मु.27.7.70 पृ.4 अं.)	Download
460	खान-पान, रहन-सहन	कौन कहता है कि तुम कपड़े आादि बदली करो। भल कुछ भी पहनो। बहुतों से कनेक्शन में आना पड़ता है। रंगीन कपड़े के लिए कोई मना नहीं करते हैं। कोई भी कपड़ा पहनो। इनसे कोई ताल्लुक नहीं। बाबा सिर्फ कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। (मु.10.12.70 पृ.2 अं.)	Download

461	**खान-पान, रहन-सहन**	यहाँ तुम वनवा में हो। कोई बात का शौक न रखना चाहिए। हम अच्छे कपड़े ड्रायक्लीन आदि की पहनें, अच्छी साड़ी पहनें, यह भी देहअभिमान है। जो मिले सो अच्छा। (मु.8.3.69 पृ.1 अं.)	Download
462	**खान-पान, रहन-सहन**	कपड़ा आदि साधारण। अच्छे-2 कपड़ों से भी देहअभिमान आता है; इसलिए ऐसी चीज़ न पहनना अच्छा है। सुहेनी होगी तो सभी की नज़र चढ़ेगी। (मु.9.5.69 पृ.4 म.)	Download
463	**खान-पान, रहन-सहन**	अगर मित्र, सम्बन्धियों आदि की चीज़ पहनेंगे तो वह याद आवेंगे। पद भ्रष्ट हो जावेगा। यह है शिवबाबा का भण्डारा। पतित-पावन बाप के यज्ञ से परवरिश होनी है, न कि पतित के घर से। और किसी की दी हुई चीज़ होगी तो वह याद ज़रूर पड़ेंगे। (मु.4.10.76 पृ.2अं., 3आ.)	Download
464	**खान-पान, रहन-सहन**	ग़रीबों को ही बाप आकर पढ़ाते हैं। गरीबों के कपड़े आदि मैले होते हैं ना।... इसमें कोई भभका, ड्रेस आदि बदलने की बात नहीं। देह साथ कोई कनेक्शन ही नहीं। (मु.12.10.76 पृ.2 म.)	Download
465	**कर्नाटक**	कर्नाटक का भी विस्तार बहुत हो गया है। अब कर्नाटक वालों को विस्तार से सार निकालना पड़े। जब मक्खन निकालते हैं तो पहले तो विस्तार होता है, फिर उससे मक्खन सार निकलता है। तो कर्नाटक को भी विस्तार से अब मक्खन निकालना है। (अ.वा.24.4.84 पृ.269 म.)	Download
466	**कर्नाटक**	दूसरे हैं सिकीलधे कर्नाटक वाले। वह भावना और स्नेह के नाटक बहुत अच्छे दिखाते हैं। एक तरफ अति भावना और अति-2 स्नेही आत्माएँ हैं, दूसरी तरफ दुनियाँ के हिसाब से एज्यूकेटेड नामी-ग्रामी भी कर्नाटक में हैं। तो भावना और पद अधिकारी दोनों ही हैं; इसलिए कर्नाटक से आवाज़ बुलन्द हो सकता है। धरनी आवाज़ बुलन्द की है।... कर्नाटक की धरनी इस विशेष कार्य के लिए निमित्त है।... इस विशेषता को किसी भी वातावरण में छोड़ नहीं दें। (अ.वा.1.5.84 पृ.283 अं., 284 आ.)	Download
467	**कर्नाटक**	मैसूर की विशेषता क्या है? वहाँ चन्दन भी है और विशेष गार्डन भी है। तो कर्नाटक वालों को विशेष सदा रूहानी गुलाब, सदा खुशबूदार चन्दन बन विश्व में चन्दन की खुशबू कहो अथवा रूहानी गुलाब की खुशबू कहो, विश्व को गार्डन बनाना है और विश्व में चन्दन की खुशबू फैलानी है।... तो सबसे ज़्यादा रूहानी गुलाब कर्नाटक से निकलेंगे ना। यह प्रत्यक्ष प्रमाण लाना है। (अ.वा.17.4.84 पृ.250 आ)	Download
468	**कर्नाटक**	कर्नाटक वाले सिकीलधे हैं ना। तो सिकीलधों को खास गुह्य राज़ सुनाया जाता है। कर्नाटक की सेवा में जोड़ी भी मज़ेदार बनी हुई है। करनहार और करावनहार दोनों की ही जोड़ी है। वह प्रेमस्वरूप, वह नालेज स्वरूप। वह लव और लाफुल, वह सिर्फ लवफुल।...भिन्न धर्म में कनवर्ट होते हुए भी अपने प्राचीन धर्म को पहचानने और अपनाने में तीव्र पुरुषार्थी बन चल रहे हैं। मेज़ारिटी स्नेह और शान्ति की प्राप्ति के आधार पर संशय बुद्धि कम बनते हैं। यह डबल विदेशियों की विशेषता है।... कर्नाटक वाले भी भावना और प्रेम से सहज ही बाप के बन जाते हैं। ....बापदादा भाषा को नहीं देखते, भावना को देखते हैं। (अ.वा.1.2.80 पृ.260 आ.)	Download
469	**कर्नाटक**	कर्नाटक वाले सदा बाप के स्नेहमूर्त रहते हैं। कर्नाटक की धरनी बहुत सहज है। भावना के कारण धरनी फलीभूत है; इसलिए वृद्धि बहुत होती है। कर्नाटक की धरनी को सहज संदेश मिलने का ड्रामानुसार वरदान है। विशेष आत्माएँ भी इस धरनी से सहज निकल सकतीं।... स्नेह और शक्ति का बैलेंस रखना यह विशेषता लानी है। वैसे भोलानाथ बाप के भोले बच्चे अच्छे हैं। परवाने अच्छे हैं। बापदादा को पसंद हैं। अभी बाप पसंद के साथ लोक पसंद भी बनना है। (अ.वा.25.1.79 पृ.245 म.)	Download

470	कर्नाटक	एक बाप दूसरा न कोई ऐसे अनुभव होता है कि और भी सम्बन्ध स्मृति में आते हैं? जिसके सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ होंगे उसको और सब सम्बंध निमित्त मात्र अनुभव होंगे। वह सदा खुशी में नाचने वाले होंगे। कभी भी थकावट का अनुभव नहीं करेंगे।...कमप्लीट आत्माओं की सब कम्पलेंट खत्म हो जाती है। सम्पन्न होना अर्थात् संतुष्ट। असंतुष्ट होने का कारण है अप्राप्ति। अप्राप्ति ही असंतुष्टता को जन्म देती है।... सभी सदा हँसते रहते हो-रोते तो नहीं हो! रोने वाले बाप के युगल नहीं बन सकते। क्या करूँ, चाहता हूँ, यह होने नहीं देते, मदद करो, कृपा करो, यह भी रोना है। ऐसे रोने वालों को बाप अपने साथ कैसे ले जायेंगे! साथ चलने के लिए जैसा बाप वैसे बच्चे बनो।.... जो भी कर्म करो पहले चैक करो यह बाप समान है? बाप समान नहीं है तो कट कर दो, आगे नहीं बढ़ो। (अ.वा.12.1.79 पृ.206 आ., 207 आ.)	Download
471	कर्नाटक	कर्नाटक के बच्चे भी आये हैं। यह भी भारत का विदेश ही है। लण्डन से सहज आ सकते हैं; लेकिन यह बहुत मेहनत से आते हैं। (अ.वा.8.1.79 पृ.189 अं., 190 आ.)	Download
472	काम कटारी	विकार में गया और बुद्धि से प्वाइन्ट एकदम निकल जावेगी। जैसे गूँगा बन जावेगा। (मु.13.2.73 पृ.1 अं.)	Download
473	काम कटारी	कुमारियाँ भी पतित बन पड़ती हैं। दोनों पतित बनते हैं। दोनों की दिल होती है तब ताली बजती है। अगर अपनी हिम्मत हो तो रड़ी ऐसे करे जो वह एकदम भाग जाए। (मु.4.3.69 पृ.4 आ.)	Download
474	काम कटारी	अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। (मु.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)	Download
475	कुमारियों से	कुमारियों ने पक्का वायदा किया है? पक्का वायदा किया और वरमाला गले में पड़ी। वायदा किया और वर मिला। वर भी मिला और घर भी मिला। तो वर और घर मिल गया।.... तो पक्की वरमाला पहनी है? ऐसी कुमारियों को कहा जाता है समझदार।... बापदादा को कुमारियों को देखकर खुशी होती है; क्योंकि बच गई। (अ.वा.7.12.83 पृ.38 अं., 39 आ.)	Download
476	कुमारियों से	कन्या के पास तो पैसा होता नहीं। वह फिर इस सर्विस में लग जाएँ तो सभी से ऊँच जा सकती हैं। मम्मा ने कुछ भी इन्श्योर नहीं किया। हाँ, शरीर इस सर्विस में दे दिया तो कितना ऊँच पद पाती हैं। (मु.4.4.72 पृ.3 अं.)	Download
477	कुमारियों से	शिव के साथ रहती हो ना! जो जिसके साथ रहते उसके संग का रंग तो उन पर ज़रूर लगेगा ना। तो जो बाप का गुण, जो बाप का कर्तव्य, वही आपका है ना!....हर बात में चैक करो कि यह बाप का कर्म वा बाप का संकल्प, बोल है। अगर है तो करो, नहीं तो परिवर्तन कर दो।....सदा उमंग और उल्लास में रहने वाले हर बात में नम्बर वन होंगे।..... नं० वन उमंग-उल्लास वाले घरों में कैसे रहेंगे? निर्बन्धन होंगे ना! सभी कौन हो? पिंजरे के पंछी हो या स्वतंत्र पंछी? पढ़ाई का पिंजरा है? माँ-बाप का पिंजरा है? ऐसे पिंजरों में बंधने वाली को नं० वन कैसे कहेंगे? अभी निर्बन्धन हो जाओ।... इतना बड़ा ग्रुप जो आया है तो ज़रूर कमाल करेगा ना! इतने हैण्ड्स निकल आवें तो वाह-2 हो जाये। (अ.वा.4.5.83 पृ.181 आ.)	Download

478	कुमारियों से	कुमारियों को देखकर बापदादा बहुत हर्षित होते हैं, क्यों? क्योंकि एक-2 कुमारी अनेकों को जगाने के निमित्त बनने वाली है।.... कुमारीपन का, कुमारी जीवन का बहुत महत्व है। कुमारियों को ब्राह्मण जीवन में लिफ्ट भी है। कुमारियाँ कितना जल्दी सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज बन जाती हैं। कुमारों को देरी से चांस मिलता है।... कुमारी जीवन अर्थात् सम्पूर्ण पावन। अगर कुमारी जीवन में यह विशेषता नहीं तो उसका कोई महत्व नहीं। ब्रह्माकुमारी अर्थात् मंसा में भी अपवित्रता का संकल्प न हो, तभी पूज्य है, नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती। तो इस विशेषता को जानती हो?..... बापदादा किसी को लौकिक सेवा छोड़ने के लिए भी नहीं कहते; लेकिन बैलेंस हो। जितना-2 इस सेवा में बिज़ी होती जायेंगी तो वह आपे ही छूट जायेगी। किसी को कहो नौकरी छोड़ो तो सोच में पड़ जाते। जैसे अज्ञानी को कहो बीड़ी छोड़ो, सिगरेट छोड़ो, तो छोड़ने से नहीं छूटती, अनुभव से छोड़ देते हैं। ऐसे ही आप भी जब इस सेवा में बिज़ी हो जायेंगे तो वह छूट जायेगी। (अ.वा.29.10.81 पृ.96 आ., 97 आ.)	Download
479	कुमारियों से	वैसे भी सेवाधारी मेजारिटी कुमारियाँ हैं। कुमारियाँ डबल कुमारियाँ हो गईं- ब्रह्माकुमारी भी और कुमारी भी। तो कितनी महान हो गई। कुमारी की अब 84वें अन्तिम जन्म में भी चरणों की पूजा होती है। तो इतनी पावन बनी हो तब इतनी पूजा हो रही है। कुमारियों को कभी भी झुकने नहीं देंगे। कुमारियों के चरणो में सब झुकते हैं, चरण धोकर पीते हैं।... तो इतनी पूज्य हो तब तो बाप भी नमस्ते करते हैं। (अ.वा.8.11.81 पृ.125 आ)	Download
480	कुमारियों से	कुमारियों को कौन सी कमाल करके दिखानी चाहिए? सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है- बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना। बूँद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। (अ.वा.28.11.81 पृ.188 अं., 189 आ.)	Download
481	कुमारियों से	सभी कुमारियाँ अपने को विश्वकल्याणकारी समझ आगे बढ़ती रहती हो?... यह भी संगम में बड़ा भाग्य है, जो कुमारी बनी। कुमारी अपने जीवन द्वारा औरों का जीवन बनाने वाली, बाप के साथ रहने वाली। सदा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाली, सदा श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वायुमण्डल को बदल नाम बाला करने वाली, सदा एक बाप दूसरा न कोई ऐसे नशे में हर कदम आगे बढ़ाने वाली, तो ऐसी कुमारियाँ हो ना? (अ.वा. 27.11.85 पृ.67 आदि)	Download
482	कुमारियों से	सभी का लक्ष्य तो श्रेष्ठ है ना। ऐसे तो नहीं समझती हो कि दोनों तरफ चलती रहेंगी; क्योंकि जब कोई बन्धन होता, तो दोनों तरफ चलना दूसरी बात है; लेकिन निर्बन्धन आत्माओं का दोनों तरफ रहना अर्थात् लटकना है।... कुमारियों का सगंमयुग पर विशेष पार्ट है।...विशेषता है सेवाधारी बनना।...सेवाधारी नहीं हो तो साधारण हो गई। ... संगमयुग पर ही यह चांस मिलता है। अगर अभी यह चांस नहीं लिया तो सारे कल्प में नहीं मिलेगा।...लौकिक पढ़ाई पढ़ते भी लगन इस पढ़ाई में हो तो वह पढ़ाई विघ्न रूप नहीं बनेगी। (अ.वा.2.12.85 पृ.74 आ.)	Download
483	कुमारियों से	कुमारियाँ निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए।...जितना-2 अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जाएँगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियाँ बाप को अति प्रिय हैं; क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियाँ हैं। तो बाप समान हो गई ना। (अ.वा.13.2.78 पृ.49 अं.)	Download

484	कुमारियों से	कुमारियों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। एक अनेकों के कल्याण प्रति निमित्त बन सकती हैं। ब्रह्माकुमारी वह जो विश्व के कल्याण के निमित्त बने। बेहद विश्व के कल्याणकारी न कि हद के। लगन में कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा।... लगन है तो विघ्न नहीं रह सकता। कर्मयोग से कर्मभोग भी परिवर्तन हो जाता। परिवर्तन करना अपनी हिम्मत का काम है। कुमारियों में तो सदैव बापदादा की उम्मीद है। (अ.वा.29.11.78 पृ.86 आ.)	Download
485	कुमारियों से	सभी कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि एक बाप दूसरा न कोई वह निभाती हैं? इसी वायदे को सदा निभाने वाली कुमारी विश्वकल्याण के अर्थ निमित्त बनती है। कुमारियों का पूजन होता है। पूजन का आधार है सम्पूर्ण पवित्र। तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के आधार पर है। अगर कुमारी कुमारी होते हुये भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं।... जब सदा कुमारी जीवन का महत्व स्मृति में रखेंगी तो सफल टीचर व ब्रह्माकुमारी बन सकेंगी।... कुमारी निर्बन्धन तो है; लेकिन डर रहता है कि कहीं कुमारी होते माया के वश नहीं हो जाएँ। अगर इस कारण को कुमारी मिटा देवे तो देखने की, ट्रायल करने की ज़रूरत नहीं। दूसरे, परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। कोई भी आत्मा हो, कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति हो तब ही सफल टीचर और सेवाधारी बन सकेंगी। सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन शक्ति इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी, नहीं तो ट्रायल की लिस्ट में रहेंगी। सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी ही गायन-पूजन योग्य होगी। (अ.वा.28.10.75 पृ.243 आ., 244 आ.)	Download
486	कुमारियों से	कुमारियाँ अगर ज़िद पर रहें कि हम शादी करना नहीं चाहते तो गवर्नमेंट कुछ कर नहीं सकती। समझा सकते हैं हम ससुर घर जावें ही क्यों जो पुजारी बन सबके आगे झुकना पड़े, मैं कुमारी हूँ तो सब मेरे आगे सिर झुकाते हैं, तो हम क्यों न पूज्य रहें? (मु.7.11.73 पृ.3 म.)	Download
487	कुमारियों से	कमाई करने वाला न हो तो अपने पैर पर खड़ी रह सके। भीख न लेनी पड़े; इसलिए पढ़कर नौकरी करती हैं। नहीं तो कायदा नहीं। कायदे अनुसार बाप बच्चियों की कमाई खा नहीं सकते। बच्चियों को घर का काम सिखलाया जाता था। अभी तो बैरिस्टरी, डॉक्टर आदि सीखती रहती हैं। यहाँ तुमको कुछ भी करना नहीं है। (मु.7.5.72 पृ.2 आ.)	Download
488	कुमारियों से	कई बच्चियाँ लिखती हैं कि शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। क्या करें? जो मज़बूत सेन्सीबुल बच्चियाँ होंगी वो कब ऐसे लिखेंगी नहीं। लिखती हैं तो बाबा समझ जाते हैं कि कोई रीढ़-बकरी है। यह तो अपने ही हाथ में है जीवन को बचाना। (मु.23.9.70 पृ.3 म.)	Download
489	कुमारियों से	विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना है। शीतला भी किस रूप में बनना है वह अर्थ भी तो समझती हो; लेकिन जब सर्विस पर हो, कर्तव्य पर हो तो काली रूप चाहिए। काली रूप होंगी तो कभी भी किस पर बलि नहीं चढ़ेंगी; लेकिन अनेकों को अपने ऊपर बलि चढ़ावेंगी। (अ.वा.28.5.70 पृ.255 म.)	Download
490	कुमारियों से	कुमारियाँ अर्थात् कमाल करने वाली। साधारण कुमारियाँ नहीं, अलौकिक कुमारियाँ हो।...वह देहअभिमान में रह औरों को भी देहअभिमान में गिरातीं और आप सदा देहीअभिमानी बन स्वयं भी उड़तीं और दूसरों को भी उड़ातीं- ऐसी कुमारियाँ हो ना! जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से सदा हैं ही। पहले कहने मात्र थे, अभी प्रैक्टिकल हैं। भक्तिमार्ग में भी गायन ज़रूर करते थे कि सर्व सम्बन्ध बाप से हैं; लेकिन अब प्रैक्टिकल सर्व सम्बंधों का रस बाप द्वारा मिलता है।... कुमारियों का झुण्ड है। सेना तैयार हो रही है। वह जो लेफ्ट-राइट करते, आप सदा राइट ही राइट करते।... तो हो सभी बहादुर; लेकिन मैदान पर नहीं आई हो। (अ.वा.19.12.84 पृ.77 म., 78 म.)	Download

491	कुमारियों से	साधारण कुमारियाँ या तो नौकरी की टोकरी उठातीं या तो दासी बन जाती हैं; लेकिन श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व कल्याणकारी बन जाती हैं।...संगदोष या सम्बन्ध के बन्धन से मुक्त होना यही लक्ष्य है ना। बन्धन में बंधने वाली नहीं।...दोनों बन्धन से न्यारे वही बाप के प्यारे बनते हैं।.... साधारण कुमारियों का भविष्य और विशेष कुमारियों का भविष्य दोनों सामने है, तो दोनों को देख स्वयं ही जज कर सकती हो। जैसे कहेंगे वैसे करेंगे यह नहीं, अपना फैसला स्वयं जज होकर करो।...श्रीमत के साथ-2 अपने मन के उमंग से जो आगे बढ़ते हैं वह सदा सहज आगे बढ़ते हैं।....संगमयुग पर कुमारी बनना यह पहला भाग्य है।...और इसी पहले भाग्य को गँवाया तो सदा के सर्व भाग्य को गँवाया। (अ.वा.30.1.85 पृ.154अं., 155आ., 156आ.)	Download
492	कुमारियों से	देहअभिमान वाली कुमारियाँ तो बहुत हैं; लेकिन आप रूहानी कुमारियाँ हो।....रूहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रूहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकतीं।....जिनका बाप से प्यार है वह रोज़ प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जाता है उसमें सफलता होती है।....प्यार से, अपने मन से चलने वाले सदा चलते। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या, तो एक बार के अनुभवी कभी भी धोखे में नहीं आ सकते। माया भिन्न-2 रूप में आती है। कपड़ों के रूप में आयेगी, माँ-बाप के मोह के रूप में आयेगी, सिनेमा के रूप में आयेगी, घूमने-फिरने के रूप में आयेगी। माया कहेगी यह कुमारियाँ हमारी बनें, बाप कहेंगे हमारी बनें, तो क्या करेंगी? माया को भगाने में होशियार हो? घबराने वाली, कमज़ोर तो नहीं हो?....सदा अपने को भाग्यवान आत्मा समझो, जो बाप ने बचा लिया। बच गये, बाप के बन गये, ऐसी खुशी होती है ना! बापदादा को भी खुशी होती है। (अ.वा.9.5.84 पृ.304 अं., 305 आ.)	Download
493	कुमारियों से	विश्वकल्याणकारी कुमारियाँ हो, घर में रहने वाली कुमारियाँ नहीं, टोकरी उठाने वाली कुमारियाँ नहीं; लेकिन विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ। कुमारियाँ वह जो कहते हैं कुल का कल्याण करें। सारा विश्व आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियाँ अपने हद के कुल का कल्याण करती हैं और श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसी हो ना! कमज़ोर तो नहीं? डरने वाली तो नहीं? सदा बाप साथ है। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई। यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ है ना। तो समय, शक्तियाँ सब बच गईं। भटकने की मेहनत भी छूट गई। कितना फायदा हुआ। बस, वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमज़ोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना। (अ.वा.9.5.84 पृ.306 आ.)	Download
494	कुमारियों से	कन्याएँ 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई हैं।.... जितना स्वयं श्रेष्ठ होंगे उतना ही औरों को भी श्रेष्ठ बना सकेंगे। तो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, यह खुशी रहती है?...अगर खुशी नहीं तो जीवन नहीं।.... बापदादा खुश होते हैं कि कुमारियाँ समय पर बच गईं, नहीं तो उल्टी सीढ़ी चढ़कर फिर उतरनी पड़ती। चढ़ो और उतरो, मेहनत है ना।.... बहुत भाग्यवान हो, समय पर बाप मिल गया। कुमारी ही पूजी जाती है। कुमारी जब गृहस्थी बन जाती तो बकरी बन सबके आगे सिर झुकाती रहती है। तो बच गई ना। तो सदा अपने को ऐसे भाग्यवान समझ आगे बढ़ते चलो। (अ.वा.22.1.88 पृ.231 आ)	Download

495	कुमारियों से	कुमारियाँ तो हैं ही सदा भाग्यवान। डबल भाग्य है। एक- कुमारी जीवन का भाग्य, दूसरा- बाप का बनने का भाग्य। कुमारी जीवन पूजी जाती है। जब कुमारी जीवन खत्म होती है तो सबके आगे झुकना पड़ता। गृहस्थी जीवन है ही बकरी समान जीवन, कुमारी जीवन है पूज्य जीवन। अगर कोई एक बार भी गिरा तो गिरने से हड्डी टूट जाती है ना।...टेस्ट करके फिर समझदार नहीं बनना। (अ.वा.26.1.88 पृ.236 म.)	Download
496	कुमारियों से	कुमारियों लिए तो जैसे मेहनत है ही नहीं। फ्री हैं। विकार में गए तो बड़ी पंचायत हो जाती है। कुमारी रहना अच्छा है, नहीं तो फिर अधरकुमारी नाम पड़ जाता। युगल भी क्यों बनें? इसमें भी नाम-रूप का नशा चढ़ता है। यह भी मूर्खता है। भल बहादुरी दिखाते हैं, इसमें कोई संशय नहीं; परन्तु बड़ी अच्छी हिम्मत चाहिए। ज्ञान की पूरी पराकाष्ठा चाहिए। बहुत हैं जो हिम्मत करते हैं; परंतु आग की आँच आ जाती है तो खेल खलास; इसलिए बाबा कहते हैं कुमारी फिर भी अच्छी है। अधरकुमारी बनने का ख़याल भी क्यों करना चाहिए? कुमारियों का नाम बाला है। बाल ब्रह्मचारी हैं। बाल ब्रह्मचारी रहना अच्छा है। ताकत रहती है। दूसरे कोई की याद नहीं आवेगी।.... कुमारी है तो अकेली है। दो से द्वैत आ जाता है। जितना हो सके कुमारी रहना अच्छा है। उसमें तो घर आदि बनाना पड़ता है। कुमारी सर्विस में निकल सकती है। बन्धन में पड़ने से फिर बंधन वृद्धि को पाते रहते हैं। (मु.6.8.76 पृ.3 म.)	Download
497	कुमारियों से	कुमारियों का लक्ष्य क्या है? सेवा। सेवा करने के लिए पहले स्वयं में सर्व प्राप्ति का अनुभव कर रही हो? ....इस समय के हिसाब से गृहस्थी जीवन क्या है, उसको भी देख रही हो ना!.... बहुत भाग्यवान हो जो कुमारी जीवन में बाप की बनी हो। तो राइट हैण्ड बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं। (अ.वा.16.4.82 पृ.376 म०, 377 आ.)	Download
498	कुमारियों से	कुमारी है, कोई कुमार को याद किया तो कब मन शान्त न होगा। बुद्धि चलती रहेगी, उसकी याद आती रहेगी। बाप समझाते हैं यह 5 भूत कम नहीं हैं। कहा जाता है इनमें भूतों की प्रवेशता है। एक भूत नहीं है, पाँचों भूतों की प्रवेशता है। (मु.1.3.78 पृ.2 आ.)	Download
499	कुमारियों से	तुम कन्यायें भी अपना पुरुषार्थ कर रही हो। जितना पढ़ेंगे, श्रीमत पर चलेंगे तो 21 जन्म राज्य करेंगे। कन्याओं को शरीर निर्वाह नहीं करना है। उन्हों का काम है पढ़ना और ससुर घर जाना। (मु.22.3.78 पृ.3 म.)	Download
500	कुमारियों से	ऐसे नहीं कहा जाता कि कन्या को भी शरीर निर्वाह अर्थ माथा मारना है। कन्या को पति पास रहना है। शरीर निर्वाह पति को करना है।...एक कहानी है ना- एक कन्या ने बाप को कहा मैं अपने नसीब (का) खाती हूँ।...वह तो ऐसे ही करके कहानी सुनाते हैं। सच्ची-2 बात यहाँ की है। (मु. 18.3.73 पृ.3 अं., 4 आ.)	Download
501	कुमारियों से	कन्याएँ तो फ्री हैं। उनको नौकरी तो करनी नहीं है। उस नॉलेज के बदली यह लो तो 21 जन्म लिए वर्सा मिल जावेगा, नहीं तो स्वर्ग की बादशाही भी गँवा देंगे। (मु.11.4.75 पृ.3 अं.)	Download
502	कुमारों से	कुमार हैं ही उड़ती कला वाले। जो सदा निर्बंधन हैं वही उड़ती कला वाले हैं। तो निर्बंधन कुमार हो। मन का भी बंधन नहीं।....हलचल मचाने वाले नहीं; लेकिन शांति स्थापन करने वाले। ऐसे श्रेष्ठ कुमार हो?...ऐसे तो क्वेश्चन नहीं करते हो कि व्यर्थ संकल्प आते हैं क्या करें? भाग्यवान कुमार हो। 21 जन्म भाग्य का खाते रहेंगे। स्थूल, सूक्ष्म दोनों कमाई से छूट जाएँगे।....कुमार अर्थात् अपने हर कर्म द्वारा अनेकों की श्रेष्ठ कर्मों की रेखा खींचने वाले।...इसको कहा जाता है सच्चे सेवाधारी। (अ.वा.25.12.85 पृ.112 अं., 113 आ.)	Download

503	कुमारों से	कुमार अर्थात् निर्बंधन। सबसे बड़ा बंधन मन के व्यर्थ संकल्पों का है।.....व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं; इसलिए इस बंधन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी; क्योंकि जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वत: तीव्र होगी। बोझवाला धीमी गति से चलेगा। (अ.वा.18.11.85 पृ.45 म.)	Download
504	कुमारों से	सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी ऐसे अनुभव करते हो? ...कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अपने बंधन में नहीं बांधे इसको कहा जाता है 'साक्षी'।... साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे।... सदा एक बाप दूसरा न कोई। आत्माएँ सहयोगी हैं; लेकिन साथी नहीं हैं, साथी तो बाप है।...किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता।....कुमार डबल लाइट हैं। संस्कार, स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं।... अगर ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो ज़रूर कोई बोझ है।... बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज़ बुलंद करना कि हम विजयी रत्न है। अभी देखेंगे कि कौन से ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं।...सभी कुमार फर्स्ट नं. में आने वाले हो ना।....फर्स्ट में आने वाले सदा बाप समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीज़न में आ सकते हैं।... एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें निर्विघ्न आत्माएँ हैं तो यहाँ हैं।....जहाँ यूनिटी है वहाँ सहज सफलता है; लेकिन गिराने में यूनिटी नहीं करना, चढ़ाने में।....कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी, वफ़ादार। हर कदम में फालो फादर करने वाले।...तो जो भी संकल्प करो, पहले चैक करो कि बाप समान हैं? अगर नहीं हैं, तो चेंज कर दो। अगर हैं तो प्रैक्टिकल में लाओ।.....माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। (अ.वा.9.5.83 पृ.190 अं., 191,192,193)	Download
505	कुमारों से	सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी ऐसे अनुभव करते हो? ...कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अपने बंधन में नहीं बांधे इसको कहा जाता है 'साक्षी'।... साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे।... सदा एक बाप दूसरा न कोई। आत्माएँ सहयोगी हैं; लेकिन साथी नहीं हैं, साथी तो बाप है।...किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता।....कुमार डबल लाइट हैं। संस्कार, स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं।... अगर ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो ज़रूर कोई बोझ है।... बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज़ बुलंद करना कि हम विजयी रत्न है। अभी देखेंगे कि कौन से ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं।...सभी कुमार फर्स्ट नं. में आने वाले हो ना।....फर्स्ट में आने वाले सदा बाप समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीज़न में आ सकते हैं।... एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें निर्विघ्न आत्माएँ हैं तो यहाँ हैं।....जहाँ यूनिटी है वहाँ सहज सफलता है; लेकिन गिराने में यूनिटी नहीं करना, चढ़ाने में।....कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी, वफ़ादार। हर कदम में फालो फादर करने वाले।...तो जो भी संकल्प करो, पहले चैक करो कि बाप समान हैं? अगर नहीं हैं, तो चेंज कर दो। अगर हैं तो प्रैक्टिकल में लाओ।.....माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। (अ.वा.9.5.83 पृ.190 अं., 191,192,193)	Download

506	कुमारों से	कुमार जीवन में बाप का बनना कितने भाग्य की निशानी है।... तो सदा अपने को आत्मा भाई-2 हैं ऐसे ही समझकर चलते रहो। इसी स्मृति से कुमार जीवन सदा निर्विघ्न आगे बढ़ सकती है।....कुमार सेवा में तो बहुत आगे चले जाते हैं; लेकिन सेवा करते अगर स्व की सेवा भूले तो फिर विघ्न आ जाता है। कुमार अर्थात् हार्ड वर्कर तो हो ही; लेकिन निर्विघ्न बनना है।.... कुमारों में शारीरिक शक्ति भी है और साथ-2 दृढ़ संकल्प की भी शक्ति है; इसलिए जो चाहे कर सकते है। इन दोनों शक्तियों द्वारा आगे बढ़ सकते हैं।...कुमार सदा अपने को बाप के साथी समझते हो?...वैसे भी जीवन में सदा कोई-न-कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो; लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाले हैं।... जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या! तो सदा कम्बाइन्ड समझने से और संकल्प समाप्त हो जाएँगे; क्योंकि सर्वशक्तिवान साथी है। (अ.वा.8.4.82 पृ.359 मध्यांत, 360 आ.)	Download
507	कुमारों से	कुमार सब रीति से निर्बंधन हैं। लौकिक ज़िम्मेवारी से भी निर्बंधन और माया के बंधनों से भी निर्बन्धन। ....बंधनमुक्त की निशानी है सदा योगयुक्त।...अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ, पहले बाप को खिलाओ।.. कभी भी पूँछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जावेंगे।.... अभी तो स्वतंत्र हो फिर ज़िम्मेवारी बढ़ जायेगी। सभी ने बाप को कम्पैनियन बनाया है ना? तो एक कम्पैनियन छोड़कर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक में भी अच्छा नहीं माना जाता।.... कुमार ज्वाला रूप बनकर, ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जायेगा।...कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। रूहानी यूथ ग्रुप हो ना। आजकल के यूथ गवर्नमेंट को भी बदलना चाहते हैं तो बदल देते। वह करते हैं डिस्ट्रक्शन, नुकसान और आप करेंगे कंस्ट्रक्शन।....हरेक कुमार को अपना ग्रुप तैयार करना चाहिए।....कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-2 पास विद आनर हो जायेंगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लेना चाहिए। (अ.वा.30.11.79 पृ.67 आ., 68,69)	Download
508	कुमारों से	कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है।....सबसे निर्बन्धन कुमार और कुमारियाँ हैं। कुमार जो चाहें वह अपना भाग्य बना सकते हैं।...जितना सेवा में बिज़ी रहेंगे उतना सहजयोगी रहेंगे; लेकिन याद सहित सेवा हो तो सेफ्टी है। याद नहीं तो सेफ्टी नहीं।....माया को कुमार बहुत पसंद आते हैं।.... माया को कुमारों से एक्स्ट्रा प्यार है; इसलिए चारों ओर से कोशिश करती है मेरे बन जाएँ।....सदा एक ही बात पक्की करो कि कुमार जीवन अर्थात् मुक्त जीवन। जो जीवनमुक्त है वह संगमयुग की प्राप्ति युक्त होगा।...कुमार जीवन हल्की जीवन है। इस जीवन में अपनी तकदीर बनाना यह सबसे बड़ा भाग्य है। (अ.वा.3.12.84 पृ.44 अं., 45,46)	Download
509	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	काम अथवा क्रोध में आये तो गोया सतगुरू की निन्दा कराई। फिर पद पा न सकेंगे। (मु.12.2.78 पृ.2 मध्यांत)	Download
510	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	कब क्रोध न करना है। उसी समय तुम ब्राह्मण नहीं, चाण्डाल हो; क्योंकि क्रोध का भूत है।.... ऐसे नहीं क्रोध किया तो हर्जा नहीं। यह भूत आया तो तुम ब्राह्मण नहीं। (मु.7.5.77 पृ.3 म.)	Download
511	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	यज्ञ की सम्भाल करने वाले ब्राह्मणों में क्रोध आदि कोई भी विकार न होना चाहिए। (मु.7.5.77 पृ.3 मध्यादि)	Download

512	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	अन्दर में क्रोध, लोभ आदि होगा तो सज़ा बहुत कड़ी मिलेगी; क्योंकि तुम सुख देने निमित्त बनी हुई हो। (मु.25.6.72 पृ.2 अं.)	Download
513	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	कोई कुछ भी कहे, सुना न सुना कर देना है। सामना न करना चाहिए जो लड़ाई हो जाए। हर बात में सहनशीलता होनी चाहिए। (मु.12.11.73 पृ.2 म.)	Download
514	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	अगर कोई में क्रोध का भूत है तो वह रावण का बच्चा हो गया। यह काम क्रोध ...यह किसके बच्चे हैं? रावण के। .... किस पर क्रोध करते हो तो जैसे कि तुम आसुरी रावण सम्प्रदाय बन गए। (मु.3.4.72 पृ.4 आ.)	Download
515	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	काम के कारण क्रोध भी आ जाता है। (मु.26.6.72 पृ.3 अं.)	Download
516	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	पहले अपन को मीठा बनना चाहिए, नहीं तो फिर औरों को कहने का अधिकार नहीं है। बाबा साफ कहते हैं तेरे में क्रोध है तो औरों को कह न सकेंगे। खुद को मीठा बनना है। (मु.1.10.72 पृ.2 अं.)	Download
517	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	कोई भी क्रोध वा भूल आदि करते हैं तो बाबा पास रिपोर्ट करनी है। खुद किसको न कहना चाहिए। फिर जैसे कि ला अपने हाथ में ले लिया।...यहाँ भी बच्चों को कब सामने कुछ कहना न चाहिए। बाबा को बोलो। सभी को सावधानी देने वाला एक बाबा है। (मु.18.1.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
518	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	तुम बच्चे जानते हो अच्छे-2 सर्विस करने वाले हैं। वह तो नामी-ग्रामी हैं। बाबा सर्विस पर भेज देते हैं। बहुत मीठा बोलना होता है। कोई से लड़ना-झगड़ना नहीं है। ब्राह्मण अगर कड़ुवा बोले तो वह कहेंगे इनमें तो क्रोध का भूत है। निन्दा-स्तुति में समान रहना चाहिए। बहुतों में क्रोध का भूत है, उससे नाराज़ होते हैं। ऐसे नहीं कि सभी का क्रोध निकल गया है।.... ऐसे कोई कह न सके कि हमारे में क्रोध नहीं है। कोई में जास्ती, कोई में कम होता है। कोई-2 का आवाज़ ही ऐसा होता है जैसे डांटते हैं। बच्चों को बहुत-2 मीठा बनना है। (मु.13.10.71 पृ.2 आ.)	Download
519	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	क्रोध करेंगे गोया बाप की निन्दा कराई। क्रोध का भूत आया तो बाप को भूल जाते हैं। बाप की याद हो तो कोई भी भूत आवे ही नहीं।....एक बार क्रोध किया तो वह छः मास बुद्धि में रहता है कि यह क्रोधी है, फिर दिल से उतर जाते हैं। गन्दी आदत है ना। (मु.11.5.69 पृ.1 अं.)	Download
520	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना। कहेंगे तुम अपना मुँह तो देखो। तुम्हारे में क्रोध का भूत है तो तुम स्वर्ग में कैसे नारायण को वरेंगे। अपना मुँह देखो। हम श्री ना. को वरने लायक हैं?(मु.2.1.73 पृ.4 म.)	Download
521	लण्डन	सदा रूहानी गुलाब बन औरों को भी खुशबू देने वाले अविनाशी बगीचे के पुष्प हो ना।..... एक-2 रूहानी गुलाब कितना वैल्युएबल है।....है तो साधारण पत्थर या चाँदी या सोना; लेकिन वैल्यु कितनी है। सोने की मूर्ति कितनी वैल्यु से देंगे। इतने वैल्युएबल कैसे बने; क्योंकि बाप का बनने से सदा ही श्रेष्ठ बन गये....बापदादा को लण्डन निवासियों पर नाज़ है, सेवा के वृक्ष का बीज जो है वह लण्दन है। तो लण्दन निवासी भी बीजरूप हो गये।....जब बाप के बने तो सदा बाप का साथ और बाप का हाथ है।....जिसके ऊपर बाप का हाथ है वह सदा ही सेफ़ है। (अ.वा.14.1.84 पृ.109 मध्यादि)	Download

522	लण्डन	लण्डन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउन्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मज़बूत हैं। क्या करें, कैसे करें - ऐसी कोई की कम्पलेन्ट तो नहीं है ना। बहुत करके ड्रामा भी माया के ही करते हो ना। हर ड्रामा में माया न आने वाली भी आ जाती है। माया के बिना शायद ड्रामा नहीं बना सकते हो। माया के भी भिन्न-2 स्वरूप दिखाते हो ना।....लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही माया के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ड्रामा दिखाओ।....लण्दन निवासियों की महिमा तो सभी जानते हैं। आपको सब किस नज़र से देखते हैं? सदा मायाजीत; क्योंकि पावरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही; लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है वह भी पावरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार तीनों को फालो करो तो क्या बन जायेंगे? फरिश्ता बन जायेंगे ना। लण्दन निवासी अर्थात् नो कमप्लेन्ट नो कनफ्यूज़। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करने वाले सब किंग और क्वीन हो ना। आपका नशा कितना रूहानी है। अभी भी राजे और भविष्य में भी राजे। डबल नशा है ना। (अ.वा.11.1.83 पृ.44, 45 मध्यांत)	Download
523	लण्डन	लण्दन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउन्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मज़बूत हैं। क्या करें, कैसे करें - ऐसी कोई की कम्पलेन्ट तो नहीं है ना। बहुत करके ड्रामा भी माया के ही करते हो ना। हर ड्रामा में माया न आने वाली भी आ जाती है। माया के बिना शायद ड्रामा नहीं बना सकते हो। माया के भी भिन्न-2 स्वरूप दिखाते हो ना।....लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही माया के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ड्रामा दिखाओ।....लण्दन निवासियों की महिमा तो सभी जानते हैं। आपको सब किस नज़र से देखते हैं? सदा मायाजीत; क्योंकि पावरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही; लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है वह भी पावरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार तीनों को फालो करो तो क्या बन जायेंगे? फरिश्ता बन जायेंगे ना। लण्दन निवासी अर्थात् नो कमप्लेन्ट नो कनफ्यूज़। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करने वाले सब किंग और क्वीन हो ना। आपका नशा कितना रूहानी है। अभी भी राजे और भविष्य में भी राजे। डबल नशा है ना। (अ.वा.11.1.83 पृ.44, 45 मध्यांत)	Download
524	लण्डन	लण्दन निवासी तो हैं ही सेवा के फाउन्डर। लण्दन सेवा का मुख्य स्थान है। सबकी नज़र लण्दन के ऊपर है। लण्दन से क्या डायरैक्शन मिलते हैं?....तो लण्दन निवासी हैं विशेष सेवाधारी। ब्राह्मण जीवन का धंधा ही है सेवा।... स्वप्न में सेवा, उठते भी सेवा, चलते-फिरते भी सेवा। इसी सेवा के आधार पर स्वयं भी सदा सम्पन्न, भरपूर और औरों को भी सदा भरपूर कर सकते हो। हरेक अमूल्य रत्न हो। चाहे लण्दन का राज्य-भाग्य एक तरफ रखें, दूसरी तरफ आप लोगों को रखें तो आपका भाग्य ज़्यादा है।.... अभी सब प्रकार के बोझ समाप्त हो गये हैं ना। अभी पिंजरे की मैना से उड़ते पंछी हो गये। कंठी वाले, उड़ने वाले तोते बन गये। पिंजरे वाले नहीं। बापदादा के गीत गाने वाले। लण्दन निवासी, हिन्दी जानने वालों को पहला चांस मिला है, फिर भी डायरैक्ट मुरली सुनने वाले लकी हो। (अ.वा.31.12.81 पृ.203 अं., 204 आ.)	Download
525	लण्डन	लण्दन निवासियों का निश्चय और उमंग बहुत अच्छा है। कमज़ोर आत्माएँ नहीं हैं। विघ्न आया और पार किया। बकरियाँ नहीं हैं, सब शेरनियाँ हैं। बकरीपन अर्थात् मैं-मैं पन खत्म। शक्ति सेना का झण्डा अच्छा बुलन्द है। एक-2 शक्ति सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने वाली है। जब शक्ति सेना मैदान में आ जाएगी तब जय-जयकार होगी। (अ.वा.18.3.81 पृ.65 अं., 66 आ.)	Download

526	लण्डन	लण्दन विदेश के सेवा का फाउन्डेशन है। आप सब सेवा के फाउन्डेशन स्टोन हो।....भले फाउन्डेशन वृक्ष के विस्तार में छिप जाता है; लेकिन है तो फाउन्डेशन ना।.... फाउन्डेशन गुप्त रह जाता है। ऐसे आप भी थोड़ा सा निमित्त बन औरों को चांस देने वाले बन गये; लेकिन फिर भी आदि, आदि है। औरों को चांस देकर आगे लाने में आपको खुशी होती है ना। ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह डबल विदेशी आए हैं तो हम छिप गये हैं? फिर भी निमित्त आप ही हैं। उन्हों को उमंग-उत्साह देने के निमित्त हो। जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही।...छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्ष फल मिलता ही रहता है। अगर आप लोग सहयोगी नहीं बनते तो लण्दन में इतने सेंटर नहीं खुलते। (अ.वा.26.2.84 पृ.174म.,175आ)	Download
527	लण्डन	वैसे भी लण्दन राज्य का स्थान है ना। प्रजा बनने वाले नहीं, सभी सेवा में आगे बढ़ने वाले। जहाँ प्राप्ति है, वहाँ सेवा के सिवाय रह नहीं सकते। सेवा कम अर्थात् प्राप्ति कम। प्राप्ति स्वरूप बिना सेवा के रह नहीं सकते। देखो, आप लोग कितना भी देश छोड़कर विदेश चले गये तो भी बाप ने विदेश से भी ढूँढकर अपना बना लिया। कितना भी भागे फिर भी बाप ने तो पकड़ लिया ना। (अ.वा.25.12.83 पृ.74 अं.)	Download
528	लण्डन	लण्दन से सारे विदेश के सेवाकेन्द्रों का सम्बन्ध है। तो लण्दन निवासी इस सेवा के वृक्ष का फाउन्डेशन हो गये। फाउन्डेशन कमज़ोर तो सारा वृक्ष कमज़ोर हो जायेगा।.....सब ज़िम्मेवारी के ताजधारी हैं। फिर भी आज लण्दन निवासी बच्चों को विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं। यह ज़िम्मेवारी का ताज सदा के लिए डबल लाइट बनाने वाला है। बोझ वाला ताज नहीं है। सर्व प्रकार के बोझ को मिटाने वाला है। अनुभवी भी हो कि जब तन, मन, धन, मंसा, वाचा, कर्मणा सब रूप से सेवाधारी बन सेवा में बिज़ी रहते हो तो सहज ही मायाजीत, जगतजीत बन जाते हो।..... ऐसे निरन्तर सेवाधारी निरन्तर मायाजीत हो जाते हैं। विघ्न विनाशक बन जाते हैं। तो लण्दन निवासी क्या हैं? निरन्तर सेवाधारी। लण्दन में माया तो नहीं आती है ना कि माया को भी लण्दन अच्छा लगता है?... अच्छे-2 रत्न हैं लण्दन के, जगह-2 पर गये हैं।.... अभी टोटल कितने सेवाकेन्द्र हैं? (50) तो 50 जगह का फाउन्डेशन लण्दन है। तो वृक्ष सुन्दर हो गया ना। जिस तना से 50 टाल-टालियाँ निकले वह वृक्ष कितना सुन्दर हुआ।.... बापदादा भी बच्चों के, सिर्फ लण्दन नहीं, सभी बच्चों के सेवा का उमंग-उत्साह देख खुश होते हैं। विदेश में लगन अच्छी है। याद की भी और सेवा की भी, दोनों की लगन अच्छी है, सिर्फ एक बात है कि माया के छोटे रूप से भी घबराते जल्दी हैं।.... तो विदेशी बच्चों को माया से घबराना नहीं चाहिए, खेलना चाहिए। कागज़ के शेर से खेलना होता है या घबराना होता है? .....जितनी मेहनत करते हो उस हिसाब से डबल विदेशी सभी नं.वन सीट ले सकते हो; क्योंकि दूसरे धर्म के पर्दे के अंदर, डबल पर्दे के अंदर बाप को पहचान लिया है। ....हिम्मत वाले भी बहुत हैं, असम्भव को सम्भव भी किया है।.....जानने में भी होशियार, मानने में भी होशियार हैं। दोनों में नं० वन हो। बाकी चल करके चूहा आ जाता है तो घबरा जाते हो। है सहज मार्ग; लेकिन अपने व्यर्थ सकंल्पों को मिक्स करने से सहज मुश्किल हो जाता है। तो इसमें भी जम्प लगाओ। माया को परखने की आँख तेज़ करो।....पहले विदेशियों में विशेष फँसने के संस्कार थे, अभी हैं फास्ट जाने के संस्कार। एक में नहीं फँसते हैं; लेकिन अनेकों में फँस जाते हैं।....तो जितना ही फँसने के संस्कार थे उतना ही फास्ट जाने के संस्कार हैं, सिर्फ एक बात है, छोटी चीज़ को बड़ा नहीं बनाओ, बड़े को छोटा बनाओ। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है? इसके बजाय जो होता है कल्याणकारी है।......क्वेश्चन मार्क ज़्यादा होते हैं, तो अब मधुबन की वरदान भूमि में क्वेश्चन मार्क खत्म करके, फुलस्टाप लगा के जाओ। क्वेश्चन मार्क मुश्किल है, फुल स्टाप सहज है। (अ.वा.8.1.82 पृ.224 आ., 225, 226, 227)	Download

529	**लण्डन**	सभी अपने को सदा बाप के साथी अनुभव करते हो? ....सदैव बाप की याद की छत्रछाया के अंदर हो। किसी भी प्रकार के माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नहीं सकते।.............खास विदेशियों के ऊपर बापदादा का विशेष स्नेह और सहयोग है। विदेशी आत्माएँ सेवा के क्षेत्र में भी अपना अच्छा पार्ट आगे चल करके बजायेंगी। सेवा का भविष्य भी बहुत अच्छा है। ....जनरल प्रोग्राम के साथ-2 विशेष आत्माओं की सेवा करो- उसके लिए मेहनत ज़रूर लगेगी; लेकिन सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। यह नहीं सोचो, बहुत किया है, फल नहीं दिखाई देता। फल तैयार हो रहे हैं। कोई भी कर्म का फल निष्फल हो ही नहीं सकता; क्योंकि बाप की याद में करते हो ना। याद में किये हुए का फल सदा श्रेष्ठ रहता है; इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं बनना। जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है, वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो। कोई फल जल्दी निकलता, कोई थोड़ा देरी से; इसलिए इसका भी सोचो नहीं, करते चलो। अभी जल्दी ही ऐसा समय आयेगा जो स्वतः आपके पास इनक्वायरी करने आयेंगे कि यह संदेश वा सूचना कहाँ से मिली थी। सिर्फ थोड़ा सा विनाश का ठका होने दो- तो फिर देखो कितनी लम्बी क्यू लग जाती है। फिर आप लोग कहेंगे हमको समय नहीं है। अभी वह लोग कहते हैं हमें टाइम नहीं फिर आप कहेंगे टू लेट। ....सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म योग की शक्ति स्वतः ही आत्माओं को आपके तरफ आकर्षित करेगी। तो यही सहज सेवा है। यह तो सभी कर सकते हो ना। लण्दन निवासियोंयों ने सेवा का विस्तार अच्छा किया है। हमजिन्स अच्छी तैयार की हैं। माला तैयार हो गई है? 108 रत्न तैयार किए हैं। अब लण्दन वाले ऐसा ग्रुप तैयार करें जिसमें सब वैरायटी हों, वैज्ञानिक भी हों, धार्मिक भी हों, नेतायें भी हों और जो भिन्न-2 ऐसोसियेशन्स हैं उनकी भी विशेष आत्माएँ हों। जब तक स्थापना के लिए सब प्रकार की वैरायटी आत्माएँ स्थापना के कार्य में बीज नहीं डालेंगी तो विनाश कैसे होगा? क्योंकि सतयुग में सब प्रकार के कार्य वाले काम में आयेंगे। सेवाधारी बनकर आपकी सेवा करेंगे। .... राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रायल फैमिली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो, कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्लाहना दे कि हमें संदेश नहीं मिला है। (अ.वा.14.1.79 पृ.214 अं., 215, 216)	Download
530	**लण्डन**	**सभी स्नेह के सूत्र में बंधे हुये बाप के माला के मणके हो ना! ....तो स्नेह के सूत्र में सब एक बाप के बने हैं, इसका यादगार माला है। जिसका एक बाप दूसरा न कोई है वही एक ही स्नेह के सूत्र में माला के मणके बन पिरोये जाते हैं। सूत्र एक है और दाने अनेक हैं। तो यह एक बाप के स्नेह की निशानी है। तो ऐसे अपने को माला के मणके समझते हो ना या समझते हो 108 में तो बहुत थोड़े आयेंगे। क्या समझते हो? यह तो 108 का नं. निमित्त मात्र है। जो भी बाप के स्नेह में समाये हुए हैं वह गले की माला के मोती हैं ही। जो ऐसे एक ही लगन में मगन रहने वाले हैं तो मगन अवस्था निर्विघ्न बनाती है और निर्विघ्न आत्माओं का ही गायन और पूजन होता है। ....अविनाशी रत्न बने हो इसकी मुबारक हो। 10 साल या 15 साल से माया से जीते रहे हो - इसकी मुबारक हो। आगे संगमयुग पूरा ही जीते रहो। सभी पक्के हो; इसलिए बापदादा ऐसे पक्के अचल बच्चों को देख खुश हैं।(अ.वा.18.2.85 पृ.174 आ., 175 आ)**	Download
531	**माताओं से**	**माताएँ जगत माताएँ बन गई। अभी हद की माताएँ नहीं, ... हद की गृहस्थी में फँसने वाली नहीं। ....माताएँ बहुत भटक-2 कर थक गई, तो बाप माताओं की थकावट देख उन्हें थकावट से छुड़ाने आये हैं। (अ.वा.12.12.84 पृ.66 म.)**	Download

532	माताओं से	सभी माताएँ जगत माताएँ हो गई ना! ....हद की गृहस्थी की माताएँ नहीं। .... तो घर में रहती हो या विश्व की सेवा के स्थान पर रहती? ....जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगी तो हद के बन्धनों से सहज मुक्त होती जाएँगी। ....श्रेष्ठ कार्य के लिए समय न मिले, शरीर काम न करे यह हो नहीं सकता। पहिये लग जायेंगे। जब उमंग-उत्साह के पहिये लग जाते हैं तो न चलने वाले भी चलने लग पड़ते हैं। ....तो उमंग-उत्साह और खुशी के पहिये लगाकर यह हद के बंधन काटो। पति का बंधन, बच्चों का बंधन तो खत्म हुआ, अभी इन सूक्ष्म बंधनो से भी मुक्त बनो। (अ.वा.9.5.84 पृ.309 आ.)	Download
533	माताओं से	माताएँ कहेंगी मेरा पति ठीक हो जाए, बच्चा चल जाए, धंधा ठीक हो जाए, यही बातें सोचते या बोलते हैं; लेकिन यह चाहना पूर्ण तब होगी जब स्वयं हल्के हो बाप से शक्ति लेंगे। इसके लिए बुद्धि रूपी बर्तन खाली चाहिए। क्या होगा, कब होगा, अभी तो हुआ ही नहीं, इससे खाली हो जाओ। (अ.वा.13.4.83 पृ.135 म.)	Download
534	माताओं से	माताओं के लिए विशेष बापदादा सहज मार्ग की सौगात लाये हैं। ....सहज प्राप्ति जो होती है यही सौगात है। ....माताओं को विशेष खुशी होनी चाहिए कि हमारे लिए खास बाप आये हैं। .... माताओं को किसी ने भी नामीग्रामी नहीं बनाया और बाप ने ''पहले माता'' का सिलसिला स्थापन किया। तो माताएँ सिकीलधी हो गईं ना। कितने सिक से बाप ने ढूँढ़ा और अपना बना लिया। ....बाप ने देखो कैसे कोने-2 से ढूँढ़ कर निकाल दिया। ....लोग कहते हैं दो/चार माताएँ भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकतीं और अभी माताएँ सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। वह कहते, रह नहीं सकतीं और बाप कहते, माताएँ ही रह सकती हैं। .... सिर्फ लौकिक परिवार की ज़िम्मेवारी निभाने वाली नहीं; लेकिन विश्व के सर्व आत्माओं के सेवा की ज़िम्मेवारी निभाने वाली। चाहे निमित कहाँ भी रहते हों; लेकिन स्मृति में विश्व सेवा रहे। .... लक्ष्य होगा बेहद का तो लक्षण भी बेहद के आयेंगे, नहीं तो हद में ही फँसे रहेंगे। .... माताओं को सेवा के मैदान पर आना चाहिए। एक-2 माता एक-2 सेवाकेन्द्र सम्भाले। अगर फुर्सत नहीं है तो आपस में दो-तीन का ग्रुप बनाओ। ऐसे नहीं घर का बन्धन है, बच्चे हैं। .... अभी शक्तियाँ मैदान पर आओ। जो पालना ली है उसका रिटर्न दो। ....जितनी सेवा करेंगे उतना निर्विघ्न रहेंगे और खुशी भी रहेगी। (अ.वा.11.5.83 पृ.200 अं., 201, 202)	Download

535	माताओं से	सभी शक्तियों के हाथ में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा है ना? शक्तियों को जैसे और शस्त्र दिये हैं, अब शक्तियों को बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना है। हरेक शक्ति द्वारा बाप प्रत्यक्ष हो जाए तभी जय-जयकार हो जायेगी। शक्तियों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हुई है तभी सदा शिवशक्ति इकट्ठा दिखाया है। ....बापदादा को शक्ति सेना पर नाज़ है। जिनको किसी ने आगे नहीं बढ़ाया वह इतनी आगे बढ़ीं जो सारे विश्व को बदल दें। जिन्हें लोगों ने नाउम्मीद करके छोड़ दिया, बाप ने उन्हें उम्मीदवार बना दिया। पहले शक्ति, पीछे शिव। अपने को भी पीछे किया। .... माताएँ गिरीं तो चरणों तक, चढ़ती हैं तो एकदम सिर का ताज।...........माताओं को बाप द्वारा विशेष आगे जाने की लिफ्ट मिली है। ....माताओं को सदा विशेष खुशी होनी चाहिए कि क्या से क्या बन गईं। नाउम्मीद से सर्व उम्मीदों वाली जीवन बन गई। पास्ट की जीवन में क्या थे, अब क्या बन गये। दुनियाँ भटक रही है और आप ठिकाने पर, तो खुशी होनी चाहिए ना। ....सदा इसी नशे में रहो हम कल्प पहले वाली गोपियाँ हैं। बाप मिला गोया सब कुछ मिला। ....शक्तियों का मुख्य गुण है निर्भय। माया से भी डरने वाली नहीं। .... जो निर्भय स्टेज पर रहते उनका साक्षात्कार शक्ति रूप का होता। सदा शस्त्रधारी। दुनियाँ आपको इसी रूप में नमस्कार करने आयेगी। माताएँ सिर्फ बाप के साथ सर्व सम्बन्ध निभाती रहें तो नं.वन ले सकती हैं। माताएँ अगर नष्टोमोहा में पास हो गईं तो बहुत आगे नं. ले सकती हैं। माताओं के लिए यही सब्जेक्ट ज़रूरी है। (अ.वा.30.11.79 पृ.72 म., 73, 74)	Download
536	माताओं से	माताएँ तीव्र पुरुषार्थी हो ना? अभी घर में नहीं बैठ जाना, अभी ग्रुप बनाकर चारों ओर सेवा के लिए फैल जाओ। सेन्टर खोलो। अगले साल देखेंगे कितने सेन्टर खोले। समस्याओं के पहले सबको संदेश दे दो, तो सभी आपके बहुत गुणगान करेंगे। अभी सेवा केन्द्र खोलते जाओ। सन्देश देने के लिए कोई साधन अपनाओ। ....माताओं को तो सदा खुशी में नाचना चाहिए; क्योंकि न उम्मीद से उम्मीदवार हो गईं, बाप ने सिर का ताज बना दिया। ....पाण्डव भी माताओं को देखकर खुश होते हैं; क्योंकि शक्तियाँ हैं ही पाण्डवों के लिये ढाल। ढाल मज़बूत होगी तो वार नहीं होगा; इसलिए माताओं को आगे रखने में पाण्डवों को खुश होना चाहिए। अगर स्वयं आगे रहेंगे तो डण्डे खाने पड़ेंगे। शक्तियों को आगे रखेंगे तो पाण्डवों की भी महिमा है। आगे रखना भी आगे होना ही है। (अ.वा.5.12.79 पृ.88 मध्यादि, 89 अं.)	Download
537	माताओं से	एक माताओं का संगठन बनाना। जैसे कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास किया है वैसे ही माताएँ जो मददगार बन सकती हैं और हैं, उन्हों का मधुबन में संगठन रखना। कुमारियों के साथ माताओं का संगठन हो। संगठन के समय फिर आना होगा। (अ.वा.2.2.69 पृ.34 म.)	Download
538	माताओं से	माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ। ....क्या भी हो, कुछ भी हो, खुशी में नाचते रहो। ''मिरूआ मौत मलूका शिकार'' इसको कहते हैं नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजयमाला के दाने बनते हैं।...पेपर बहुत आयेंगे। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्तहान ही न हो तो क्लास चेंज कैसे होगा? इसलिए फुल पास होना- न कि पास होना है। (अ.वा.1.12.78 पृ.91 अं., 92 आ.)	Download

539	माताओं से	शक्तियों को, माताओं को सबने नीचे गिराया, अब बाप आ करके ऊँचा चढ़ाते हैं। अपने से भी आगे शक्तियों को रखते हैं तो शक्तियों को विशेष खुशी होनी चाहिए। ....माताएँ कभी रोती तो नहीं हैं? कभी आँखों में आँसू भरते हैं? अब नयनों में रूहानियत आ गई। जहाँ रूहानियत होगी वहाँ पर आँसू नहीं होंगे। ....रोना अर्थात् दु:ख की निशानी। सुख के सागर में समाये हुये रो कैसे सकते? कभी भी दु:ख की लहर स्वप्न में भी न आये। स्वप्न भी सुख स्वरूप हों; क्योंकि सुख का सागर अपने समीप सम्बन्ध में आ गये। तो सदा सुख में, खुशी में रहो, कभी रोना नहीं। ....शक्तियाँ तो एक सैम्पल हैं। अगर सैम्पल रोने वाला होगा तो और सौदा कैसे करेंगे; इसलिए कभी नहीं रोना, न आँखों से रोना, न मन से। (अ.वा.7.12.78 पृ.111 मध्यादि)	Download
540	माताओं से	पहले-2 माताओं को मोहजीत बनने की कोशिश करनी है। नष्टोमोहा बनने में बड़ी मेहनत लगती है। ....भल पति मरा, बन्धन खलास हुआ। फिर पतियों का पति मिलता है तो उनको भी अच्छी रीति पकड़ना चाहिए ना। उस पति ने तो तुमको विकारी बनाया। यह पतियों का पति तो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं। नष्टोमोहा बनाकर ले जाते हैं। (मु.29.5.72 पृ.2 आ.)	Download
541	माताओं से	अगर माताएँ नहीं होतीं तो बाप गऊपाल नहीं कहलाता। .... सदा मुरली पर नाचने वाली हो। मुरली से बहुत प्यार है ना। मुरली के बिना रह नहीं सकतीं। जिसका मुरली से प्यार है उसका मुरलीधर से भी प्यार है। ....माताओं में पढ़ाई का शौक अच्छा है। पढ़ाई के प्यार का सर्टीफिकेट है। (अ.वा.21.3.85 पृ.261 म.)	Download
542	माताओं से	यहाँ तो सन्यासियों के आगे एकदम सो जाते हैं। माताएँ भी सो जाती हैं, जो अनलाफुल है। सन्यासियों के संग में माताओं को घर-बार छोड़ना बहुत खराब है। अभी तो माताएँ कितनी निकल पड़ी हैं। (मु.15.4.72 पृ.2 अं.)	Download
543	माताओं से	माताओं को विशेष कौन-सा विघ्न आता है? (मोह) मोह किस कारण आता है? मोह मेरा से होता है; लेकिन आप सबका वायदा क्या है? .... मैं तेरी तो सब कुछ तेरा। ....सो फिर भी मेरा कहाँ से आया? तेरे को मेरे से मिला देते हो। .... पहला-2 वायदा ही सब यह कहते हैं- जो कहोगे, वो करेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बैठायेंगे। ....जो वायदा किया है उसको निभाकर दिखायेंगे। जो माताएँ ट्रेनिंग में आई हुई हैं, आप सब सरेण्डर हो? जब सरेण्डर हो चुके हो तो फिर मोह कहाँ से आया?.................सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है। मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन-मन-धन सब अर्पण। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हैं? ....जिसने मन दे दिया उसकी अवस्था क्या होगी? मनमनाभव। उसका मन वहाँ ही लगा रहेगा। ....जो मनमनाभव होगा उसमें मोह हो सकता है? .... अगर मोहजीत का ठप्पा लग जावेगा तो सीधी पोस्ट ठिकाने पर पहुँचेगी। ....इसलिए ही ठप्पा ज़रूर लगाना है। इन माताओं का ही फिर समर्पित समारोह करेंगे। उसमें बुलायेंगे भी उनको जिन्होंने ठप्पा लगाया होगा। मोहजीत वालों का ही सम्मेलन करेंगे; इसलिए जल्दी-2 तैयार हो जाओ। (अ.वा.18.9.69 पृ.107मध्यांत, 108)	Download
544	माताओं से	साधारण माताएँ नहीं हो, शिव शक्तियाँ हो। शक्तियाँ अर्थात् संघारणी, विजयी। विजय का झण्डा लहराने वाली। विश्व में बाप को प्रत्यक्ष करने वाली। प्रवृत्ति को सम्भालते हुये सदा बेहद का नशा रहे कि हम असुर संघारणी शिव-शक्तियाँ हैं। माताओं के लिए तो स्वयं बाप सृष्टि पर आये हैं। ऐसी खुशी है ना कि हमने बुलाया और बाप को आना पड़ा। ....हमजिन्स को जगाना यही माताओं का काम है। (अ.वा.9.5.84 पृ.310 आ.)	Download

545	मधुबन	मधुबन महान भूमि है। महाभाग्य भी है तो महापाप भी है। मधुबन में जा करके अगर ऐसा कोई व्यर्थ बोलता है तो उसका बहुत पाप बन जाता है। (अ.वा.12.3.84 पृ.210 म.)	Download
546	मधुबन	यह वण्डरफुल विश्वविद्यालय है, देखने में घर भी है; लेकिन बाप ही सत शिक्षक है, घर भी है और विद्यालय भी है। इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं कि यह घर है या विद्यालय है। (अ.वा.22.4.84 पृ.265 आ)	Download
547	मधुबन	मधुबन की यह विशेषता है हर बार कोई न कोई नई एडीशन हो जाती है। (अ.वा.14.12.83 पृ.54 म.)	Download
548	मधुबन	मधुबन किसको कहा जाता है? जहाँ ब्राह्मणों का संगठन है, वह मधुबन है। तो हरेक विदेश के स्थान को मधुबन बनाओ। मधुबन बनावेंगे तो बापदादा भी आवेंगे; क्योंकि बाप का वायदा है कि मधुबन में आना है। तो जहाँ मधुबन वहाँ बापदादा। आगे चलकर बहुत वण्डर्स देखेंगे। .... जहाँ संगठन है वहाँ बापदादा भी हाज़िर-नाज़िर है। वहाँ खुशी होती या यहाँ आने में खुशी होती? कितना भी कहो फिर भी बड़ा, बड़ा है, छोटा, छोटा है; क्योंकि डायरैक्ट साकार तन की जन्म भूमि और कर्म भूमि, चरित्र भूमि का विशेष महत्व तो (होता) ही है। ....तो स्थान का महत्व है; लेकिन अपनी फुलवाड़ी को बढ़ाओ। मधुबन जैसा नक्शा बनाओ। जब मिनीमधुबन भी होगा तो सभी को आकर्षण होगी देखने की। (अ.वा.24.1.78 पृ.42 अं., 43 आ.)	Download
549	मधुबन	यह आबू बहुत भारी तीर्थ है। बाप कहते हैं मैं यहाँ ही आकर सारी सृष्टि को 5 तत्वों सहित, सभी को पवित्र बनाता हूँ। कितनी सेवा है! एक ही बाप है, जो आकर सर्व की सद्गति करते हैं। (मु.18.1.71 पृ.2 मध्यांत)	Download
550	मधुबन	यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्त वेश में काम चलता रहेगा। (मु.11.1.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
551	मधुबन	इस यूनिवर्सिटी के लिए कोई करोड़ों की बिल्डिंग नहीं बनाई है। यह मकान बनाया है। पिछाड़ी में आकर बच्चे रहेंगे। जो योगयुक्त होंगे वह आकर रहेंगे। इन आँखों से विनाश देखेंगे। (मु.28.10.78 पृ.3 मध्यादि)	Download
552	मधुबन	यह मधुबन है संगमयुग, जहाँ डायरैक्ट बाप से तुम सुनते हो। वहाँ तो ब्राह्मणियाँ बैठ सुनाती हैं। यहाँ तो शिवबाबा सम्मुख बैठ समझाते हैं। यहाँ का प्रभाव बहुत है। (मु.26.10.71 पृ.1 अं.)	Download
553	मधुबन	मधुबन निवासी हर कर्म बाप के साथ करने वाले हो ना? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य और किसी का होगा जो हर कर्म मधुबन में मधुबन के बाप के साथ हो? मधुबन में चारों ओर बाप ही बाप है ना। तो मधुबन निवासियों की विशेषता है सदा हर कर्म बाप के साथ अनुभव करने वाले। ....सदा इसी अनुभव में चलने वाले को ही मधुबन निवासी कहते हैं। जिस समय यह अनुभव नहीं होता तो मधुबन निवासी नहीं हुए, उस समय मधुबन में रहते भी मधुबन निवासी नहीं हैं और जो दूर रहते भी हर कर्म बाप के साथ करते वह दूर रहते भी मधुबन निवासी हैं। मधुबन वाले हर चरित्र में साथ चलने वाले हैं। भागवत मधुबन का यादगार है। (अ.वा.21.10.87 पृ.100 आ)	Download
554	मधुबन	यहाँ रूहानी कारोबार है। बाकी सारी दुनियाँ में जिस्मानी कारोबार है। वास्तव में कारोबार सारी चलती है रूहों की। (मु.7.9.76 पृ.1 आ.)	Download
555	मधुबन	यह ईश्वरीय कार्य चल रहा है, कोई साधारण बात नहीं है- यह अनुभव यहाँ आकर करना चाहिए।........सभी प्रकार के साधनों से बाप के प्रैक्टिकल पार्ट की प्रत्यक्षता अवतरण भूमि पर तो प्रत्यक्ष मिलनी चाहिए। (अ.वा.17.5.72 पृ.280 मध्यांत)	Download

556	मधुबन	मधुबन है ही परिवर्तन भूमि। ....मधुबन को महायज्ञ व राजस्व अश्वमेघ यज्ञ कहते हैं। तो यज्ञ में आहुति डाली जाती है।.............जो नाम देते हो वैसा काम भी करते हो वा नहीं? नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा कार्य करो। (अ.वा.24.10.75 पृ.223 म)	Download
557	मधुबन	यह जो कहावत है, 'अपना घर दाता का दर' यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो मधुबन है ना। अपने घर में अर्थात् दाता के घर में आए हो। घर अथवा दर कहो, बात एक ही है। अपने घर में आने से आराम मिलता है ना। मन का आराम, तन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ इससे भी आराम मिल जाता। थाली में बना बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मन्दिर में घण्टी बजाते हैं ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगायेंगे तो भी घंटी बजायेंगे। आपकी भी घण्टी बजती है ना। आजकल फैशनेबल हैं तो रिकार्ड बजता है। ....चैतन्य ठाकुरों को चार बजे से भोग लगाना शुरू हो जाता है। .... चैतन्य स्वरूप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते; लेकिन यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। (अ.वा.25.11.85 पृ.56 म., 57 आ.)	Download
558	मधुबन	याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुबन द्वारा आफीशियल जाते रहना चाहिए, जिससे कि आत्माओं का किला मज़बूत रहेगा।(अ.वा.3.8.75 पृ.76 अं.)	Download
559	मधुबन	पहले दिन जब मधुबन में आते हैं वह फोटो और फिर जब जाते हैं वह फोटो दोनों निकालने चाहिए। (अ.वा.15.3.84 पृ.216 म.)	Download
560	मधुबनवासियों प्रति	मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रूहानी दृष्टि और एक रस अवस्था में एक/दो के सहयोगी बन, शुभ चिंतक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुये और अनेक संस्कार होते हुये भी एक बाप समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे। ....मधुबन निवासियों में न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। ....जैसे और ज़ोन वालों को अपनी-2 विशेष सर्विस का सबूत देने के लिए सुनाया है वैसे ही मधुबन निवासियों को भी इस बात का सबूत देना है। इस आधार पर ही जनवरी में प्राइज़ मिलेगी। ....अभी तो पुरानों को, आने वाले नए बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन-रात बिज़ी रहना चाहिए। यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिए है। ....पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व शिक्षाओं को साकार स्वरूप में दिखाना है। (अ.वा.18.7.74 पृ.118 अं., 119, 120)	Download

561	मधुबनवासियों प्रति	मधुबन निवासियों को अथक भव का वरदान मिला हुआ है। तो अथक हो ना? और भी मेला चले? जितना आगे चलेंगे उतना यह मेला बड़ा ही होगा, कम नहीं। जितना बढ़ाते जाएँगे उतना बढ़ता जायेगा। .... मधुबन निवासियों ने पुरुषार्थ का नया तरीका क्या निकाला है? ....सहज पुरुषार्थ की नई इन्वेन्शन निकालो और प्रैक्टिकल अनुभव करके दूसरों को सुनाओ। ....मधुबन विश्व के आगे स्टेज(मंच) है। स्टेज पर जो एक्टर होता (है) उसका हर एक्ट पर कितना अटेन्शन रहता है। हाथ उठायेगा तो भी अटेन्शन से; क्योंकि उसे मालूम है हमें सब देखने वाले हैं। ....नया प्लैन बनाओ कि स्वतः और सहजयोगी कैसे बने?............. सहजयोग किस आधार पर होता और या स्वतः योगी किस युक्ति से बन सकते, यह प्लैन निकालो और अनुभव करो, फिर सभी को सुनाओ तो वह आपके गुणगान करेंगे। मेहनत कम और सफलता ज़्यादा, ऐसे नये पुरुषार्थ के तरीके बनाओ। प्लैन ऐसा तैयार करो जिसको देख सब मधुबननिवासियों को थैंक्स दें। (अ.वा.13.1.78 पृ.24 म., 25)	Download
562	मधुबनवासियों प्रति	सबकी नज़र अब मधुबन में विशेष मुख्य रत्नों पर है। तो उस नज़र में ऐसे दिखाना है जो उनकी नज़र आप लोगों की बदली हुई नज़रों को ही देखे, अब वह पुरानी नज़र नहीं, पुरानी वृत्ति नहीं, तब अन्तिम नगाड़ा बजेगा। यह संगठन कॉमन नहीं है, यह संगठन कमाल का है। ....तो सबको सा. हो कि यह साक्षात् बापदादा बन करके ही निकले हैं। (अ.वा.7.10.76 पृ.1 अं.)	Download
563	मधुबनवासियों प्रति	आप और सभी से एकस्ट्रा भाग्यशाली हो। क्यों? कहते हैं ना कि जिनके घर में बहुत मेहमान आते हों वह बहुत भाग्यशाली होते हैं। तो तुम भी एकस्ट्रा भाग्यशाली हो; क्योंकि सभी से ज़्यादा मेहमान यहाँ आते हैं। .... मेहमाननिवाज़ी ऐसी करनी है जो अपने घर से पूरा ही मेहमान हो जाए। आपकी मेहमाननिवाज़ी उनको सदा के लिए मेहमान बना दे। बापदादा साकार में यह करके दिखाते थे। एक दिन की मेहमाननिवाज़ी में पूरे जीवन के मेहमान बनाना, ऐसी मेहमाननिवाज़ी करनी है। इसको कहा जाता है सन शोज़ फादर। (अ.वा.16.7.69 पृ.88 म.)	Download
564	मधुबनवासियों प्रति	इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। उसके अंदर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है, जिस स्नेह के घेराव के अंदर बापदादा निवास करते हैं। इसके अंदर कोई आ नहीं सकता, चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है, उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यु का मालूम होगा। रो-रोकर आपके चरणों में गिरेंगे। ....सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊँच भाग्य को सदैव सामने रखना। (अ.वा.6.12.69 पृ.153 अं., 154 आ.)	Download
565	मधुबनवासियों प्रति	मधुबन निवासियों ने बहुत सुना है। बाकी सुनने को कुछ रहा है? ....जितने तीर भरे हैं, उतने छोड़े हैं? मधुबन निवासियों को तीन प्रकार की सर्विस का चांस है- किस प्रकार की सर्विस का विशेष चांस है? विशेष मधुबननिवासियों को सहज सर्विस का साधन यह वरदान भूमि या चरित्र भूमि का आधार है। इस भूमि के चरित्र की महिमा अगर किसी आत्मा को सुनाओ तो जैसे गीता सुनने में इतना इन्ट्रेस्ट नहीं लेते जितना भागवत सुनने में, तो ऐसे प्रैक्टिकल चरित्र सुनाने का साधन मधुबन वालों को है। .... तो मधुबननिवासी भागवत द्वारा सर्विस कर सकते हैं कि यहाँ ऐसा होता है। (अ.वा.14.12.78 पृ.60 म., 61 आ.)	Download

566	मधुबनवासियों प्रति	मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ, न सिखाओ; लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है, चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो; लेकिन मधुबन निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना।....... आप लोगों को खास तख़्त पर बैठकर सिखाने की ज़रूरत नहीं। .... मधुबन निवासी हरेक लाइट, माइट का गोला बनो, तो लाइट और माइट के अंदर स्वयं ही सभी आकर्षित होकर आयेंगे। अभी तो बाप का कर्तव्य चल रहा है। (अ.वा.28.11.81 पृ.184 अं., 185)	Download
567	मांगना नहीं	ब्रह्माकुमारी को कोई चीज़ माँगने का हक नहीं है। माँगने से तो मरना भला है। (मु.4.10.73 पृ.4 म.)	Download
568	मांगना नहीं	सेन्टर्स पर जिज्ञासुओं से माँगते रहते हैं हमको यह चाहिए। बाबा हमेशा कहते हैं माँगो मत।............ माँगना न है। तुमको कुछ भी चाहिए शिवबाबा से मिल सकता है। और कोई से लेंगे तो उनकी याद रहेगी। हरेक चीज़ डायरैक्ट शिवबाबा से लेंगे तो शिवबाबा तुमको घड़ी-2 याद पड़ेगा। शिवबाबा कहते हैं तुम्हारा लेन-देन का हिसाब मेरे से है। यह ब्रह्मा तो बीच में दलाल है। देने वाला मैं हूँ। मेरे से तुम कनेक्शन रखो थ्रू ब्रह्मा। (मु.25.1.72 पृ.2 अं.)	Download
569	मांगना नहीं	माँगने से ब्रह्माकुमारियों को डूब मरना अच्छा है। कब भी माँगो नहीं। आज शिवबाबा का जन्मदिन है, कुछ तो भेजें। ऐसे माँगो नहीं। (मु.4.4.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
570	मांगना नहीं	माँगने से मरना भला। कोई भी चीज़ माँगनी नहीं होती है। शक्ति, कृपा, आर्शीवाद कई बच्चे माँगते हैं। भक्तिमार्ग में माँग-2 कर माथा घिसा-2 कर सीढ़ी नीचे गिरते ही आये हैं। अभी माँगने की कोई दरकार ही नहीं। बाप कहते हैं डायरैक्शन पर चलो। (मु.7.6.69 पृ.1 आ.)	Download
571	मांगना नहीं	बाप आकर फिर निरोगी अमर बनाते हैं। दृष्टि देते हैं ना। यहाँ कुछ भी माँगने की दरकार नहीं। सिर्फ श्रीमत पर चलना होता है। (मु.16.6.72 पृ.1 म.)	Download
572	मांगना नहीं	पैसा-कौड़ी कुछ भी लेने का नहीं है। वह समझते हैं यह राखी बाँधने आती है, कुछ देना पड़ेगा। बोलो, हमको और कुछ चाहिए नहीं। सिर्फ 5 विकारों का दान दो। यह दान लेने लिए हम आये हैं; इसलिए पवित्रता की राखी बाँधते हैं। बाप को याद करो, पवित्र बनो तो यह(ल.ना.) बनेंगे। बाकी हम पैसा कुछ भी नहीं ले सकते। (मु.30.4.75 पृ.2 अं.)	Download
573	मांगना नहीं	बाबा हमेशा कहते हैं बच्चों को कि बच्चे माँगने से तो मरना भला। बाप से वर्सा पा लिया फिर माँगते क्यों हो कुछ भी? (मु.28.7.77 पृ.2 म.)	Download
574	मांगना नहीं	कोई भी बात के माँगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। मान, शान, प्रशंसा, बड़ापन आदि माँगने की इच्छा मत करो। माँगेंगे तो जैसे आजकल के माँगने वाले को कोई भी प्राप्ति नहीं कराते, और ही दूर से उसे भगावेंगे। इसी प्रकार यह रॉयल माँगने वाले, स्वयं को सर्व आत्माओं से स्वत: ही दूर करते हैं। (अ.वा.16.5.74 पृ.43 म.)	Download
575	मांगना नहीं	मेरा कुछ इन्साफ(न्याय) होना चाहिए। भगवान के घर में भी इन्साफ न हो तो कहीं इंसाफ मिलेगा? कभी भी इंसाफ माँगने वाले नहीं बनना। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा। (अ.वा.27.11.78 पृ.77 मध्यांत)	Download
576	मुरली	हरेक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है, तो नोट करना चाहिए। बच्चे मुरली से नोट तो करते नहीं हैं, फिर बैठकर बाबा से वही बातें पूछते हैं। (मु.8.10.72 पृ.2 म.)	Download
577	मुरली	सबका आधार मुरली पर है ही। मुरली तुमको न मिलेगी तो तुम श्रीमत कहाँ से लावेंगे? (मु.11.2.76 पृ.3 आ.)	Download

578	मुरली	जो साकार की मुरली है, वही मुरली है। जो मधुबन से श्रीमत मिलती है, वही श्रीमत है। बाप सिवाय मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता। ....अगर कहाँ भोग आदि के समय संदेशी द्वारा बाबा का पार्ट चलता है तो यह बिल्कुल रॉंग है। (अ.वा.11.4.82 पृ.365 म.)	Download
579	मुरली	सम्मुख सुनना है नं.वन, टेप से सुनना है नं.टू, मुरली से पढ़ना नम्बर थ्री। (मु.27.1.73 पृ.3 अं.)	Download
580	मुरली	मुरली पढ़ने से फिर से जाग पड़ेंगे। यह मुरली छपने का काम तो बहुत ज़ोर से चलेगा। टेप का भी काम बहुत बढ़ जावेगा, मुरली विलायत तक भी जावेगी। (मु.12.12.76 पृ.3 आ.)	Download
581	मुरली	मुरली है लाठी। इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जावेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा; लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं; लेकिन लगन से। ....सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी। मुरली से लगन अर्थात् सच्चा ब्राह्मण, मुरली से लगन कम अर्थात् हाफकास्ट ब्राह्मण। (अ.वा.23.10.75 पृ.220 अं)	Download
582	मुरली	तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देती हो, नहीं तो यह वरशन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। (मु. 23.5.71 पृ.1 अं.)	Download
583	मुरली	मुरली तो एक दिन भी मिस न करनी चाहिए, नहीं तो बाबा उनको मूर्ख समझते (हैं)। (धारणा) न होती है तो समझना चाहिए मैं देहअभिमानी हूँ। (मु.14.1.72 पृ.2 आ.)	Download
584	मुरली	मुरली न सुनते हैं तो ज़रूर समझो कमबख़्त हैं, बख़्तावर नहीं। मुरली को कब छोड़ना न चाहिए। (मु.27.9.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
585	मुरली	मुरली के नोट्स अपने पास रखना अच्छा है। यह बारूद है ना। बहुत बच्चे नोट्स रखते हैं। (मु.16.10.72 पृ.2 म.)	Download
586	मुरली	जो ब्रह्मा का तन मुकर्रर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है वही मुरली है और संदेशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है; इसलिए जो मुरलियाँ चल चुकी हैं वह सभी रिवाइज़ करनी हैं। जैसे पहले पोस्ट जाती थी वैसे ही मुख्य सेवाकेन्द्र पर आबू से जाती रहेगी। ...मुरली और पत्र का जैसे कनेक्शन होता है वैसे ही होगा। (अ.वा.21.1.69 पृ.20 अं.)	Download
587	मुरली	मुरली बात करना नहीं है क्या? हाँ, नज़र पड़नी चाहिए, यह सब बातें तो पूर्ण हो ही जाएँगी। (अ.वा.5.4.83 पृ.119 म.)	Download
588	मुरली	मुरली में रोज़ क्या करूँ और कैसे करूँ की बातों का रेसपान्स मिलता है। अगर फिर भी पूछते हैं तो माना मुरली को प्रैक्टिकल में लाने की शक्ति कम है। (अ.वा.4.2.80 पृ.273 आ.)	Download
589	मुरली	अभी तो तुम बाप के सन्मुख बैठे हो। सन्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन खरीद करते हैं वैसे टेलीविज़न भी एक दिन आ जावेगा। बच्चों के सुख के लिए बाप क्या न प्रबंध करेंगे! कोई बड़ी बात तो नहीं है ना। (मु.22.2.75 पृ.3 मध्यांत)	Download
590	मुरली	कई बच्चे तो मुरली पर ध्यान नहीं देते हैं। रेग्युलर मुरली पढ़ते नहीं हैं। कोई तो ब्राह्मणियाँ भी ऐसी-2 हैं जो कब मुरली पढ़ती नहीं, फिर वह क्या किसका कल्याण करते होंगे। बहुत ब्राह्मणियाँ हैं जो कुछ भी कल्याण नहीं करतीं। न अपना, न औरों का करती हैं। (मु.19.3.75 पृ.2 आ.)	Download
591	मुरली	यहाँ सन्मुख कैसे ठोंक-2 कर बुद्धि में बिठाते हैं। सन्मुख सुनने और मुरली पढ़ने में तो रात-दिन का फर्क है। (मु.2.3.77 पृ.2 अं.)	Download

592	मुरली	कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। ...... पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे। रात को दो बजे उठकर 15-10 पेज लिखते थे, बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कापियाँ निकलती थी। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र {आदि} के कागज़ सम्भालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनते{बनाते} जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। वह फिर पढ़कर रखते हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो, नहीं तो यह वरशन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। (मु.24.5.64 पृ.1 म.)	Download
593	मुरली	गोपिकायें मुरली बिगर रह न सकें तो यह प्रबन्ध है। मुरली बिगर तो तड़फते हैं; क्योंकि यह मुरली है जीवन हीरे जैसा बनाने वाली।(मु.24.8.78 पृ.3 आ.)	Download
594	मुरली	मुरली सुनना यह सब्जेक्ट अलग है। वह है धन कमाने की बात। उससे आयु नहीं बढ़ेगी, पावन नहीं बनेंगे, विकर्म विनाश नहीं होंगे। मुरली तो बहुत सुनते हैं, फिर विकार में गिरते रहते हैं, सच नहीं बताते। बाप कहते हैं पवित्र नहीं रह सकते हो तो यहाँ क्यों आते हो? कहते हैं, बाबा, मैं अजामिल हूँ, यहाँ आऊँगा तब तो पावन बनूँगा। (मु.17.1.84 पृ.2 अं.)	Download
595	मुरली	उसी ऊँच ते ऊँच पढ़ाई को तो एक दिन भी मिस न करना चाहिए। एक दिन भी मुरली न सुनी तो फिर वह अपसेंट पड़ जाती है। अच्छे-2 महारथी भी अपसेंट हो जाते हैं। (मु.24.6.74 पृ.3 आ.)	Download
596	मुरली	मुरली बच्चों को 5-6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी। (मु.31.8.73 पृ.4 मध्यांत)	Download
597	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र की विशेषता है- जैसे महाराष्ट्र नाम है वैसे महान आत्माओं का सुन्दर गुलदस्ता बापदादा को भेंट करेंगे। महाराष्ट्र की राजधानी सुन्दर और सम्पन्न हैं। तो महाराष्ट्र को ऐसे सम्पन्न नामी-ग्रामी आत्माओं को सम्पर्क में लाना है। .... अब अंत के समय में इन सम्पत्ति वालों का भी पार्ट है। सम्बन्ध में नहीं; लेकिन सम्पर्क का पार्ट है। (अ.वा.3.5.84 पृ.290 अं., 291 आ.)	Download
598	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र की विशेषता क्या है, जानते हो? महान तो हैं ही; लेकिन विशेष विशेषता क्या गाई जाती है? महाराष्ट्र में गणपति की पूजा ज़्यादा होती है। गणपति को क्या कहते हैं? विघ्न विनाशक। ....तो महाराष्ट्र वाले क्या करेंगे? हर महान कार्य में श्री गणेश करेंगे ना। महाराष्ट्र अर्थात् सदा विघ्न विनाशक राष्ट्र। .... महाराष्ट्र को सदा अपनी इस महानता को विश्व के आगे दिखाना है। विघ्न से डरने वाले तो नहीं हो ना। विघ्न विनाशक चैलेंज करने वाले हैं। (अ.वा.17.4.84 पृ.249 आ.)	Download
599	महाराष्ट्र	सभी संगमयुग के विशेष वरदानों से अपने को सम्पन्न बना रहे हो? संगमयुग को कहा ही जाता है वरदानी युग। संगमयुग पर ही असम्भव सम्भव होता है।..........संगमयुग को सदाकाल का वरदान है। ....सिर्फ एक ही सहज बात तो याद करनी है।.............. यह है बीज। बीज को पकड़ना तो सहज होता है ना, वृक्ष के विस्तार को पकड़ना मुश्किल होता है। तो एक बात याद रखो, अब अभूल बनो। द्वापर-कलियुग से भूलने वाले बने और इस समय अभूल बनते हो।................ बाप का स्नेह बच्चों के साथ सदा है। सदा बच्चों की याद ही बाप को रहती है। और कोई काम है क्या बाप को? बच्चों को याद करना, यही काम है ना? चाहे जाने या न जाने; लेकिन बाप तो याद करते हैं। जैसे बाप का काम है बच्चों को याद करना, वैसे बच्चों का भी काम है बाप को याद करना। (अ.वा.7.12.79 पृ.91 आ., 92 म.)	Download

600	मातागुरू	मातागुरू बिगर कोई का उद्धार नहीं होना है। माता को ही निमित्त रखा जाता है। जगतअम्बा मुख्य है ना। उनको(उनका) देखो कितना प्रभाव है, ब्रह्मा का इतना नहीं, सिर्फ पुष्कर में है। वहाँ पर बहुत करके पुरुष ही जाते हैं। जगदम्बा का बहुत मान है। (मु.13.7.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
601	मातागुरू	मातागुरू बिगर किसका कल्याण हो न सके। तुम माताओं द्वारा पुरुष भी ज्ञान पाते हैं। पुरुष किसकी सद्गति कर नहीं सकते। (मु.9.8.72 पृ.3 आ.)	Download
602	मातागुरू	बाप आय गुरूपद तुम माताओं को देते हैं। मन्दिर में भी मैज़ारिटी माताओं की है; इसलिए भारत माता शक्तिअवतार गाया जाता है।(मु.17.8.72 पृ.1 अं.)	Download
603	मातागुरू	भगवान कहते हैं वन्देमातरम्। यह माताएँ हमारी गुरु हैं। इन माता गुरू बिगर घोर अंधियारा है। इन कन्याओं द्वारा बाण मरवाये हैं। (मु.30.7.78 पृ.3 अं.)	Download
604	मातागुरू	बापदादा दोनों की मत मशहूर है। माता की मत पर भी चलना चाहिए; क्योंकि माता गुरू बनती है। वह माता-पिता अलग है। इस समय माता को गुरू बनाने का सिलसिला चलता है। (मु.13.4.78 पृ.2 अं. 3 आ)	Download
605	मातागुरू	बाप भी कहते हैं मातागुरू बिगर कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति पा न सके। तो ज़रूर जब माता द्वारा एडाप्ट हो तब जीवनमुक्ति पावे। माता को गुरू समझना चाहिए। बच्चों को अपना अहंकार न रख माता का मर्तबा रखना है। फालो करना है। (मु.2.2.77 पृ.3 म.)	Download
606	मुक्ति-जीवनमुक्ति	जो बाप का बन और उससे नालेज लेते हैं, उनको जीवनमुक्ति ज़रूर मिलेगी। (मु.8.2.68 पृ.2 आ.)	Download
607	मुक्ति-जीवनमुक्ति	जो बाप से पढ़ते हैं उन्हों को लम्बी-चैड़ी जीवनमुक्ति मिलती है। बाकी पीछे आने वालों को थोड़ी-2 मिलती है। (मु.12.1.73 पृ.1 अं.)	Download
608	मुक्ति-जीवनमुक्ति	तुम तो समझते हो इस शरीर में ही जी करके बाप से वर्सा पाना है; इसलिए कोई बीमारी आदि में भी तंग न होना चाहिए। (मु.25.5.70 पृ.2 अं.)	Download
609	मुक्ति-जीवनमुक्ति	हरेक आत्मा का हक है बाप से बर्थ राइट लेने का। कल्प-2 लेते भी ज़रूर हैं। तुम वर्सा लेते हो जीवन मुक्ति का। जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। वह भी जीवनमुक्ति में आते ज़रूर हैं। पहला जन्म तो सुख का ही होता है। (मु.9.6.69 पृ.3 म.)	Download
610	मुक्ति-जीवनमुक्ति	सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का गायन है ना। इसी जन्म में ही हम बाबा से जीवनमुक्ति का वर्सा ले फिर सो देवता बन रहे हैं। (मु.23.11.76 पृ.2 अं.)	Download
611	मिलन मेला	मिलना अर्थात् मुखड़ा देखना और दिखलाना।(अ.वा.11.4.83 पृ.127 अं.)	Download
612	मिलन मेला	इस समय मुख्य मेला है ही आत्मा रूप से परमात्मा बाप के साथ मिलने का अथवा यूँ कहें कि आत्मा और परमात्मा का मेला है, न सिर्फ एक सम्बंध से; लेकिन सर्व सम्बंधों से सर्व सम्बन्धी बाप से मिलन का मेला है अथवा सर्व प्राप्तियों का यह मेला है। एक सेकेंड में सर्व सम्बंधों से सर्व सम्बंधी बाप से मिलन मनाने से प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है और अन्य मेले तो खर्च करने के होते हैं; लेकिन यह मेला सर्व प्राप्ति करने का है और दूसरे मेले में अगर कुछ प्राप्ति भी करेंगे तो कुछ देकर ही प्राप्त करेंगे; परन्तु यहाँ देते क्या हो? जिसको सम्भाल नहीं सकते हो, तुम वही देते हो ना? (अ.वा.8.7.73 पृ.120 आ.)	Download
613	मिलन मेला	अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा, फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जाएँगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं। (अ.वा.24.12.72 पृ.387 म)	Download
614	निश्चय-अनिश्चय	निश्चय हो कि बाप परमधाम से हमें राजधानी देने आये हैं तो फट आकर बाबा से मिले। कोई की बात माने नहीं। बाप की भी बात न माने। (मु.2.1.73 पृ.3 आ.)	Download

615	निश्चय-अनिश्चय	भल कोई लिखकर भी देते हैं बरोबर शिवबाबा पढ़ाते हैं; परन्तु उसमें खुश नहीं होना है। निश्चय बिल्कुल नहीं बैठा है। भल कोई पत्र भी लिखते हैं; परन्तु बाप लिख देते हैं तुमको निश्चय बिल्कुल नहीं बैठा है। निश्चय बैठे कि मोस्टबिलबेड बाप से वर्सा मिलता है तो एक सेकेण्ड भी ठहरे नहीं। विवेक कहता है कि ग़रीब झट भागेंगे। साहुकार कोई विरला निकलेंगे।(मु.15.2.78 पृ.3 अं.)	Download
616	निश्चय-अनिश्चय	जबकि निश्चय हुआ शमा आई हुई है तो फिर क्यों न जल मरें? अरे, ऐसा बाबा मिला तो झट भागना चाहिए। कोई कहते हैं बारह मास से निश्चय हुआ है। अरे, इतने मास कहाँ थे? आज आये हो मिलने? बाबा आया स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए, उनसे नहीं मिलते हो? निश्चय हो जाए वह तो जेल से भी कूद कर भागने की कोशिश करे बाप से मिलने। बाबा जब सुनते हैं तो वण्डर लगता है! दो वर्ष हुआ है और ऐसे स्वर्ग का मालिक बनाने वाले से नहीं मिले हो? (मु.12.5.73 पृ.4 अं.)	Download
617	निश्चय-अनिश्चय	जबकि निश्चय हो जाये बेहद का बाप पढ़ाते हैं, 21 जन्म का वर्सा देते हैं तो मिलने के सिवाय ठहर न सके। बच्चा बना तो फिर बाप डायरैक्ट वर्सा देंगे। पहले तो एक हफ्ता भट्ठी में बैठो। तुमको रोज़ यह नालेज मिलती रहेगी। (मु.22.12.73 पृ.2 म.)	Download
618	निश्चय-अनिश्चय	निश्चय बुद्धि को फिर रोने की वा देहअभिमान में आने की बात नहीं रहती। (मु.17.12.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
619	निश्चय-अनिश्चय	निश्चय बुद्धि वाले कम से कम हफ्ते-2 बाप को पत्र ज़रूर लिखेंगे। एक कार्ड ही सही। बाबा मैं आपको याद करता हूँ। यह आपकी सेवा करता हूँ। सर्विस का समाचार लिखें तब विश्वास रखूँ। सर्विस का सबूत दिखावे तब बाबा समझें इसमें उम्मीद अच्छी दिखाई पड़ती है और फिर यह भी समझना चाहिए बाबा अकेला है, हम बच्चे बहुत हैं। ऐसे नहीं कि बाबा को रोज़-2 रिसपान्स देना पड़ेगा, नहीं। कोई ग़रीब हैं तो टिकट के पैसे भी मिल सकते हैं।(मु.22.12.73 पृ.3 अं.)	Download
620	निश्चय-अनिश्चय	भल लिखते भी हैं हमको निश्चय है, बाबा को हम जानते हैं। फिर भी चलते-2 ठण्डे पड़ जाते। 6/8 मास, 2/3 वर्ष आते नहीं, तो बाबा समझ जाते हैं पूरा निश्चयबुद्धि नहीं हैं। पूरा नशा न चढ़ा है। (मु.27.8.76 पृ.1 म.)	Download
621	निश्चय-अनिश्चय	इसमें निश्चय बड़ा अडोल चाहिए। शिवबाबा से कब कोई भूल हो न सके। इनसे हो सकती है। यह दोनों हैं इकट्ठे; परन्तु तुमको निश्चय यह रखना है शिवबाबा समझाते हैं। उस पर हमको चलना पड़े। शिवबाबा की श्रीमत समझ चलते चलो तो उल्टा भी सुल्टा हो जावेगा। (मु.19.1.71 पृ.3 आ.)	Download
622	निश्चय-अनिश्चय	जब तक पहले यह निश्चय न हो यह परमपिता परमात्मा के महावाक्य हैं तब तक तुम्हारी बात मानेंगे नहीं। पहले तो कोशिश करके निश्चय बिठाना चाहिए। (मु.22.1.71 पृ.4 म.)	Download
623	निश्चय-अनिश्चय	जिनको निश्चय हो जाता उनको तो आकर बाप से मिलना पड़े। बाबा, हम तो आपके पाँव पकड़ लेता हूँ। (मु.22.12.73 पृ.2 आ.)	Download
624	निश्चय-अनिश्चय	अभी राम शिवबाबा मत देते हैं, निश्चय में ही विजय है। इसमें कब नुकसान नहीं होगा। नुकसान को भी बाप फायदा करा देंगे; परन्तु निश्चय बुद्धि वालों को। संशय बुद्धि वाले और ही घुटका खाते रहेंगे। निश्चय बुद्धि वाले कब घुटका नहीं खावेंगे। समझेंगे शिवबाबा इस रथ पर बैठा है। वह मत दे रहे हैं। पक्के निश्चय बुद्धि वाले (को) कब घाटा पड़ न सके। बाबा खुद गैरन्टी करते हैं। (मु.10.12.68 पृ.2 म.)	Download

625	निश्चय-अनिश्चय	बाप के लिए कोई उल्टा संशय आया तो लो यह मरा। जिनसे तुम हीरे जैसा बनते हो उनमें फिर संशय क्यों? कोई भी कारण से बाप को छोड़ा तो कमबख़्त कहलावेंगे। (मु.1.9.69 पृ.3 मध्यादि)	Download
626	निश्चय-अनिश्चय	अपने में, बाप में और ड्रामा में पूरा-2 निश्चय हो तो कभी विजय न मिले यह हो नहीं सकता। अगर विजय नहीं होती तो ज़रूर कोई न कोई प्वाइन्ट में निश्चय की कमी है। (अ.वा.12.12.83 पृ.47 म.)	Download
627	निश्चय-अनिश्चय	जो भी सदा निश्चयबुद्धि होकर विजयी रहते हैं उन निश्चयबुद्धियों द्वारा वायुमण्डल शुद्ध होता जाता है। वह मंसा सेवा करते हैं; क्योंकि चारों ओर के व्यक्ति निश्चयबुद्धि आत्माओं को देख समझते हैं कि इनको कुछ मिला है। (अ.वा.17.12.79 पृ.128 आ)	Download
628	निश्चय-अनिश्चय	अगर ज़रा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय की कमी है। कभी किसी बात की थोड़ी सी भी चिन्ता हो जाती है- उसका कारण क्या होता? ज़रूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी हो, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी हो, चाहे बाप में निश्चय की कमी हो। तीनों ही प्रकार के निश्चय में ज़रा भी कमी है तो निश्चिंत नहीं रह सकते। (अ.वा.13.1.86 पृ.152 अं.)	Download
629	निश्चय-अनिश्चय	सबसे बड़ी बीमारी है चिंता। चिंता में बीमारी की दवाई डॉक्टर्स के पास भी नहीं है। टेम्परेरी सुलाने की दवाई दे देंगे; लेकिन सदा के लिए चिंता नहीं मिटा सकेंगे। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है। इसलिए सदा निश्चय के पाँव अचल रहें। सदा एक बल, एक भरोसा यही पाँव हैं। ....ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है। (अ.वा.13.1.86 पृ.152 अं., 153 आ.)	Download
630	निश्चय-अनिश्चय	समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। .... चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे; लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है। ....कुछ भी होता है होने दो। बाप हमारा हम बाप के तो कोई कुछ कर नहीं सकता, इसको कहा जाता है- निश्चयबुद्धि। (अ.वा.7.3.81 पृ.26 आ.)	Download
631	निश्चय-अनिश्चय	सिर्फ बाप-टीचर-सतगुरू में निश्चय नहीं; लेकिन इस निश्चय के साथ-2 उनके फ़रमान, उनकी पढ़ाई और उनकी श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर चलना है। (अ.वा.26.5.69 पृ.64 अं.)	Download
632	निश्चय-अनिश्चय	निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दूसरे को उल्लाहना नहीं देंगे। देखा, मैं राइट था ना। यह उल्लाहना देना या वर्णन करना यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज़ ज़्यादा उछलती है ना। (अ.वा.25.11.85 पृ.55 आ)	Download
633	निश्चय-अनिश्चय	निश्चय में कभी परसेन्टेज़ होती है क्या? बाप के बच्चे तो हैं ही ना। ऐसे थोड़े ही 90प्रतिशत है और 10प्रतिशत नहीं है। ऐसा बच्चा कभी देखा है? निश्चय अर्थात् 100 प्रतिशत निश्चय। ....निश्चयबुद्धि की पहली निशानी है विजयी। (अ.वा.9.2.75 पृ.57 अं.)	Download
634	निश्चय-अनिश्चय	निश्चयबुद्धि बनने की मुख्य चार बातें हैं।....पहली बात, बाप का निश्चय- जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना। 2-बाप द्वारा प्राप्त हुई नालेज को अनुभव द्वारा स्पष्ट जानना और मानना। 3-स्वयं भी जो है, जैसा है अर्थात् अपने अलौकिक जन्म के श्रेष्ठ जीवन को व ऊँचे ब्राह्मण के जीवन को, अपने श्रेष्ठ पार्ट को अपनी श्रेष्ठ स्थिति और स्थान का जैसा महत्व है, वैसा स्वयं का महत्व जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना। 4-वर्तमान श्रेष्ठ, पुरुषोत्तम, कल्याणकारी, चढ़ती कला के समय को जानना और जान करके हर कदम उठाना। (अ.वा.8.2.75 पृ.53 अं., 54 आ.)	Download

635	निश्चय-अनिश्चय	एक ही सितारा है जो अपनी जगह बदली नहीं करता। क्या ऐसे सितारे हो? वह है दृढ़ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनियाँ में ध्रुव सितारा कहा जाता है। (अ.वा.20.5.74 पृ.44 अं.)	Download
636	निश्चय-अनिश्चय	सफलता के सितारों की निशानी यह है कि उनके हर संकल्प में दृढ़ता होगी कि सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। ....हर बात में निश्चयबुद्धि होंगे। ....उनके हर कर्म द्वारा अनेक आत्माओं का पथ प्रदर्शन होगा। ....उनके हर कर्म अनेक आत्माओं को एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा स्वरूप होगा। (अ.वा.14.7.74 पृ.110 अं., 111 आ)	Download
637	निश्चय-अनिश्चय	निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बनके आवेंगी; फिर भी अचल रहोगे? (अ.वा.8.2.75 पृ.53 अं.)	Download
638	निश्चय पत्र	पहले मुख्य बात है- मात-पिता की पहचान देनी है। .... तो पूछो परमात्मा से तुम्हारा क्या संबंध है? क्या वर्सा मिलता है? यह लिखाना चाहिए। बाकी सारी प्रदर्शनी समझाकर पिछाड़ी में लिखने से कोई फायदा नहीं। मुख्य बात है मात-पिता का परिचय दिया। अब समझा है तो लिखो, नहीं तो गोया कुछ नहीं समझा। हड्डी {दिल से} समझाकर फिर लिखवाना चाहिए। बरोबर यह जगतअम्बा-जगतपिता हैं। वह लिख दे बरोबर बाप से वर्सा मिलता है। यह लिखकर दे तब समझें तो तुमने कुछ सर्विस की है। (मु.12.3.87 पृ.2 मध्यांत)	Download
639	निश्चय पत्र	बच्चियाँ लिखती हैं कि हमारा गला घुट गया है; परन्तु तुम जास्ती बातों में जाओ ही नहीं। पहली मुख्य बात समझाकर लिखाओ, फिर और बात। एक ही त्रिमूर्ति चित्र पर पूरा समझाना है। निश्चय करते हो यह तुम्हारे माँ-बाप है। इससे वर्सा मिलना है। (मु.12.3.87 पृ.2 अं.)	Download
640	निश्चय पत्र	लिखा देना है मात-पिता का बरोबर जैसे तुम वर्सा ले रहे हो, हम भी वर्सा लेना चाहते हैं। उसकी एड्रेस आदि सब कुछ हो, यह भी बताना चाहिए। (मु.12.3.87 पृ.3 अं.)	Download
641	नौकरी-धंधा	कोई देहधारी की चाकरी आदि नहीं करनी है। (मु.10.6.75 पृ.2 आ.)	Download
642	नौकरी-धंधा	बाबा कोशिश भी कर रहे हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे जो बन्धनमुक्त हैं तो नौकरी भी छुड़ा दें। उस गवर्नमेंट से भी तो इस गवर्नमेंट की कमाई बहुत ऊँच है। (मु.25.6.75 पृ.1 अं.)	Download
643	नौकरी-धंधा	जिनको पक्का निश्चय है वह तो कहेंगे हम इस नौकरी-टोकरी को क्या करेंगे; परंतु पूरा नशा चाहिए। (मु.25.6.75 पृ.1 अं.)	Download
644	नौकरी-धंधा	समझते हैं हम बाबा के लिए धंधा आदि करते हैं। जो कुछ होगा बाबा को देंगे। बाबा ऐसी बातें कब सुनते ही नहीं। (मु.3.1.74 पृ.2 मध्यादि)	Download
645	नौकरी-धंधा	बाप ने समझाया है आठ घण्टा भल आराम भी करो। आठ घण्टा शरीर निर्वाह लिए काम करो। वह धंधा आदि भी करना है। साथ में यह भी धंधा बापदादा ने दिया है आप समान बनाने का। यह भी शरीर निर्वाह ही है ना। वह है अल्पकाल लिए और यह है 21 जन्म शरीर निर्वाह लिए। (मु.20.3.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
646	नौकरी-धंधा	शरीर निर्वाह अर्थ मेल को तो पढ़कर नौकरी करनी ही है। फिमेल को नौकरी नहीं करनी है; परंतु आजकल फिमेल भी नौकरी करती रहतीं। (मु.3.12.73 पृ.6 अं)	Download
647	नौकरी-धंधा	बाबा से बहुत बच्चे पूछते हैं, यह धंधा करें वा नहीं करें? बाबा लिखता है मैं कोई तुम्हारे धन्धे आदि को देखने आया हूँ क्या? मैं तो टीचर हूँ पढ़ाने के लिए। धन्धे की बात हमसे क्यों पूछते हो? (मु.19.12.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
648	नौकरी-धंधा	धंधे में गये, फिर आस्ते-आस्ते संगदोष में शादी की, दिल लगाई, यह गया। सर्टेन्टी नहीं है। (मु.27.12.73 पृ.5 अं.)	Download

649	नौकरी-धंधा	बच्चे अजुन खड़े नहीं होते। नौकरी-टोकरी में फँसे रहते हैं। बन्धनमुक्त हैं तो फिर सर्विस में लग जाना चाहिए। (मु.4.8.76 पृ.3 अं.)	Download
650	नौकरी-धंधा	सभी से अच्छा धंधा यह है। बाकी जो भी मनुष्य धन्धे करते हैं, वह सभी हैं खोटे। एक धंधा सिर्फ करना है, बाप और वर्से को याद करो। (मु.17.7.72 पृ.3 अं.)	Download
651	नौकरी-धंधा	धंधे-धोरी, बच्चों आदि के चिन्तन में जो मरेंगे तो मुफ्त अपनी बरबादी करेंगे। शिवबाबा को याद करेंगे तो आबाबी(शोहरत) बहुत होगी। देहअभिमान में आने से बरबादी होती है। (मु.9.7.71 पृ.1 अं.)	Download
652	नौकरी-धंधा	कन्याएँ तो फ्री हैं, उनको नौकरी तो करनी नहीं है। उस नॉलेज के बदली यह लो तो 21 जन्म लिए वर्सा मिल जावेगा, नहीं तो स्वर्ग की बादशाही भी गँवा देंगे। (मु.11.4.75 पृ.3 अं.)	Download
653	नौकरी-धंधा	आजीविका के लिए यह धंधा आदि करते हैं, वह है मायावी धंधा। यह भी तुम्हारी आजीविका है भविष्य के लिए। सच्ची कमाई तो यह है। (मु.25.8.76 पृ.2 आ.)	Download
654	नौकरी-धंधा	बाबा समझाते रहते हैं ज्यादा समय तो रहना नहीं है। काफी धन है तो शान्त में बैठ बाप से वर्सा लो। धन्धे-धोरी का झंझट छोड़ दो। (मु.5.2.78 पृ.2 अं.)	Download
655	पवित्रता	जो बाप के पास आकर समझेंगे वही पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे। पतित, नालायक को बाप बैठ लायक बनाते हैं। (मु.2.9.77 पृ.3 अं.)	Download
656	पवित्रता	इस ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार प्यूरिटी ही है। आप सभी श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठता प्यूरिटी ही है। प्यूरिटी ही इस भारत देश की महानता है। प्यूरिटी ही आप ब्राह्मण आत्माओं की प्रासपर्टि है।........... प्यूरिटी ही विश्व परिवर्तन का आधार है। प्यूरिटी के कारण ही आज तक भी विश्व आपके जड़ चित्रों को चैतन्य से भी श्रेष्ठ समझता है। आजकल की नामीग्रामी आत्मायें भी प्यूरिटी के आगे सिर झुकाती रहती हैं। .... अपवित्रता परधर्म है, पवित्रता स्वधर्म है। स्वधर्म को अपनाना सहज लगता है। आज्ञाकारी बच्चों को बाप की पहली आज्ञा है- पवित्र बनो तब ही योगी बन सकेंगे।..............जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। अपवित्रता अर्थात विष को छोड़ चुके। ब्राह्मण बनना अर्थात अपवित्रता का त्याग। (अ.वा.14.1.79 पृ.211 आ., 212 आ.)	Download
657	पवित्रता	पवित्रता अनुसार पदवी पावेंगे। बाकी कुछ न कुछ हिस्सा कम होने से जन्म भी देरी से लेंगे। (मु.2.10.76 पृ.2 म.)	Download
658	पवित्रता	पवित्रता ही योगी बनने का पहला साधन है। पवित्रता ही बाप के स्नेह को अनुभव करने का साधन है। पवित्रता ही सेवा में सफलता का आधार है। (अ.वा.27.2.85 पृ.194 अं.)	Download
659	पवित्रता	जो अधिकारी बच्चे हैं उन्हों को पवित्रता मुश्किल नहीं लगती। जिन्हों को पवित्रता मुश्किल लगती, वह डगमग ज़्यादा होते हैं। पवित्रता स्वधर्म है, जन्मसिद्ध अधिकार है तो सदा सहज लगेगा। .... अधिकारी आत्मा आते ही दृढ़ संकल्प करती कि पवित्रता बाप का अधिकार है; इसलिए पवित्र बनना ही है। (अ.वा.2.3.85 पृ.206 आ.)	Download
660	पवित्रता	प्यूरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता, संकल्प, स्वभाव, संस्कार मेंमें भी प्यूरिटी, मानो एक/दूसरे के प्रति ईर्ष्या या घृणा का संकल्प है तो प्यूरिटी नहीं, इम्प्यूरिटी कहेंगे। प्यूरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इम्प्यूरिटी न हो। (अ.वा.31.10.75 पृ.253 अं)	Download
661	पवित्रता	सबसे पहला अधिकार पवित्रता का। उसके आधार पर सुख-शान्ति सर्व अधिकार प्राप्त हो जाते। तो पहला पवित्रता का अधिकार लेने में सदा नं॰ वन रहना, तो प्राप्ति में भी नं॰ वन हो जायेंगे। पवित्रता की फाउन्डेशन को कभी कमज़ोर नहीं करना, तब ही लास्ट सो फास्ट जायेंगे। (अ.वा.5.4.81 पृ.129 अं.)	Download

662	पवित्रता	प्यूरिटी ही पर्सनैलिटी है। जितनी-2 प्यूरिटी होगी तो प्यूरिटी की पर्सनैलिटी स्वयं ही सर्व के सिर झुकायेगी। ....प्यूरिटी की पर्सनैलिटी बड़े-2 लोगों के भी सिर झुकाती है। ....जहाँ देखें वहाँ प्यूरिटी ही प्यूरिटी नज़र आये। वर्तमान समय इसी का ही अनुभव करना चाहते हैं, जो चारों ओर नज़र नहीं आती। चाहे कितनी भी महान आत्मा हो, नाम है; लेकिन प्यूरिटी की वायब्रेशन्स नहीं हैं; क्योंकि वह सिद्धि का नाम, मान, शान को स्वीकार कर लेते हैं। ....अभी प्रैक्टिकल जीवन में यह प्यूरिटी की पर्सनैलिटी चाहिए। ....यह विश्व की बड़ी से बड़ी पर्सनैलिटी है। समझा और था, देखा कुछ और। ऐसे अनुभव करें, जो हमारी बुद्धि में बात नहीं है वह इन्हीं की प्रैक्टिकल जीवन में है।(अ.वा.1.4.78 पृ.72 आ., 73 आ)	Download
663	पवित्रता	पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। .... 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउन्डेशन पवित्रता है। आत्मा अर्थात् बच्चे और बाप से मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार पवित्रता है। पवित्रता पूज्य पद पाने का आधार है। (अ.वा.6.1.82 पृ.218 म.)	Download
664	पवित्रता	होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है- बाप से सच्चा बनना। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। (अ.वा.25.6.77 पृ.275 म.)	Download
665	पवित्रता	धर्मसत्ता को धर्मसत्ताहीन बनाने का विशेष तरीका है- पवित्रता को सिद्ध करना और राज्यसत्ता वालों के आगे एकता को सिद्ध करना।............... इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध किया तो ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहरायेगा। (अ.वा.21.2.85 पृ.186 आ)	Download
666	पवित्रता	संकल्प में इतनी समर्थी है जो विश्व की आत्माओं तक शक्तिशाली संकल्प द्वारा सेवा कर सको- वृत्ति की शुद्धि अनुसार वायुमण्डल को शुद्ध कर सको। वृत्ति की शक्ति है! शुद्ध अर्थात् प्यूरिटी। प्यूरिटी का आधार है भाई-2 की स्मृति की वृत्ति। (अ.वा.4.1.79 पृ.176 म.)	Download
667	पवित्रता	पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है- प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन - इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का।..............अगर पवित्रता की परसेन्टेज़ में 16 कला से 14 कला हो गये तो क्या बनना पड़ेगा? जब 16 कला की पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता नहीं तो सम्पूर्ण सुख-शान्ति के साधनों की भी प्राप्ति कैसे होगी! (अ.वा.24.3.82 पृ.313 अं., 314 आ.)	Download
668	पवित्रता	तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। ब्र०कु०कुमारियाँ भाई-बहन का सम्बन्ध भी गिरा देता है। सर्व सम्बन्ध एक से ही होना है। यह है नई बात। पवित्र होकर वापिस भी जाना है। (मु.30.4.74 पृ.2 आ.)	Download
669	पवित्रता	सद्गति वाले पवित्र होते हैं। उनको अपवित्र कोई छू न सके। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में बाउन्डरी लगी रहती है। कोई छू न सके; परन्तु अपने को मूत पलीती कोई समझते नहीं हैं। सारी दुनियाँ की मूत पलीती को बाप आकर स्वच्छ बनाते हैं; परन्तु मलेच्छों को भी पता नहीं है, हम मलेच्छ पत्थर बुद्धि हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं - तुम मूत पलीती हो, अब फिर पावन बनना है।(मु.20.11.74 पृ.1 म)	Download

670	पवित्रता	अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते-चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है तो समझो नम्बरवन फाउन्डेशन कच्चा है; क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। (अ.वा.4.12.95 पृ.47 आ.)	Download
671	पवित्रता	संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमज़ोरी, किसी भी विकार की- पाप के खाते में जमा होती ही है; लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। (अ.वा.3.12.78 पृ.94 अं.)	Download
672	पवित्रता पर बखेड़ा	कितनी बाँधेली बच्चियाँ मार खाती हैं। कोई मार दे, निशान हो तो फौरन गवर्मेन्ट को रिपोर्ट करो तो झट छुटकारा मिल जावेगा; परन्तु हिम्मत चाहिए, नष्टोमोहा पूरा चाहिए। आखरीन विजय तुम बच्चों की होनी है। (मु.14.5.73 पृ.3 अं.)	Download
673	पवित्रता पर बखेड़ा	बाम्बे में एक बच्चा आता था। उसने पवित्रता की प्रतिज्ञा की थी तो उनके घर में बहुत झगड़ा चलता था। एक बच्ची जाती थी क्लास कराने तो उनका भाई कहता था वहाँ जायेगी तो मार डालूँगा। (मु.24.1.78 पृ.1 अं.)	Download
674	पवित्रता पर बखेड़ा	बाप कहते हैं पवित्र बनो। इसमें कोई विघ्न डालते हैं तो परवाह न करनी चाहिए। रोटी टुकड़ तो मिल सकता है ना। (मु.28.9.75 पृ.3 आ.)	Download
675	पवित्रता पर बखेड़ा	इस पवित्रता पर ही झगड़ा चलता है; परन्तु अच्छी मज़बूत चाहिए। इस समय विकार देने लिए वैश्या बन रहने से तो अपने शरीर निर्वाह अर्थ कुछ न कुछ काम कर पवित्र रहना बेहतर है। ऐसे भी हैं। (मु.25.4.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
676	पवित्रता पर बखेड़ा	माताएँ पवित्र बनती है तो कितना झगड़ा होता है। पति पवित्र बनने न देगा तो ज़रूर फिर अत्याचार होंगे, तो भागेंगी ना। (मु.13.12.71 पृ.3 आ.)	Download
677	पवित्रता पर बखेड़ा	और कोई संस्था के पिछाड़ी इतना हंगामा नहीं करते; क्योंकि यहाँ मुख्य है पवित्रता की बात। इस पर ही खिटपिट शुरू से लेकर पिछाड़ी तक रहेगी। बड़े-2 घर के आवेंगे तो बड़े हंगामे भी चलेंगे। (मु.30.11.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
678	पवित्रता पर बखेड़ा	बाप यह भी समझाते हैं पवित्रता के लिए विघ्न पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार होंगे। नाम ही है दुर्योधन, दुशासन। (मु.1.5.69 पृ.1 मध्यादि)	Download
679	पवित्रता पर बखेड़ा	पवित्र बनने पर ही मार खाते हैं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ सबके घरों को फिटाने। (मु.1.6.76 पृ.2 मध्यादि)	Download
680	पवित्रता पर बखेड़ा	झगड़ा होता ही है विकार पर। विकार के लिए न छोड़ेंगे तो ज़रूर कहेंगे इससे तो बर्तन साफ करें वह अच्छा है। पोंछा, झाड़ू लगावेंगे; परन्तु पवित्र रहेंगे। इसमें हिम्मत बहुत चाहिए। जब कोई बाप की शरण में आते हैं तो फिर माया भी लड़ने शुरू करती है। (मु.6.8.76 पृ.2 अं.)	Download
681	पवित्रता पर बखेड़ा	अपवित्र होने से बाप को याद कर न सकेंगे। ऐसे भी बहुत हैं। कर्मबन्धन का हिसाब जब छूटे, गाड़ी के दोनों पहिये पवित्र होंगे तो ठीक चलेंगे। दोनों पवित्र बनेंगे तो ज्ञान चिता पर बैठ जावेंगे, नहीं तो खिटपिट होती है। (मु.7.9.76 पृ.3 म.)	Download
682	पवित्रता पर बखेड़ा	कोई कहते हैं बाबा हम घर में रहते हैं, हमको हाथ लगाने नहीं देती है। अरे, अभी वह समय थोड़े ही है। स्त्री को हाथ लगाना भी ठीक नहीं है, नहीं तो विकार खींच लेंगे। (मु.6.10.76 पृ.1 अं.)	Download

683	पवित्रता पर बखेड़ा	कोई क्रोध में बोले, तुम शान्त हो देखते रहो। विकार पर ही झगड़ा होता है। अच्छा, पति मारता है, तुम शिवबाबा को याद करो, हाय शिवबाबा! यह मुझे मारता है। शिवबाबा को याद करने से तुम मुक्ति में चले जावेंगे। अंत मति सो गति हो जावेगी। (मु.29.10.76 पृ.2 मध्यादि)	Download
684	पवित्रता पर बखेड़ा	निर्विकारी बनने में बहुत सितम सहन करने पड़ते हैं।(मु.6.3.84 पृ.2 म.)	Download
685	पतित पावन बाप	यह गुप्त वेश में कितना बड़ा मेहमान पतित को पावन बनाने आया है। बाप कहते हैं मैं अपना परमधाम छोड़ पतित दुनियाँ, पतित शरीर में आया हूँ बच्चों को पढ़ाने। (मु.12.10.78 पृ.3 अं.)	Download
686	पतित पावन बाप	पतित दुनियाँ और पतित शरीर में आकर पावन बनाने का पार्ट भी इनका ही है। (मु.3.1.84 पृ.2 म.)	Download
687	पतित पावन बाप	पतितों को पावन बनाने का कर्तव्य करना है तो क्या भित्तर-ठिक्कर में जाकर करेंगे? इसको ही घोर अंधियारा कहा जाता है। (मु.23.1.84 पृ.2 आ.)	Download
688	पतित पावन बाप	मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। यह है बुद्धि का योग अथवा सम्मुख बाप के साथ संग। संग से रंग लगता है ना। कहा जाता है संग तारे कुसंग बोरे। (मु.4.5.69 पृ.2 आ.)	Download
689	पतित पावन बाप	तुम खुद कहते हो, हे! पतित पावन....... यह किसको कहा? क्या ब्रह्मा को, विष्णु को, शंकर को? नहीं। पतित पावन तो एक ही है। (मु.26.5.69 पृ.3 अं.)	Download
690	पतित पावन बाप	बाप द्वारा पावन बनना है, नहीं तो बुलाने की दरकार नहीं, पूजा की भी दरकार नहीं। (मु.10.9.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
691	पतित पावन बाप	भगवान को बुलाते हैं कि आकर मूत पलीती कपड़ धोवो हम आत्माओं का। भाईयों ने पुकारा है, हे! पतित पावन, हम सभी आत्माओं के बाप, हमारा आकर कपड़ा साफ करो। (मु.13.6.69 पृ.2 म.)	Download
692	पतित पावन बाप	मम्मा का भल शरीर नहीं है तो भी पुरुषार्थ करती रहती है। सर्विस पर जाती है। बच्चों के तन में विराजमान हो पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताती है। (मु.22.7.72 पृ.2 आ.)	Download
693	पतित पावन बाप	पतितों को पावन करने वाला भी वह है, जगत का मालिक भी वह है। (मु.29.7.78 पृ.2 अं.)	Download
694	पतित पावन बाप	ज़रूर बाप पावन भी बनावेंगे। .... क्या-2 पार्ट चलना है सो आगे चलकर देखेंगे। (मु.28.1.68 पृ.3 आ.)	Download
695	पतित पावन बाप	बच्चे जानते हैं हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। हमारा धंधा ही है पतितों को पावन करना। सहन भी करना पड़े। कठिनाइयाँ तो ज़रूर आवेंगी। विघ्न पड़ेंगे। तुमसे कोई पूछे, तुम्हारा उद्देश्य क्या है? बोलो, उद्देश्य यही है भारत जो पतित बन गया है, तुम पुकारते रहते हो पतित-पावन बाप को कि आकर पतित भारत को पावन बना कर जाओ। यह बाप को हुकुम मिला हुआ है, सो बाप हम बच्चों सहित यह कार्य कर रहे हैं। भारत की रूहानी सेवा कर रहे हैं पावन बनाने की।....बाप अकेला तो नहीं आकर पावन बनावेंगे। हम भी उनके मददगार हैं। (मु.5.2.68 पृ.1 म.)	Download
696	पतित पावन बाप	बाप तो ड्रामा में बाँधा हुआ है। पतित से पावन बनाने का उनका पार्ट है। हम महिमा थोड़े ही कहेंगे, यह तो उनकी ड्यूटी है पतित से पावन बनाने की। टीचर की ड्यूटी है ना पढ़ाने की। अपनी ड्यूटी बजाने वाले की महिमा क्या करेंगे? पार्ट है ना। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा के बस हूँ। उनमें फिर ताकत काहे की? यह तो उनकी ड्यूटी है। कल्प-2 संगम पर आकर पतित को पावन बनाने का रास्ता बताना ही है। मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूँ। (मु.13.2.68 पृ.1 अं., 2 आ)	Download

697	पतित पावन बाप	बाप कहते हैं कि मेरे द्वारा तुम पवित्र बनेंगे तो स्वर्ग, पवित्र दुनियाँ का मालिक बनेंगे। पतित दुनियाँ अब विनाश होनी है। (मु.8.4.78 पृ.3 म)	Download
698	पतित पावन बाप	बाप कहते हैं पाँच-2 हज़ार वर्ष बाद धोबीघाट भारत में ही बनाता हूँ। (मु.16.4.78 पृ.2 अं.)	Download
699	पतित पावन बाप	कराची में इन्हों की 14 वर्ष भट्ठी रही। कपड़े धोते-2 कितने अच्छे, गोरे बन गये। कोई टूट पड़े, कोई मैले के मैले ही रहे। आजकल तो सात रोज़ भी मुश्किल ठहर सकते हैं। पहले तो पूरी भट्ठी थी। (मु.16.4.78 पृ.3 म.)	Download
700	पतित पावन बाप	कोई भी अंदर आते हैं, बोलो- देखो, प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ लिखा हुआ है। प्रजापिता तो बाप ठहरा। ....पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाते हैं। कैसे बनाते हैं? उसकी भी मशीनरी है। यह है रूहानी नैचरक्योर। (मु.10.1.75 पृ.3 म.)	Download
701	पतित पावन बाप	उनको बुलाया है आ करके हमको पावन बनाकर घर ले चलो। देखो, ड्यूटी कैसी है तुम खुद पुकारते हो। (मु.8.4.69 पृ.3 अं.)	Download
702	पुरुषार्थ	पुरुषार्थ करना है। भल पिछाड़ी में जो आते हैं वह पहले आने वालों से तीखे चले जाते हैं। (मु.12.10.78 पृ.1 अं.)	Download
703	पुरुषार्थ	बहुत काल की प्रालब्ध पानी है तो पुरुषार्थ भी बहुत काल का चाहिए ना। अगर लास्ट टाइम पुरुषार्थ करेंगे तो प्रालब्ध भी लास्ट की ही मिलेगी। पुरुषार्थ फर्स्ट नहीं और प्रालब्ध फर्स्ट वाली चाहिए? लास्ट में बचा-खुचा मिलने से क्या होगा? जैसे प्राप्ति का लक्ष्य फस्ट का है, वैसे पुरुषार्थ भी ऐसा करो। (अ.वा.9.2.75 पृ.59 अं.)	Download
704	पुरुषार्थ	बहुत काल की कमी अंत में धोखा दे देगी। अगर कोई भी कमी की रस्सी रह जायेगी तो उड़ नहीं सकेंगे। (अ.वा.14.4.83 पृ.145 आ)	Download
705	पुरुषार्थ	बाबा लिखते हैं काला मुँह किया, अब यहाँ नहीं आ सकते हो। यहाँ आकर क्या करेंगे? फिर भी वहाँ रह पुरुषार्थ करो। एक बार गिरा सो गिरा। ऐसे नहीं कि राजाई पद पा सकेंगे। कहा जाता है ना चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस, गिरे तो एकदम चाण्डाल। (मु.18.8.76 पृ.3 अं.)	Download
706	पुरुषार्थ	पुरुषार्थ का समय बहुत बीत चुका। अब थोड़े का भी थोड़ा सा रहा है।........... इस मेले का भी थोड़ा सा समय रह गया है; इसलिए अब सुना तो बहुत, सुनना अर्थात् वाणी द्वारा ही यह ब्राह्मण जन्म लिया; इसलिए मुखवंशावली कहलाते हो। ....सुनने के बाद है स्वरूप बनना; इसलिए लास्ट स्टेज स्मृति स्वरूप की है। (अ.वा.30.1.79 पृ.250 अं.)	Download
707	पुरुषार्थ	अभी तक कोई भी सीट सिवाय दो-तीन के फिक्स नहीं हुई है। अभी जो चाहे, जितना पुरुषार्थ करना चाहे कर सकता है।......... अभी लेट हुई है; लेकिन टू-लेट नहीं हुई है; इसलिए सभी को आगे बढ़ने का चांस है। ....तो सदैव उमंग-उत्साह रहे। ऐसे नहीं- चलो, कोई भी नम्बर वन बने, मैं नं. दो ही सही। इसको कहते हैं कमज़ोर पुरुषार्थ। (अ.वा.25.10.87 पृ.107 अं)	Download
708	पुरुषार्थ	निमित्त बने हुये सदैव पुरुषार्थ के हुल्लास में रहते हैं तो उन्हें देख और भी हुल्लास में रहते हैं। चलते-2 पुरुषार्थ में थकावट आना वा चलते-2 पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जावे, यह किसकी निशानी है? विघ्न न हो; लेकिन लगन भी श्रेष्ठ न हो तो उसको भी आलस्य कहेंगे। (अ.वा.4.3.72 पृ.236 अं.)	Download
709	पुरुषार्थ	पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव ऐसा ही समझना चाहिए कि पुरुषार्थ जो किया वह कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकता। अगर सही प्रकार से पुरुषार्थ किया तो उसकी सफलता अब नहीं तो कब मिलनी ज़रूर है। (अ.वा.27.4.72 पृ.255 आ)	Download

710	पुरुषार्थ	पुरुषार्थ शब्द का अर्थ क्या करते हो? इस रथ में रहते अपने को पुरुष अर्थात् आत्मा समझ कर चलो, इसको कहते हैं पुरुषार्थी। .... पुरुषार्थी माना अपने को रथी समझने वाला। .... जानने और चलने में अगर अंतर है तो ऐसी स्टेज वाले को पुरुषार्थी नहीं कहा जाएगा। पुरुषार्थी सदैव मंज़िल को सामने रखते हुये चलते हैं, वह कब रुकता नहीं। बीच-2 में मार्ग में जो सीन आती हैं, उनको देखने लगते हैं; लेकिन रुकते नहीं। (अ.वा.3.5.72 पृ.261 म.)	Download
711	पुरुषार्थ	जितना बहुत समय से अपने को सफलतामूर्त बनावेंगे उतना ही बहुत समय वहाँ सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी बनेंगे। समझो अगर कोई बहुत समय से सफलतामूर्त नहीं बनते है, लास्ट में बनते हैं वा थोड़ा समय पहले बनते हैं तो उस अनुसार राज्य के अधिकारी थोड़े समय लिए बनते हैं, सम्पूर्ण समय नहीं मिलता है। जो बहुत समय से सम्पूर्ण बनने के पुरुषार्थ में मग्न रहते हैं, वही सम्पूर्ण समय राज्य के अधिकारी बनते हैं। (अ.वा.14.10.76 पृ.1 आ.)	Download
712	पुरुषार्थ	अभी पुरुषार्थ शक्तिशाली नहीं है, ढीला-ढाला है। पुरुषार्थी तो सभी हैं; लेकिन पुरुषार्थ शक्तिशाली जो होना चाहिए वह शक्ति पुरुषार्थ में नहीं भरी है। ....अगर ऐसी ढीली रिज़ल्ट में रहेंगे तो जो आने वाली परीक्षाएँ हैं उनकी रिज़ल्ट क्या रहेगी? परीक्षाएँ कड़ी आने वाली हैं उसका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए। (अ.वा.9.6.69 पृ.73 आ.)	Download
713	पुरुषार्थ	पेपर लास्ट में होगा। तीन नं॰ निकलेंगे। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, उतना नं॰ मिलेगा। नसीब को बनाना खुद के हाथ में है। (अ.वा.6.7.69 पृ.83 अं.)	Download
714	पुरुषार्थ	मैं तो रोज़ याद प्यार देता हूँ। बच्चों को खज़ाना भेज देता हूँ। सबको ललकार करता रहता हूँ कि बाप की श्रीमत पर बेहद का वर्सा लेने पुरुषार्थ करते रहो। इसमें गफ़लत वा बहाना मत करो। कहते हैं कर्मबन्धन है, यह तो तुम्हारा कर्मबंधन है, इसमें बाप क्या करें? बाप रास्ता बताते हैं, योग में रहो तो भी कर्मबंधन कटता जावेगा। (मु.9.2.78 पृ.2 मध्यादि)	Download
715	पुरुषार्थ	कोई पर ग्रहचारी बैठती है तो राहू की दशा बैठ जाती है, फिर ट्रेटर बन पड़ते हैं। ....अफसोस की बात ही नहीं। अपने नशे में मज़बूत रहना है। राजधानी स्थापन करने में कुछ तो सहन करना पड़ता है। बिगर मेहनत थोड़े ही बाबा सिरताज रख देंगे। फिर तो सब पर रख देते। बाप समझाते रहते हैं सबको पुरुषार्थ करना है। (मु.27.4.71 पृ.3 मध्यादि)	Download
716	पुरुषार्थ	सूर्यवंशी की निशानी है तीव्र पुरुषार्थ-सोचा और किया। (अ.वा.22.3.82 पृ.310 आ)	Download
717	पुरुषार्थ	जिस समय वातावरण के वशीभूत हो जाते हो उस समय स्थूल उदाहरण सामने रखो। अगरबत्ती कब वातावरण के वशीभूत नहीं होती है, वातावरण को बदलने के लिए अगरबत्ती है। (अ.वा.11.7.74 पृ.105 अं., 106 आ.)	Download
718	पुरुषार्थ	संगमयुग है असम्भव से सम्भव होने का। जो बात सारी दुनियाँ असम्भव समझती है, वह सम्भव करने का युग यही है। (अ.वा.1.2.75 पृ.37 अं.)	Download
719	प्रश्नावली	ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना चाहिए। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है। हम प्रश्न ही पूछते हैं कि प्रजापिता से क्या सम्बन्ध है? क्योंकि ब्रह्मा नाम तो बहुतों के हैं।.............. प्रजापिता नाम तो किसका होता नहीं। (मु.7.9.77 पृ.2 आ.)	Download
720	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	विकारी सम्बन्धियों आदि को चिट्ठी लिखने आदि की भी दरकार नहीं रहती। बिगर ज्ञान के सिर्फ लिखने से थोड़े ही समझेंगे। (मु.2.4.75 पृ.2 अं.)	Download
721	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	यहाँ से घर गये, फिर चिट्ठी भी नहीं लिखते। बाप को बच्चा कितना प्यारा होता है। उनकी चिट्ठी न आए, बीमार पड़ जाते, पता नहीं हमारा बच्चा मर गया, क्या हुआ! ....माया कोई को तो बिल्कुल ही मुर्दा बना देती है। जीते जी भी चिट्ठी नहीं लिखते, मरने के बाद तो बात ही नहीं। बाबा भी चिट्ठी तब लिखेंगे, जब वह खुद लिखेंगे। (मु.27.7.73 पृ.3 मध्यांत)	Download

722	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	बाबा किसी एक पर विश्वास नहीं करता। हरेक को हक है व्यक्तिगत पत्र लिखने का। (मु.17.5.71 पृ.3 अं.)	Download
723	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	चिट्ठी सिर्फ खुश खैराफियत की नहीं। सर्विस करके समाचार लिखना है- बाबा, हमने यह सर्विस की। सिर्फ याद प्यार लिखने से बाबा का पेट कब न भरेगा। (मु.22.10.73 पृ.4 आ.)	Download
724	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	बहुत बच्चे हैं जो छिपाकर समाचार लिखते हैं। दूसरे एड्रेस पर पत्र मँगाते हैं कि कहाँ मम्मा-बाबा को मालूम न पड़े। वह हैं धूते लोग।(मु.26.4.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
725	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	परलौकिक माता-पिता से मिलने 3/4 वर्ष भी नहीं आते हैं। स्त्री पति से थोड़ा ही अलग होती है तो फथकती रहती है। तुम सजनियाँ साजन पास 3/4 वर्ष नहीं आते हो। ऐसा कोई बच्चा होगा, जो बाप को चिट्ठी न लिखे? ऐसा साजन जो गुलगुल बनाय पटरानी बनाते हैं उनको चिट्ठी नहीं लिखते। ऐसा सद्गुरू जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनके पास तो जल्दी-2 आना चाहिए। चिट्ठी तो ज़रूर लिखनी चाहिए। (मु.20.5.72 पृ.4 म.)	Download
726	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	भल ब्राह्मणी से न बने तो भी बाबा को तो डायरैक्ट पत्र लिख सकते हो और डायरैक्ट पत्र मँगा सकते हो। हरेक को हक है डायरैक्ट चिट्ठी में समाचार देना। भल कोई कारण से सेन्टर से दिल हट जाती है; परन्तु फिर भी पढ़ाई ज़रूर पढ़नी है। मुरली घर में भी मँगाकर ज़रूर पढ़नी है। ....फिर आखरीन बाबा वह मतभेद भी मिटा देंगे। (मु.13.11.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
727	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	बाबा फरमान करें कोई को चिट्ठी न लिखो, फिर भी लिखते रहते हैं। तो ऐसे बच्चों को कपूत कहेंगे ना। श्रीमत पर चलना चाहिए ना। ....छिपाकर चिट्ठी भेज देते हैं तो बाबा समझ जाते हैं ऐसे चाण्डाल का जन्म पा लेंगे। (मु.17.12.71 पृ.3 अं.)	Download
728	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	बच्चों को अपना चार्ट देखना है। एक बाबा इतने बच्चों को कहाँ तक बैठ देखेंगे? बाबा को कितना काम रहता है। पत्रों के जवाब लिखने में अंगुलियाँ घिस जाती हैं; परन्तु बच्चों को शौक रहता है कि बाबा के हाथ का पत्र पढ़ें। तुम ही से बैठूँ, तुम्हीं से लिखा-पढ़ी करूँ। लिखते भी हैं शिवबाबा मार्फत ब्रह्मा। फिर बाबा जवाब भी देते हैं। कितने पत्र लिखने पड़े। हाँ, सर्विसेबुल बच्चे सर्विस का समाचार देंगे तो बाप भी खुश होगा। अच्छी-2 चिट्ठी आवेगी तो नयनों पर रखेंगे, फिर छाती पर रखेंगे, नहीं तो वेस्ट पेपर बॉक्स में डाल देनी पड़ती है। (मु.26.2.78 पृ.3 म.)	Download
729	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	यह महान खुशखबरी सबको सुनानी है- अब देहली में प्रदर्शनी भी होनी है, तो बच्चों को डायरैक्शन मिलती है- खुशखबरी लिखो।..........ऊँच ते ऊँच बेहद के बाप की खुशखबरी। ....तो यह क्लीयर और पूरे अक्षरों में लिखना चाहिए। बेहद का बाप ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे ब्र.कु.कुमारियों द्वारा फिर से कलयुगी सम्पूर्ण विकारी, भ्रष्टाचारी, पतित दुनियाँ को सतयुगी सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी दुनियाँ बना रहे हैं, वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो। गवर्नमेंट से भी तुम्हारी यह प्रतिज्ञा है हम भारत में फिर से सतयुगी श्रेष्ठाचारी 100प्रतिशत पवित्रता, सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनियाँ का विनाश कैसे होगा सो आकर समझो - ऐसे क्लीयर लिखना चाहिए। कार्ड में ही ऐसे लिखो। बाबा जो डायरैक्शन देते हैं वह एक्यूरेट लिखना चाहिए जो मनुष्य अच्छी रीति समझ सकें। यह प्रजापिता ब्र०कु०कुमारियाँ कल्प पहले मिसल ड्रामाप्लैन अनुसार परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत पर सहज राजयोग और पवित्रता के बल से, अपने तन, मन, धन से भारत को ऐसा श्रेष्ठाचारी पावन कैसे बना रही हैं सो आकर समझो। ऐसे क्लीयर करके कार्ड में छपाना चाहिए। (मु.2.3.76 पृ.1 आ.)	Download

730	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	कहाँ ब्रह्माकुमारियों में खिटपिट है तो झट बाबा को लिखकर भेजो; परन्तु 10-12 लिखें तब समझें। एक के कहने से तो नहीं होगा। बच्चों को सब समाचार पूरा देना चाहिए-टीचर कैसे पढ़ाती है। टीचर खुद तो अपनी लिखेगी नहीं। स्टूडेन्ट लिख सकते हैं। फिर बाबा प्रबन्ध कर देंगे; परन्तु बाबा समझाते कभी ब्राह्मणी से रूठकर, खाना खराब न करना। पढ़ाई छोड़ी और मरा, भस्मासुर बना। (मु.17.5.78 पृ.3 अं.)	Download
731	पंजाब से	सदा हर कदम में याद की शक्ति द्वारा पदमों की कमाई जमा करते हुए आगे बढ़ रहे हो ना। .... सभी बहादुर हो ना? डरने वाले तो नहीं हो? डरे तो नहीं? थोड़ा सा डर की मात्रा संकल्प मात्र भी आई या नहीं? यह नथिंग न्यू है ना।................. जब बाप की छत्रछाया के नीचे रहने वाले हैं तो निर्भय ही होंगे। जब अपने को अकेला समझते हो तो भय होता। .... बच्चों से बाप का स्नेह है ना। बाप के स्नेही बच्चों को, याद में रहने वाले बच्चों को कुछ भी हो नहीं सकता। याद की कमज़ोरी होगी तो थोड़ा सा सेक आ भी सकता है। .... बापदादा किसी न किसी साधन से बचा देते हैं। .... सदा हिम्मत और उल्लास के पंखों से उड़ने वाले हो ना। .... हिम्मत ऐसी चीज़ है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। हिम्मत मुश्किल को सहज बनाने वाली है। ....स्वयं को सदा मास्टर ज्ञान सूर्य समझते हो? ज्ञान सूर्य का कार्य है सर्व से अज्ञान अंधेरे का नाश करना। ....ऐसे सदा अंधकार दूर करने वाले अंधकार में स्वयं नहीं आ सकते। (अ.वा.3.12.84 पृ.42 अं., 43,44)	Download
732	पंजाब से	सभी पंजाब निवासी महावीर हो ना। डरने वाले तो नहीं? ....सबसे बड़ा भय होता है मृत्यु से। आप सब तो हो ही मरे हुये। मरे हुये को मरने का क्या डर!............ अभी ऐसी शान्ति की शक्तिशाली लहर फैलाओ, जो सभी अनुभव करें कि सारे देश के अंदर यह शान्ति का स्थान है।..........जैसे उन्हों में आवाज़ फैल गया है कि अशान्ति का स्थान यह गुरूद्वारा ही बन चुका है। ऐसे शान्ति का कोना कौन सा है? यही सेवा स्थान है यह आवाज़ फैलाना चाहिए।........जो अशान्त हैं उन्हों को खास बुलाकर भी शान्ति का अनुभव कराओ। ....पंजाब वालों को विशेष यह सेवा करनी चाहिए। अभी आवाज़ बुलन्द करने का चांस है। ....कर्फ्यू हो, कुछ भी हो, सम्पर्क में तो आते हो ना। सम्पर्क वालों को अनुभव कराओ तो ऐसी आत्माएँ आवाज़ फैलायेंगी। उन्हें एक-दो घण्टा भी योग शिविर कराओ।............जितनी पंजाब की धरनी सख़्त है उतनी नरम कर सकते हो। (अ.वा.19.4.84 पृ.257 अं., 258, 259)	Download
733	पंजाब से	पंजाब वाले सबको मधुबन में आकर सरेण्डर कराएँगे। पंजाब से नदियाँ निकलेंगी और समाएँगी कहाँ? मधुबन है ही सागर का कण्ठा। तो पंजाब और मधुबन का मेल हो गया। (अ.वा.28.11.81 पृ.182 अं., 183 आ.)	Download

734	पंजाब से	पंजाब की दो विशेषताएँ हैं। एक पंजाब का पानी और दूसरा पंजाब की खेती।.......पंजाब ने ज्ञान नदियाँ रूपी हैण्ड्स तो निकाले; लेकिन वण्डर भी किया है। .... पंजाब की नदियाँ पंजाब में ही रहती हैं; इसलिए पंजाब का पानी मशहूर हो गया। जैसे पंजाब में बिना सीज़न के भी अनाज पैदा कर लेते हैं, ऐसे साधन बनाये हैं। तो पंजाब वालों को 12 ही मास के 12 ही फल देने चाहिए। जब साइन्स की शक्ति से बिना सीज़न में अनाज पैदा कर लेते हैं .... तो साधना द्वारा पंजाब की धरती को परिवर्तित करो। प्रत्यक्ष फल देना पड़े। पंजाब को यह नये वर्ष में स्लोगन याद रखना है। कौन-सा स्लोगन? ''तुरन्त दान महापुण्य''। अभी तो ज्ञान गंगाओं का पार्ट है। पाण्डव बैक बोन है; लेकिन आगे निमित्त तो शक्तियों को रखेंगे। इसमें भी पाण्डवों का फायदा है, नहीं तो डंडे खाने पड़ेंगे। विशेष पंजाब में तो बहुत डंडे पड़ेंगे; इसलिए शक्तियाँ गाइड और पाण्डव गार्ड ठीक हैं। गार्ड और गॉड रास मिल जाती है। जैसे बाप बैकबोन हो के शक्तियों को आगे करते हैं, वैसे पांडव भी बाप समान बैकबोन हो शक्तियों को आगे रखें। (अ.वा.7.1.80 पृ.183 अं., 184)	Download
735	पंजाब से	पंजाब वासियों को विशेष आत्मा होने के कारण विशेष फल अवश्य देना पड़े। पंजाब में विशेष अकालतख़्त का यादगार है। .... अकालतख़्त नशीन आत्मा अर्थात् राज्य अधिकारी। .... कर्मेन्द्रियों के अधीन तो नहीं होते। जहाँ अधीनता होगी वहाँ कमज़ोरी होगी।............. प्रजा हैं यह कर्मेन्द्रियाँ। प्रजा के राज्य में सदा हलचल रहती है और राजा के राज्य में अचल राज्य चलता। तो अचल राज्य चल रहा है ना? ....पहले समय था जब संकल्प को फ्री छोड़ दिया, वाचा, कर्मणा पर अटेन्शन रखते थे; लेकिन अभी मंसा (में) भी हलचल न हो; क्योंकि लास्ट में है ही मंसा द्वारा विश्व परिवर्तन। (अ.वा.7.1.80 पृ.185 आ.)	Download
736	पंजाब से	पंजाब (ने) स्थापना के आदि में अपना विशेष शक्ति रूप का दृश्य अच्छा दिखलाया। अनेक प्रकार की हलचल में भी अचल रहे हैं।...........पंजाब में नदियों का गायन ज्यादा है। ऐसे ही पंजाब से ज्ञान गंगाएँ भी अधिक निकली हैं। आदि समय के हिसाब से पंजाब से ज्ञान नदियाँ भी ज़्यादा निकली हैं। तो पंजाब की धरनी कन्यादान में श्रेष्ठ निकली अर्थात् महादानी निकली। ....जैसे नदियों का पानी चारों ओर विस्तार से फैला हुआ है, वैसे पंजाब में भी सेवाकेन्द्रों का विस्तार अच्छा है।............ पंजाब की धरनी से नाम से काम करने वाली, सार वाली आत्माएँ निकालो, जिसका नाम सुनते अनेक आत्माएँ अपना भाग्य बना सकें। ....बड़े आवाज़ से ललकार करो, छोटे आवाज़ से करते हो तो छोटा आवाज़ वहाँ के गुरूद्वारों के आवाज़ में छिप जाता है। (अ.वा.19.12.78 पृ.137 आ)	Download
737	पंजाब से	पंजाब की धरनी (के) ऊपर कौरव गवर्मेन्ट को नाज़ है तो पाण्डव गवर्मेन्ट को भी नाज़ है। पंजाब की विशेषता यह है जो बापदादा के कार्य में मददगार फल स्वरूप सभी से ज़्यादा पंजाब से निकले हैं। सिन्ध से निकले हुये, निमित्त बने हुए रत्नों ने आप रत्नों को निकाला। (अ.वा.19.7.72 पृ.3 म.)	Download
738	पंजाब से	पंजाब में सेवा का महत्व भी साइलेंस की शक्ति का है। साइलेंस की शक्ति से हिंसक वृत्ति वाले को अहिंसक बना सकते हो। जैसे स्थापना के आदि के समय में देखा- हिंसक वृत्ति वाले रूहानी शान्ति की शक्ति के आगे परिवर्तन हो गये ना। तो हिंसक वृत्ति को शान्त बनाने वाली शान्ति की शक्ति है।....... तो पंजाब वालों ने क्या सुना? सभी को वायब्रेशन आवे कि कोई शांति का पुंज, शान्ति की किरणें दे रहे हैं, ऐसी सेवा करने का समय पंजाब को मिला है। (अ.वा.18.11.87 पृ.139 अं., 140 आ.)	Download
739	पंजाब से	पंजाब और दिल्ली दोनों की टीचर्स हैं, तो दोनों भाई-बहन हो गये। दिल्ली है भाई, पंजाब है बहन। पंजाब भी दिल्ली से निकला ना। (अ.वा.21.12.78 पृ.149 अं)	Download

740	पंजाब से	जैसा स्थान होता है उस स्थान की स्मृति से भी स्थिति में बल मिलता है। .... यहाँ का अनुभव वहाँ स्मृति में बल देता है; इसलिए मधुबन में आना ज़रूरी है। ....गृहस्थी में चारों ओर के कर्मबन्धन खींचेंगे। ....गृहस्थी में मेरापन होता है। मेरापन बहुत लम्बा है। जहाँ मेरापन है वहाँ बाप नहीं हो सकता। जहाँ मेरापन नहीं वहाँ बाप है।........जहाँ हद का अधिकार है वहाँ बेहद का अधिकार खत्म हो जाता है। अब बीती को बीती करके फुल स्टॉप लगाते जाओ। .... जो कहते हैं 'ऐसे यह होता है क्या'!, 'ब्राह्मणों में यह-2 बात होती है'! यह आश्चर्य की निशानी हो गई। 'यह भी नहीं होना चाहिए'। यह 'क्यों' हुआ? 'क्यों', 'क्या' कहना, यह क्वेश्चन हुआ। यह भी व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होने का आधार है। जो होता है उसको साक्षी हो देखो। साक्षी के बजाय आत्मा के साथी बन जाते हो। बाप के साथी के बजाय आत्मा के साथी बन जाते हो।............ जितना समय आत्मा का साथी उतना समय बाप के साथी नहीं बनेंगे। यह खण्डित योग हो जाता है। खण्डित चीज़ फेंकने वाली होती है। वही मूर्ति जो पूजने योग्य होती है- जब वह खण्डित हो जाती है तो उसकी कोई वैल्यू नहीं होती। .... अखण्ड योगी, अटूट योगी और निरन्तर बापदादा के साथी। ऐसे हैं पंजाब निवासी। (अ.वा.24.10.75 पृ.229 अं., 230, 231)	Download
741	पंजाब से	पंजाब में वैसे ही मेवा खाने के आदती हैं। तो यहाँ भी जितनी सेवा करेंगे उतना मेवा अर्थात् प्रत्यक्ष फल खाने वाले बनेंगे। यह तो विशेष बेहद की सेवा है। मेला अर्थात् बाप से मिलन मनवाना। मेला कर रहे हैं अर्थात् आत्माओं का मिलन कराने के निमित्त बन रहे हैं। (अ.वा.3.4.82 पृ.345 म.)	Download
742	पंजाब से	सभी पंजाब निवासी सो मधुबन निवासी .... सभी बच्चे सदा ही बेफिकर बादशाह बने रहो। .... हलचल वालों को अविनाशी सहारे की स्मृति दिलाय अचल बनाओ। यही सेवा पंजाब वालों को विशेष करनी है। पहले भी कहा था कि पंजाब वालों को नाम बाला करने का चांस अभी अच्छा है। .... पंजाब का नम्बर पीछे नहीं है, आगे है। पंजाब शेर कहा जाता है। शेर पीछे नहीं रहते, आगे रहते हैं। जो भी प्रोग्राम मिले उसमें हाँ जी, हाँ जी करना तो असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। (अ.वा.26.12.84 पृ.90 मध्यादि, 91 म.)	Download
743	पंजाब से	पंजाब है ही सदा सभी को हरा-भरा करने वाला। पंजाब में खेती अच्छी होती है। .... पंजाब-हरियाणा सदा खुशी में हरा-भरा है; इसलिए बापदादा भी देख-देख हर्षित होते हैं। (अ.वा.4.4.84 पृ.224 अं., 225 आ.)	Download
744	पंजाब से	सबसे ज़्यादा पंजाब आया है। इस बारी ज़्यादा क्यों भागे हो? इतनी संख्या कभी नहीं आई है।.........पंजाब में सतसंग और अमृतवेले का महत्व है। नंगे पाँव भी अमृतवेले पहुँच जाते हैं।........पंजाब निवासी अर्थात् सदा संग के रूहानी रंग में रंगे हुये, सदा सत के संग रहने वाले। (अ.वा.15.4.84 पृ.245 आ.)	Download
745	प्रेरणा	प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता।(मु.9.2.76 पृ.2 अं.)	Download
746	प्रेरणा	वह समझते हैं खुदा ऊपर से प्रेरणा देते हैं। बाप कहते हैं धूर भी नहीं। प्रेरणा आदि तो कुछ है नहीं। (मु.30.3.68 पृ.4 मध्यांत)	Download
747	प्रेरणा	सद्गति दाता पतित-पावन खुद आते हैं। ऐसे नहीं कि वहाँ से प्रेरणा करते हैं। वह तो यहाँ आते हैं। यादगार भी है। (मु.4.3.78 पृ.2 अं.)	Download
748	प्रेरणा	विनाश भी करवाते हैं शंकर द्वारा। प्रेरक है विनाश के लिए। ज्ञान में प्रेरणा की बात नहीं है। (मु.11.4.76 पृ.3 अं.)	Download

749	प्रेरणा	प्रेरणा अक्षर राँग है। यह तो बाप की मत पर चलना होता है। प्रेरणा की बात नहीं। कोई-2 संदेशियाँ सन्देश ले आती हैं। उनमें भी बहुत मिक्चर हो जाता है। सन्देशी सब एक जैसी तो नहीं हैं। आगे फिर भी कुछ अच्छी थीं। (मु.7.12.73 पृ.1 अं.)	Download
750	प्रेरणा	मैं तुमको यह वर्सा कैसे दूँ? सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान कैसे सुनाऊँ? इसमें प्रेरणा आदि की तो बात ही नहीं। (मु.17.6.72 पृ.4 आ.)	Download
751	प्रेरणा	मैं ज्ञान का सागर हूँ; परन्तु मैं निराकार ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ? ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए, प्रेरणा से स्टूडेन्ट को पढ़ा सकेंगे? ज़रूर स्कूल में आना पड़े ना। (मु.20.8.78 पृ.1 अं.)	Download
752	प्रेरणा	वह आकर सबको पतित से पावन बनाते हैं। इसमें प्रेरणा की बात नहीं। कहते हैं- बाबा, आपकी प्रेरणा। हम प्रेरणा किसको देते नहीं वा न प्रेरणा कराता हूँ। मुझे अगर प्रेरणा से पावन बनाना हो तो फिर आकर रथ लेने की क्या दरकार है? (मु.12.7.71 पृ.2 मध्यांत)	Download
753	प्रेरणा	पतितों को पावन बनाने आवेगा। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलावेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या? प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। (मु.10.9.71 पृ.2 अं.)	Download
754	प्रेरणा	बाप नज़र से निहाल कर देते हैं। काँटे से फूल बना देते हैं। सम्मुख आकर ही नॉलेज सुनावेंगे ना। इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। बाप डायरैक्शन देते हैं ऐसे याद करने से शक्ति मिलेगी (मु.29.7.74 पृ.3 अं.)	Download
755	प्रेरणा	मेरी श्रीमत पर चलो। इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ हैं तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है? प्रेरणा अक्षर राँग है। (मु.6.12.78 पृ.1 अं.)	Download
756	प्रेरणा	प्रेरणा से अगर योग और ज्ञान सिखलाना होता फिर तो बाप कहते मैं इस गन्दी दुनियाँ में आता क्यों? प्रेरणा, आशीर्वाद यह सब भक्तिमार्ग के अक्षर हैं। (मु.8.8.76 पृ.3 अं.)	Download
757	प्रेरणा	बाप भी मत शरीर द्वारा ही देंगे। ऐसे ही थोड़े ही कान में फूँक दे देंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं किसको कान में फूँक देने वाला वा प्रेरणा करने वाला नहीं हूँ। मैं कोई राय भी दूँगा तो ब्रह्मा द्वारा। कोई समझते हैं हम तो शिवबाबा के डायरैक्शन पर चलते हैं। वह सब हैं गपोड़े। ऐसे भी बहुत हैं जो शिव को मानते हैं, ब्रह्मा को मानते ही नहीं; परन्तु ब्रह्मा अथवा ब्राह्मणों बिगर ईश्वरीय महावाक्य तो सुन न सकें। मूढ़ बुद्धि ऐसे हैं जो समझते हैं प्रेरणा से हमको सब मिलता है। (मु.27.1.75 पृ.2 आ.)	Download
758	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	आगे चलकर बाबा बहुत बातें सुनावेंगे। सब अभी बता देवें तो आगे क्या बतावेंगे? (मु.25.9.73 पृ.4 अं.)	Download
759	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	बाबा समझाते हैं कि गीता आदि छपती है तो थोड़ी छपवाकर फिर ऐसे ढंग से बनानी चाहिए जो नए-2 प्वाइन्ट्स एड कर सको। वो गीता तो पूरी फिनिश की हुई है। यह गीता तो पूरी नहीं होती है। जहाँ तक जीना है, अंत तक तुमको पढ़ना है। प्वाइन्ट्स निकलती रहेंगी, एड होती जाएँगी। (मु.4.10.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
760	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	जैसे समय समीप आ रहा है, पाण्डव सेना के प्रत्यक्ष होने का प्रभाव गुप्त रूप में फैलता जा रहा है। सेवा की रूपरेखा समय प्रमाण और सेवा प्रमाण परिवर्तन अवश्य होगी। जैसे आजकल भी साइंस द्वारा हर चीज़ को क्वान्टिटी बजाय क्वालिटी में ला रहे हैं। ऐसा छोटा सा रूप बना रहे हैं, जो रूप छोटा; लेकिन शक्ति अधिक भरी हुई होती है। जैसे मिठास के विस्तार को सैक्रिन के रूप में लाते हैं। विस्तार को सार में ला रहे हैं। (अ.वा..28.6.77 पृ.1 मध्यादि)	Download

761	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	दिन-प्रतिदिन कायदे-कानून भी सुधरते जावेंगे। दुनिया के कायदे-कानून तो बिगड़ते जावेंगे। (मु.14.2.73 पृ.3 अं.)	Download
762	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों को बहुत डीप डायरैक्शन भी मिलते रहेंगे। आगे बाबा बिन्दी-2 थोड़े ही कहते थे। अभी समझाते हैं बिन्दी रूप में याद करो। आगे चल और भी नये-2 प्वाइन्ट्स निकलते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन उन्नति होती जावेगी। (मु.28.2.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
763	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	बाप भी जैसे कल्प पहले समझाते थे, वह समझा रहे हैं कि शिव ज्योतिर्लिंगम है। अब फिर समझाते हैं कि नहीं! वह स्टार माफिक है, इतना बड़ा भी नहीं है। अब पहले जो ड्रामा था समझाने का वह उस समय समझाया, अब फिर ड्रामा में है और गुह्य समझाने का, वह समझाते हैं। इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं। बाबा ने कल जो समझाया उसको आज बदल सूक्ष्मता से समझाते हैं, तो कहेंगे ड्रामा अनुसार जिस वक्त जो सुनाना था वह सुनाया। जो कल सुनाना था वह कल सुनाया। जो आज सुनाना है वो सुनाता हूँ। समझा। ड्रामा पर चलना चाहिए तो मूँझेंगे नहीं। (मु.5.3.73 पृ.1 आ.रात्रिक्लास)	Download
764	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	रिफाइन चीज़ जो होती है, उनकी क्वान्टिटी भले कम होती है; लेकिन क्वालिटी पावरफुल होती है। जो चीज़ रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वान्टिटी ज़्यादा, क्वालिटी कम होगी।............रिफाइन चीज़ जास्ती भटकती नहीं, स्पीड पकड़ लेती है। (अ.वा.12.6.72 पृ.303 अं., 304 आ.)	Download
765	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	वण्डर यह है जो पहले वाले से पिछाड़ी वाले तीखे हो जाते हैं; क्योंकि अभी दिन-प्रतिदिन रिफाइन प्वाइन्ट मिलती रहती है। सैम्पलिंग लगती जाती है। 50 वर्ष रहना पड़ता है। (मु.2.10.76 पृ.3 आ.)	Download
766	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी बननी है। इनमें बड़ा क्लीयर लिखना है। ऊपर में लिखना चाहिए विनाश काले प्रीति बुद्धि विजयन्ति और नीचे लिखना चाहिए विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। (मु.6.10.76 पृ.2 मध्यादि)	Download
767	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती हैं, तो चित्रों में भी चेंज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेंज होती है। आगे थोड़े ही यह समझाते थे शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़े ही कहेंगे, पहले क्यों नहीं ऐसा बताया? बाप कहते हैं सब बातें पहले ही थोड़े ही समझाई जा सकती हैं। (मु.6.10.76 पृ.2 अं.)	Download
768	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	जिनका ज्ञान तरफ पूरा ध्यान होगा वह चित्रों आदि में करेक्शन आदि करते रहेंगे। (मु.27.11.76 पृ.3 म.)	Download
769	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	अभी तो वृद्धि की लिस्ट में कमी है। नौ लाख ही तैयार नहीं हुये हैं। किस भी विधि से मिलेंगे तो सही ना। विधि चेंज होती रहती है। जो साकार में मिले और अव्यक्त में मिल रहे हैं, विधि चेन्ज हुई ना। आगे भी विधि चेन्ज होती रहेगी। वृद्धि प्रमाण मिलने की विधि भी चेन्ज होती रहेगी। (अ.वा.14.12.85 पृ.94 अं.)	Download
770	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	दिन-प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं तो फिर पुराने चित्रों को बदलकर दूसरा बनाना पड़े। यह तो अंत तक होता ही रहेगा। (मु.25.4.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
771	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	दिन-प्रतिदिन इम्प्रूवमेन्ट होती जाती है। कहाँ बच्चे पर्चों में तिथि-तारीख़ लिखना भूल जाते हैं। ल.ना. के चित्र में तिथि-तारीख ज़रूर होनी चाहिए। (मु.3.6.70 पृ.1 म.)	Download

772	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	बाप दिन-प्रतिदिन नई-2 प्वाइन्ट्स भी देते रहते हैं। तो क्या करना चाहिए? सच्ची गीता बनानी चाहिए। फिर उसमें फर्स्ट वॉल्यूम , सेकेण्ड वॉल्यूम, थर्ड वॉल्यूम निकालते रहना चाहिए। यह गीता तुम कोई भी अख़बार आदि में भी डाल सकते हो। .... दिन-प्रतिदिन नई-2 प्वाइन्ट्स तो बाप सुनाते रहते हैं। तो बाबा की मुरली से प्वाइन्ट्स निकालकर इकट्ठी करनी चाहिए। फिर कुछ पुरानी, कुछ नई प्वाइन्ट्स, सच्ची गीता ही निकलनी चाहिए। (मु.13.3.75 पृ.1अं., 2आ.)	Download
773	रिफाइनिंग-चेन्जिंग	अब दिन-प्रतिदिन नॉलेज डीप होती जाती है। स्टूडेन्ट को एम-ऑब्जेक्ट याद रहती है। (मु.27.4.84 पृ.2 आ.)	Download
774	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	बाप का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में अटेन्शन देना यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाबा कहते हैं मनुष्यों को हेविन का मालिक बनाऊँ, बच्चे फिर जिस्मानी हद की सर्विस में माथा मारें। (मु.15.5.77 पृ.2 म.)	Download
775	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	शिवबाबा का यह रथ है। इनका रिगार्ड न रखेंगे तो धर्मराज द्वारा बहुत डण्डे खाने पड़ेंगे।............आदि देव का कितना रिगार्ड रखते हैं। जड़ चित्र का इतना रिगार्ड है तो चैतन्य का कितना रखना चाहिए! (मु.30.9.75 पृ.3 अं.)	Download
776	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	थोड़ा सा भी बाप का डिसरिगार्ड किया तो मरा। गाया हुआ है, सद्गुरू का निन्दक ठौर न पावे। काम वश, क्रोध वश उल्टा काम करते हैं, गोया बाप की निन्दा कराते हैं। (मु.17.1.73 पृ.3 आ.)	Download
777	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	कोई भी प्रकार का अभिमान अपना वा दूसरों का अपमान ज़रूर करेगा। दूसरों की बातों का रिगार्ड न देना, कट करना, यह भी एक रॉयल रूप का अभिमान है। (अ.वा.9.4.73 पृ.22 म.)	Download
778	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	ऐसे भी बुद्धू हैं जिनमें पूरा ज्ञान न होने कारण कमाण्डर के भी डिसरिगार्ड करने में देरी नहीं करेंगे। बात-चीत करने में भी मैनर्स नहीं। अपन से बड़े को हमेशा आप-आप कहा जाता है; परंतु अनपढ़ बच्चों को यह भी अक्ल नहीं आप के बदली तू-2 कर बात करते हैं। (मु.27.7.73 पृ.2 म.)	Download
779	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	जो अच्छे पढ़े हुये हैं उनका रिगार्ड रखना चाहिए; परन्तु मैनर्स न सीखने कारण कोई-2 तो महारथियों का भी डिसरिगार्ड कर देते हैं। बुद्धि नहीं चलती, बाबा ने सर्विसएबुल को भेजा है, ज़रूर वह बाप के दिल पर चढ़े हुये हैं। (मु.14.11.73 पृ.1 अं.)	Download
780	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	बच्चों में बड़ा रिगार्ड रहना चाहिए। बेहद का बाप ब्रह्मा तन में आकर पढ़ाते, तो बाप के आने पहले सबको बैठ जाना चाहिए। बाप के बाद आना रिगार्ड नहीं। स्कूल में भी जो देरी से आते हैं उनको पिछाड़ी में खड़ा कर देते हैं। (मु.30.11.73 पृ.1 अं.)	Download
781	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	रथ का भी रिगार्ड रखना है। इन द्वारा ही तो बाप सुनाते हैं। (मु.3.1.71 पृ.2 अं.)	Download
782	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	रिगार्ड भी बच्चों को बाप का रखना है। रिगार्ड किसको कहा जाता है? बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीति पढ़ते हैं गोया रिगार्ड रखते हैं। (मु.10.12.68 पृ.1 आ.)	Download
783	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	बड़े महारथियों का रिगार्ड तो रखना होता है ना। ऐसे नहीं यह भी तो बाबा के बच्चे हैं। फिर नं. वार रिगार्ड तो रखना होता है ना। हाँ, कोई छोटा भी होशियार हो जाता है तो हो सकता है बड़ों को रिगार्ड रखना पड़े। (मु.9.10.71 पृ.1 अं)	Download
784	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	पहले सत्कार देना फिर अधिकार लेना।.........अगर सत्कार को छोड़ सिर्फ अधिकार लेंगे तो क्या हो जायेगा? जो कुछ किया वह बेकार हो जायेगा; इसलिए दोनों बातों को साथ-2 रखना है। (अ.वा.9.12.70 पृ.331 आ)	Download

785	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	नॉलेज का रिगार्ड अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुये उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो। कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य......इस प्रकार के क्वेश्चन्स उठाना भी अर्थात् सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है। यह भी नॉलेज का डिसरिगार्ड है। ....एक क्वेश्चन होता है स्पष्ट करने के लिए, दूसरा क्वेश्चन होता है सूक्ष्म संशय के आधार से, इसको कहा जाता है डिसरिगार्ड।..................... तीसरी बात- स्वयं का रिगार्ड- ....मैं तो कमज़ोर हूँ, मेरी हिम्मत नहीं है, बाप कहते हैं; लेकिन मैं नहीं बन सकती, मेरा ड्रामा में पार्ट ही पीछे का है, जितना है उतना ही अच्छा है, ऐसे स्वयं से दिलशिकस्त होना यह भी स्वयं का डिसरिगार्ड है। ....चैथी बात- आत्माओं द्वारा सम्बन्ध वा सम्पर्क वाली आत्माओं का रिगार्ड। इसका अर्थ है .... हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊँचे उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो ....किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को अपनी कमज़ोरी वा अवगुण समझ वर्णन करने के बजाय वा फैलाने के बजाय समाना और परिवर्तन करना यह है रिगार्ड। किसी की भी कमज़ोरी की बड़ी बात को छोटा करना , पहाड़ को राई बनाना चाहिए न कि राई को पहाड़ बनाना है। इसको कहा जाता है रिगार्ड। दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, संग के रंग में नहीं आना, सदा उमंग-उल्लास में लाना इसको कहा जाता है रिगार्ड। (अ.वा.25.1.79 पृ.243 आ., 244)	Download
786	रिगार्ड-डिसरिगार्ड	जो चाहिए वह ज़्यादा से ज़्यादा देते जाओ। मान दो, लो नहीं। रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो। .... कोई को कहो मुझे रिगार्ड दो या रिगार्ड दिलाओ, माँगने से मिले यह रास्ता ही राँग है, तो मंज़िल कहाँ से मिलेगी?..............शान माँगने वाले परेशान होते हैं; इसलिए मास्टर विधाता की शान में रहो। (अ.वा.7.1.85 पृ.104 आ.)	Download
787	राजस्थान	राजस्थान ज़ोन की विशेषता क्या है? राजस्थान में ही मुख्य केन्द्र है। तो जैसे ज़ोन की विशेषता है, वैसे राजस्थान निवासियों की भी विशेषता होगी ना। अभी राजस्थान में कोई विशेष हीरे निकाले हैं या आप ही विशेष हीरे हो? आप तो सबसे विशेष हो ही; लेकिन सेवा के क्षेत्र में दुनियाँ की नज़रों में जो विशेष हैं उन्हों को भी सेवा के निमित्त बनाना है, ऐसी सेवा की है? राजस्थान को सबसे नं० वन होना चाहिए। संख्या में, क्वालिटी में, सेवा की विशेषता में सबमें नं० वन। .... अभी नं० वन संख्या में महाराष्ट्र, गुजरात को गिनती करते हैं। अभी यह गिनती करें कि सबसे नं० वन राजस्थान है। अभी इस वर्ष तैयारी करो। अगले वर्ष महाराष्ट्र और गुजरात से भी नं० वन जाना। निश्चय बुद्धि विजयी। कितने अच्छे-2 अनुभवी रत्न हैं। सेवा को आगे बढ़ाएँगे (तो) ज़रूर बढ़ेगी। (अ.वा.22.4.84 पृ.266 म.)	Download
788	राजस्थान	संगमयुग के स्वराज्य की राजगद्दी तो राजस्थान में है ना! कितने राजे तैयार किये हैं? राजस्थान के राजे गाये हुये हैं। तो राजे तैयार हो गये हैं या हो रहे हैं? राजस्थान में राजाओं की सवारियाँ निकलती हैं। .... 25 स्थानों के 25 राजे आवें तो सवारी सुन्दर हो जावेगी ना। ड्रामानुसार राजस्थान में ही सेवा की गद्दी बनी है। तो राजस्थान का भी विशेष पार्ट है। राजस्थान से ही विशेष सेवा के घोड़े भी निकले ना। (अ.वा.24.4.84 पृ.269 आ)	Download
789	राजस्थान	राजस्थान में मुख्य स्थान मुख्य केन्द्र है। तो जहाँ मुख्य केन्द्र है वह सब में मुख्य है ना। राजस्थान को तो नाज़ होना चाहिए, नशा होना चाहिए। राजस्थान से नए-2 सेवा के प्लैन्स निकलने चाहिए। राजस्थान को कोई नई इन्वेंशन करनी चाहिए। अभी की नहीं है। राजस्थान की धरती का परिवर्तन करना पड़ेगा। उसके लिए बार-2 मेहनत का जल डालना पड़ेगा। ....अभी हल्का खाद डाला है। (अ.वा.10.12.79 पृ.97 अं.)	Download

790	राजस्थान	राजस्थान को वरदान बहुत मिला हुआ है। पहले-2 सेवा का साधन गिफ्ट में राजस्थान को मिला। पहला-2 तीर्थ स्थान तो राजस्थान ही हुआ। बाप दादा दोनों का राजस्थान को वरदान है। .... एक दिन आयेगा ज़रूर जो राजस्थान की संख्या कमाल की लिस्ट में आयेगी- सिर्फ इसके लिए परोपकारी बनो। परोपकारी से विश्व उपकारी बन जायेंगे। बापदादा की विशेष धरनी जिस पर बाप की नज़र पड़ी, वह फल अवश्य देगी। राजस्थान की महिमा बाप जानते हैं, राजस्थान में रहने वाले कम जानते हैं, बाप जानते हैं कि क्या होने वाला है। .... मुख्य केन्द्र भी राजस्थान में है ना तो आस-पास भी ज़रूर आकर्षण के केन्द्र बनेंगे, वह भी टाइम आयेगा। साकार बाप की पहली-2 नज़र कहाँ गई? राजस्थान पर, तो कोई तो विशेषता होगी ना। समय जब पहुँच जाता है, पर्दा खुल जाता है और दृश्य सामने आ जाता। (अ.वा.19.12.78 पृ.139 म., 140 आ.)	Download
791	सेवा माना क्या?	कमज़ोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बनाओ- यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना यह कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना - यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेंगे। (अ.वा. 21.12.89 पृ. 96 आ.)	Download
792	सेवा माना क्या?	एक दूसरे को बाप के गुणों का वा स्वयं की धारणा के गुणों का सहयोग देते हुए गुणमूर्त बनाना, यह सबसे बड़े-से-बड़ी सेवा है। (अ.वा.15.12.79 पृ.123 अं.)	Download
793	सेवा माना क्या?	बापदादा सदा डायरैक्शन देते हैं कि मैं पन का, मेरे पन का त्याग ही सच्ची सेवा है। (अ.वा.15.1.86 पृ.158 म.)	Download
794	सेवा माना क्या?	यह तो सब कहेंगे कि सर्विस अर्थ निमित्त अर्थात् बाप के गुणों को साकार करने के निमित्त-इसको ही सर्विस कहा जाता है। बाक़ी ज्ञान को वर्णन करना, यह तो कॉमन बात है। यह विशेष सर्विस नहीं है। सर्विस की विशेषता अर्थात् बाप के सर्वगुणों का स्वरूप बनकर, बाप का साक्षात्कार अपने स्वरूप द्वारा कराना। (अ.वा.13.9.74 पृ.121 अं., 122आ.)	Download
795	सेवा माना क्या?	सेवा अर्थात् किसी भी आत्मा को प्राप्ति का मेवा अनुभव कराना। (अ.वा.9.4.86 पृ.316 म.)	Download
796	सेवा माना क्या?	सभी को खुश करने की सेवा नम्बर वन सेवा है। सबके अन्दर खुशी की लहर पैदा करना, यह है बाप समान सेवा। (अ.वा.18.1.88 पृ.224 आ)	Download
797	सेवा माना क्या?	सुने हुए मधुर बोल का स्वरूप बन, स्वरूप से सेवा, नि:स्वार्थ सेवा, त्याग-तपस्या स्वरूप से सेवा, हद की कामनाओं से परे निष्काम सेवा, इसको कहा जाता है ईश्वरीय सेवा, रूहानी सेवा। (अ.वा.22.2.86 पृ.206 अं.)	Download
798	सेवा माना क्या?	सेवा भाव अर्थात् सर्व की कमज़ोरियों को समाने का भाव। कमज़ोरियों का सामना करने का भाव नहीं, समाने का भाव। (अ.वा.9.4.86 पृ.318 आ.)	Download
799	सेवा माना क्या?	कभी भी कोई सेवा उदास करे तो समझो वह सेवा नहीं है। डगमग करे, हलचल में लाये तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। (अ.वा. 22.2.86 पृ.209 आ)	Download
800	सेवा माना क्या?	वैसे देखा जाए तो सेवा उसको ही कहा जाता है जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। दूसरे की सेवा करें और अपनी सेवा में अलबेले हो जाएँ तो उसको वास्तव में यथार्थ सेवा नहीं कहेंगे। (अ.वा. 8.4.92 पृ.184 आ)	Download
801	सेवा माना क्या?	तपस्या में बैठना भी सेवा ही है। (अ.वा.9.4.86 पृ.317 मध्यांत)	Download

802	सेवा मंसा की	मन्सा सेवा करने के लिए सदा एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। व्यर्थ समाप्त हो तब मन्सा सेवा कर सकेंगे। (अ.वा. 5.2.79 पृ.277 आ)	Download
803	सेवा मंसा की	मंसा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे।...............स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। (अ.वा.18.1.86 पृ.165 म.)	Download
804	सेवा मंसा की	मन्सा सेवा वही कर सकता जिसकी स्वयं की मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, नि:स्वार्थ हो।........यह भी करें तब मैं करूँगी, कुछ यह करें, कुछ मैं करूँ वा थोड़ा तो यह भी करें- इस भावना से परे। मैं करूँगी या करूँगा और अवश्य करेंगे। कमज़ोर है, नहीं कर सकता है, फिर भी रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। इसको कहा जाता है- मंसा सेवाधारी। (अ.वा. 28.1.85 पृ.147 म)	Download
805	सेवा मंसा की	जो भी सदा निश्चय बुद्धि होकर विजयी रहते हैं, उन निश्चय बुद्धियों द्वारा वायुमण्डल शुद्ध होता जाता है। वह मंसा सेवा करते हैं; क्योंकि चारों ओर के व्यक्ति निश्चय बुद्धि आत्माओं को देख समझते हैं कि इनको कुछ मिला है। चाहे कितने भी घमन्डी हों, ज्ञान को न भी सुनते हों; लेकिन अंदर में यह समझते ज़रूर हैं कि इनका जीवन कुछ बना है। तो जो शुरू से अटल निश्चय बुद्धि रहे हैं, उनकी यह सेवा चलती रहती है। यह भी मंसा सेवा है।(अ.वा.17.12.79 पृ.128 आ)	Download
806	सेवा मंसा की	अब संकल्प से भी सेवाधारी बनो। वाचा सेवा तो सात दिन के कोर्स वाले भी करते हैं। कर्मणा सेवा भी सब करते हैं; लेकिन आपकी विशेषता है मंसा सेवा। इस विशेषता को अपनाकर विशेष नम्बर ले लो। (अ.वा.19.12.79 पृ.137 अं.)	Download
807	सेवा मंसा की	वृत्ति में क्या भरना है, जिससे वृत्ति पावरफुल हो जाए? तो वह एक ही बात है कि वृत्ति में हर आत्मा के प्रति रहम वा कल्याण की वृत्ति रहे, तो आटोमेटिकली आत्माओं के प्रति यह वृत्ति होने के कारण उन आत्माओं को आप लोगों के रहम वा कल्याण का वायब्रेशन पहुँचेगा। (अ.वा.9.10.71 पृ.188 अं., 189 आ.)	Download
808	सेवा मंसा की	सेवाभाव अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भाव। (अ.वा.9.4.86 पृ.316 आ.)	Download
809	सेवा मंसा की	सेवा का सबसे तीखा साधन है समर्थ संकल्प से सेवा। समर्थ संकल्प भी हों, बोल भी हों और कर्म भी हों। तीनों साथ-साथ कार्य करें। (अ.वा.6.1.86 पृ.138 आ.)	Download
810	सेवा मंसा की	जैसे वर्तमान समय ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन शुद्ध संकल्प की शक्ति से आप सबकी पालना कर रहे हैं, सेवा की वृद्धि के सहयोगी बन आगे बढ़ा रहे हैं, यह विशेष सेवा शुद्ध संकल्प के शक्ति की चल रही है, तो ब्रह्मा बाप समान अभी इस विशेषता को अपने में बढ़ाने का तपस्या के रूप में अभ्यास करना है। तपस्या अर्थात् दृढ़ता सम्पन्न अभ्यास। (अ.वा.31.3.86 पृ.296 अं., 297 आ.)	Download
811	सेवा मंसा की	शक्तिशाली संकल्प का सहयोग विशेष आज की आवश्यकता है।.........संकल्प से सहयोग देना इस सेवा को बढ़ाना है। वाणी से शिक्षा देने का समय बीत गया। ...... जितना जो सूक्ष्म चीज़ होती है वह ज़्यादा सफ़लता दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म है ना। (अ.वा.1.1.86 पृ.126 म., 127 आ.)	Download
812	सेवा मंसा की	आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे।...............तो वाणी से शुद्ध संकल्प सूक्ष्म हैं; इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा। (अ.वा.18.11.87 पृ.137 अं.)	Download

813	सेवा मंसा की	हर महारथी के अन्दर सदा यह संकल्प रहे कि जो भी समय है, वह सेवा अर्थ ही देना है। चाहे अपने देह व शरीर के आवश्यक कार्य में भी समय लगाते हो, तो भी स्वयं के प्रति लगाते हुए मन्सा विश्वकल्याण की सेवा साथ-साथ कर सकते हैं। अगर वाचा और कर्मणा नहीं कर सकते तो मन्सा कल्याणकारी भावना का संकल्प रहे तो वह भी सेवा के सब्जेक्ट में जमा हो जाता है। (अ.वा.22.1.76 पृ.10 मध्यादि)	Download
814	सेवा मंसा की	ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है। जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो, संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो; लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो। (अ.वा.19.4.71 पृ.69 अं.)	Download
815	सेवा मंसा की	शुभचिंतक बनना- यही सहज रूप की मन्सा सेवा है जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो।............तो आज विश्व को शुभचिन्तक आत्माओं की आवश्यकता है; इसलिए आप शुभचिन्तक मणियाँ वा आत्माएँ विश्व को अतिप्रिय हैं। जब सम्पर्क में आ जाते हैं तो अनुभव करते हैं कि ऐसे शुभचिन्तक दुनियाँ में कोई दिखाई नहीं देते। (अ.वा. 10.11.87 पृ.125 आ)	Download
816	सेवा मंसा की	शुभकामना और शुभभावना-यह सेवा का फाउन्डेशन है। कोई भी आत्माओं की सेवा करते हो, अगर आपके अंदर शुभभावना, शुभकामना नहीं है, तो आत्माओं को प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। (अ.वा.27.11.89 पृ.43 मध्यांत)	Download
817	सेवा मंसा की	क्वालिटी की सेवा में उन्हों को निमित्त बनाने अथवा उन्हों की बुद्धि को टच करने के लिए अपनी मन्सा बहुत शक्तिशाली चाहिए; क्योंकि क्वालिटी वाली आत्माएँ वाणी में तो पहले ही होशियार होती हैं; लेकिन अनुभूति में कमज़ोर होती हैं, बिल्कुल ही खाली होती हैं। तो जो जिस बात में कमज़ोर होते हैं, उसको उसी कमज़ोरी का ही तीर लग सकता है और जब अनुभूति होती है तब समझते हैं कि यह तो हमारे से ऊँचे हैं। (अ.वा.31.12.89 पृ.115 म)	Download
818	सेवा मंसा की	योग लगाना भी क्या है? खुशी में नाचना ही तो है ना। बाप की महिमा गाते हो, खुशी में नाचते हो और क्या करते हो! इसी में ही सेवा है। इसी में ही योग है। इसी में ही ज्ञान वा धारणा है। (अ.वा. 25.12.89 पृ.107 म.)	Download
819	सेवा मंसा की	परिवर्तन का मूल आधार है- हर सेकेन्ड सेवा में बिज़ी रहना। हर महारथी के अन्दर सदा यह संकल्प रहे कि जो भी समय है वह सेवा अर्थ ही देना है। चाहे अपने देह व शरीर के आवश्यक कार्य में भी समय लगाते हो तो भी स्वयं के प्रति लगाते हुए मंसा विश्वकल्याण की सेवा साथ-साथ कर सकते हैं। अगर वाचा और कर्मणा नहीं कर सकते तो मंसा कल्याणकारी भावना का संकल्प रहे, तो वह भी सेवा के सब्जेक्ट में जमा हो जाता है। (अ.वा.22.1.76 पृ.10 आ.)	Download
820	सेवा मंसा की	मंसा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ। वाचा सेवा तो सात दिन के कोर्स वाले, प्रवृत्ति वाले भी कर सकते हैं। आपका कार्य है वायुमण्डल को पावरफुल बनाना। ....चैक करो मंसा सेवा में सफलता मिलती है? अगर मंसा सेवा में सफलता होगी तो सदा स्वयं और सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और चढ़ती कला में होगा। चढ़ती कला यह नहीं संख्या वृद्धि को पाए। ....लास्ट में वाचा सेवा का चांस नहीं होगा, मंसा सेवा पर सर्टीफिकेट मिलेगा; क्योंकि इतनी लम्बी क्यू होगी जो बोल नहीं सकेंगे। (अ.वा.23.1.80 पृ.239 आ)	Download
821	सेवा मंसा की	जो जास्ती याद करते हैं उनके पाप कटते जाते हैं। यात्रा का ही ध्यान रखना है। पिछाड़ी में 8 घण्टा तुम्हारी यह सर्विस रहे तो भी बहुत अच्छा। (मु. 29.3.87 पृ.3 अं.)	Download

822	सेवा मंसा की	वाणी के साथ-2 मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज़्यादा अनुभव करायेगी। (अ.वा.31.12.89 पृ.113 अं)	Download
823	सेवा मंसा की	दूर बैठे किसी भी आत्मा को बाप के बनने का उमंग-उत्साह पैदा करने का संदेश दे सकते हो, जो वह आत्मा अनुभव करेगी कि मुझे कोई महान शक्ति बुला रही है। ....दूर होते भी सम्मुख का अनुभव करेगी। विश्व सेवाधारी बनने का सहज साधन ही मंसा सेवा है। (अ.वा.28.1.85 पृ.147 अं., 148 आ.)	Download
824	सेवा दृष्टि से	एक सेकण्ड भी कोई आपके सामने आवे तो भी दृष्टि से ऐसा अनुभव करे कि मैने कुछ पाया। तब कहेंगे देने वाली देवी। अब चाहिए यह सर्विस, तब विश्व का कल्याण होगा। (अ.वा. 23.1.76 पृ.20 म.)	Download
825	सेवा दृष्टि से	दृष्टि की भाषा फरिश्तेपन की निशानी है। .... मीठी दृष्टि द्वारा समझाने का प्रयत्न करते हैं तो कितना सहज हो जाता है। समय अनुसार यह दृष्टि द्वारा परिवर्तन होना और परिवर्तन कराना- यही काम में आयेगा। .... लेकिन मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति - यह एक मिनट में एक घण्टा समझाने का कार्य कर सकता हैं। (अ.वा. 30.11.92 पृ.95 म)	Download
826	सेवा दृष्टि से	दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। (अ.वा.23.11.89 पृ.40 म.)	Download
827	सेवा वाचा की	जैसे कोई घर में आता है तो उसे पानी तो पूछा जाता है ना! अगर ऐसे ही चला जाए तो बुरा समझते हैं ना! ऐसे ही जो सम्पर्क में आये तो उसे बाप के परिचय का पानी ज़रूर पूछो। थोड़ा सुनाया तो पानी पूछा-सप्ताह कोर्स कराया तो ब्रह्मा भोजन कराया। कुछ-न-कुछ देना ज़रूर; क्योंकि दाता के बच्चे हो। (अ.वा.19.12.79 पृ.140 अं)	Download
828	सेवा वाचा की	जो समझते हैं वह दूसरों को समझावेंगे भी। नहीं समझा सकते हैं, तो समझना चाहिए हमारे में ज्ञान नहीं है। (मु. 20.3.70 पृ.4 अं.)	Download
829	सेवा वाचा की	आपस में मिलकर संगठन कर भाषणों आदि के प्रोग्राम रखने चाहिए। (मु.4.6.85 पृ.1 अं.)	Download
830	सेवा वाचा की	समझाते थे हर बात में बाबा-बाबा कहकर बोलो तो किसको भी तीर लग जावेगा। (अ.वा.26.3.70 पृ.232 आ)	Download
831	सेवा वाचा की	पहले-पहले 10/15 को रास्ता बताकर फिर बाद में भोजन खाना चाहिए। (मु.1.6.85 पृ.2 अं.)	Download
832	सेवा वाचा की	सारे दिन में कितने को बाप का परिचय दिया। बाप का परिचय देने बिगर सुख नहीं आता, तड़फन लग जाती है। (मु.23.3.89 पृ.2 अं.)	Download
833	सेवा वाचा की	जितना दूसरों को संदेश देते हैं उतना अपने को भी सम्पूर्णता का संदेश मिलता है; क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बंधन है। (अ.वा.24.1.70 पृ.190 आ)	Download
834	सेवा वाचा की	समझाने वाला तो बहादुर चाहिए। देहअभिमान न हो। कहाँ भी जाकर बैठे, टाइम मिल जाये तो बोलना चाहिए। मज़बूत होगा तो भाषण आदि करेगा कि गृहस्थ व्यवहार में रहते कैसे सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। .... बोलो, ब्रह्माकुमारी तो सफ़ेद वस्त्रधारी होती है। उन्हों का तो सन्यास किया हुआ है। हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं। ऐसे भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। (मु.11.3.87 पृ.2अं. 3आ.)	Download
835	सेवा वाचा की	सुनना और सुनाना है। कोई कहते हैं- हम सर्विस नहीं कर सकते हैं। प्रजा नहीं बनायेंगे तो राजा भी नहीं बनेंगे। (मु.3.4.87 पृ.1 मध्यांत)	Download

836	सेवा वाचा की	सिर्फ़ संदेश देना सर्विस नहीं, संदेश देना अर्थात् उनको अपने संबंधी बनाना। अपना संबंधी बनाना अर्थात् शिववंशी ब्रह्माकुमार/कुमारी बनाना। यह है अपना संबंधी बनाना। अपना संबंधी तब बनायेंगे जब उनको स्नेही बनायेंगे। स्नेही बनने से संबंधी बन जायेंगे। सिर्फ़ संदेश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है। यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनियाँ के अन्दर यह आवाज़ फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वेश में कर रहे हैं। उन्हीं को इस स्नेह, संबंध में लाओ। (अ.वा.28.11.69 पृ.150 म)	Download
837	सेवा वाचा की	तुम कहते हो बाबा सर्विस नहीं मिलती। अरे, सर्विस तो तुम बहुत कर सकते हो। गंगाजी पर जाकर बैठ जाओ। बोलो, यह पानी का स्नान करने से क्या होगा? क्या पावन बन जायेंगे? तुम तो भगवान को कहते ही हो- हे! पतित पावन आओ, आकर पावन बनाओ, फिर वह पतित-पावन है वा यह?(मु.28.8.70 पृ.3 आ)	Download
838	सेवा वाचा की	कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उन पर तरस पड़ना चाहिए। देखते हैं यह विकार बिगर, गंद खाने बिगर रह नहीं सकते हैं। फिर भी समझाते रहना चाहिए। नहीं माने तो समझो हमारे कुल का नहीं है। कोशिश कर पियर घर, ससुर घर का कल्याण करना है। ऐसी भी चलन न हो जो कहे यह तो हमसे बात भी नहीं करते। मुख मोड़ दिया है। नहीं। सबसे जोड़ना है। हम उनका भी कल्याण करें। बहुत रहमदिल बनना है। (मु.28.10.75 पृ.3 म.)	Download
839	सेवा वाचा की	बाबा ठेकेदार है ना। कितना बड़ा ठेका उठाया है पतित दुनिया को पावन बनाने का। तुम भी ठेका उठाओ। जब तक दो-पाँच को सन्देश न दिया है तब तक हम भोजन नहीं खावेंगे। पत्थर जैसे मनुष्यों को जब तक हमने हीरे जैसा बनने का रास्ता न बताया है तब तक खाना हराम है। (मु.28.12.76 पृ.3 आ.)	Download
840	सेवा वाचा की	भाषण ही सिर्फ़ सेवा का साधन नहीं है, अनुभव द्वारा भी प्रभावित कर सकते हो। अनुभव की टापिक सबसे ज़्यादा अट्रैक्ट करने वाली होती है। (अ.वा.1.2.79 पृ.260 अं.)	Download
841	सेवा वाचा की	सिर्फ़ बोलना ही सर्विस नहीं होती; लेकिन अपना चेहरा सदा हर्षित हो। रूहानी चेहरा भी सेवा करता है। (अ.वा.11.4.85 पृ.16 आ.)	Download
842	सेवा वाचा की	सतयुग में यह रावण होता नहीं। गाया जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। यहाँ है सम्पूर्ण विकारी। यह समझाना तो बहुत सहज है। हिम्मत चाहिए। कहाँ भी जाकर समझावें। यह भी लिखा हुआ है हनुमान सतसंग में पिछाड़ी में जूत्तियों में जाकर बैठता था। तो महावीर जो होंगे वह कहाँ भी जाकर युक्ति से सुनेंगे -देखें क्या बोलते हैं? तुम कहाँ भी वेश बदल जा सकते हो। बाबा भी बहुरूपी है ना। कपड़े बदलने वाले बहुरूपी बहुत होते हैं। कब कौन-सी ड्रेस, कब कौन-सी पहन भीख माँगने जाते हैं। तो तुम भी जो महावीर हो , ड्रेस बदलकर कहाँ भी जाकर सुनो। फिर बात भी करनी है, हमको यह समझ में नहीं आता है कि भगवान कौन है?.......... भगवान तो नई दुनिया रचने वाला है। हम उनको ढूँढ़ रहे हैं। युक्ति से प्रश्न पूछ फिर खुलना चाहिए। हम गुप्त वेश में आये थे। इसमें कोई कुछ भी करेंगे नहीं। तुम सन्यासियों के झुण्ड में भी जा सकते हो; परन्तु वेश बदलना पड़े। ब्र०कु० सफेद पोशधारी मशहूर हो गई हैं। तुम ड्रेस बदल कहाँ भी जा सकते हो उनका कल्याण करने। बाबा भी गुप्त वेश में तुम्हारा कल्याण कर रहे हैहैं। तुम फिर इस स्थूल देश में ड्रेस बदलकर जाओ कल्याण करने। मन्दिरों आदि में कहाँ भी निमन्त्रण मिलता है तो जाकर समझाना है। (मु.20.1.76 पृ.3 म.)	Download
843	सेवा कर्मणा की	स्थूल सेवा भी बहुत अच्छी की होगी तो पहले आवेंगे। बहुत प्यार से यज्ञ की हड्डी सर्विस करते हैं तो फल भी अच्छा मिलेगा। धमचक्र मचाने वाले ऊँच पद पा न सके। कोई-2 नौकर भी धणी को ऐसा सुख देते हैं जो बच्चा भी न दे सके। (मु.20.3.69 पृ.4 मध्यादि)	Download

844	सेवा कर्मणा की	जिसका हर कर्म कला के रूप में होता है उनके हर कर्म अर्थात् गुणों का गायन होता है, ... जिस कला के रूप को देख औरों में भी प्रेरणा भरती है, उनके कर्म भी सर्विसएबुल होते हैं। (अ.वा.5.10.71 पृ.186 अं.)	Download
845	सेवा कर्मणा की	बापदादा भी सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। ऐसे नहीं कि कर्मणा सेवा करते हैं, कोई ज्ञान की तो करते नहीं हैं; लेकिन कर्म का प्रभाव वाणी से भी बड़ा है। एक होता है सुना हुआ और दूसरा होता है देखा हुआ। (अ.वा. 31.3.90 पृ.212 अं)	Download
846	सेवा कर्मणा की	बहुत हैं जो कुछ समझा नहीं सकते, तो स्थूल काम करो। मिलेट्री में सब काम करने वाले होते हैं। (मु. 25.1.84 पृ.3 आ.)	Download
847	सेवा कर्मणा की	जितना स्व के ऊपर अटेन्शन होगा उतना ही सेवा में भी अटेन्शन जायेगा। .... अगर यह स्मृति रहेगी कि मेरा हर कर्म सेवा अर्थ है तो स्वतः ही श्रेष्ठ कर्म करेंगे। (अ.वा. 27.11.85 पृ.65 आ., 66 आ.)	Download
848	सेवा कर्मणा की	कई समझते हैं सर्विस करना सहज है, साधन भी सहज हैं; लेकिन हर आत्माओं के साथ सम्पर्क में आते हुए संस्कारों को मिलाना यह भी इतना सहज अनुभव हो, जैसे भाषण करना सहज है। वह मुख का भाषण है, यह कर्म का भाषण है। इसमें जो सक्सेसफुल हो जाते हैं वही फुल पास होते हैं। (अ.वा.9.4.73 पृ.20 म.)	Download
849	सेवा कर्मणा की	इस शरीर से जितना हो सके काम लेना चाहिए। जितना हड्डी सर्विस करते रहेंगे उतनी ही ताकत मिलेगी। ईश्वरीय सर्विस में ताकत ज़रूर मिलती है। (मु.4.3.69 पृ.4 अं.)	Download
850	सेवा कर्मणा की	सर्विस सिर्फ़ मुख से नहीं होती; लेकिन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी सर्विस कर सकते हो। (अ.वा.1.3.71 पृ.31 आ.)	Download
851	सेवा कर्मणा की	बाबा की बच्चों को मना है, बच्चे किसी से सेवा मत लो। तुम्हें सब कुछ अपने हाथ से करना है। (मु.6.3.87 पृ.3 म.)	Download
852	सेवा कर्मणा की	निरन्तर समझो कि हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। भल कर्मणा सर्विस भी कर रहे हो, फिर भी समझो मैं ईश्वरीय सर्विस पर हूँ। भल भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य; लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पावरफुल बनाना, वह तो ईश्वरीय सर्विस हुई ना। .... हम ईश्वरीय संतान सिर्फ़ और सदैव इसी सर्विस के लिए ही हैं। .... जब तक यह ईश्वरीय जन्म है तब तक हर सेकेण्ड, हर संकल्प, हर कार्य ईश्वरीय सर्विस है। (अ.वा.30.5.71 पृ.87 मध्यादि)	Download
853	सेवा कर्मणा की	यज्ञ कारोबार अथवा कर्मणा सर्विस की भी मार्क्स है ना। फिर भी " विद आनर्स" में वह 100 मार्क्स भी हेल्प देंगे ना; लेकिन ज़रूरी है जिस समय कारोबार वा वाचा सर्विस करनी है तो लक्ष्य यह रखना चाहिए कि यह ईश्वरीय सर्विस है, यह करोबार है। (अ.वा.4.7.71 पृ.126 अं.)	Download
854	सेवा कर्मणा की	बाबा के पास आयेंगे तो पहले झाड़ू आदि लगाना, सब करना पड़ेगा। (मु.3.3.87 पृ.3 आ.)	Download
855	सेवा कर्मणा की	बाप की सर्विस करनी चाहिए। रूहानी सर्विस, नहीं तो स्थूल सर्विस भी है। (मु.2.9.75 पृ.2 आ.)	Download
856	सेवा कर्मणा की	बहुतों में देहअभिमान बहुत रहता है। बाबा ने समझाया है कब कोई से भी सर्विस नहीं लो। अपने हाथ से भोजन आदि बनाओ। तो भी बहाना बनाते रहते। अरे, तुम सब कुछ कर सकते हो। समझो, स्टूडेन्ट्स क्लास में आ जाते हैं- बोलो, अभी मैं10 मिनट में रोटी बनाकर आती हूँ। तो वह भी खुश होंगे। तो वह समझेंगे यह तो रूहानी, जिस्मानी दोनों सर्विस करती हैं। (मु.3.9.92 पृ.3 म.)	Download

857	सेवा का फल	यह ईश्वरीय ज्ञान देना ही ईश्वरीय सेवा है। सेवा का सदा ही मेवा मिलता है। कहावत है ना-'करो सेवा तो मिले मेवा'। तो ईश्वरीय सेवा करने से अतीन्द्रिय सुख का मेवा मिलता है, शक्तियों का मेवा मिलता है।(अ.वा.17.10.87 पृ.92 आ.)	Download
858	सेवा का फल	सर्विस करने से ही देहअभिमान कम होगा। (मु.18.8.70 पृ.1 मध्यांत)	Download
859	सेवा का फल	सेवा के सिवाय अपने समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। सेवा का भी खाता जमा होता है। सच्ची दिल से सेवा करने वाले अपना खाता बहुत अच्छी तरह से जमा कर रहे हैं।........ ऐसे कभी नहीं समझना हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है सब जमा होता है। फाइल नहीं है; लेकिन फाइनल है।(अ.वा.1.3.86 पृ.224 म)	Download
860	सेवा का फल	बाबा मैं आपका हूँ। आप जिस सर्विस में चाहें लगा दें। फिर रेसपान्सिबुल बाबा होगा। एसलम में दाखिल हुए तो बाबा सब बन्धनों से मुक्त कर देगा। (मु.10.3.87 पृ.2 अं.)	Download
861	सेवा का फल	सर्विस करने वाले कब भूख नहीं मर सकते हैं। तो सर्विस का बच्चों को शौक रखना चाहिए। (मु.1.6.85 पृ.1 अं.)	Download
862	सेवा का फल	सेवा भी वास्तव में उन्नति का साधन है। अगर सेवा को सेवा की रीति से करें तो सेवा लिफ्ट देती है आगे बढ़ाने की। सिर्फ़ प्लेन बुद्धि बनकर प्लैन बनायें, ज़रा भी कुछ यहाँ-वहाँ का मिक्स न हो। (अ.वा.3.2.88 पृ.250 म.)	Download
863	सेवा का फल	जब तक किसको आप समान नहीं बनाया है तब तक खुशी का पारा नहीं चढ़ेगा। ....जिसके पास धन हो और दान न करे तो उनको मनहूस कहा जाता है। यहाँ फिर ऐसे नहीं है। जिनके पास है वह तो देते रहेंगे, नहीं तो समझेंगे इनके पास धन है नहीं। (मु.14.3.87 पृ.3 अं.)	Download
864	सेवा का फल	कोई भी सेवा के पुण्य का फल स्वतः ही प्राप्त होता है। पुण्य का फल जमा भी होता है और फिर अभी भी मिलता है। (अ.वा.18.1.88 पृ.222 अं.)	Download
865	सेवा का फल	उस गवर्मेन्ट की 8 घण्टा सर्विस करते हो, उससे क्या मिलता है? हज़ार दो, पाँच हज़ार... इस गवर्नमेंट की सर्विस करने से तुम पदमापदमपति बनते हो। तो कितना दिल से सेवा करनी चाहिए। (मु.25.3.89 पृ.3 अं.)	Download
866	सेवा का फल	यज्ञ सर्विस वा जो बापदादा का कार्य है उसमें जो नज़दीक होगा वही वहाँ खेलपाल आदि में नज़दीक होंगे। यज्ञ की ज़िम्मेवारी वा बापदादा के कार्य की जिम्मेवारी के नज़दीक जितना-2 होंगे उतना वहाँ भी नज़दीक होंगे। (अ.वा. 9.6.69 पृ.74 म.)	Download
867	सेवा का फल	जितनी जो सेवा करता है उतना सेवा का फल- समीप सम्बन्ध में आता है। यहाँ के सेवाधारी वहाँ के राज्य फैमिली(परिवार) के अधिकारी बनेंगे। यहाँ जितनी हार्ड(सख़्त) सेवा करते, उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं वह वहाँ काम करेंगे। हिसाब है ना। एक-2 सेकेण्ड का, एक-2 काम का हिसाब-किताब बाप के पास है; इसलिए एक-2 सेकेण्ड का हिसाब कर चुक्तू भी करता है। गिनती करके हिसाब देता है, ऐसे नहीं देता। (अ.वा.21.10.87 पृ.99 म.)	Download
868	सेवा का फल	शुभ भावना का फल प्राप्त नहीं हो- यह हो ही नहीं सकता। सेवाधारियों के शुभ भावना, शुभ कामना की धरनी सहज फल देने के निमित्त बनेगी। (अ.वा.2.11.87 पृ.117 म.)	Download
869	सेवा का फल	सेवा का भी प्रत्यक्षफल मिलता है। चाहे कर्मणा भी करो, कर्मणा की भी खुशी होती है। मानो सफ़ाई करते हो; लेकिन जब स्थान सफ़ाई से चमकता है तो सच्चे दिल से करने कारण स्थान को चमकता हुआ देख करके खुशी होती है ना। (अ.वा.18.1.88 पृ.222 म.)	Download

870	सेवा का फल	बच्चे तो सब शिवबाबा के हैं - 500 करोड़ हैं - इतने यह सब बाप के बच्चे ठहरे ना; परन्तु मददगार सब नहीं होते हैं। इस समय तुम जितनी मदद करते हो उतना ऊँच बनते हो। (मु.24.9.75 पृ.2 म.)	Download
871	सेवा का फल	सेवा की वृद्धि हो रही है। जितना वृद्धि करते रहेंगे उतना महान पुण्य आत्मा बनने का फल सर्व की आशीर्वाद प्राप्त होती रहेगी। .... पुण्य आत्मा बनना भी ज़रूरी है। (अ.वा.27.3.86 पृ.286 अं.)	Download
872	सेवा का फल	बेपरवाह निर्भय हो करके सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो पदम गुणा मदद भी मिलती है। .... वह जमा का खाता समय पर खींचेगा ज़रूर। (अ.वा.27.2.86 पृ.239 आ)	Download
873	सेवा का फल	अभी संस्कार को मारने में समय नहीं लगाओ; लेकिन सेवा के फल से, फल की शक्ति से स्वतः ही मर जायेगा। (अ.वा.18.2.86 पृ.194 म.)	Download
874	सेवा का फल	जितनी बड़े ते बड़ी सेवा के निमित्त बनते हो, उतना ही सेवा का प्रत्यक्ष फल बहुत बढ़िया और बड़ा मिलता है। ....खुशी की शक्ति बढ़ जाती है।........रात है वा दिन है- यह पता नहीं पड़ता है ना।........सेवा नहीं; लेकिन उत्सव मना रहे हो; इसलिए सेवा उत्साह दिलाती है और उत्साह अनुभव कराती है। (अ.वा.16.2.88 पृ.254 म.)	Download
875	सेवा का फल	सर्विसएबुल की तो बाबा भी महिमा करते रहेंगे। ....सर्विस करेंगे तो बाप भी उनको याद करेंगे। सर्विस ही नहीं करते तो बाप याद क्यों करे? बाप याद उन बच्चों को करेंगे जो प्रीत बुद्धि होंगे। (मु.13.4.85 पृ.3 अं.)	Download
876	सेवा का फल	बाप बैठ समझाते हैं, मेरी सर्विस करने वाले बच्चे ही मुझे प्रिय लगते हैं। बहुतों को सुखदाई बनाते हैं, ऐसे बच्चों को याद करता रहता हूँ। (मु.12.4.89 पृ.3 अं.)	Download
877	सेवा का फल	बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सब कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बहुत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। (मु.14.5.94 पृ.1 म.)	Download
878	सेवा का फल	सर्विसएबुल बीमार होगा तो तरस पड़ेगा। रात को जागकर भी उनकी आत्मा को याद करेंगे; क्योंकि उनको पावर की दरकार है। याद करते हैं तो उनको रिटर्न में याद मिलती है। बाप का लव बच्चों पर जास्ती है। फिर उनको भी याद पहुँचती है। (मु.2.3.89 पृ.2 अं.)	Download
879	सेवा का फल	जो बच्चे जास्ती सर्विस करते हैं वो ज़रूर सभी को प्रिय लगेंगे। (मु.14.12.76 पृ.3 आ.)	Download
880	सेवा का फल	सेवा नहीं तो खुशी नहीं, इसलिए सेवा में तत्पर रहो। रोज़ किसी न किसी को दान ज़रूर करो। दान करने के बिना नींद ही नहीं आनी चाहिए। (अ.वा.27.3.82 पृ.325 अं.)	Download
881	सेवा का फल	बापदादा को सबसे अच्छी बात यही लगती है कि सदा ही सेवा में अथक बन आगे बढ़ रहे हैं और यही सेवा के सफ़लता की विशेषता है कि कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। (अ.वा.13.3.86 पृ.259 मध्यादि)	Download
882	सेवा का फल	सच्ची सेवा सदा बेहद की स्थिति का, बेहद की खुशी का अनुभव कराती है। अगर ऐसी अनुभूति नहीं है तो वह मिक्स सेवा है। ......सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे को हरा-भरा करना। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे का अनुभव करना, न कि काँटों के जंगल में फँसना। उलझन, अप्राप्ति, मन की मूँझ और मौज, अभी-अभी मूँझ- यह हैं काँटें। (अ.वा.13.1.86 पृ.150 आ)	Download
883	सेवा का फल	बापदादा सहयोगी बच्चों को सदा ही साथ देखते हैं। सहयोगी बच्चों को सदा ही सहयोग प्राप्त होता है। (अ.वा.18.1.84 पृ.121 आ)	Download
884	सेवा का फल	जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही। जैसे छोटे बच्चे को सदा कहते हैं आगे चलो, बड़े पीछे रहते हैं। छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्ष फल मिलता ही रहता है। (अ.वा.26.2.84 पृ.174 अं., 175 आ.)	Download

885	सेवा का फल	मुझे जो जितना याद करते हैं उनको मैं भी याद करता हूँ। जितना जो मेरी सर्विस करते हैं उतना मैं उनकी सर्विस करता हूँ, प्यार करता हूँ। अनन्य बच्चे सर्विस करके आते हैं उनको मैं आफरीन देता हूँ। तुम बहुतों का कल्याण करती हो। यह ही आफरीन है। शाबाश प्यार है। (मु.2.7.74 पृ.2 आ.)	Download
886	सेवा का फल	सर्विसएबुल बच्चे ही बाबा को याद करते हैं। जो बहुतों को आपसमान बनाते हैं उनको ही अतीन्द्रिय सुख रहता है। कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि याद ही नहीं पड़ते। आप मुये मर गई दुनियाँ। बाबा को फालो करने वाले कब दुनियावी बातें पूछेंगे भी नहीं। बाबा समझ जाते हैं उनकी लागत है।(मु.20.12.75 पृ.3 अं.)	Download
887	सेवा का फल	प्राइज भी उन्हों को ही मिलती है जो काम करके दिखाते हैं। (मु.15.3.89 पृ.2 म.)	Download
888	सेवा का फल	अगर सच्चे सेवाधारी हैं तो यहाँ भी रिगार्ड मिलने के योग्य बन जाते। अगर मिक्स हैं तो आज दीदी-दादी कहेंगे, कल सुना भी देंगे। (अ.वा.3.4.81 पृ.125 अं.)	Download
889	सेवा का फल	तन सेवा में लगाओ और 21 जन्मों के लिए सम्पूर्ण निरोगी तन प्राप्त करो। (अ.वा.18.2.85 पृ.169 मध्यांत)	Download
890	सेवा का फल	रहना भी अपने घर में है। सब यहाँ तो नहीं बैठ जायेंगे। हाँ, पिछाड़ी में फिर आकर सभी वह रहेंगे जो बाप की सर्विस में तत्पर रहते हैं। (मु.17.4.87 पृ.3 म.)	Download
891	सेवा का फल	कुमारियाँ निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। ...... जितना-जितना अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जायेंगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। (अ.वा.13.2.78 पृ.49 अं.)	Download
892	सेवा का फल	सेवा बाप के साथ का अनुभव कराती है। सेवा पर जाना माना सदा बाप के साथ रहना। चाहे साकार रूप में रहें, चाहे आकार रूप में; लेकिन सेवाधारी बच्चों के साथ बाप सदा साथ है ही है। (अ.वा.15.3.85 पृ.237 अं.)	Download
893	सेवा का फल	मंसा नहीं तो वाचा, कर्मणा कोई न कोई सर्विस में लग जाना चाहिए, तो अजूरा मिलेगा। (मु.19.9.73 पृ.3 म.)	Download
894	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	अभी तक सिर्फ आवाज़ फैलने तक रिज़ल्ट है। आवाज़ फैलाने में पास हो; लेकिन आत्माओं को बाप के समीप लाने का आवाहन अभी करना है। आवाज़ फैला है; लेकिन आत्माओं का आवाहन करना और बाप के समीप लाना यह पुरुषार्थ अभी रहा हुआ है। (अ.वा.22.10.70 पृ.310 आ)	Download
895	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बड़े-2 आदमियों को बड़ी युक्ति से पकड़ना चाहिए। उन्हों से ही आवाज़ निकलेगा और वाह-2 होगी। फिर कोई कुछ कर नहीं सकेंगे। (मु.9.12.71 पृ.3 अं.)	Download
896	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	अपने शरीर का भी ख़्याल न कर सारा दिन सर्विस में रहना उसको कहा जाता है हड्डी सर्विस। एक है जिस्मानी हड्डी सर्विस। दूसरी है रूहानी हड्डी सर्विस। (मु.9.10.71 पृ.2 अं.)	Download
897	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बाप से वर्सा लेना है तो मंसा, वाचा, कर्मणा सर्विस करनी है। इस सर्विस में ही यह अन्तिम जन्म व्यतीत करना है। अगर और दुनियावी बातों में लग गये तो फिर यह सर्विस कब करेंगे? कल-2 करते मर जावेंगे। (मु.30.4.71 पृ.3 अं.)	Download
898	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बुढ़ियों को समझाकर ऐसा तैयार करो कि जो बाबा बोले कि आठ बुढ़ियों को भेजो तो वो झट आ जावें। (मु.6.9.69 पृ.3 अं.)	Download

899	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	जैसे कोई डूबता है तो उनको बचाना होता है। हमको सिखलाने वाला डूब पड़ा है। माया ने पकड़ लिया है ड्रामाप्लैन अनुसार। खुश होकर उनका साथी न बनना चाहिए। बचाने की कोशिश करनी चाहिए। कितनी भी डिससर्विस कर माया के वश हो जाये, फिर तुम रहमदिल बाप के बच्चे हो तो रहमदिल बन माया से बचा लेना चाहिए। (मु.28.12.70 पृ.4 आ.)	Download
900	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	जैसे बाप ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट बन सेवा पर उपस्थित हैं ऐसे ही हरेक बाप के साथी व सहयोगी बच्चों को भी बाप के समान ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट बनना है। (अ.वा.6.9.75 पृ.97 अं.)	Download
901	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बाप तो कहते छोटी-2 बच्चियाँ बैठ समझानी देवें चित्र पर, और भी सेन्स से समझावें, सिर्फ तोते मिसल नहीं। (मु.6.4.77 पृ.1 म.)	Download
902	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	अगर स्वयं निर्विघ्न बने हो तो बनने वालों का कर्तव्य क्या है?.............उनका कर्तव्य है दूसरों को बनाना। तो बना रहे हो न? तो क्या पहले चैरिटी बिगिन्स एट होम है अर्थात् अपने साथियों को, वे साथी कौन से हैं? आपके जो ब्राह्मण परिवार के साथी हैं, तो उन अपने साथियों को आप समान बनाने के बाद फिर बाप समान बनाना है। (अ.वा.23.9.73 पृ.157 आ)	Download
903	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	इस वर्ष ऐसा कोई ग्रुप बनाओ जिस ग्रुप की विशेषताओं को प्रैक्टिकल में देखकर दूसरों को प्रेरणा मिले और वायब्रेशन फैले। जैसे गवर्मेन्ट भी कहती है कि आप कोई ऐसा स्थान लेकर एक गाँव को उठा करके ऐसा सैम्पल दिखाओ जिससे समझ में आए कि आप प्रैक्टिकल कर रहे हैं, तो उसका प्रभाव फैलेगा। ऐसे ही कोई ग्रुप बने जिससे दूसरों को प्रेरणा मिले। .... ऐसे अगर छोटे-2 ग्रुप प्रैक्टिकल प्रमाण बन जाएँ तो वह श्रेष्ठ वायब्रेशन वायुमण्डल में स्वतः ही फैलेगा। .... तो एक से दो, दो से तीन ऐसे फैलता जायेगा। (अ.वा.9.1.85 पृ.114 अं., 115 आ.)	Download
904	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	कैसा भी कमज़ोर तन हो, रोगी हो; लेकिन वाचा-कर्मणा नहीं, तो मंसा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। (अ.वा.18.2.85 पृ.169 म.)	Download
905	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	मन की मेहनत का कारण क्या बनता है, क्या करते हैं? टेढ़े-बाँके बच्चे पैदा करते। जिसका कभी मुँह नहीं होता, कभी टाँग नहीं, कभी बाँह नहीं होती, ऐसे व्यर्थ की वंशावली बहुत पैदा करते हैं ....इसलिए अब कमज़ोर रचना बंद करो तो मन की मेहनत से छूट जाएँगे। (अ.वा.15.3.85 पृ.235 अं., 236 आ.)	Download
906	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	वाणी से तीर चलाना आ गया है, अब ‘‘शान्ति’’ का तीर चलाओ, जिससे रेत में भी हरियाली कर सकते हो। कितना भी कड़ा सा पहाड़ हो; लेकिन पानी निकाल सकते हो। (अ.वा.13.11.81 पृ.138 अं)	Download
907	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	आत्मा-परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं; लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव कराना यह नवीनता है, जिसको कहा जाता है रियल्टी का अनुभव करना। (अ.वा.18.11.81 पृ.154 मध्यादि)	Download
908	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	ऐसे तुम बच्चों को सिर्फ कहना नहीं है कि भगवान आया हुआ है। इससे कोई समझेंगे नहीं, और ही हँसी करेंगे। ....युक्ति से दो बाप का राज़ बैठ समझाना चाहिए। .... सिर्फ भगवान आया है यह कहने से कोई समझेंगे नहीं, समझेंगे ब्र0कु0 सिर्फ ढिंढोरा पीटती रहती हैं। ऐसी-2 उल्टी सर्विस करने से और ही फिर सर्विस में ढिलाई आ जाती है। एक तरफ कहते हैं भगवान आया है, हमको भगवान पढ़ाते हैं, फिर जाकर शादी करते हैं, शराब आदि पीते हैं। (मु.27.8.76 पृ.1अं., 2आ.)	Download

909	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	किसी को सन्तुष्ट करना यह सबसे बड़ी सेवा है। मेहमान निवाज़ी करना यह सबसे बड़ा भाग्य है। कहते भी हैं मेहमान भाग्यशाली के घर में आते हैं। ....माया कभी मेहमान तो नहीं बनती है ना? दरवाज़ा बन्द है? अगर किला मज़बूत होता है तो दुश्मन नहीं आता है। (अ.वा.25.1.80 पृ.246 अं.)	Download
910	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	न चाहते हुये भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। (अ.वा.14.7.74 पृ.110 म.)	Download
911	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	जहाँ भी पाँव रखा है वहाँ सफलता न हो यह हो नहीं सकता। कोई धरती जल्दी ही फल देती है, कोई धरती फल देने में समय लेती है। (अ.वा.7.1.78 पृ.13 अं.)	Download
912	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	कहते हैं धंधों सभी में धूर, बिगर धंधे नर से नारायण बनाने की। (मु.12.9.71 पृ.2 आ.)	Download
913	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बाहर का कुछ भी शो आदि करना यह तो दुनियावी बातें हैं। अपना ज्ञान ही है गुप्त। (मु.20.2.74 पृ.4 मध्यादि)	Download
914	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	कहाँ भी प्रदर्शनी आदि हो हाफ पे पर भी जाय सर्विस करें। कोई तो फुल पे भी छोड़कर जाय सर्विस करते हैं। बाबा पूछते हैं बाल-बच्चे लिए कुछ चाहिए तो भेज दें। शरीर निर्वाह चाहिए तो कोई दस हज़ार से करे चाहे तो दस रुपया से करे। (मु.4.11.71 पृ.3 अं.)	Download
915	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	अब कोई भी कामना दिल में नहीं रखनी है। .... बड़ी नौकरी मिले यह भी जास्ती न रहना है। .... आस कोई भी नहीं रखो सिवाय बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। (मु.30.6.71 पृ.1 आ.)	Download
916	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	टूमच धंधे आदि में मत जाओ। कितना चिंतन रखना पड़ता है। बाबा ने इनको कैसे छुड़ा दिया। (मु.14.2.74 पृ.3 आ.)	Download
917	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है नज़र से निहाल, तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस यह प्रैक्टिकल में लानी है। .... जिस सर्विस को आप सर्विस समझते हो प्रजा बनाने की, वह तो आपके प्रजा की भी प्रजा जो बननी है, वह प्रदर्शनियों में बन रही है। (मु.7.10.76 पृ.3 म)	Download
918	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	क्वालिटी बनाना है। क्वान्टिटी बनाना यह तो चल रहा है; लेकिन अब भी ऐसी क्वालिटी वाली आत्माएँ बनाने की सर्विस रही हुई है। क्वालिटी वाली एक आत्मा क्वान्टिटी को आपे ही लाएगी। एक क्वालिटी वाला अनेकों को ला सकते हैं। (अ.वा.13.11.69 पृ.138 अं)	Download
919	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सिर्फ संदेश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है, यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनियाँ के अन्दर यह आवाज़ फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्तवेश में कर रहे हैं। उन्हीं को इस स्नेह, सम्बन्ध में लाओ। (अ.वा.28.11.69 पृ.150 म)	Download
920	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	वरदान भूमि के एक-2 चरित्र में, कर्म में विशेष वरदान भरे हुए हैं। यज्ञ भूमि में आकर चाहे सब्जी काटते हो, अनाज साफ करते हो, इसमें भी यज्ञ सेवा का वरदान भरा हुआ है। (अ.वा.18.11.85 पृ.44 आ)	Download
921	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	औरों के प्रति एग्ज़ाम्पल बनना है। यही सर्विस है। समय भल न भी मिले सर्विस का; लेकिन चरित्र भी सर्विस दिखला सकता है। चरित्र से भी सर्विस होती है, सिर्फ वाणी से नहीं होती। आपके चरित्र उस विचित्र बाप की याद दिलावे। यह तो सहज सर्विस है ना। (अ.वा.23.1.70 पृ.178 अं.)	Download

922	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	मुरली लिखना अच्छी सर्विस है। सब खुश होंगे। आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं, नहीं तो लिखते हैं अक्षर अच्छे नहीं हैं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा, हम अधिकारी हैं जो आपके मुख से रतन निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। ....मुरली की सेवा भी अच्छी रीति करनी चाहिए। सब भाषायें सीखनी चाहिए। मराठी, गुजराती... जैसे बाबा रहमदिल है, बच्चों को भी रहमदिल बनना है। पुरुषार्थ कर जीवन बनाने के लिए मददगार बनना है। बाक़ी उस दुनियाँ का जीवन तो बिल्कुल ही फीका है। (मु.10.3.87 पृ.2 अं.)	Download
923	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सेवा का सबसे तीखा साधन है समर्थ संकल्प से सेवा। समर्थ संकल्प भी हो, बोल भी हो और कर्म भी हो। तीनों साथ-2 कार्य करें। यही शक्तिशाली साधन है। (अ.वा.6.1.86 पृ.138 आ.)	Download
924	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	कमज़ोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बनाओ- यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना यह कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना- यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेंगे। (अ.वा.21.12.89 पृ.96 आ)	Download
925	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	जैसे कोई साहूकार होता है तो अपने नज़दीक सम्बन्धियों को मदद देकर ऊँचा उठा लेता है, ऐसे वर्तमान समय जो भी कमज़ोर आत्माएँ सम्पर्क और सम्बन्ध में हैं उन्हों को विशेष सकाश देनी है। (अ.वा.21.1.72 पृ.219 म.)	Download
926	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	तुम पतित से फरिश्ते बनते हो। फरिश्ते स्थूलवतन में नहीं होते हैं। फरिश्तों को हड्डी, माँस नहीं होती है। यहाँ इस रूहानी सर्विस में हड्डी आदि सब खलास कर देते हैं। फिर फरिश्ते बन जाते हैं। अभी तो हड्डी है ना। यह भी लिखा हुआ है अपनी हड्डियाँ भी दे दीं सर्विस में। गोया अपनी हड्डियाँ खलास करते हैं। स्थूलवतन से सूक्ष्मवतनवासी बनना है। यहाँ हम हड्डी देकर सूक्ष्म बन जाते हैं। इस सर्विस में सब स्वाहा करना है। (मु.20.1.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
927	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	कोई कहे, हमको सेवा मिलती नहीं है- कह नहीं सकता। वायुमण्डल को बनाने की कितनी सेवा रही हुई है! .... बीमार भी हो तो भी सेवा का चांस है। कोई भी हो- चाहे अनपढ़ हो, चाहे पढ़ा हुआ हो, किसी भी प्रकार की आत्मा, सबके लिए सेवा का साधन बहुत बड़ा है। तो सेवा का चांस मिले- यह नहीं, मिला हुआ है। (अ.वा.18.1.88 पृ.222 अं., 223 आ.)	Download
928	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सर्विसएबुल बच्चों का भी काम है नब्ज़ देखना। अगर हमारे कुल का होगा तो शान्त हो जायेगा। (मु.11.3.89 पृ.3 अं.)	Download
929	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	बेहद में रहो तो हद की बातें स्वतः ही ख़त्म हो जावेंगी। आप लोग हद की बातों में समय व्यर्थ कर और फिर बेहद में टिकने चाहते हो; लेकिन अब वह समय गया। अभी तो बेहद की सर्विस में सदा तत्पर रहो तो हद की बातें आपे ही छूट जावेंगी। (अ.वा.24.10.71 पृ.204 अं)	Download
930	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	ज्ञान के हिसाब से विशेष व्यक्ति नहीं; लेकिन दुनियाँ के हिसाब से जो विशेष व्यक्ति हैं उनकी सेवा करो। इससे स्वतः ही अख़बार वाले, रेडिओ, टी.वी. वाले आवाज़ फैलाते हैं। ऐसी कोई विशेष आत्मा निकालो जिनके आवाज़ से अनेक आत्माओं का कल्याण हो जाये। (अ.वा.6.1.79 पृ.183 अं.)	Download
931	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रॉयल फैमिली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्लाहना दे कि हमें सन्देश नहीं मिला है। (अ.वा.14.1.79 पृ.216 म.)	Download

932	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म योग की शक्ति स्वत: ही आत्माओं को आपके तरफ़ आकर्षित करेगी तो यही सहज सेवा है। (अ.वा.14.1.79 पृ.215 अं.)	Download
933	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सम्पर्क में आने वालों को आगे बढ़ाते चलो।.........हर वर्ग की सेवा करनी है। अन्त में कोई भी उल्लाहना न दे सके कि हमें नहीं बताया। इसलिए सब धर्म वालों को सन्देश ज़रूर देना है। (अ.वा.30.1.79 पृ.253 आ)	Download
934	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	सेवा ज़रूर करनी है, जैसे भी करो। सब सबजेक्ट में मार्क्स लेनी है। अगर एक भी कम रह गई तो पास विद आनर कैसे होंगे; इसलिए सब सबजेक्ट को कवर करो। (अ.वा.1.2.79 पृ.260 अं.)	Download
935	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी	एक क्वालिटी वाला 100 क्वान्टिटी के बराबर है। क्वालिटी वाली सेवा इसको कहा जाता है शक्तिशाली सेवा। (अ.वा.27.11.85 पृ.64 अं.)	Download
936	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	बाप को सर्विसएबुल बच्चियाँ बहुत चाहिए। सेन्टर्स खुलते जाते हैं। बच्चों को शौक है, समझते हैं बहुतों का कल्याण होगा; परन्तु टीचर्स सम्भालने वाली भी अच्छी महारथी चाहिए। टीचर्स भी नम्बरवार हैं। (मु.4.4.89 पृ.2 अं.)	Download
937	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	घर में भी सर्विस तो कर सकते हैं ना। जो आवेंगे उनको टच करते रहेंगे। ऐसे बहुत हैं जो अपन पास गीतापाठशाला खोल बहुतों की सर्विस करते रहते। ऐसे नहीं कि यहाँ आकर बैठना है। (मु.9.2.74 पृ.2 अं.)	Download
938	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	सेन्टर्स सब शिवबाबा के हैं। तुम्हारा सेन्टर फिर कहाँ से आया? तुम शिवबाबा के हो। विश्व विद्यालय बाप का है न। ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मेरा यह सेन्टर है। यह खयाल आया और मरा। ऐसे मेरा-2 करते कितने गिर पड़ते हैं। (मु.19.9.73 पृ.3 आ.)	Download
939	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	अगर घर में बच्चा पतित है तो सेन्टर चल न सके। वायुमण्डल बड़ा अच्छा चाहिए। यह तो लाचारी फ्लैट में सेन्टर रखे जाते हैं। वास्तव में सेन्टर अलग किनारे होना चाहिए। (मु.9.5.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
940	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	ल०ना० के मन्दिर में भी जाय तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। जो मन्दिर के बड़े ट्रस्टी हैं, बड़ों से मिलना चाहिए। आजकल माताओं का भी मान कम हो गया है; क्योंकि भीख माँगने वाले फ़क़ीरयानी बहुत निकल पड़ी हैं। (मु.20.11.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
941	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	देहअभिमान को छोड़ो। यह हमारा सेन्टर है, यह इनका सेन्टर है, यह जिज्ञासु यहाँ क्यों जाते हैं? सब शिवबाबा के सेन्टर हैं कोई कहाँ भी जावे। तुम्हारा थोड़े ही सेन्टर है। तुमको यह क्यों होता है कि फलाना हमारे सेन्टर पर क्यों नहीं आता? कहाँ भी जाए। समझते हैं यह हमारे सेन्टर पर आवे, यहाँ पैसा देवे। वहाँ क्यों देता है? बस। .... यह जैसे इनडायरैक्ट माँगना हुआ। यहाँ देवें, वहाँ न देवें। ऐसे भी समझने वाली हैं। (मु.9.6.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
942	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	गाँवों में जाए सर्विस करो। ऐसे बहुत गाँव हैं जहाँ आपस में मिलकर क्लास करते हैं। बाबा को पत्र लिखते हैं। (मु.24.11.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
943	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	गीता पढ़ने वा सुनने से कब कोई मनुष्य से देवता बन न सके। (मु.26.2.76 पृ.3 आ.)	Download

944	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	गाडफादर को स्प्रीचुअल नालेजफुल कहा जाता है। तो तुम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी नाम लिखेंगे इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे। फिर बोर्ड में भी वह अक्षर हटाकर यह स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राय करके देखो। लिखो, गाडफादरली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। इनका एम ऑब्जेक्ट यह है। .... फिर सब सेन्टर्स पर लिखना पड़ेगा, गाडफादरली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। (मु.20.3.74 पृ.4 अं.)	Download
945	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	ऐसे नहीं तुम अपना दुकान निकाल बैठो। वह दुकान चल न सके। शिवबाबा के डायरैक्शन बिगर कुछ भी करेंगे तो वह शिवबाबा का तो हुआ नहीं। शिवबाबा के नाम पर तुम पाप कर्म करते हो, पैसा तुम खाते हो। उनका बनता कुछ भी नहीं है। कुछ भी जमा होता नहीं। (मु.15.7.70 पृ.2 अं.)	Download
946	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	ऐसा कोई आश्रम सारे का सारा पलट पड़े, फिर तो सभी की आँख खुल जाए। बहुत समझते भी हैं जबकि यह महाभारत लड़ाई है तो ज़रूर भगवान भी होना चाहिए। (मु.4.4.75 पृ.2 आ.)	Download
947	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	तुम लिख सकते हो गॉड फादरली युनिवर्सिटी। बाप बैठ सारी वल्ड के आदि-मध्य-अंत का नालेज सुनाते हैं; इसलिए ईश्वरीय युनिवर्सिटी कहा जाता है। भगवान बैठ सिखलाते हैं। कितना ऊँच ते ऊँच पद तुम पाते हो। यह बड़ी भारी पढ़ाई है। बच्चों को युक्ति से समझाना चाहिए। हम गाड फादरली युनिवर्सिटी लिखते हैं। (मु.28.7.76 पृ.3 मध्यांत)	Download
948	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	यह घर का घर भी है और युनिवर्सिटी भी है। इसको ही गाड फादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की सद्गति होती है। रीयल वर्ल्ड युनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है। मात-पिता के सन्मुख बैठे हो। ....स्प्रीचुअल नालेज सिवाय स्प्रीचुअल फादर के और कोई भी मनुष्य दे नहीं सकता। (मु.18.8.76 पृ.1 आ.)	Download
949	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	मन्दिरों में जाओ, गीता पाठशालाओं में जाओ। तुम्हारा कनेक्शन है ही गीता से और देवताओं के पुजारियों से। फिर तुम सन्यासियों के पास क्यों जाते हो? यह लोग पिछाड़ी में समझेंगे। (मु.5.10.76 पृ.3 म.)	Download
950	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	एक दिन अख़बार में भी पड़ेगा कि भगवान कहते हैं मुझे याद करने से ही तुम पतित से पावन बन जावेंगे। जब विनाश नज़दीक होगा तब अख़बारों द्वारा भी यह आवाज़ कानों पर पड़ेगा। (मु.2.3.75 पृ.2 आ.)	Download
951	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	बाबा कहते हैं जाकर सेन्टर सम्भालो, सर्विस करो; परन्तु वह भी जो ज्ञानी तू आत्मा होशियार होंगे वही सम्भाल सकेंगे। ऐसे होशियार को फिर बाबा यहाँ रखते नहीं। (मु.5.2.78 पृ.3 मध्यांत)	Download
952	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	हर एरिया में सन्देश पहुँचाने की कोशिश करो जिससे कोई उलाहना न दे कि हमें पता नहीं है। सर्विस करते जाओ तो सब आपे ही ऑफर करेंगे कि यहाँ सेंटर खोलो। (अ.वा.19.11.79 पृ.34 आ)	Download
953	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	कोई न कोई प्रोग्राम हर सेन्टर पर चलना चाहिए-जो आने वालों में बल भर जाए। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहें, साक्षी होकर समस्या का सामना करें। उसके लिए याद का बल चाहिए। तो जब तक बाहर की सर्विस का, नये-2 प्लैन्स का फोर्स कम है तो कोई प्वाइन्ट का ज़ोर होना चाहिए, नहीं तो फ्री होकर फिर व्यर्थ का साइड ज़्यादा हो जावेगा। सर्विस में बिज़ी रहने से व्यर्थ की बातों से बचे रहते हैं। ....इसलिए ब्राह्मणों को खबरदार, होशियार करने के लिए व स्वयं की सेफ्टी के लिए कुछ ऐसी प्वाइन्ट्स व क्लासेज़ के प्रोग्राम्स बनाओ, जिससे वह यह समझें कि हमें मधुबन लाइट हाउस से विशेष लाइट आ रही है। (अ.वा.3.8.75 पृ.78 आ.)	Download

954	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	जो पूरी रीत समझा नहीं सकते वह तो और ही ब्रह्माकुमारियों की आबरू गंवायेंगे। कोई कहते हैं हम यहाँ नहीं, इस सेन्टर पर रहेंगे। इस पर नहीं। तो भी बाबा समझते हैं डल हेडेड हैं। बच्चों को तो आलराउण्ड जहाँ सर्विस मिले, लग जाना चाहिए। सेन्टर छोड़ कहाँ दूसरी जगह जावेंगे तो क्या तेरे बिगर ढेरी हो जावेंगे? (मु.20.3.70 पृ.4 म.)	Download
955	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	सर्विस करना भी सीखना है। अच्छी ब्राह्मणियाँ भी चाहिए जो आप समान बनायें। जो आप समान मैनेजर बनाते हैं उन्हें अच्छी ब्राह्मणी कहेंगे। वह पद भी ऊँच पायेंगी। बेबी बुद्धि भी न हो, नहीं तो उठाकर ले जायेंगे। रावण सम्प्रदाय है ना। ऐसी ब्राह्मणी तैयार करो जो पिछाड़ी में सेन्टर सम्भाल सके। (मु.22.5.85 पृ.3 अं.)	Download
956	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	इतने वर्ष में तुमने किसको आप समान न बनाया है तो क्या हजामत करती थी? इतने समय में मैनेजर न बनाया है जो सेन्टर सम्भाले। कैसे-2 मनुष्य आते हैं जिनसे बात करने का भी अक़्ल नहीं है। (मु.3.10.75 पृ.3 अं.)	Download
957	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	अगर गद्दी सम्भालने लायक कोई को आप समान न बनाया है तो बाबा समझेंगे कोई काम के नहीं। सर्विस नहीं की। बाबा को लिखती हैं-सर्विस छोड़ कैसे जावें? अरे, बाबा हुक्म करते हैं- फलानी जगह पर प्रदर्शनी है, सर्विस पर जाओ। अगर गद्दी लायक किसको न बनाया है तो गोया हज्जाम हो। बाबा ने हुक्म किया झट भागना चाहिए। महारथी ब्राह्मणी उनको कहा जाता है। (मु.3.10.75 पृ.3 मध्यांत)	Download
958	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	बच्चे जो सर्विस पर उपस्थित हैं, जो अच्छे सर्विसेबुल हैं, उन्हों को भी दिल में रहता है हम फलाने सेन्टर को जाकर उठावें। ठण्डा पड़ गया है। उनको जगावें; क्योंकि माया ऐसी है जो घड़ी-2 सुलाय देती है। (मु.13.12.75 पृ.2 म.)	Download
959	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	जितना तुम सेन्टर्स का जास्ती घेराव डालेंगे तो बहुत आकर समझेंगे। (मु.25.1.84 पृ.3 मध्यादि)	Download
960	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	जो सेन्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं, उनकी भी कमाई होती है। उनको भी बहुत फायदा मिलता है। उनको भी उज़ूरा मिल जाता है। कोई 3-4 सेन्टर भी खोलते हैं। दिल में रहता है इसने सेन्टर्स खोले हैं। बाबा भी सेन्टर्स खोलते हैं ना। तो जो करते हैं उनका हिस्सा तो आता है ना। मिलकर माया के दु:ख का छप्पर उठाते हैं। तो उसमें सब कन्धा देते हैं तो सबको उज़ूरा मिलता है। (मु.25.1.84 पृ.2 आ.)	Download
961	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	हरेक को अपनी सर्विस होते हुए भी यज्ञ की ज़िम्मेवारी भी अपने सेन्टर की ज़िम्मेवारी समान ही समझना है।.........अभी तो आप लोगों को बेहद में अपना सुख देना है तब सारी विश्व आपको सुखदाता मानेगी। (अ.वा.26.3.70 पृ.233 म.)	Download
962	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर	दिन-प्रतिदिन सेन्टर्स भी खुलते जाते हैं। कोई न कोई निकल आवेंगे। कहेंगे, फलाने शहर में आपकी ब्रांच नहीं है। बोलो, कोई प्रबन्ध करे, मकान आदि का निमन्त्रण दे तो हम आकर सर्विस कर सकते हैं। सिर्फ मकान का प्रबन्ध कोई करे। बाबा तो कहते हैं म्यूज़ियम ही खोलना है। एक/दो को देख आपे ही आते जावेंगे। (मु.4.9.75 पृ.3 अं.)	Download
963	सेवा विदेश की	विदेश की सर्विस का मूल फाउन्डेशन ही यह है कि विदेश की आवाज़ द्वारा भारत के कुम्भकरण जागेंगे। विदेश सर्विस की एम-ऑब्जेक्ट यह है। विदेश का विदेश में दिखाया यह कोई बड़ी बात नहीं है। उस लक्ष्य से विदेश की सेवा ड्रामा में नूँधी हुई है और अब तक भी कोई भी इन्वेन्शन का आवाज़ विदेश से ही होता आया है। ....ऐसे ही यह ईश्वरीय प्रत्यक्षता की आवाज़ विदेश सर्विस ही भारत में नाम बाला करेगी। (अ.वा.2.8.75 पृ.72 म.)	Download

964	सेवा विदेश की	अन्तिम समय में विदेश (की) सेवा को इतना महत्व क्यों दिया है? जबकि जाने वालों का भी संकल्प होता है कि ऐसे नाज़ुक व नज़दीक समय पर विदेश में क्यों भेजा जाता है? जबकि अंत में विदेश से भारत में ही आना है। फिर भी विदेश सेवा आगे बढ़ रही है।........और यह भी जानते हैं कि अन्य मत मतान्तरों का स्वर्ग में आने का पार्ट नहीं है; लेकिन जो ट्रान्सफर हो गये हैं व कन्वर्ट हो गये हैं उन आत्माओं को अपने आदि धर्म में लाने के लिए भेजा जाता है, जो बहुत थोड़े होंगे। इसका मूल आधार व विदेश सर्विस की एम-ऑब्जेक्ट यह है कि विदेश द्वारा भारत तक आवाज़ पहुँचने का राज़ ड्रामा में नुँधा हुआ है; इसलिए विदेश सर्विस को फर्स्ट चान्स दिया हुआ है। (अ.वा.2.8.75 पृ.73 आ.)	Download
965	सेवा विदेश की	बच्चियाँ होशियार हो जाएँ तब फिर और-2 देशों में भी जा सकतीं। कितनी भाषाओं में चित्र बनाने पड़ेंगे। (मु.31.12.76 पृ.3 अं.)	Download
966	सेवा विश्व की	सेवा को विश्व कल्याण के अर्पण करते चलो। वैसे भी भक्ति में जो गुप्त दानी, पुण्य आत्माएँ होती हैं वो यही संकल्प करती हैं कि सर्व के भले प्रति हो! मेरे प्रति हो, मुझे फल मिले, नहीं, सर्व को फल मिले, सर्व की सेवा में अर्पण हो। .... सर्व के कल्याण की बैंक में जमा करते चलो। (अ.वा.22.2.86 पृ.208 अं.)	Download
967	सेवा विश्व की	अब यह प्रयत्न करो, दिन-रात, संकल्प, सेकेण्ड विश्व के कर्तव्य में वा सेवा में जाए। (अ.वा.21.6.72 पृ.314 आ)	Download
968	सेवा विश्व की	जिनको विश्व महाराजन बनना है, उनका पुरुषार्थ सिर्फ अपने प्रति नहीं होगा। अपने जीवन में आने वाले विघ्न वा परीक्षाओं को पास करना वह तो बहुत कॉमन है; लेकिन जो विश्व महाराजन बनने वाले हैं उनके पास अभी से ही स्टॉक भरपूर होगा, जो कि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। .... एक संकल्प भी अपने प्रति न जाए बल्कि विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। (अ.वा.13.4.73 पृ.29 मध्यांत, 30 आ.)	Download
969	सेवा विश्व की	विश्व कल्याणकारी के ऊपर कितना कार्य है! स्वप्न में भी फ्री नहीं हो सकते। स्वप्न में भी सेवा ही दिखाई दे, इसको कहा जाता है- फुल बिज़ी; क्योंकि सारे दिन का आधार स्वप्न होता है। जो दिन-रात सेवा में बिज़ी रहते हैं, उनका स्वप्न भी सेवा के अर्थ होगा। स्वप्न में भी कई नई-नई बातें, सेवा के प्लैन व तरीके दिखाई दे सकते हैं। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 आ)	Download
970	सेवा विश्व की	विश्व कल्याणकारी का अर्थ ही है- विश्व के आधारमूर्त। ज़रा भी अलबेलापन विश्व को अलबेला बना देगा। इतना अटेन्शन रहे। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 म)	Download
971	सेवा विश्व की	स्वयं की कमज़ोरी प्रति व स्वयं के पुरुषार्थ के प्रति वस्तु लगाना, यह जैसे कि "अमानत में खयानत" हो जाती है। ऐसा महीन पुरुषार्थ महारथी की निशानी है। महारथियों को तो अब अपना सब कुछ विश्व के कल्याण में लगाना है तब तो महादानी और वरदानी कहा जावेगा। महारथी की स्टेज का प्रभाव ऐसा रहेगा, जैसे कि लाइट हाउस का प्रभाव दूर से ही नज़र आता है और वह चारों तरफ़ फैलती है। (अ.वा.6.2.74 पृ.19 म.)	Download
972	सेवा विश्व की	1.मधुरता 2.नम्रता-इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जावेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। (अ.वा.30.1.79 पृ.251 म.)	Download

973	सेवा विश्व की	अकल्याणकारी बोल कल्याण की भावना में ऐसे बदल जाएँ जैसे अकल्याण का बोल था ही नहीं। ऐसी स्टेज को विश्व कल्याणकारी स्टेज कहा जाता है। किसी का भी कोई अवगुण देखते हुए एक सेकण्ड में उस अवगुण को गुण में बदल दें, नुक़सान को फायदे में बदल दें, निंदा को स्तुति में बदल दें। ऐसी दृष्टि और स्मृति में रहने वाला ही विश्व कल्याणकारी कहा जाता है। विश्व कल्याणकारी ही नहीं; लेकिन स्वयं कल्याणकारी बनें। (अ.वा.5.1.77 पृ.2 अं.)	Download
974	सेवा विश्व की	जैसे ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट समय की स्थिति में उपराम और पर-उपकार यह विशेषता सदा देखी। स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा पहले बच्चे। इसको कहते हैं पर-उपकारी। (अ.वा.11.4.86 पृ.325 अं., 326 आ.)	Download
975	सेवा विश्व की	अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफ़रत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं; लेकिन विश्व कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का संबंध समझकर सेवा करेंगे और जितने ही होपलेस केस की सेवा करेंगे तो उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे। नामी-ग्रामी विश्वकल्याणी गाए जाएँगे। पीस मेकर की प्राइज़ लेंगे। (अ.वा.31.12.70 पृ. 334 आ.)	Download
976	सेवा विश्व की	कुछ ले करके कुछ देना उसको परोपकारी नहीं कहा जाता। परोपकारी अर्थात् भिखारी को मालामाल बनाने वाले, अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले। गाली देने वाले को गले लगाने वाले, अपने परउपकारी की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे अर्थात् भिखारी को बादशाह बना दे। .... कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा करें। .... अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्माएँ, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान दे करके स्वयं निर्माण बनना यही परोपकार है। (अ.वा.12.12.78 पृ.123 आ)	Download
977	सेवा विश्व की	विश्व का मालिक कौन बनेंगे? जो विश्व कल्याणकारी होंगे। तो आप सब कौन हो? विश्व पर राज्य करने वाले या स्टेट पर? जो विश्व पर राज्य करने वाले होंगे वह सदा बेहद की स्थिति में स्थित होंगे। ....बेहद के मालिक बनने वाले बेहद की सेवा में ज़रूर लगेंगे। हद निमित्त मात्र, सारा अटेन्शन बेहद की सेवा में। बेहद में जाकर सेवा करो, सर्विस में नया मोड़ लाओ। (अ.वा.1.2.79 पृ.261 म.)	Download
978	सेवा विश्व की	दूसरों को देना अर्थात् स्वयं में भरना। ....सारे दिन में विश्व कल्याण के प्रति कितना समय देते हो? ....यह मन के विघ्नों से युद्ध करने में ही समय देना यह तो अपने प्रति व्यर्थ समय देना हुआ ना। .... तो सदा यह चैक करो कि ज़्यादा से ज़्यादा तो क्या; लेकिन सदा ही समय और संकल्प विश्व कल्याण प्रति लगाते हैं? ऐसा सदा विश्व कल्याण के निमित्त समय और संकल्प लगाने वाले क्या बनेंगे? विश्व महाराजन। अगर अपने प्रति ही समय लगाते रहते हैं तो विश्व महाराजन कैसे बनेंगे? तो विश्व महाराजन बनने के लिए विश्व कल्याणकारी बनो। (अ.वा.21.6.72 पृ.314 अं., 315)	Download
979	सेवा विश्व की	उल्टे को उल्टा नहीं करो, यह है ही उल्टा- यह नहीं सोचो; लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ यह सोचो। इसको कहा जाता है कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव, स्वभाव और दूसरों के भाव-स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे! समझा। (अ.वा.1.3.86 पृ.222 म.)	Download

980	सेवा विश्व की	कोई को भी, किस समय भी, किस परिस्थिति में, किस स्थिति में देखते हो; लेकिन वृत्ति और भाव अगर यथार्थ है, तो आपके ऊपर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। कल्याण की वृत्ति और भाव शुभ चिन्तक का होना चाहिए। ....कोई क्या भी करे, कोई आपके विघ्न रूप बने; लेकिन आपका भाव ऐसे के ऊपर भी शुभचिन्तकपन का हो। .... जिसका आपके प्रति शुभ भाव है उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो वह कोई बड़ी बात नहीं। कमाल ऐसी करनी चाहिए जो गायन हो। अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। (अ.वा.19.7.72 पृ.335 आ)	Download
981	सेवा विश्व की	महारथियों के हर कर्तव्य में विश्व कल्याण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देगी। उसका प्रैक्टिकल सबूत व प्रमाण हर बात में अन्य आत्मा को आगे बढ़ाने के लिए पहले आप का पाठ पक्का होगा, पहले मैं नहीं। ....जिस आत्मा के प्रति जो संकल्प करेंगे या जो बोल बोलेंगे वह उस आत्मा के प्रति वरदान हो जावेगा। (अ.वा.27.10.75 पृ.236 आ)	Download
982	सेवाधारी की निशानियां	हर एक अपने को ज़िम्मेवार समझे। इसका भाव यह नहीं समझना कि सभी ज़िम्मेवार हैं तो भाषण का चांस मिलना चाहिए या विशेष कोई ड्यूटी मुझे मिले तब ज़िम्मेवार हैं। इनको ज़िम्मेवारी नहीं कहते। जहाँ भी हों, जो भी ड्यूटी मिली है चाहे दूर बैठने की, चाहे स्टेज पर आने की- मुझे सहयोगी बनना ही है। इसको कहा जाता है सारे विश्व में सेवा की रूहानियत की लहर फैलाना। (अ.वा.30.12.85 पृ.118 म)	Download
983	सेवाधारी की निशानियां	सेवा में भी अभिमान और अपमान का अलाय मिक्स न हो। इसको कहा जाता है गोल्डन एज्ड सेवा। स्वभाव में भी ईर्ष्या, सिद्ध और ज़िद का भाव न हो। यह है अलाय। इस अलाय को समाप्त कर गोल्डन एज्ड स्वभाव वाले बनो। संस्कार में सदा हाँ जी। जैसा समय, जैसी सेवा वैसे स्वयं को मोल्ड करना है अर्थात् रीयल गोल्ड बनना है। मुझे मोल्ड होना है। दूसरा करे तो मैं करूँ यह ज़िद हो जाती है, यह रीयल गोल्ड नही! ....संबंध में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो, स्नेह की भावना हो, सहयोग की भावना हो। (अ.वा.6.1.86 पृ.135 मध्यांत)	Download
984	सेवाधारी की निशानियां	सच्चे सेवाधारी वह जो सदा रूहानी दृष्टि से, रूहानी वृत्ति से रूहे गुलाब बन रूहों को खुश करने वाले हों। (अ.वा.18.2.84 पृ.140 म.)	Download
985	सेवाधारी की निशानियां	सच्चे सेवाधारी की निशानी है- त्याग अर्थात् नम्रता और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय, नशे में दृढ़ता। (अ.वा.9.4.86 पृ.317 आ.)	Download
986	सेवाधारी की निशानियां	कभी भी कहाँ भी रहते हो, चलते हो, सदा अपने को शान्ति के दूत समझकर चलो।.........वह आग लगायें, आप पानी डालो। यही काम है ना। इसको कहते हैं सच्चे सेवाधारी। .... शान्ति के मैसेन्जर मास्टर शान्ति दाता, मास्टर शक्तिदाता, यह स्मृति सदा रहती है ना। सदा अपने को इसी स्मृति से आगे बढ़ाते चलो। औरों को भी आगे बढ़ाओ यही सेवा है। (अ.वा.9.4.86 पृ.320 आ.)	Download
987	सेवाधारी की निशानियां	कभी कोई सेवाधारी रोते तो नहीं? मन में भी रोना होता है, सिर्फ़ आँखों का नहीं। तो रोने वाले तो नहीं हो ना! अच्छा, शिकायत करने वाले हो? बाप के आगे शिकायत करते हो? ऐसा मेरे से क्यों होता? मेरा ही ऐसा पार्ट क्यों है? मेरे ही संस्कार ऐसे क्यों हैं? मेरे को ही ऐसे जिज्ञासु क्यों मिले हैं या मेरे को ही ऐसा देश क्यों मिला है? - ऐसी शिकायत करने वाले तो नहीं? शिकायत माना भक्ति का अंश। कैसा भी हो; लेकिन परिवर्तन करना- यह सेवाधारियों का विशेष कर्तव्य है। चाहे देश है, चाहे जिज्ञासु हैं, चाहे अपने संस्कार हैं, चाहे साथी हैं, शिकायत के बजाय परिवर्तन करने को कार्य में लगाओ।(अ.वा.21.2.85 पृ.185 आ)	Download

988	सेवाधारी की निशानियां	जो सेवाधारी होते हैं उन्हों के लिए हर स्थान पर सेवा है। कहाँ भी रहें, कहाँ भी जावें; लेकिन सेवाधारी को हर समय और हर स्थान पर सेवा ही दिखाई देगी और सेवा में ही लगे रहेंगे। घर को भी सेवा स्थान समझकर रहेंगे। ....एक सेकेण्ड वा एक संकल्प भी सेवा के सिवाय नहीं जा सकता, इसको कहते हैं सच्चा रूहानी सेवाधारी। (अ.वा.11.6.71 पृ.105 अं., 106 आ.)	Download
989	सेवाधारी की निशानियां	सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब तो सेवा करेंगे। (अ.वा.11.7.71 पृ.132 अं.)	Download
990	सेवाधारी की निशानियां	जो जितना महान होगा उतना निर्मान होगा। महान आत्माएँ सदा अपने को ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट ही अनुभव करती हैं। (अ.वा.18.3.81 पृ.64 म.)	Download
991	सेवाधारी की निशानियां	अपने को बेहद के निमित्त सेवाधारी समझते हो? बेहद के सेवाधारी अर्थात् किसी भी मैं पन के व मेरे पन की हद में आने वाले नहीं। बेहद में न मैं है, न मेरा है। सब बाप का है, मैं भी बाप का तो सेवा भी बाप की। इसको कहते हैं बेहद सेवा। (अ.वा.3.2.88 पृ.250 आ.)	Download
992	सेवाधारी की निशानियां	जितना-जितना अपने को सर्विस के बंधन में बाँधते जाएँगे तो दूसरे बंधन छूटते जाएँगे। आप ऐसे नहीं सोचो कि यह बंधन छूटे तो सर्विस में लग जायें।..............कोई भी कारण है तो उनको हल्का छोड़कर पहले सर्विस के मौके को आगे रखो। कर्तव्य को पहले रखना होता है। कारण होते रहेंगे; लेकिन कर्तव्य के बल से कारण ढीले पड़ जायेंगे। (अ.वा.7.6.70 पृ.262 अं.)	Download
993	सेवाधारी की निशानियां	जो आलराउन्डर होगा वह एक तो सर्विस में रहेगा, दूसरा स्वभाव व संस्कार में भी सभी से मिक्स हो जाने का उसमें विशेष गुण होगा, तीसरा कोई भी स्थूल कार्य जिसको कर्मणा कहा जाता है उसी कर्मणा की सबजेक्ट में भी जहाँ उसको जिस समय फिट करना चाहें वहाँ ऐसे फिट हो जाए जैसे कि बहुत समय से इसी कार्य में लगा हुआ है, कोई नया अनुभव न हो। हर कार्य में अति पुराना और जानने वाला दिखाई दे। जो तीनों ही बातों में जो हर समय फिट हो जाते व लग जाते हैं उसको कहा जाता है आलराउण्डर। (अ.वा.4.5.73 पृ.53 आ.)	Download
994	सेवाधारी की निशानियां	सेवाधारी बनना अर्थात् सारे कल्प के लिए सदा सुखी बनना। (अ.वा.3.4.81 पृ.125 म.)	Download
995	सेवाधारी की निशानियां	सेवाधारी का कर्तव्य क्या है? हर विशेषता को सेवा में लगाना। अगर आपकी विशेषता सेवा में नहीं लगती तो कभी भी वह विशेषता वृद्धि को प्राप्त नहीं होगी, उसी सीमा में ही रहेगी। इसलिए कई बच्चे ऐसा अनुभव भी करते हैं कि बाप के बन गये, रोज़ आ भी रहे हैं, पुरुषार्थ में भी चल रहे हैं, नियम भी निभा रहे हैं; लेकिन पुरुषार्थ में जो वृद्धि होनी चाहिए वह अनुभव नहीं होती। (अ.वा.11.12.85 पृ.86 म.)	Download
996	सेवाधारी की निशानियां	बच्चों के प्रति भी हर आत्मा के अंदर से यह अनुभव के बोल निकलें कि यह भी बाप समान सर्व के सहयोगी हैं। पर्सनल एक/दो के सहयोगी नहीं बनना। वह स्वार्थ के सहयोगी होंगे। हद के सहयोगी होंगे। सच्चे सहयोगी बेहद के सहयोगी हैं। (अ.वा.11.12.85 पृ.87 म.)	Download
997	सेवाधारी की निशानियां	सेवाधारी का अर्थ ही है- सेवा में सदा उमंग-उत्साह लाना। स्वयं उमंग-उत्साह में रहने वाले, औरों को उमंग-उत्साह दिला सकते हैं। तो सदा प्रत्यक्ष रूप में उमंग-उत्साह दिखाई दे। ऐसे नहीं कि मैं अंदर में तो रहती हूँ; लेकिन बाहर नहीं दिखाई देता। गुप्त पुरुषार्थ और चीज़ है; लेकिन उमंग-उत्साह छिप नहीं सकता है। चेहरे पर सदा उमंग-उत्साह की झलक स्वत: दिखाई देगी। बोले न बोले, लेकिन चेहरा ही बोलेगा, झलक बोलेगी। ऐसे सेवाधारी हो? (अ.वा.15.1.86 पृ.160 अं., 161 आ.)	Download

998	सेवाधारी की निशानियां	कहाँ भी हैं सेवा के बिना चैन नहीं हो सकती। सेवा ही चैन की निद्रा है।....... सेवा नहीं तो चैन की नींद नहीं। (अ.वा.20.2.86 पृ.204 म.)	Download
999	सेवाधारी की निशानियां	सेवा के बिना चैन से सो नहीं सकते। स्वप्न भी सेवा के आते हैं ना। आँख खुली बाबा से मिले फिर सारा दिन बाप और सेवा। (अ.वा.18.1.84 पृ.120 म.)	Download
1000	सेवाधारी की निशानियां	जो सर्विसेबुल बच्चे हैं, उनका स्वभाव बहुत मीठा चाहिए। (मु.29.3.89 पृ.3 अं.)	Download
1001	सेवाधारी की निशानियां	बच्चों को बाप से रास्ता मिला है तो उन बच्चों को सर्विस बिगर और कुछ अच्छा ही नहीं लगता है। .... उनको पढ़ाने बिगर आराम नहीं आवेगा। प्रदर्शनी आदि में रात को 12 भी बज जाते हैं तो भी खुशी होती है। थकावट होती है, गला ख़राब हो जाता है तो भी खुशी में रहते हैं। ईश्वरीय सर्विस है ना। (मु.23.12.75 पृ.3 म.)	Download
1002	सेवाधारी की निशानियां	जो थकता नहीं है वह रूकता भी नहीं है, बढ़ता रहता है। .... अकेले होते हैं तो थकते हैं। बोर हो जाते हैं तो थक जाते हैं; लेकिन जहाँ साथ हो वहाँ सदा ही उमंग-उत्साह होता है।.......तो आप सभी भी रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़ते रहना; क्योंकि बाप का साथ, ब्राह्मण परिवार का साथ कितना बढ़िया साथ है। (अ.वा.6.1.88 पृ.204 आ.)	Download
1003	सेवाधारी की निशानियां	सेवा का चांस मिले तो करेंगे, नहीं, सदा चांस है। करने वाले करें तो चांस ही चांस है। कितना बड़ा जंगल है। इसमें जितना जो करे उतना अपने लिए वर्तमान और भविष्य बनाता है। तो सदा के सेवाधारी हैं यह लक्ष्य पक्का रहे। सेवा के बिना जीवन नहीं। मन्सा करो, वाणी से करो, कर्म से करो, सम्पर्क से करो; लेकिन सेवा ज़रूर करनी है। सेवा के बिना रह नहीं सकते- इसको कहते हैं सेवाधारी। (अ.वा.1.1.86 पृ.130 अं.)	Download
1004	सेवाधारी की निशानियां	विशेष कार्य करने वाले को सब सहयोग भी मिल जाता है। स्वयं ही कोई टिकिट भी आफर कर लेंगे। शुरू-शुरू में जब आप सभी सेवा पर निकले थे तो सेवा कर फर्स्ट क्लास में सफर करते थे और अभी टिकेट भी लेते और सेकेण्ड, थर्ड में आते। ऐसी कोई कम्पनी की सेवा करो, सब हो जायेगा। सेवाधारी को साधन भी मिल जाता है। (अ.वा.22.1.84 पृ.129 म.)	Download
1005	सेवाधारी की निशानियां	समर्पण करना और कराना यही ब्राह्मणों का धंधा है। (अ.वा.24.1.70 पृ.185 आ)	Download
1006	सेवाधारी की निशानियां	जो सर्विसेबुल हैं उनका हर संकल्प, हर शब्द, हर कर्म सर्विस ही करेगा। .....तो अपने को देखना है कि हमारी हर सेकेण्ड सर्विसेबुल चलन होती है? वा कहाँ डिससर्विस वाली चलन तो नहीं है? जब नाम सर्विसेबुल है तो कर्म भी ऐसा ही होना चाहिए। (अ.वा.28.9.69 पृ.111 म.)	Download
1007	सेवाधारी की निशानियां	सर्विस हो सकती है तो प्रबन्ध करना है। सच्चे दिल से, निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी है। बाबा कहते हैं, ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता (भरता) हूँ। ड्रामा में नूँध है। (मु.11.5.94 पृ.3 अं.)	Download
1008	सेवाधारी की निशानियां	सदा बाप के साथी बन सेवा करो। करावनहार बाप, निमित्त करनहार मैं हूँ, तो कभी भी सेवा हलचल में नहीं लायेगी। (अ.वा.14.12.87 पृ.170 अं)	Download
1009	सेवाधारी की निशानियां	जैसे याद ब्राह्मण जीवन की खुराक है, ऐसे सेवा भी जीवन की खुराक है। बिना खुराक के कभी कोई रह सकता है क्या? लेकिन बैलेंस ज़रूरी है। इतना भी ज़्यादा नहीं करो जो बुद्धि पर बोझ हो और इतना भी नहीं करो जो अलबेले हो जाओ। न बोझ हो, न अलबेलापन हो, इसको कहते हैं बैलेंस। (अ.वा.20.2.88 पृ.263 अं.)	Download
1010	सेवाधारी की निशानियां	आगे के लिए भी जैसे निरन्तर योगी का वरदान बाप द्वारा प्राप्त हुआ है वैसे ही निरन्तर सेवाधारी। सोते हुए भी सेवा हो। सोते हुए भी कोई देखे तो आपके चेहरे से शान्ति, आनन्द के वायब्रेशन अनुभव करें। (अ.वा.24.1.78 पृ.41 अं.)	Download

1011	सेवाधारी की निशानियां	सर्विसएबुल बच्चों को सर्विस का कितना शौक रहता है, चक्कर लगाते रहते हैं। सर्विस न करते तो उनको रहमदिल, कल्याणकारी आदि कुछ भी नहीं कहेंगे। तुच्छ बुद्धि कहेंगे। (मु.22.8.75 पृ.3 मध्यादि)	Download
1012	सेवाधारी की निशानियां	सेवा तो सभी करते हैं; लेकिन निर्विघ्न सेवा हो, इसी में नम्बर मिलते हैं। (अ.वा.20.11.85 पृ.50 म.)	Download
1013	सेवाधारी की निशानियां	कोई-कोई सोचते हैं कि सेवा तो करनी ही पड़ेगी। जैसे लौकिक गवर्मेन्ट की ड्यूटी है,...................ऐसे इस आलमाइटी गवर्मेन्ट द्वारा ड्यूटी मिली हुई है- ऐसे समझ के सेवा करना, इसको सच्ची सेवा नहीं कहा जाता। ड्यूटी सिर्फ़ नहीं है; लेकिन ब्राह्मण आत्माओं का निजी संस्कार ही सेवा है। तो संस्कार स्वतः ही सच्ची सेवा के बिना रहने नहीं देते। (अ.वा.6.1.90 पृ.126 अं.)	Download
1014	सेवाधारी की निशानियां	जब बेहद के वैरागी बनेंगे तब बेहद की सर्विस कर सकेंगे। कहाँ भी लगाव न हो। अपने आप से भी लगाव न लगाना है तो औरों की तो बात ही छोड़ो। (अ.वा.2.7.70 पृ.284 अं.)	Download
1015	सेवाधारी की निशानियां	बेहद की बात सोचना, बेहद परिवार से संबंध और स्नेह, सर्व स्थान अपने..., ऐसे को कहते हैं बेहद का सर्विसेबुल, हद की सर्विस वाले को सर्विसेबुल नहीं कहेंगे। (अ.वा.11.7.70 पृ.289 अं.)	Download
1016	सेवाधारी की निशानियां	सर्विसेबुल जितना होगा वैसा आप समान बनायेगा। फिर बाप समान बनायेगा। (अ.वा.23.10.70 पृ.316 अं.	Download
1017	सेवाधारी की निशानियां	नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल भी बनना है तब ही सर्विसेबुल बनेंगे। (अ.वा.9.12.70 पृ.330 अं.)	Download
1018	सेवाधारी की निशानियां	एक ने कहा दूसरे ने माना यह है सच्चे-सच्चे स्नेह का रेसपान्ड। ऐसे एग्ज़ाम्पल को देख और भी सम्पर्क में आने के लिए हिम्मत रखते हैं। संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। (अ.वा.19.3.81 पृ.74 म.)	Download
1019	सेवाधारी की निशानियां	सेवा के बिना यह ब्राह्मण जीवन खाली सी लगती है। सेवा नहीं हो तो जैसे फ्री-फ्री है। (अ.वा.13.3.86 पृ.258 म.)	Download
1020	सेवाधारी की निशानियां	सेवा में रहने वाले की कहीं भी आसक्ति नहीं होती। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 अं)	Download
1021	सेवाधारी की निशानियां	सेवा करने वाले त्याग और तपस्या मूर्त होते हैं .... उन्हें शक्तियाँ देने वाला बाप और उनके द्वारा मिली हुई शक्तियाँ ही याद रहती हैं। ऐसे शक्ति अवतार ही मायाजीत बनते हैं। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 अं., 208 आ.)	Download
1022	सेवाधारी की निशानियां	जब तक त्याग नहीं तब तक सेवाधारी हो न सकेंगे। सेवाधारी बनने से त्याग सहज और स्वतः हो जायेगा। सदैव अपने को बिज़ी रखने का यही तरीका है। (अ.वा.28.7.71 पृ.150 अं.)	Download
1023	सेवाधारी की निशानियां	जो अच्छी सर्विस करते हैं वह कितने मीठे लगते हैं। न पढ़ने वाले उन्हों के आगे जाकर झाड़ू लगावेंगे। (मु.12.10.75 पृ.2 म.)	Download
1024	सेवाधारी की निशानियां	सभी से तीखे जो सर्विस करते हैं, ज़रूर भक्ति भी जास्ती की है। (मु.24.7.70 पृ.3 अं.)	Download
1025	सेवाधारी की निशानियां	बच्चों को शौक होता है-हम बाबा की सर्विस पर जाते हैं। तो बाप भी भीती देते हैं। बाप आये ही हैं सर्विस पर। सर्विस के लिए सब कुछ है। (मु.1.6.85 पृ.1 अं.)	Download

1026	सेवाधारी की निशानियां	जब भी कोई सेवार्थ जाते हो तो पहले चैक करो कि स्व-स्थिति में स्थित होकर जा रहे हैं? हलचल में तो नहीं जा रहे हैं? अगर स्वयं हलचल में होंगे तो सुनने वाले भी एकाग्र नहीं होते, अनुभव नहीं करते।(अ.वा.26.12.79 पृ.156 आ.)	Download
1027	सेवाधारी की निशानियां	सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार-सागर-मंथन करना चाहिए और बहुत बहादुर होना चाहिए। (मु.11.3.87 पृ.3 म.)	Download
1028	सेवा में सफलता का आधार	सेवा का उमंग-उत्साह स्वयं को भी निर्विघ्न बनाता, दूसरों का भी कल्याण करता है। सेवा भाव की भी सफलता है। सेवा-भाव में अगर अहम-भाव आ गया तो उसको सेवा-भाव नहीं कहेंगे, सेवा-भाव सफलता दिलाता है। (अ.वा.1.10.87 पृ.65 म.)	Download
1029	सेवा में सफलता का आधार	सेवा की विशेषता है ही स्नेह। जब तक ज्ञान के साथ रूहानी स्नेह की अनुभूति नहीं होती तो ज्ञान कोई नहीं सुनेगा। .... तो सेवा का पहला सफ़लता का स्वरूप हुआ स्नेह। (अ.वा.4.3.86 पृ.228 अं., 229 आ.)	Download
1030	सेवा में सफलता का आधार	जब सेवा में क्या-क्यों, तू-मैं, तेरा-मेरा आ जाता है तो सेवा भी झंझट हो जाती है। तो इस झंझट से भी परे हो जाओ। सेवा के पीछे स्वमान न भूलो। जिस सेवा में शक्तिशाली याद नहीं तो उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को और औरों को भी परेशानी ज़्यादा। नाम की सेवा नहीं; लेकिन काम की सेवा करो। इसको कहा जाता है शक्ति सम्पन्न सेवा। (अ.वा.21.11.84 पृ.24 म.)	Download
1031	सेवा में सफलता का आधार	विघ्न को विघ्न नहीं समझो और विघ्न अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा को विघ्नकारी आत्मा नहीं देखो।.............जब कहते हो निंदा करने वाले मित्र हैं, तो विघ्नों को पास कराके अनुभवी बनाने वाला शिक्षक हुआ ना। पाठ पढ़ाया ना। ....इस प्रकार रूप भल विघ्न का है, आपको विघ्नकारी आत्मा दिखाई पड़ती; लेकिन सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त वही बनते; इसलिए सदा निर्विघ्न सेवाधारी को कहते हैं सच्चे सेवाधारी। (अ.वा.20.2.87 पृ.39 म.)	Download
1032	सेवा में सफलता का आधार	तुम भी आगे, मैं भी आगे। साथ-साथ चलते चलो। हाथ मिलाकर चलो तो सफ़लता होगी और संतुष्टता की दुआयें मिलेंगी। ऐसी दुआयें लेने में महान बनो तो सेवा में स्वतः महान हो जायेंगे। (अ.वा.11.4.85 पृ.18 आ.)	Download
1033	सेवा में सफलता का आधार	हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे। (अ.वा.19.4.71 पृ.69 आ.)	Download
1034	सेवा में सफलता का आधार	सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफ़लता का मुख्य आधार है- एक बाप से अटूट प्यार। ....ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देते हैं। ....दूसरा सफ़लता का आधार हर ज्ञान की प्वाइन्ट के अनुभवीमूर्त होना, जैसे ड्रामा की प्वाइन्ट देते हैं। तो एक होता है नालेज के आधार पर प्वाइन्ट देना, दूसरा होता है अनुभवीमूर्त होकर प्वाइन्ट देना। (अ.वा.11.3.81 पृ.37 म.)	Download
1035	सेवा में सफलता का आधार	सर्विस की सफलता का स्वरूप यही है कि सर्व आत्माओं को बाप के स्नेही और बाप के कर्तव्य में सहयोगी और पुरुषार्थ में उन आत्माओं को शक्तिरूप बनाना।......... जिन आत्माओं की सर्विस करो उन आत्माओं में यह तीनों ही क्वालिफिकेशन प्रत्यक्ष रूप में देखने में आनी चाहिए। अगर तीनों में से कोई भी गुण की कमी है तो सर्विस की सफलता की भी कमी है।(अ.वा.6.8.70 पृ.302 म)	Download
1036	सेवा में सफलता का आधार	सेवा में सदैव स्वच्छ बुद्धि, स्वच्छ वृत्ति और स्वच्छ कर्म सफलता का सहज आधार है। (अ.वा.20.2.87 पृ.39 अं.)	Download

1037	सेवा में सफलता का आधार	सेवा की सदाकाल की सफलता का आधार उदारता है। (अ.वा.11.4.85 पृ.11 अं.)	Download
1038	सेवा में सफलता का आधार	नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ़ दिल के आधार से, सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ़ दिमाग़ के आधार से सेवा की! (अ.वा.18.1.86 पृ.163 अं.)	Download
1039	सेवा में सफलता का आधार	प्रश्नः-सम्पर्क और सेवा दोनों में सफल बनने के लिए मुख्य कौन सी धारणा चाहिए? उत्तरः- सफलता तभी मिलेगी जबकि सदैव स्वयं को मोल्ड करने की क्वालिफिकेशन होगी। (अ.वा.19.11.79 पृ.34 आ)	Download
1040	सेवा में सफलता का आधार	सर्विस की सफ़लता का मुख्य गुण कौन सा है? नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफ़लता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। .... जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं, वैसे आप समझो कि निमित्त मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त मात्र समझना है और दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त समझना, तब नम्रता आयेगी। (अ.वा.18.6.69 पृ.70 म.)	Download
1041	सेवा में सफलता का आधार	हर प्रकार की सेवा, मन्सा-वाचा-कर्मणा- तीनों में सदा सफलता अनुभव हो। उसका भी आधार परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति है। (अ.वा.10.1.90 पृ.133 म.)	Download
1042	सेवा में सफलता का आधार	कोई भी सेवा में सफलता का साधन नम्रता भाव है, निमित्त भाव है। तो इन्हीं विशेषताओं से सेवा की? ऐसी सेवा में सदा सफलता भी है और सदा मौज है। (अ.वा.25.10.87 पृ.105 म)	Download
1043	सेवा में सफलता का आधार	अभी जो सेवा करते हो, वह अलग-अलग करते हो। ....तो कोई भी कार्य शुरू करने के पहले सभी की शुभ भावनायें, शुभ कामनायें लो, सर्व के संतुष्टता का बल भरो, तब शक्तिशाली फल निकलेगा। (अ.वा.2.11.87 पृ.117 अं.)	Download
1044	सेवा में सफलता का आधार	मधुबन में रिफ्रेश होना अर्थात् सेवा के लिए निमित्त बन करके सेवाधारी बनकर सेवा का चान्स लेना। सेवा करने के पहले जो निमित्त बने हुए सेवाधारी हैं उन्हों से सम्पर्क रखते हुए आगे बढ़ते चलो तो सफ़लता मिलती जायेगी। (अ.वा.15.3.81 पृ.54 म.)	Download
1045	सेवा में सफलता का आधार	नि:स्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति से सेवा करना सफलता का आधार है। (अ.वा.20.2.87 पृ.40 म.)	Download
1046	सेवा में सफलता का आधार	जहाँ त्याग-तपस्या की आकर्षण होगी वहाँ सर्विस भी आकर्षित हो पीछे आयेगी। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 आ)	Download
1047	सर्विस में असफलता	वायुमण्डल अगर और दिखाई देता है तो समझना चाहिए अपनी वृत्ति में भी कमज़ोरी है। उस कमज़ोरी को मिटाना चाहिए। (अ.वा.10.5.72 पृ.274 म.)	Download
1048	सर्विस में असफलता	सेवा के क्षेत्र में भी अगर आत्माओं की आवश्यकता और इच्छा को परखने के बिना कितना भी अच्छा ज्ञान दे दो, कितनी भी मेहनत कर लो; लेकिन सफलता नहीं होगी।............. उसके लिए परखने की शक्ति अति आवश्यक है। .... पानी के प्यासे को 36 प्रकार का भोजन दे दो; लेकिन वह संतुष्ट पानी की बूँद से ही होगा, न कि भोजन से।................ इसलिए सेवा में भी आत्मा की स्थिति वा उसकी आस्था क्या है उसको परखना आवश्यक है।(अ.वा.10.1.90 पृ.134 म.)	Download

1049	सर्विस में असफलता	सर्विस कितनी भी करो मगर अहंकार नहीं आना चाहिए। सर्विस करके अपना ही कल्याण करते हैं। मैं जास्ती सर्विस करता हूँ यह अहंकार आने से गिर पड़ेंगे। (मु.14.11.66 पृ.1 म.रात्रिक्लास)	Download
1050	सर्विस में असफलता	हर संकल्प वा कर्म अगर विधिपूर्वक है तो सिद्धि ज़रूर होती है। अगर सिद्धि नहीं है तो विधिपूर्वक भी नहीं है।........... सिद्धि ना प्राप्त होने का मुख्य कारण यह है जो एक ही समय तीनों रूप से सर्विस नहीं करते। तीनों रूपों और तीनों रीति से एक समय करना है। नालेजफुल, पावरफुल और लवफुल। लव और ला-दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। (अ.वा.2.8.72 पृ.344 म., 345 म.)	Download
1051	सर्विस में असफलता	कैसी भी मुश्किल सेवा हो; लेकिन बाप को सेवा भी बुद्धि से अर्पण कर दो। मैंने किया, सफलता नहीं हुई, मैं कहाँ से आया? बाप करन-करावनहार की ज़िम्मेवारी भूल करके अपने ऊपर क्यों उठाई? यह राँग हो जाता है। बाप की सेवा है, बाप अवश्य करेगा। बाप को आगे रखो, अपने को आगे नहीं रखो। मैंने यह किया, यह मैं शब्द सफ़लता को दूर करता है। (अ.वा.19.3.90 पृ.191 म.)	Download
1052	सर्विस में असफलता	बापदादा सभी को डायरैक्शन देते हैं, जहाँ देखते हो सेवा स्थिति को डगमग करती है, उस सेवा में कोई सफलता मिल नहीं सकती। सेवा भले कम करो; लेकिन स्थिति को कम नहीं करो। जो सेवा स्थिति को नीचे ले आती है उसको सेवा कैसे कहेंगे! इसलिए बापदादा सभी को फिर से यही कहेंगे कि सदा स्व-स्थिति और सेवा अर्थात् स्व-सेवा और औरों की सेवा साथ-साथ सदा करो। स्व-सेवा को छोड़ पर-सेवा करना-इससे सफ़लता नहीं प्राप्त होती। हिम्मत रखो - स्व-सेवा और पर-सेवा की। (अ.वा.22.1.90 पृ.153 आ)	Download
1053	सर्विस-डिससर्विस	बाबा के पास सच्चा सामचार देना चाहिए। बहुत हैं जो झूठ बोलते हैं। सर्विस बदली डिससर्विस कर लेते हैं। उन्हों की क्या गति होगी? दास-दासियाँ जाकर बनेंगे या तो अगर टूट पड़े तो चाण्डाल का जन्म जाय लेंगे। (मु.7.8.72 पृ.4 अं.)	Download
1054	सर्विस-डिससर्विस	अच्छे-2 बच्चे बड़ा आराम से रहते हैं। अन्दर सोये रहते हैं। बाहर में कोई पूछे फलानी कहाँ है तो कहेंगे है नहीं; परन्तु अन्दर सोये पड़े हैं। क्या-2 होता रहता है।....कितनी डिससर्विस कर लेते हैं। (मु.5.11.74 पृ.3 आ.)	Download
1055	सर्विस-डिससर्विस	ऐसे नहीं किसको कहना है तुम फलाने पास न जाना, यहाँ आना। यह भी अपनी बरबादी करते हैं। हरेक की मर्जी, जहाँ चाहे वहाँ जाए। जहाँ देखो अच्छा समझाते हैं वहाँ जाओ। हैं सभी बाबा के घर। मतभेद में आकर लड़ेंगे तो भी अपनी ही बरबादी करेंगे। (मु.15.7.72 पृ.4 अं.)	Download
1056	सर्विस-डिससर्विस	नये-2 बच्चे जिनको पता ही नहीं उनको बैठ ग्लानि की बातें सुनाते। ऐसी आदतें बहुतों में होती हैं। एक/दो की बातें सुनाते हैं। ऐसे अक्सर करके गोप बहुत होते हैं। फीमेल्स इतनी नहीं जितने गोप हैं। अक्सर करके तेज़ मिजाज, अहंकार, क्रोध गोपों में बहुत होता है। समझते हैं हम सर्विस करते हैं; परन्तु वह डिससर्विस करते हैं। बाप समझाते रहते हैं, बच्चे सुधरते भी रहते हैं, फिर भी पहले की भूलचूक कोई की वर्णन करना, ग्लानि करना बहुत डिससर्विस करते हैं। अपनी भी, तो बाप की भी। डिससर्विस करने से अपना ही नुकसान बहुत करते हैं। (मु.1.1.71 पृ.4 मध्यांत)	Download
1057	सर्विस-डिससर्विस	गायन है यज्ञ में विघ्न पड़े, सो तो पड़ते रहते हैं। कल्प के बाद भी पड़ते रहेंगे। तुम अब पक्के हो गये हो। यह स्थापना, विनाश का कोई छोटा काम नहीं है। विघ्न किसमें पड़ते हैं? बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। (मु.15.1.84 पृ.1 अं.)	Download

1058	सर्विस-डिससर्विस	कर्मों का हिसाब-किताब, बीमारी आदि ज्यादा आए तो इसमें डरना नहीं है। यह पिछाडी के हैं, फिर होगी नहीं। अभी सब उथल खायेंगी। बूढ़ों को भी माया जवान बना देगी। (मु.30.4.84 पृ.3 अं.)	Download
1059	सर्विस-डिससर्विस	बाबा मना करते हैं बच्चे, कभी भी संसारी झरमुई-झगमुई की बातें नहीं सुनो। कई तो बहुत खुशी से ऐसी बातें सुनते और सुनाते हैं। बाप के महावाक्य भूल जाते हैं। वास्तव में जो अच्छे बच्चे हैं वह अपनी सर्विस की ड्यूटी बजाकर फिर अपनी मस्ती में रहते हैं। (मु.13.4.89 पृ.2 अं.)	Download
1060	सर्विस-डिससर्विस	रूठकर सर्विस में धोखा न देना चाहिए। यह है ईश्वरीय सर्विस। माया के तूफ़ान तो बहुत आवेंगे; परन्तु बाप की ईश्वरीय सर्विस में धोखा न देना है। बाप सर्विस अर्थ डाइरैक्शन तो देते रहते हैं। (मु.4.9.75 पृ.2 अं.)	Download
1061	सर्विस-डिससर्विस	बच्चों आदि को ले आना भी बंद कर देना होगा। इतने बच्चों को कहाँ बैठ सम्भालेंगे? बच्चों को छुट्टियाँ मिलीं तो समझते हैं और कहाँ जावें। चलो, बाबा पास जाते हैं मधुबन में। यह तो जैसे धर्मशाला हो जाये। फिर यूनिवर्सिटी कैसे हुई? बाबा जाँच कर रहे हैं फिर कब आर्डर कर देंगे, बच्चे कोई भी न ले आये। (मु.4.5.85 पृ.3 म.)	Download
1062	सर्विस-डिससर्विस	तुम बच्चों को सर्विस तो करनी है ना। सर्विस में कब विघ्न न पड़ना चाहिए। सर्विस में कमज़ोरी न दिखानी है। शिवबाबा की सर्विस है ना। उनमें कब ज़रा भी ढिलाई (कमी) नहीं करना चाहिए, नहीं तो अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। बाप के मददगार बने हो तो पूरी मदद देनी है। बाप की सर्विस में ज़रा भी धोखा न देना है। पैगाम सबको पहुँचाना ही है। (मु.4.9.75 पृ.2 मध्यादि)	Download
1063	सेवा व्यक्ति की	मुख्य जो हैड हो पहले उनसे मिलना चाहिए। उन्हों से सारा अंत निकाल फिर बड़े गुरू से मिलना चाहिए। फिर उनको समझाना होता है। .... बाबा युक्ति बहुत समझाते हैं। सेंन्सिबुल बच्चे झट समझ जावेंगे कि हमको क्या करना है, कैसे अंत निकालना है। रहने आदि का पैसा भी देना है। सब जाँच करनी चाहिए। तुम लोग यहाँ क्यों छोड़कर बैठे हो? सरेण्डर हुये हो फिर उनसे क्या मिलना है? जाँच करनी चाहिए वह क्या बोलते हैं। (मु.4.4.75 पृ.1 अं.)	Download
1064	सेवा और याद में बैलेंस	याद और सेवा-दोनों का बैलेन्स सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लैसिंग (अशीर्वाद) का पात्र बनाता है। .... स्वयं बाप हर श्रेष्ठ कर्म, हर श्रेष्ठ संकल्प के आधार पर हर ब्राह्मण बच्चे को हर समय दिल से आशीर्वाद देते रहते हैं। (अ.वा.6.11.87 पृ.120 आ)	Download
1065	सेवा और याद में बैलेंस	सेवा में समय लगाना बहुत अच्छी बात है और सेवा का बल भी मिलता है .... लेकिन जो सेवा याद में, उन्नति में थोड़ा भी रूकावट करने के निमित्त होती है तो ऐसी सेवा के समय को कम करना चाहिए। जैसे रात्रि को जागते हो, 12.00 वा 1.00 बजा देते हो तो अमृतवेला फ्रेश नहीं होगा।....... तो रात के समय को कट करके 12.00 के बदले 11.00 बजे सो जाओ।...... नहीं तो दिल खाती है कि सेवा तो कर रहे हैं; लेकिन याद का चार्ट जितना होना चाहिए, उतना नहीं है। जो संकल्प दिल में वा मन में बार-बार आता है कि यह ऐसा होना चाहिए; लेकिन हो नहीं रहा है, तो उस संकल्प के कारण बुद्धि भी फ्रेश नहीं होती। ..... जितनी फ्रेश बुद्धि रहती, शरीर के हिसाब से भी फ्रेश और आत्मिक उन्नति के रूप में भी फ्रेश - डबल फ्रेशनेस (ताजगी) रहती, तो एक घण्टे का कार्य आधा घण्टे में कर लेंगे। (अ.वा.20.2.88 पृ.261 आ)	Download
1066	सेवा और याद में बैलेंस	जहाँ याद और सेवा का बैलेंस है अर्थात् समानता है, वहाँ बाप की विशेष मदद अनुभव होती है। (अ.वा.17.10.87 पृ.93 म.)	Download

1067	सेवा और याद में बैलेंस	राजधानी को सजाने वाले सेवा और याद के बैलेन्स में रहो। हर संकल्प में भी सेवा हो। जब हर संकल्प में सेवा होगी तो व्यर्थ से छूट जायेंगे। तो चैक करना चाहिए जो संकल्प उठा, जो सेकेण्ड बीता वह सेवा और याद का बैलेन्स रहा?......तो सेवा और याद का चार्ट रखो। (अ.वा.2.1.80 पृ.170 अं., 171 आ.)	Download
1068	सेवा और याद में बैलेंस	याद में रह सेवा करना यह है याद और सेवा का बैलेन्स। (अ.वा.7.5.84 पृ.293 अं.)	Download
1069	सेवा और याद में बैलेंस	सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला याद किया, नहीं तो सेवा को ही याद समझना इसको कहा जाता है-अनबैलेन्स। सिर्फ़ सेवा ही याद है और याद में ही सेवा है। यह थोड़ा सा विधि का अन्तर सिद्धि को बदल लेता है। (अ.वा.7.5.84 पृ.293 अं.)	Download
1070	सम्पूर्णता के लक्ष्य	जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नज़दीक होंगे उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज अधिकारी होंगे, साथ-2 आदि भक्त जीवन में भी समीप सम्बन्ध में होंगे। पूज्य अथवा पुजारी दोनों जीवन में साकार बाप के समीप होंगे अर्थात् आदि आत्मा के सारे कल्प में सम्बन्ध वा सम्पर्क में रहेंगे। हीरो पार्टधारी आत्मा के साथ-2 आप आत्माओं का भी भिन्न नाम-रूप से विशेष पार्ट होगा। अब के सम्पूर्ण स्थिति के नज़दीक से अर्थात् बापदादा की समीपता के आधार से सारे कल्प की समीपता का आधार है। .... समीपता का आधार श्रेष्ठता है। श्रेष्ठता का आधार, अपने मरजीवे जीवन में विशेष दो बातों की चैकिंग करो। एक सदा परउपकारी रहे हैं, दूसरा आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं, मरजीवे जीवन के आदि काल से अर्थात् बाल काल से अब तक सदा ब्रह्मचारी रहे हैं, ब्रह्मचारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा समान पवित्र जीवन, जिसको ब्रह्मचारी कहो या ब्रह्माचारी कहो- आदि से अंत तक अखण्ड रहे हैं? अगर बार-2 खण्डित रहे हैं तो बाल ब्रह्मचारी वा सदा ब्रह्माचारी नहीं कहला सकते। किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता खण्डन हुई है तो परम पूज्यनीय नहीं बन सकते हैं। बाप समान न होने के कारण समीप सम्बन्ध में नहीं आ सकते; इसलिए श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्माचारी, जिसको ही फालो फादर भी कहते हैं। तो अपने को चैक करो, अखण्ड हैं? अखण्ड रहने वाले को सर्व प्राप्तियाँ भी अखण्ड अनुभव होती हैं। (अ.वा.7.12.78 पृ.107 अं., 108)	Download
1071	सम्पूर्णता के लक्ष्य	काँटा लगे और फिर निकालो, यह फाइनल स्टेज नहीं है, काँटे को अपनी सम्पूर्ण स्टेज से समाप्त कर देना है-यह है फाइनल स्टेज। (अ.वा.15.4.74 पृ.25 अं.)	Download
1072	सम्पूर्णता के लक्ष्य	जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आँख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नज़र में रहते हैं। अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुये खज़ाने में सदा रमण करता रहता है। (अ.वा.2.5.74 पृ.38 आ.)	Download
1073	सम्पूर्णता के लक्ष्य	सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-2 सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेस्पांड मिले इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं। (अ.वा.7.2.75 पृ.50 म.)	Download
1074	सम्पूर्णता के लक्ष्य	घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। (अ.वा.8.2.75 पृ.55 अं., 56 आ.)	Download

1075	सम्पूर्णता के लक्ष्य	अपने सम्पूर्ण स्टेज की निशानियाँ स्वयं में स्पष्ट नज़र आवेंगी। .... पहली निशानी- पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्प मात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा। .... सारी सृष्टि की आसुरी आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। ....सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। ....विकर्म का खाता समाप्त हुआ अनुभव होगा।(अ.वा.7.10.75 पृ.154 अं., 155 आ.म)	Download
1076	सम्पूर्णता के लक्ष्य	निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुःख सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है सम्पूर्णता की स्टेज। दुःख में भी सूरत वा मस्तक पर दुःख की लहर बजाए, सुख वा हर्ष की लहर दिखाई दे।...........एक समय एक ज़ोर है, दूसरे समय पर दूसरा ज़ोर है तो भी दूसरी बात है; लेकिन एक ही समय पर दोनों बैलेन्स ठीक रहें, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण। (अ.वा.8.6.72 पृ.297 अं., 299 आ.)	Download
1077	सम्पूर्णता के लक्ष्य	स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर न रह जावेगा तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अन्तर न रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जावेगा। (अ.वा.24.1.70 पृ.191 अं.)	Download
1078	सम्पूर्णता के लक्ष्य	अभी-2 आवाज़ में, अभी-2 आवाज़ से परे। यह अभ्यास सरल और सहज हो जावेगा तब समझो सम्पूर्णता आई है।.........सर्व पुरुषार्थ सरल होगा। ....दोनों में सरल अनुभव हो तब समझो सम्पूर्णता की अवस्था प्राप्त होने वाली है। सम्पूर्ण स्थिति वाले पुरुषार्थ कम करेंगे, सफलता अधिक प्राप्त करेंगे। (अ.वा.2.4.70 पृ.234 म.)	Download
1079	सम्पूर्णता के लक्ष्य	फाउन्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो ही नहीं सकता। ऐसी स्टेज समीप आ रही है। इसी को ही कहा जाता है सम्पूर्ण स्टेज के समीप। (अ.वा.2.1.78 पृ.1 अं.)	Download
1080	स्नेह	जहाँ स्नेह होता है वहाँ याद स्वतः, सहज आती ही है। स्नेही को भुलाना मुश्किल होता है। .... अगर ज्ञान है और स्नेह नहीं है तो वह रूखा ज्ञान है।......... दिमाग से याद करने वालों को याद मं्, सेवा में, धारणा में मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाते हैं और वह मुहब्बत का फल खाते हैं। जहाँ स्नेह नहीं, दिमागी ज्ञान है तो ज्ञान की बातों में भी क्यों, क्या, कैसे .... दिमाग लड़ता रहेगा और लड़ाई लगती रहेगी, अपने आप से। व्यर्थ संकल्प ज़्यादा चलेंगे। (अ.वा.6.1.88 पृ.200 म.)	Download
1081	स्नेह	अपनी स्नेह की डोर से बापदादा को भी बाँधने वाले, अव्यक्त को भी आप समान व्यक्त में लाने वाले, नये-2 बच्चे व साकारी देश में दूर- देशी बच्चे जो हैं, उन्हों के प्रति विशेष मिलने के लिए बापदादा को भी आना पड़ा है, तो शक्तिशाली कौन हुए, बाँधने वाले या बँधने वाले? (अ.वा.18.1.75 पृ.20 अं.)	Download
1082	स्नेह	सदा सर्व सम्बन्धों से प्रीति की रीति प्रैक्टिकल में निभाई है? एक सम्बन्ध की भी प्रीति निभाने में कमी नहीं। स्नेह का प्रत्यक्ष रिटर्न अपने स्नेही मूर्त द्वारा कितनों को बाप का स्नेही बनाया है? सिर्फ ज्ञान के स्नेही नहीं या प्यूरिटी के स्नेही नहीं या बच्चों के जीवन परिवर्तन के स्नेही नहीं या श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेही नहीं; लेकिन डायरैक्ट बाप के स्नेही। (अ.वा.30.1.80 पृ.254 अं., 255 आ.)	Download
1083	स्नेह	जिससे स्नेह होता है, स्नेह अर्थात् सम्पर्क। जिससे सम्पर्क होता है तो उन जैसे संस्कार ज़रूर भरेंगे। संस्कार मिलने के आधार से ही सम्पर्क होता है ना। तो अगर बाप के स्नेही हो, सम्पर्क भी है, तो संस्कार क्यों नहीं मिलते? (अ.वा.18.6.70 पृ.270 अं.)	Download

1084	स्नेह	स्नेह की वर्षा दुश्मन को भी दोस्त बना देगी। चाहे कोई आपको मान दे वा माने न माने; लेकिन आप सदा स्वमान में रह औरों को स्नेही दृष्टि से, स्नेही वृत्ति से आत्मिक मान देते चलो। वह माने न माने आपको; लेकिन आप उसको मीठा भाई, मीठी बहन मानते चलो। .... वह पत्थर फेंफेंके, आप रत्न दो, आप भी पत्थर न फेंको; क्योंकि आप रत्नागर बाप के बच्चे हो। .... भिखारी नहीं हो, जो सोचो, वह दे तब दूँ। यह भिखारी के संस्कार हैं। दाता के बच्चे कभी लेने का हाथ नहीं फैलाते। बुद्धि से भी संकल्प करना कि यह करे, तो मैं करूँ, यह स्नेह दे तो मैं स्नेह दूँ। ...... यह भी हाथ फैलाना है। यह भी रॉयल भिखारीपन है। (अ.वा.16.2.86 पृ.187 मध्यांत, 188 आ.)	Download
1085	स्नेह	बाप से प्यार की निशानी यह है कि सभी ब्राह्मण आत्माएँ प्यारी लगेंगी। हर ब्राह्मण प्यारा लगना माना बाप से प्यार है। माला में एक/दो के सम्बन्ध में तो ब्राह्मण ही आयेंगे, बाप तो रिटायर हो देखेंगे। (अ.वा.1.3.86 पृ.225 मध्यांत)	Download
1086	स्नेह	सेवा का पहला सफलता का स्वरूप हुआ स्नेह। जब स्नेह में बाप के बन जाते हो तो फिर कोई भी ज्ञान की प्वाइन्ट सहज स्पष्ट होती जाती। जो स्नेह में नहीं आता वह सिर्फ ज्ञान को धारण कर आगे बढ़ने में समय भी लेता, मेहनत भी लेता; क्योंकि उनकी वृत्ति क्यों, क्या, ऐसा कैसे, इसमें ज़्यादा चली जाती और स्नेह में जब लवलीन हो जाते तो स्नेह के कारण बाप का हर बोल स्नेही लगता। ....जो प्यार में खो जाते हैं तो जिससे प्यार है उसको वह जो बोलेगा उनको वह प्यार ही दिखाई देगा। तो सेवा का मूल आधार है स्नेह।(अ.वा.4.3.86 पृ.229 आ)	Download
1087	स्नेह	जो सदा सन्तुष्ट रहता है उससे सभी का स्वतः ही दिल का प्यार होता है, बाहर का प्यार नहीं। एक होता है किसको राज़ी करने के लिए बाहर का प्यार करना, एक होता है दिल का प्यार। नाराज़ न हो उसके लिए भी प्यार करना पड़ता है; लेकिन वह प्यार को सदा लेने का पात्र नहीं बनता। (अ.वा.18.3.85 पृ.244 म.)	Download
1088	स्नेह	जो सदा बाप के प्यारे हैं उसकी निशानी है स्वतः याद। प्यारी चीज़ स्वतः सदा याद आती है ना। तो यह कल्प-2 की प्रिय चीज़ है।........तो ऐसी प्रिय वस्तु को कैसे भूल सकते? भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु प्रिय समझने लगते हो। (अ.वा.1.11.81 पृ.103 मध्यांत)	Download
1089	सम्मुख-विमुख	मुरली सब बच्चे सुनेंगे; परंतु सम्मुख की बात और है ना। यह भी दिखाते हैं कृष्ण डान्स करते थे। डांस कोई वह नहीं। वास्तव में है ज्ञान का डाँस। (मु.9.4.71 पृ.1 म.)	Download
1090	सम्मुख-विमुख	सबसे जास्ती मज़ा सम्मुख का है, फिर सेकेण्ड नं० टेप। फिर थर्ड नं० मुरली। (मु.12.4.71 पृ.3 अं.)	Download
1091	सम्मुख-विमुख	भगवान ने जिन्हों को डायरैक्ट सुनाया उन्होंने ही सुना। फिर तो यह ज्ञान रहता नहीं। (मु.15.4.71 पृ.3 आ.)	Download
1092	सम्मुख-विमुख	बाप सन्मुख आकर जन्म दे तब तो लव होगा ना। तुमको जन्म दिया है तब तो लव हुआ है। (मु.3.3.78 पृ.3 अं.)	Download
1093	सम्मुख-विमुख	बाप सन्मुख आकर श्रीमत देते हैं। (मु.19.3.78 पृ.3 मध्यादि)	Download
1094	सम्मुख-विमुख	यह ऐसा विचित्र है जो घड़ी-2 भूल जाता है। हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सन्मुख रही पड़ी हैं, यह भूल जाते हैं। (मु.1.10.78 पृ.1 आ.)	Download

1095	सम्मुख-विमुख	बाप अभी सन्मुख कहते हैं। भक्तिमार्ग में फिर गायन चलता है। (मु.17.10.78 पृ.2 आ.)	Download
1096	सम्मुख-विमुख	वह है स्वर्ग का रचता। हमको सन्मुख पढ़ा रहे हैं। (मु.20.10.78 पृ.1 मध्यांत)	Download
1097	सम्मुख-विमुख	तुम्हारे द्वारा सुनने से इनडायरैक्ट हो जाता है, फिर यहाँ आते हैं डायरैक्ट सुनने के लिए। फिर बाबा ब्रह्मा मुख द्वारा सुनाते हैं अथवा मुख द्वारा ज्ञानामृत देते हैं, इस समय दुनियाँ तमोप्रधान हो गई है तो उस पर ज्ञान की वर्षा चाहिए। (मु.4.1.84 पृ.2 अं.)	Download
1098	सम्मुख-विमुख	यहाँ भी सा० तो बहुतों को होते हैं; परन्तु उससे सद्गति नहीं हो सकती जब तक रूबरू ज्ञान-योग की शिक्षा पूरी (न) लेवें। शिक्षा बिगर साक्षात्कार से कुछ नहीं होता। (मु.29.5.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
1099	शूद्र कुमारी	बड़ी-2 ब्राह्मणियों की आपस में ही नहीं बनती। मतभेद के कारण आपस में बात भी नहीं करतीं। देहअभिमान बहुत है। रामराज्य में जाने लिए तो लायक बनना पड़े ना। यह है ईश्वरीय राज्य। इसमें आसुरी स्वभाव वाले रह न सकें। उनको ब्रह्माकुमारी कहलाने का भी हक नहीं। (मु.18.11.72 पृ.3 अं.)	Download
1100	शूद्र कुमारी	कोई-2 ब्रह्माणियाँ गुस्सा करती हैं, कोई बच्ची बीमार है तो उनकी दवाई नहीं करतीं, खाना नहीं पूरा खिलातीं। बाबा मुरली से सभी को समझाते हैं। खबरदार करते हैं। ऐसे-2 कर्तव्य करने से गोया तुम आसुरी सम्प्रदाय हो। (मु.31.7.70 पृ.2 आ.)	Download
1101	शूद्र कुमारी	कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं। बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देहअभिमानी समझते हैं। बाबा कितना बड़ा निरअहंकारी है। बाप का रथ भी कितना निरअहंकारी है। बच्चों को बड़ा-2 म्यूज़ियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाना शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं। (मु.12.11.70 पृ.2 अं.)	Download
1102	शूद्र कुमारी	ब्राह्मणी पूरी मेहनत करती नहीं है। बहुत आराम से सेन्टर्स पर रहती है। खाती-पीती है, बर्तन मँजवाती है, कपड़े धुलवाती है। बाबा कहते हैं यहाँ पर सर्विस लेंगे तो भविष्य में दासी बनकर सर्विस देनी पड़ेगी। ....दूसरों से सेवा लोगी तो तुम्हारे ऊपर ही कर्ज़ा चढ़ेगा। (मु.13.10.73 पृ.4 अं.)	Download
1103	शूद्र कुमारी	ऐसी भी बहुत ब्रह्माकुमारियाँ हैं जो भक्तिमार्ग बैठ सिखलाती हैं। जैसे साधु-संत करते हैं। कृष्ण की मूर्ति रख उनको माथा टेका। ब्रह्माकुमारियों के आगे भी माथा टेका। कुछ न कुछ आमदनी मिली। बैठ कर खाते। कितनी सत्यानाश कर रही हैं। चढ़ने के बदली और ही गिरते हैं।(मु.11.4.72 पृ.2 अं.)	Download
1104	शूद्र कुमारी	ब्राह्मण जो हैं वह मन्दिर आदि नहीं बनावेंगे। शूद्र लोग मन्दिर बनावेंगे, चित्र आदि रखेंगे। (मु.25.3.76 पृ.2 आ.)	Download
1105	शूद्र कुमारी	कोई-2 हेड बनकर रहती हैं तो बड़ा नशा चढ़ जाता। भभके से बहुत रहती हैं। बड़े आदमी से भी तू-तू कर बात करती हैं। बस, उनको दीदी-2 कहते हैं तो उसमें ही खुश हो जातीं। योग कुछ भी नहीं। नशा चढ़ जाता है हम दीदी हैं, ऐसे नहीं समझतीं, यह मेरे से तीखा है। (मु.26.3.75 पृ.2 म.)	Download

1106	सर्वसंबंध बाप से	'एक बाप दूसरा न कोई' इसी स्मृति में और समर्थी में रहना, यह मूल परहेज़ निरन्तर नहीं करते हैं, और ही कहीं न कहीं अपने को यह कहकर धोखे में रखते हैं कि मैं तो हूँ ही शिवबाबा का, और मेरा है ही कौन? लेकिन प्रैक्टिकल में ऐसा स्मृति स्वरूप हो जो संकल्प में भी एक बाप के सिवाय दूसरा कोई व्यक्ति व वैभव, सम्बन्ध व सम्पर्क व कोई साधन स्मृति में न आवे। (अ.वा.20.10.75 पृ.210 म)	Download
1107	सर्वसंबंध बाप से	जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण, संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है। बाकी किसी परिस्थिति में देहधारी की याद आये कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे या सहारा देंगे-इससे सिद्ध है कि सर्वशक्तिवान का सहारा सदा साथ नहीं रहता। (अ.वा.23.1.76 पृ.21 अं.)	Download
1108	सर्वसंबंध बाप से	जब विश्व का मालिक अपना हो गया तो विश्व अपनी हो गई ना। जैसे बीज अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही ना। जिसको ढूँढ़ते थे, उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिला तो कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान ने मुझे अपना बनाया, इसी खुशी में रहो तो कहीं भी आँख नहीं डूबेगी। (अ.वा.13.1.78 पृ.27 अं.)	Download
1109	सर्वसंबंध बाप से	जब एक तरफ सम्बन्ध का सुख प्राप्त हो सकता है तो भटकने की क्या ज़रूरत है? ठिकाने लग जाना चाहिए ना। एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना यह है ठिकाना। सदा अपना अंतिम फरिश्ता स्वरूप स्मृति में रखो तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति बन जायेगी। (अ.वा.1.1.79 पृ.168 अं.)	Download
1110	सर्वसंबंध बाप से	सर्व सम्बन्ध निभाने वाले परम आत्मा को अपना बना लिया। जब चाहो, जैसा सम्बंध चाहो वैसा ही सम्बन्ध का रस एक द्वारा सदा निभा सकते हो और सम्बन्ध भी ऐसे जो देने वाले होंगे, लेने वाले नहीं। कभी धोखा भी नहीं देने वाले, सदा प्रीति की रीति निभाने वाले- ऐसे अमर सम्बन्ध अनुभव करते हो ना? (अ.वा.23.1.79 पृ.236 अं., 237 आ.)	Download
1111	सर्वसंबंध बाप से	सदा सुहागिन का गायन पटरानियों के रूप में है। फिर पटरानियों में भी नम्बर हैं। कोई सदा साथ रहती है और कोई कभी-2। .... तो पटरानियाँ तो सब बनती हैं; लेकिन उनमें भी नं. हैं। प्राप्ति में भी अन्तर है और पूजन में भी अन्तर है। राधे और गोपियों में भी अंतर है। .... राधे की प्राप्ति अपनी, गोपियों की अपनी। कोई विशेषता राधे के पार्ट में है और कोई विशेषता पटरानियों वा गोपियों के पार्ट में है। इसका भी गुह्य रहस्य है। मिलन मेला मनाने वाले कौन? सर्व सुखों का अनुभव परमात्म पार्ट से है- यह भी सबसे विशेष भाग्य है। इसका भी आत्माओं के विशेष पार्ट से सम्बन्ध है। (अ.वा.23.1.79 पृ.238 आ)	Download
1112	सर्वसंबंध बाप से	सर्व सम्बंध बाप के साथ जोड़ना अर्थात् सर्व बंधनों से मुक्त होना। अनेक जन्मों के अनेक प्रकार के बन्धन को समाप्त करने का सहज साधन बाप से सर्व सम्बंध। अगर किसी भी प्रकार का बन्धन अनुभव करते हो तो उसका कारण है सम्बन्ध नहीं। (अ.वा.30.1.79 पृ.249 म.)	Download
1113	सर्वसंबंध बाप से	अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बंध में समझो तो सदा एवर रेडी रहेंगे। .... यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं।.........याद रखो मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। ट्रस्टी हूँ, बन्धनमुक्त हूँ, ऐसी प्रैक्टिस करो। (अ.वा.26.11.79 पृ.51 अं., 52 आ.)	Download

1114	सर्वसंबंध बाप से	बाप कैसे (भी) समय पर सम्बन्ध निभाने के लिए बँधे हुये हैं। जब बाप साथ दे रहे हैं तो लेने वाले क्यों नहीं लेते? सहयोग लेना ही योग कैसे होता है, यह अनुभव करो। माता का सम्बन्ध क्या है, बाप का सम्बन्ध क्या है, सखा और बन्धु का सम्बन्ध क्या है, सदा साजन के संग का अनुभव क्या है, यह अलग-2 सम्बन्ध का रहस्य अनुभव में आया है? अगर एक भी सम्बन्ध की अनुभूति से वंचित रह गये तो सारा कल्प ही वंचित रह जायेगे। (अ.वा.5.12.79 पृ.84 अं., 85 आ.)	Download
1115	सर्वसंबंध बाप से	प्यार पाने का साधन है न्यारा बनो। जब तक देह से वा देह के सम्बन्धियों से न्यारे नहीं बने हो तब तक प्यार नहीं मिलता। इसलिए कहाँ भी लगाव न हो। लगाव हो तो एक सर्व सम्बन्धी बाप से। एक बाप दूसरा न कोई... यह सिर्फ कहना नहीं लेकिन अनुभव करना है। (अ.वा.17.3.82 पृ.300 आ)	Download
1116	सर्वसंबंध बाप से	सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं, बाप सदा सम्मुख में हाज़िर-नाज़िर हैं, ऐसा अनुभव होता है? तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सुनूँ... इसका अनुभव होता है ना? बाप ही सच्चा मित्र बन गया तो औरों को मित्र बनाने की ज़रुरत ही नहीं। जो सम्बन्ध चाहिए उस सम्बन्ध से बापदादा सदा सम्मुख में हाज़िर-नाज़िर हैं। तो शिक्षक अर्थात सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से अनुभव करने वाली। (अ.वा.27.3.82 पृ.324 म.)	Download
1117	सर्वसंबंध बाप से	सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनायें एक से लेने वाला ही एकान्त प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनायें प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या? लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते, तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। (अ.वा.25.10.69 पृ.131 अं)	Download
1118	सर्वसंबंध बाप से	जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से सदा हैं ही। पहले कहने मात्र थे, अभी प्रैक्टिकल है। भक्तिमार्ग में भी गायन ज़रूर करते थे कि सर्व सम्बन्ध बाप से हैं; लेकिन अब प्रैक्टिकल सर्व सम्बन्धों का रस बाप द्वारा मिलता है। ऐसे अनुभव करने वाली हो ना। जब सर्व रस एक बाप द्वारा मिलता है तो और कहाँ भी संकल्प जा नहीं सकता। (अ.वा.19.12.84 पृ.77 अं.)	Download
1119	सर्वसंबंध बाप से	सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं फिर शक्ति न आए यह कैसे हो सकता है? ज़रूर बुद्धि की तार में कमी है। तार को जोड़ने लिए जो युक्तियाँ मिलतीं उसको अभ्यास में लाओ। तोड़ने बिगर जोड़ लेते हैं, तो पूरा फिर जुटता नहीं। थोड़े समय के लिए जुटता, फिर टूट जाता है। इसलिए अनेक तरफ से तोड़कर एक तरफ जोड़ना है। इसके लिए संग भी चाहिए और अटेन्शन भी चाहिए। (अ.वा.26.1.70 पृ.205 अं., 206 आ.)	Download
1120	सर्वसंबंध बाप से	सर्वशक्तिवान बाप को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया यही मास्टर सर्वशक्तिवान की शक्ति है। तो सर्वशक्तिवान को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया है। जब इतना बड़े ते बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है फिर क्यों नहीं अपने को जानते और मानते हो? .... जब सर्व सम्बन्ध एक के साथ जुट गये तो और बात रही ही क्या? जब कुछ रहता ही नहीं तो बुद्धि जायेगी कहाँ? अगर बुद्धि इधर-उधर जाती है तो सिद्ध होता है कि सर्व सम्बन्ध एक के साथ नहीं जोड़े हैं। जोड़ने की निशानी है अनेकों से टूट जाना। (अ.वा.30.11.70 पृ.323 अं.)	Download
1121	सर्वसंबंध बाप से	आत्मा परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं; लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव करना यह नवीनता है, जिसको कहा जाता है रियल्टी का अनुभव करना। (अ.वा.18.11.81 पृ.154 आ.)	Download

1122	सर्वसंबंध बाप से	जब बाप सर्व सम्बन्धों से अपना बन गया तो सदा बाप का साथ चाहिए ना! कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो, पहाड़ हो; लेकिन आप बाप के साथ-2 ऊपर उड़ते रहो तो कभी भी रुकेंगे नहीं। .... कभी भी झूले से नीचे नहीं आओ, नहीं तो मैले हो जाएँगे। मैले फिर बाप से कैसे मिल सकते? बहुतकाल अलग रहे, अभी मेला हुआ तो मनाने वाले मैले कैसे होंगे?.......... अगर बार-2 मैले होंगे तो स्वच्छ होने में कितना टाइम वेस्ट होगा।.......... स्वचिन्तन करो, परचिन्तन न सुनो, न करो, यही मैला करता है। अभी से क्वेश्चन मार्क समाप्त कर बिन्दी लगा दो। (अ.वा.29.3.82 पृ.330 आ)	Download
1123	सर्वसंबंध बाप से	जब कोई समस्या जीवन में आयेगी, दिल में कोई उलझन की बात होगी तो न चाहते भी अल्पकाल के सहारे देने वाले वा अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले, लगाव वाली आत्मा ही याद आयेगी, बाप याद नहीं आयेगा। फिर ऐसे लगाव लगाने वाली आत्मायें अपने आपको बचाने के लिए वा अपने को राइट सिद्ध करने के लिए क्या सोचती और बोलती हैं कि बाप तो निराकार और आकार है ना। साकार में कुछ चाहिए ज़रूर; लेकिन यह भूल जाती हैं अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे दाता का अटल विश्वास है, निश्चय है तो बापदादा निराकार, आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं, साकार रूप की भासना देते हैं। अनुभव न होने का कारण? नालेज द्वारा यह समझा है कि सर्व सम्बन्ध एक बाप से रखने हैं; लेकिन जीवन में सर्व सम्बन्धों को नहीं लाया है। इसलिए साक्षात् सर्व सम्बन्धों की अनुभूति नहीं कर पाते हैं। .... किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव होने के कारण कर्मातीत बनने के बजाय कर्मों का बन्धन बँध जाता है। एक ने दिया, दूसरे ने लिया तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन-देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? ...... रिजल्ट क्या होगी? कर्मबन्धनी आत्मा बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी।........ वह याद के सब्जेक्ट में सदा कमज़ोर होगी, नालेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी; लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी। ....सेवा की वृद्धि कर लेंगे; लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्माएँ कर्मबन्धन के बोझ कारण स्पीकर बन सकती हैं ; लेकिन स्पीड में नहीं चल सकतीं। (अ.वा.8.4.82 पृ.356 आ., 357)	Download
1124	सर्वसंबंध बाप से	इनको भाई कहने का रहता नहीं। टेव पड़ गई है। बाबा कहने से तुम बच्चे जानते हो मैं तुम्हारा बाप हूँ। (मु.17.5.77 पृ.2 अं.)	Download
1125	सर्वसंबंध बाप से	इस समय तुम्हारा सम्बन्ध सबसे छोटा है। सिर्फ एक बाप ही सर्व सम्बन्धी है। दूसरा कोई से भी तुम्हारा बुद्धियोग नहीं है सिवाय एक के। .... सबका योग एक के साथ। तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। बहन-भाई का सम्बन्ध भी गिरा देता है। सम्बन्ध एक से होना चाहिए। यह है नई बात। (मु.20.4.84 पृ.1अं.,2आ.)	Download
1126	ट्रस्टी	दिलवाड़ा मन्दिर के जो ट्रस्टी हैं वह कुछ भी नहीं जानते। उनको भी ढूँढ़ना चाहिए। शायद अहमदाबाद में रहते हैं। उनको किताब देना चाहिए। आओ तो हम आपको दिलवाड़ा मन्दिर का राज़ समझावें। (मु.5.7.71 पृ.4 अं.)	Download
1127	ट्रस्टी	बहुत कहते हैं हमारा बच्चों में मोह है। वह तो निकालना ही होगा। मोह रखना है एक में। बाकी तो ट्रस्टी होकर सम्भालना है। (मु.1.10.71 पृ.3 आ.)	Download
1128	ट्रस्टी	देना भी कुछ नहीं है। सिर्फ वारना है। बाबा, यह सब कुछ आपका है। अच्छा, बच्चे ट्रस्टी हो सम्भालो। शिवबाबा का समझ खावेंगे तो वो जैसे शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो।............ तुम बच्चों को अपना घर-बार भी सम्भालना है; परन्तु अपन को ट्रस्टी समझ। (मु.14.4.77 पृ.1 अं.)	Download

1129	ट्रस्टी	ट्रस्टी अर्थात डबल लाइट, गृहस्थी अर्थात् बोझ वाला। (अ.वा.30.1.79 पृ.254 मध्यादि)	Download
1130	ट्रस्टी	ऐसे नहीं कह सकते कि सेवाधारी बन सेवाकेन्द्र पर रहना यही श्रेष्ठ त्याग वा भाग्य है। ट्रस्टी आत्माएँ भी त्याग वृत्ति द्वारा माला में अच्छा नं. ले सकती हैं। (अ.वा.1.4.82 पृ.331 अं., 332 आ.)	Download
1131	ट्रस्टी	ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझ वाला। गृहस्थी होगें तो उतरती कला में जाएँगे। ....ट्रस्टी सदा बेफिकर बादशाह होते अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं, उन्हें रूहानी फखुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं।.......... ट्रस्टी समझेगें तो फुलस्टॉप आ जाता। फुलस्टॉप अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव। (अ.वा.21.12.78 पृ.147 म)	Download
1132	ट्रस्टी	मेरी प्रवृत्ति है या मेरी युगल है, यह स्मृति भी राँग है। .... यह जो हद की रचना बापदादा ने ट्रस्ट बनाकर सम्भालने के लिए दी है, वह मेरी रचना नहीं; लेकिन बापदादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ। ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं होता, ट्रस्टी निमित्त होता है। (अ.वा.12.7.72 पृ.322 अं.)	Download
1133	ट्रस्टी	सबसे रॉयल रूप का बोझ है यह मेरी ज़िम्मेवारी है। इसको तो निभाना ही पड़ेगा। .... ऐसे गृहस्थी में फँसने के कारण ट्रस्टीपन भूल जाते हो। यह तन भी मेरा नहीं, तन का भी ट्रस्टी हूँ। तो ट्रस्टी मालिक के बिगर किसी भी वस्तु को अपने प्रति यूज़ नहीं कर सकते हैं।.......... इन कर्मेन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लेना है। तो फिर अनेक कर्मेन्द्रियों द्वारा भिन्न-2 रस क्यों लेते हो? तो लौकिक व अलौकिक प्रवृत्ति में गृहस्थी बन जाते हो।.......... सब बाप की ज़िम्मेवारी, मेरी ज़िम्मेवारी नहीं, इस स्मृति से हल्के बन जाओ तो फिर जो सोचेंगे वही होगा अर्थात् हाई जम्प लगावेंगे। (अ.वा.20.10.75 पृ.211 अं., 212)	Download
1134	ट्रस्टी	अगर ट्रस्टी बन जाते तो न्यारे और प्यारे होने से एकरस हो जाते।.......... ज़रा भी मेरापन है तो मेरा माना गृहस्थीपन। जहाँ मेरापन होगा वहाँ ममता होगी। ममता वाले को गृहस्थी कहेंगे ट्रस्टी नहीं। (अ.वा.12.10.81 पृ.41 अं., 42 आ.)	Download
1135	ट्रस्टी	तन के और मन के ट्रस्टी बनो। सब बाप की ज़िम्मेवारी है, मेरी ज़िम्मेवारी नहीं। (अ.वा.20.10.75 पृ.212 अं)	Download
1136	ट्रस्टी	जो ट्रस्टी होगा उसका विशेष लक्षण सदैव स्वयं को हर बात में हल्का अनुभव करेगा।........जब बाप के बने तो तन-मन-धन सहित बाप के बने ना। सब बाप को दिया ना। जब दे दिया तो अपना कहाँ से रहा? ....ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं। .... ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतन्त्र आत्मा होता। किसी भी आकर्षण में परतन्त्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं, ट्रस्टी माना ही स्वतन्त्र। (अ.वा.5.6.77 पृ.215 अं., 216 आ.)	Download
1137	ट्रस्टी	थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? .... ऐसा पेपर आवे तो नष्टामोहा हैं? .... यह अलौकिक सेवा का सम्बन्ध, इसमें यदि आपका मोह होगा तो आने वाले स्टूडेन्ट्स इस पर वाणी चलावेंगे। (अ.वा.24.10.76 पृ.234 आ)	Download
1138	ट्रस्टी	प्रवृत्ति में भी रुहानियत के कारण अमानत समझकर चलेंगे तो मेरापन सहज ही समाप्त हो जाएगा। अमानत में कभी मेरापन नहीं होता है। मेरेपन में ही मोह के साथ-2 अन्य विकारों की भी प्रवेशता होती है। (अ.वा.24.10.75 पृ.221 म)	Download
1139	ट्रैफिक कंट्रोल	थकावट मिटाने का विशेष साधन हर घण्टे वा दो घण्टे में एक मिनट भी शक्तिशाली याद का अवश्य निकालो। ....बीच-2 में एक मिनट भी अगर शक्तिशाली याद का निकालो तो उसमें ए, बी, सी-सब विटामिन्स आ जाएँगे। (अ.वा.20.2.88. पृ.262 म)	Download

1140	ट्रैफिक कंट्रोल	ट्रैफिक को भी रोक कर 3 मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। .... आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-2 में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच-2 में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। (अ.वा.24.7.70 पृ.290 अं., 291 आ.)	Download
1141	ट्रैफिक कंट्रोल	ऐसी स्टेज हो जिसमें साकार शरीर भी आकारी रूप में अनुभव हो। जैसे आकार रूप में देखा, साकार शरीर भी आकारी फरिश्ता रूप अनुभव किया ना। (अ.वा.10.12.78 पृ.116 आ)	Download
1142	ट्रैफिक कंट्रोल	अभी-2 किसी भी परिस्थिति व वातावरण में आर्डर मिले व श्रीमत मिले कि एक सेकेण्ड में सर्व कर्मेन्द्रियों की अधीनता से न्यारे हो कर्मेन्द्रिय जीत बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ तो ....बाप ने बोला और बच्चों की स्थिति ऐसी ही उस घड़ी बन जाए उसको कहते हैं एवर रेडी।(अ.वा.1.9.75 पृ.86 म.)	Download
1143	ट्रैफिक कंट्रोल	एक सेकेण्ड में विस्तार से सार में चले जाएँ और एक सेकेण्ड में सार से विस्तार में आ जाएँ यही है वन्डरफुल खेल। (अ.वा.13.1.78 पृ.23 अं.)	Download
1144	ट्रैफिक कंट्रोल	साथ में रहते हुये भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नहीं है; लेकिन आत्माअभिमानी स्टेज निर्लेप है। (अ.वा.2.10.81 पृ.12 आ.)	Download
1145	ट्रैफिक कंट्रोल	बापदादा भी तो आवाज़ से परे जाएँगे या आवाज़ में ही आएँगे? प्रैक्टिस करो आवाज़ में कम आने की।......... पहला गेट तो आवाज़ से परे जाने का खुलना है ना। ....इसका उद्घाटन बापदादा अकेले करेंगे या साथ में करेंगे? (अ.वा.4.10.81 पृ.17 आ.)	Download
1146	ट्रैफिक कंट्रोल	सदा विजयी बनने वाले की विशेषता यही होगी एक सेकेंड में अपने संकल्प को स्टॉप कर लेना। कोई भी स्थूल कार्य व ज्ञान के मनन करने में बहुत बिज़ी हैं; लेकिन ऐसे समय में भी अपने आपको एक सेकेंड में स्टॉप कर लेना। (अ.वा.28.6.73 पृ.112 आ)	Download
1147	त्याग	त्याग तपस्या मूर्त ज़रूर बनावेगा। जहाँ त्याग और तपस्या खत्म, वहाँ सेवा भी खत्म। .... मैं टीचर हूँ, मैं इन्चार्ज हूँ, मैं ज्ञानी हूँ या योगी हूँ-यह स्वीकार करना इसको भी त्याग नहीं कहेंगे। दूसरा भले ही कहे; परंतु स्वयं को स्वयं न कहे। अगर स्वयं को स्वयं कहते हैं तो इसको भी स्वअभिमान ही कहेंगे। .... त्याग का मतलब यह नहीं कि सम्बन्ध छोड़ यहाँ आकर बैठे, नहीं। महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग-यह है त्याग। (अ.वा.20.10.75 पृ.205 म., 206 म.)	Download
1148	त्याग	जो किसी भी बात का बिना स्वार्थ के दिल से त्याग करता है उसका भाग्य बहुत होता, स्वार्थ के त्याग का भाग्य नहीं होता। निःस्वार्थ त्याग का भाग्य बहुत बड़ा है। बापदादा तो सभी बच्चों को एक/दो से आगे देखते हैं। (अ.वा.31.3.86 पृ.304 आ)	Download
1149	त्याग	साकार ब्रह्मा का मुख्य संस्कार कौन सा था? .... उनका मुख्य संस्कार था सर्वस्व त्यागी। निरअहंकारी का मतलब ही है सर्वस्व त्यागी। अपना सभी कुछ त्याग कर लेते हैं। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को न देखना यह भी त्याग है।....... सर्वस्व त्यागी अर्थात देह के भान का भी त्यागी।..........इस त्याग से मुख्य गुण कौन से आते हैं? सरलता और सहनशीलता। (अ.वा.17.4.69 पृ.52 आ.)	Download

1150	त्याग	त्याग किया और ब्राह्मण बने; लेकिन त्याग की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कहने में तो सभी एक बात कहते कि तन, मन, धन, सम्बन्ध सबका त्याग कर लिया; लेकिन तन का त्याग अर्थात् देह के भान का त्याग। तो देह के भान का त्याग हो गया है वा हो रहा है? त्याग का अर्थ है किसी भी चीज़ को वा बात को छोड़ दिया, अपने पन से किनारा कर लिया, अपना अधिकार समाप्त हुआ। जिसके प्रति त्याग किया वह वस्तु उसकी हो गई। जिस बात का त्याग किया उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते। .... तो त्याग किये हुए पुराने घर में फिर से वापिस तो नहीं आते हो? वायदा क्या किया है? तन भी तेरा कहा वा सिर्फ मन तेरा कहा? पहला शब्द 'तन' आता है। जैसे तन, मन, धन कहते हो, देह और देह के सम्बंध कहते हो तो पहला त्याग क्या हुआ? इस पुराने देह के भान से विस्मृति अर्थात् किनारा। (अ.वा.3.4.82. पृ.336 आ., 337 आ.)	Download
1151	यू.पी.	यू.पी. वाले क्या कमाल दिखायेंगे? यू.पी की विशेषता क्या है? तीर्थ भी बहुत हैं, नदियाँ भी बहुत हैं, जगतगुरु भी वहाँ ही हैं। चार कोने में चार जगतगुरु हैं ना। महामण्डलेश्वर यू.पी. में ज्यादा हैं। हरि का द्वार यू.पी. का विशेष है। तो हरि का द्वार अर्थात् हरि के पास जाने का द्वार बताने वाले सेवाधारी यू.पी. में ज्यादा होने चाहिए। जैसे तीर्थ स्थान के कारण यू.पी. में पण्डे बहुत हैं। वह तो खाने-पीने वाले हैं; लेकिन यह हैं सच्चा रास्ता बताने वाले रूहानी सेवाधारी पंडे, जो बाप से मिलन मनाने वाले हैं, बाप के समीप लाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव सो पण्डे यू.पी. में विशेष हैं। (अ.वा.17.4.84 पृ.249 अं., 250 आ.)	Download
1152	यू.पी.	सदा अपने को विश्व के आगे एक यथार्थ रास्ता दिखाने वाले रूहानी पण्डे समझते हो? पण्डों का काम क्या है? यू.पी. में पण्डे बहुत होते हैं ना। वह पण्डे क्या करते और आप क्या करते? वह कौन सी यात्रा कराते और आप कौन सी यात्रा कराते हो? आप ऐसी यात्रा कराते जो जन्म-जन्म के लिए यात्रा करने से छूट जायेंगे और वह बार-बार यात्रा करते रहेंगे। तो सदा के लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति की मंजिल पर पहुँचाने वाले पण्डे हो। ....जैसे बाप का कार्य है, बाप ने रास्ता दिखाया ना, वैसे बच्चों का भी वही कार्य। .... रास्ते के बीच जो साइड सीन आती है उसमें रुक तो नहीं जाते हो? क्योंकि माया साइड सीन के रूप में रोकने की कोशिश करती है............... लेकिन पक्के यात्री रुकते नहीं, मंजिल पर पहुँच जाते हैं। चाहे आँधी हो, तूफान हो, मंजिल पर पहुँचने व पहुँचाने वाले हो ना। (अ.वा.15.4.81 पृ.161 अं., 162 आ.)	Download
1153	यू.पी.	नदियों के किनारे पर यू.पी ज्यादा है। जमुना नदी के किनारे पर राजधानी और रास दिखाते हैं; लेकिन यू.पी की पतित-पावनी मशहूर है यानी यू.पी. को सेवा का स्थान दिखाया है। तो ऐसा कोई यू.पी. से निकलेगा ज़रूर जो अनेकों की सेवा के निमित्त बने। ....ऐसे यू.पी. से भी कोई निकल आयेगा, जो एक से अनेकों की सेवा हो जायेगी। .... अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है। अभी तक जो वी.आई.पी. निकले हैं उनसे ज्यादा नामी-ग्रामी तो वही विदेश का कहेंगे ना, जो प्रैक्टिकल अनेकों को सन्देश दिलाने के निमित्त बन रहे हैं। भारत भी आगे जा सकता है; लेकिन अभी की बात है। आखिर जय-जयकार तो भारत में ही होनी है ना। विदेश से भी जय-जयकार के नारे लगाते-2 पहुँचेंगे तो भारत में ही ना। ....विदेश इस समय रेस में आगे जा रहा है। अभी की बात है, कल दूसरा भी बदल सकता है।...............यू.पी. का कोई वी.आई.पी लाओ। पतित-पावनी कोई को पावन करके छू मंत्र करो। (अ.वा.1.11.81. पृ.105 म)	Download

1154	यू.पी.	यू.पी. की विशेषता है जैसे भक्ति के तीर्थस्थान यू.पी में बहुत हैं, वैसे ज्ञान के सेवाकेन्द्रों का विस्तार भी अच्छा कर रहे हैं। यू.पी. में भक्त आत्माएँ भी बहुत हैं। तो मास्टर भगवान अब भक्तों की पुकार सुन और भी जल्दी-जल्दी भक्ति का फल उनको दो। दे रहे हैं; लेकिन और भी स्पीड को बढ़ाओ। ....यू.पी. का कौरव गवर्मेंट के नक्शे में भी विस्तार है। एरिया बहुत लम्बी है। ऐसे ही पाण्डव गवर्नमेंट के नक्शे में सेवा की एरिया सबसे नं० वन करके दिखाओ। विशेष इस वर्ष में रहे हुए गुप्त वारिसों को प्रत्यक्ष करो। अब तक जो किया है वह बहुत अच्छा किया है, अभी और भी चारों ओर की आत्माएँ वन्स मोर करें। वाह-वाह की ताली बजाएँ। ऐसा विशेष कार्य भी यू.पी. वाले करेंगे। अभी और भी ज्यादा ज्ञान स्थान बनाओ। तीर्थस्थानों से ज्ञान स्थान बनाते जाओ। (अ.वा.12.12.79 पृ.110 म)	Download
1155	यू.पी.	यू.पी. की भूमि विशेष पावन भूमि गाई हुई है। पावन करने वाली भक्तिमार्ग की गंगा नदी भी वहाँ है और भक्ति के हिसाब से कृष्ण की भूमि भी यू.पी. में ही है। भूमि की महिमा बहुत है। कृष्णलीला जन्म भूमि देखनी होगी तो भी यू.पी. में ही जायेंगे। तो यू.पी वालों की विशेषता है सदा पावन बन और पावन बनाने की विशेषता सम्पन्न है। जैसे बाप की महिमा है पतित-पावन... यू.पी. वालों की भी महिमा बाप समान है। पतित पावनी आत्माएँ हो। भाग्य का सितारा चमक रहा है। ऐसे भाग्यवान स्थान और स्थिति दोनों की महिमा है। सदा पावन यह है स्थिति की महिमा। तो ऐसे भाग्यवान अपने को समझते हो? सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते स्वयं भी सदा हर्षित और दूसरों को भी हर्षित बनाते चलो; क्योंकि हर्षित मुख स्वतः ही आकर्षण मूर्त होते हैं। जैसे स्थूल नदी अपनी तरफ खींचती है ना, खिंच कर यात्री जाते हैं। चाहे कितना भी कष्ट उठाना पड़े फिर भी पावन होने का आकर्षण खींच लेता है। तो यह पावन बनाने के कार्य का यादगार यू.पी. में है। ऐसे ही हर्षित और आकर्षितमूर्त बनना है। (अ.वा.5.10.87 पृ.71 म.)	Download
1156	युगलों से	किसी भी प्रवृत्ति के बन्धन में बँधे हुए तो नहीं हो? लोक-लाज के बन्धन में, सम्बन्ध में बंधे हुए को बन्धनयुक्त आत्मा कहेंगे। .... मन में भी यह संकल्प न आए कि हमारा कोई लौकिक सम्बन्ध है। लौकिक सम्बन्ध में रहते अलौकिक सम्बन्ध की स्मृति रहे। निमित्त लौकिक सम्बन्ध; लेकिन स्मृति में अलौकिक और परलौकिक सम्बंध रहे। .... देह का सम्बन्ध नहीं है, सेवा का सम्बन्ध है। प्रवृति में सम्बन्ध के कारण नहीं रहे हो, सेवा के कारण रहे हो। घर नहीं, सेवा स्थान है। सेवा स्थान समझने से सदा सेवा की स्मृति रहेगी। (अ.वा.28.4.82 पृ.400 अं., 401 आ.)	Download
1157	युगलों से	युगल मूर्त अर्थात् सेवा के लिए सैम्पल रूप। .... तो प्रवृत्ति में रहते विश्व के शोकेस में विशेष शो पीस होकर चलते हो? .... शो केस में गन्दी चीज़ नहीं रखी जाती। अभी थोड़ा समय आगे बढ़ेगा तो सारे विश्व के अन्दर प्रवृत्ति में रहकर निवृत्त रहने वालों का नाम बाला होगा। ....युगलों की अपरमपार महिमा होगी। बाप के कार्य को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनेंगे। कोई साधारण नहीं हो, विशेष आत्मायें हो। (अ.वा.28.12.79 पृ.162 आ)	Download
1158	युगलों से	स्मृति से पुराना सौदा कैन्सिल कर सिंगल बनो, फिर युगल बनो। .... माया के सम्बन्ध को डायवोर्स दे दिया, बाप के सम्बन्ध से सौदा कर दिया। .... सहयोगी भले हो, कम्पेनियन नहीं। कम्पेनियन एक है, कम्पेनियनपन का भान आया और गया। ....सभी मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाए तो इससे बड़ा लक और क्या चाहिए! जो स्वप्न में न हो और साकार हो जाए तो और क्या चाहिए। बाप आपके पास पहले आया-पीछे आप आये हो। (अ.वा.1.12.78 पृ.92 आ.)	Download

1159	युगलों से	सदा स्वराज्य अधिकारी आत्माएँ हो? स्व का राज्य अर्थात् सदा अधिकारी। अधिकारी कभी अधीन नहीं हो सकते। अधीन हैं तो अधिकार नहीं। जैसे रात है तो दिन नहीं। दिन है तो रात नहीं। ऐसे अधिकारी आत्माएँ किसी भी कर्मेन्द्रियों के, व्यक्ति के, वैभव के अधीन नहीं हो सकते। .... स्वप्न में भी हार का संकल्प मात्र न हो। इसको कहा जाता है-सदा के विजयी। माया भाग गई कि भगा रहे हो? इतना भगाया है जो वापिस न आये। (अ.वा.16.1.85 पृ.128 म.)	Download
1160	युगलों से	अगर तुम्हारा युगल साथ नहीं देता तो तुम अपना पुरुषार्थ करो। युगल साथी नहीं बनते तो जोड़ी नहीं बनेगी? (मु.30.6.74 पृ.2 म.)	Download
1161	योग से प्राप्ति	तुम याद मे रहेंगे तो कोई भी तुम्हारे सामने बुरे विचार से आवेंगे तो उनको भयंकर साक्षात्कार हो जावेगा और झट भाग जावेगा। (मु.26.2.76 पृ.2 अं.)	Download
1162	योग से प्राप्ति	योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाहुबल से कोई विश्व का मालिक बन न सके। (मु.21.8.73 अ. रात्रि क्लास)	Download
1163	योग से प्राप्ति	अरे, योग में रहेंगे तो दर्द आदि भी कम होगा। योग ही नहीं तो बीमारी कहाँ से छूटे? .... मात-पिता जो पावन बनते हैं वही फिर सबसे जास्ती पतित बनते हैं। उनको तो बहुत भोगना भोगनी पड़े; परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी आदि हटती जाती है, नहीं तो इनको सबसे जास्ती भोगना चाहिए। सबसे जास्ती बीमार रहना चाहिए; क्योंकि सबसे पतित रोगी यह है; परन्तु योगबल से दुःख दूर होते हैं। (मु.21.11.73 पृ.2 अं.)	Download
1164	योग से प्राप्ति	बाप को जो जितना जास्ती याद करते हैं उतनी दौड़ी पहनते हैं। वही जाकर रुद्र के गले का हार बनेंगे, फिर विष्णु के गले की माला बनेंगे। (मु.3.6.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
1165	योग से प्राप्ति	जो राजयोग सीखते हैं वही सुखधाम में आवेंगे। बाकी हिसाब-किताब चुक्तू कर शान्तिधाम में चले जावेंगे। (मु.15.7.72 पृ.2 मध्यादि)	Download
1166	योग से प्राप्ति	जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ (मा० आबू) आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वह ही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से खत्म हो जावेंगे। (मु.4.11.78 पृ.2 मध्यांत)	Download
1167	योग से प्राप्ति	योगबल नहीं है तो फिर इच्छायें होती हैं यह चाहिए-यह चाहिए। वह खुशी नहीं है। खुशी जैसी खुराक नहीं। साहबजादों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। (मु.7.8.70 पृ.3 आ.)	Download
1168	योग से प्राप्ति	योगबल ही भूतों को भगावेगा, ज्ञान बल नहीं। योग में ही बहुत कमजोर हैं। सारा दिन दुनियाँ देखते हैं। घूमने का शौक बहुत है। घूमने, धक्के खाने का शौक तो भूतों को होता है। भूतों को भगाने का एक ही रास्ता है। बाप की याद से भूत भागते जावेंगे। (मु.15.5.69 पृ.3 अं.)	Download
1169	योग से प्राप्ति	यहाँ तो योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश करना है तब मंथली डिस्चार्ज आदि भी बन्द हो। वहाँ यह बीमारी आदि होती नहीं, यह कीचड़ पट्टी रावणराज्य में होते हैं। (मु.14.12.68 पृ.4 आ.)	Download
1170	योग से प्राप्ति	रावण की दुनियाँ को योगबल से उड़ाना है। (मु.13.4.73 पृ.6 मध्यांत)	Download
1171	योग से प्राप्ति	जो योग में रहेंगे तो उनकी यहाँ भी आयु बढ़ेगी। जितनी आयु बड़ी होगी उतना बाप से अन्त तक वर्सा लेते रहेंगे। योग से तन्दुरुस्ती को भी ठीक करना है। (मु.9.2.78 पृ.1 अं.)	Download
1172	योग से प्राप्ति	याद में अच्छी रीति रहेंगे तो तुम जो भी मांगो मिल सकता है। प्रकृति दासी बन जाती है। उनकी शक्ल आदि भी ऐसे खींचने करने वाली रहती है, कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। (मु.17.11.84 पृ.3 आ.)	Download
1173	योग से प्राप्ति	बेहद के बाप को याद करो बेड़ा पार। बेहद के बाप से बेहद का जेब भर जाता है। वहाँ तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है। इतनी बड़ी जो कब काल खा न सके। (रात्रि.मु.4.7.68 पृ.4 म.)	Download

1174	योग से प्राप्ति	बाप ने समझाया है-तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेगी और मैनर्स, चलन, कैरेक्टर्स भी ठीक रहेंगे।(मु.5.10.68 पृ.1 आ.)	Download
1175	योग से प्राप्ति	कदम-2 पर बाप को याद करते रहो तो पदम इकट्ठे होंगे। (मु.10.9.68 पृ.3 अं.)	Download
1176	योग से प्राप्ति	तुम्हारी कोई चीज़ तोड़-फोड़ जावेंगे, तुमको हाथ नहीं लगावेंगे। सो भी बाबा के योग में होंगे तो। याद से ही सभी मनोकामनाएँ पूरी होती है। कैरेक्टर्स को सुधारना सारा याद पर है। (मु.8.4.68 पृ.3 आ.)	Download
1177	योग से प्राप्ति	कोई अगर पूछे कि अभी पढ़ते-2 हमारा शरीर छूट जाये तो क्या पद मिलेगा? बाबा बतला सकते हैं। योग से ही आयु बढ़ती है। विकर्म विनाश होते हैं और कोई उपाय पतित से पावन बनने का है नहीं। (मु.26.4.76 पृ.2 अं.)	Download
1178	योग से प्राप्ति	जो बाप को अच्छी रीति याद करते हैं तो बाप उन्हों की रक्षा भी करता है। दुश्मन को भयंकर रूप दिखाय भगा देते हैं। (मु.26.1.93 पृ.1 अं.)	Download
1179	योग से प्राप्ति	जब तुम अच्छे योगी बनेंगे, कहाँ भी आँख नहीं डूबेगी तो फिर तुम्हारी इन्द्रियाँ शांत हो जावेंगी। मुख्य है यह जो सबको धोखा देती हैं। योग में अच्छी रीति अवस्था जम जायेगी तो फिर महसूस होगा-हम जैसे जवानी में ही वानप्रस्थ अवस्था में आ गये हैं। (मु.16.8.91 पृ.2 आ.)	Download
1180	योग से प्राप्ति	जो योग में मस्त हैं वही ऊँच पद पायेंगे। (मु.17.2.90 पृ.3 म.)	Download
1181	योग से प्राप्ति	बाप के साथ योग रखें तो बुद्धि में रोशनी आवे। योग में नहीं रहने से अंधियारा ही रहता है। इसलिए बच्चों को बाप कहते हैं जितना याद में रहेंगे उतना लाइट बढ़ती जावेगी। याद से आत्मा पवित्र बनती है। लाइट बढ़ती जाती है। याद ही नहीं करेंगे तो लाइट मिलेगी नहीं। याद से लाइट वृद्धि को पावेगी। याद न किया और कोई विकर्म कर दिया तो लाइट कम हो जावेगी। (मु.20.3.70 पृ.2 अं)	Download
1182	योग से प्राप्ति	कोई अगर पूछे कि अभी पढ़ते-2 हमारा शरीर छूट जाय तो क्या पद मिलेगा? बाबा बतला सकते हैं-योग से ही आयु बढ़ती है, विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय पतित से पावन बनने का है नहीं। (मु.26.4.76 पृ.2 म.)	Download
1183	योग से प्राप्ति	जितना याद करेंगे उतना सहज तुम्हारी अलाय निकलेगी। आग ठण्डी होगी तो अलाय निकलेगी नहीं। इनको योग अग्नि कहा जाता है। जिससे विकर्म विनाश होते हैं। (मु.8.3.70 पृ.3 म.)	Download